

आयुर्वेद

धन्वन्तरि निघण्टुः



सङ्कलन एवं नेपाली भावानुवाद : मोहन प्रसाद सापकोटा

थोरै कुरा

निघण्टु ग्रन्थ भनेको आयुर्वेदमा प्रयोग हुने विभिन्न शब्दहरूको शब्दकोश हो । यसमा विभिन्न फलफूल, तरकारी, जडीबुटी, वृक्ष, धातु, विष आदिको पर्यायवाची नाम, गुण, दोष आदि दिइएको हुन्छ ।

यो निघण्टु ग्रन्थ आयुर्वेदका उपदेशक वा समुद्र मन्थन गर्दा अमृत कलश लिएर प्रादुर्भाव भएका भगवान् विष्णुका चौबीसमध्ये एक अवतार मानिने भगवान् धन्वन्तरीबाट रचना गरिएको ग्रन्थ होइन । उनलाई उपदेशक मानेर धन्वन्तरीको वन्दना गर्दै शुरु गरिएको हुनाले यो ग्रन्थको नाम “धन्वन्तरि निघण्टु” राखिएको हुन सक्दछ ।

यसका अनेक पाण्डुलिपी भेटिएका छन् भनिउको छ र प्रायः सबैमा यसका रचनाकार “महेन्द्र भोगिक” हुन् भनिएको छ । अहिले “धन्वन्तरि निघण्टु” भनी जेजस्ता ग्रन्थ उपलब्ध छन् ती सबैमा प्रायः “द्रव्यालि” नामक ग्रन्थ पनि मिसाइएको देखिन्छ भनिउको छ । यस ग्रन्थको पहिलो भाग “द्रव्यालि” र दोश्रो भाग “धन्वन्तरि निघण्टु” हो । “द्रव्यालि” (द्रव्यावलि) नामक ग्रन्थका रचनाकार को हुन् आजसम्म थाहा हुन सकेको छैन ।

कृष्ण भोगिकका छोरा “महेन्द्र भोगिक” स्थाण्वीश्वरका वासिन्दा थिए । यो स्थान अहिलेको भारत भित्रको हरियाना जिल्लाको कुरुक्षेत्रमा “थानेसर” नामले प्रसिद्ध छ ।

यो ग्रन्थको रचना दशौँदेखि तेहौँ शताब्दीको बीचमा भएको थियो भनिन्छ । यो ग्रन्थलाई गुडूच्यादि निघण्टु पनि भनिन्छ ।

मैले यो ग्रन्थ “Studies on Medicinal Plants & Drugs in Dhanvantari-Nighantu, Vd.D.K. Kamat & Dr.S.D.Kamat, 2002 AD” तथा आनन्दाश्रम ग्रन्थाबलिको ग्रन्थाङ्क ३३, ई.सं.१८९६ मा प्रकाशित “राजनिघण्टुसहितो धन्वन्तरीयनिघण्टुः” नामका दुई ग्रन्थहरूको आधारमा नेपालीमा भावानुवाद गरेको हुँ । अन्य थुप्रै निघण्टु र शब्दकोशको समेत सहयोग लिएको हुँ ।

नियमानुसारको लामो भूमिका बाँध्न सकिन । भावानुवादका क्रममा भएका त्रुटीलाई विद्वानहरूले एउटा विद्यार्थीको गल्ती भनी सच्याउन सहयोग गर्नुहोला । आफूलाई दोमन भएका स्थानमा प्रश्न चिह्न राखिदिएको छु । म विज्ञ होइन । नेपालीहरूका लागि आयुर्वेदतिर हिँड्न बाटो धेरै कम देखेकोले यो थप एउटा गोरेटो कोरिदिएको मात्र हुँ । इच्छुकले बाटो बढाउँदै जाउन् ।

अन्य भाषामा अनुवाद भएपनि नेपाली भाषामा अति कम आयुर्वेदका ग्रन्थ देखिएकोले सबै नेपालीलाई अध्ययन गर्न सजिलो होस् भनी आफूले अनुवाद गरेका सबै ग्रन्थ आर्किभमा अपलोड गरेर राखिदिएको छु । यसभन्दा पहिले अनुवाद एवं सङ्कलन गरेर राखिएका आयुर्वेदसँग सम्बन्धित (१) भावप्रकाश निघण्टु, (२) आयुर्वेद महोदधि, (३) अर्कप्रकाश, (४) शार्ङ्गर संहिता, (५) राजनिघण्टु, (६) कुमारतन्त्र, (७) राजवल्लभ निघण्टु, (८) मदनपाल निघण्टु (९) मोहन निघण्टु संग्रह भाग १ र २ पछि यो एघारौँ ग्रन्थ त्यहाँ अपलोड गरेको छु । यसलाई पढ्न र डाउनलोड गर्न सकिनेछ । तर, अनुमति बेगर व्यापारिक प्रयोजनका लागि प्रयोग नगर्नु होला ।

वेबसाइटको ठेगाना : https://archive.org/details/@mohan_sapkota858 हो ।

इमेल : sapkotamps731@gmail.com

मिति : २०८१ चैत्र १३ गते बुधबार, काठमाडौँ, नेपाल ।

विषयसूची

| वर्ग | विषय | पेज नं. |
|------------|--|---------|
| | मङ्गलाचरण, प्रस्तावना, औषधीका अनेक नाम, ग्रन्थको स्रोत, औषधीका नाममा हुने भिन्नता | १ |
| | औषधीको उपयोगमा विचार, औषधीको विषयमा जानकारी वर्ग, औषधीको उपयोगमा विचार, औषधीको नाममा भिन्नता हुने कारण | २ |
| | औषधीको नाममा भिन्नता, औषधीको आफूले जानेको नाम मात्र ही हुँदैन, औषधीको पहिचान | ३ |
| | वन्य औषधीका विज्ञ, निघण्टुको महत्व, ग्रन्थको महत्व | ४ |
| | वैद्यले ध्यान दिनुपर्ने कुराहरू | ५ |
| गुडूच्यादि | कफजन्य जरोको ओखती, पित्तजन्य जरोको ओखती, वातजन्य जरोको ओखती, सन्निपातजन्य जरोको ओखती | ६ |
| | रक्तपित्त नाशक ओखती, रक्तवात नाशक ओखती, कफजन्य रोगमा बान्ता गराउन उपयुक्त ओखती | ७ |
| | पित्तजन्य रोगमा विरेचन गराउनका लागि उपयुक्त ओखती, नाकमा नस हाल्न उपयुक्त ओखती, तेलविशेष | ८-९ |
| शतपुष्पादि | शतपुष्पादि नामक घिउ, अग्निप्रद चूर्ण (धूलो) | १०-११ |
| चन्दनादि | महासुगन्ध तेल | १२ |
| | विद्रावण तेल, गाजलविशेष | १३-१४ |
| करवीरादि | करवीरादि तेल, कीरानाशक ओखती, नस हाल्न प्रयोग हुने ओखती | १५ |
| | रक्तपित्तमा प्रयोग गर्ने ओखती | १६-१७ |
| आम्रादि | फलफूलको प्रयोग, रुखका बोक्राको प्रयोग | १८ |
| | सुगन्धका लागि प्रयोग हुने फूल | १९ |
| सुवर्णादि | धातुको प्रयोग, रत्नको प्रयोग, अनाज दलहन आदिको गुण | २० |
| | तरल र लेस्याइला पदार्थको प्रयोग, शरीर | २१ |
| | सात धातु, मासु | २२-२३ |
| मिश्रकादि | मिश्रकादि | २४ |
| गुडूच्यादि | मङ्गलाचरण, गुर्जो र गानेगुर्जो | २५ |
| | अतीस | २६ |
| | मुज (मूर्वा), मुजविशेष (मोरट), मजिठो (मज्जिष्ठा) | २७ |
| | दुरालभा विशेष (धन्वयास), दुरालभा विशेष (यास), असुरो (वासक) | २८ |
| | खयर (खदिर), सेतो र कालो खयर (श्वेतसार, श्यामसार) | २९ |
| | नीम (निम्ब), बकाइनु (महानिम्ब), चिराइतो (किराततिक्तक) | ३० |
| | पिर्ने वा कुटकी (कटुका), मोथे र नागरमोथे (मुस्ता, नागरमुस्ता) | ३१ |
| | पानी मोथे (जलमुस्त), पित्तपापडा (पर्पट) | ३२ |
| | सुगन्धबाल (बालक), परबर (पटोल), परबर विशेष (स्वादुपत्रफला) | ३३ |
| | हलेदो (हरिद्रा), चुत्रो (दारुहरिद्रा) | ३४ |
| | कपुरहलेदो (शठी), कपुरहलेदो विशेष (गन्धपलाशी) | ३५ |

विषयसूची

| वर्ग | विषय | पेज नं. |
|------|--|---------|
| | पुष्करमूल, चिन्डे (भारङ्गी), पुष्करमूल विशेष (श्वासारि) | ३६ |
| | गुन्दरगानु (पाठा), काफल (कटफल) | ३७ |
| | देवदार (देवदारु), नेपाले उशीर (कत्तुण), कत्तुण विशेष (कपट) | ३८ |
| | गुण्ठ, कर्कटशृङ्गी | ३९ |
| | भेडासिङ्गी (अजशृङ्गी), साकिनु वा बनगहत (शालपर्णी), शालपर्णी विशेष, दुवै शालपर्णीका गुण | ४० |
| | सतिबयर (पृश्निपर्णी), पृश्निपर्णी विशेष, पृश्निपर्णीका गुण, बिहीँ | ४१ |
| | कण्टकारी, सेतो कण्टकारी (लक्ष्मणा) | ४२ |
| | बिहीँ विशेष (कासघ्नी, सेतो फूल फुल्ने कण्टकारी), बिहीँ विशेष वा भन्टा, ओदाने काँडो (गोखुर) | ४३ |
| | बेल (बिल्व) | ४४ |
| | गिनेरी (अग्निमन्थ), टटलो (श्योनाक) | ४५ |
| | खमारी (काश्मर्या), पाडरी (पाटला) | ४६ |
| | पाडरीविशेष (काष्ठपाटला), जीवक, ऋषभक | ४७ |
| | मेदा र महामेदा, भाङ (विजया), कल्छेलहरो (काकोली) | ४८ |
| | दुधकल्छेलहरो (क्षीरकाकोली), वनमास (माषपर्णी) | ४९ |
| | वनमुगी (मुद्गापर्णी), जीवन्ती, जेठीमधु (मधुपष्ठी) | ५० |
| | जेठीमधु विशेष (क्लीतनकम्), ऋद्धि, बिराले लहरो (विदारी) | ५१ |
| | दूधे बिराले लहरो (क्षीरविदारी), काउसो (कपिकच्छू), काउसेसिमी (दधिपुष्पी) | ५२ |
| | सुनिषण्णक, पाषाणभेद | ५३ |
| | सानो र ठूलो गोरखमुण्डी (मुण्डी), सेतो अनन्तमूल (सारिवा), कालो अनन्तमूल (कृष्णमूली) | ५४ |
| | अनन्तमूलका गुण, बकुची (बाकुची), मइनफल (मदन) | ५५ |
| | लौका वा तुम्बा (तुम्बी), वनधिरौलो (जीमूतक) | ५६ |
| | काँक्रोविशेष (त्रपुस), काँक्रोविशेष (उर्वारु) | ५७ |
| | काँक्रोविशेष (बालुक), काँक्रोविशेष (चित्रफल), काँक्रोविशेष (चिर्भट), काँक्रोविशेष वा फर्सी | ५८ |
| | कुभिण्डो (कृष्णान्डी), फल नफल्ने चठेल (वन्ध्याककोटकी), चठेल (ककोटकी) | ५९ |
| | चठेलका गुण, धिरौलो विशेष (धामार्गव), धिरौलो विशेष (महाकोशातकी) | ६० |
| | धिरौलो (कोशातकी), धिरौलो विशेष (क्ष्वेड), रातो कोइला, काभ्रो (अश्मन्तक) | ६१ |
| | सेतो कोइरालो (कोविदार), मृगासिङ्गा (आवर्तकी) | ६२ |
| | शणपुष्पी, गोलकाँकी (बिम्बी), हरौँ (हरीतकी) | ६३-६५ |
| | बरौँ (विभीतक), अमला (आमलक) | ६५ |
| | पानीअमला (प्राचीनामलक), ठुलो राजवृक्ष (आरग्वध), सानो राजवृक्ष (कर्णिकार) | ६६ |
| | अजयपाल (दन्ती), अजयपालविशेष (वरणी), अजयपालका गेडा (जयपाल) | ६७ |

विषयसूची

| वर्ग | विषय | पेज नं. |
|------------|---|---------|
| | मुसाकाने (द्रवन्ती), नीर (नीलिनी) | ६८ |
| | सिउँडी (सुही), हात्तकाने (सातला) | ६९ |
| | पहिलो दुधे थाकल (क्षीरिणी, काञ्चरक्षीरी), सियालकाने, थाकलविशेष (स्वर्णक्षीरी), कालो निसोथ (श्यामात्रिवृत) | ७० |
| | सेतो निसोथ (त्रिवृत), ऐरेलु (इन्द्रवारुणी) | ७१ |
| | ऐरेलु विशेष (श्वेतपुष्पी), मुडिलो (त्रायमाण), नाकुली (यवतिक्ता) | ७२ |
| | असारे (अङ्कोट), दतिवन (अपामार्ग) | ७३ |
| | दतिवन विशेष (रक्तपुष्प), मालकागुनु (तेजस्विनी), मालकागुनु विशेष (ज्योतिष्मती) | ७४ |
| | गाईतिहारे वा फ्याक्सेकन्द (रास्ना), अश्वगन्धा | ७५ |
| | पुनर्नवा, पुनर्नवा विशेष (वर्षाभू), कटसरैया (सैरयक) | ७६ |
| | बला (बलु), महाबलु (महाबला), नागबलु (नागबला) | ७७ |
| | बलुविशेष (अतिबला), पाँच थरी बलु (बलापञ्चकम्) | ७८ |
| | बिरी लहरो (प्रसारणी), कुरिलो (शतावरी), कुरिलोविशेष (सहस्रवीर्या) | ७९ |
| | अँडिर (एरण्ड), बाटुलपाते (छागलान्त्रिका) | ८० |
| | उपसंहार, पुष्पिका | ८१ |
| शतपुष्पादि | पहाडी सुप (शतपुष्पा), मदिसे सुप (मिश्रेया) | ८२ |
| | बोजो (वचा), हपुषा | ८३ |
| | वायुविडङ्ग (विडङ्ग), ठूलोकुरो (कुटज), इन्द्रजौ (इन्द्रयव) | ८४ |
| | जवाखार (यवक्षार), सजीखार (स्वर्जिकाक्षार) | ८५ |
| | सुहागा (टङ्कणक्षार), सिंघेनुन (सैन्धव), बिरेनुन (विडलवण) | ८६ |
| | सौचरनुन (सौवर्चल), माटे नुन (औद्विद) | ८७ |
| | समुद्री नुन (सामुद्र), हिड (हिङ्गु), जिम्बु (हिङ्गुपत्रि) | ८८ |
| | नाडीहिङ्गु, सुकुमेल (सूक्ष्मैला), अलैंची (बृहदेला) | ८९ |
| | नागकेशर, दालचिनी (त्वक्) | ९० |
| | तेजपात (तमालपत्र), सुनपाती (तालीसपत्र), वंशलोचन (वंशरोचना) | ९१ |
| | वंशरोचना विशेष (पलाशगन्धा), मुड्देलो (उपकुञ्जी), दाडिम | ९२ |
| | धनियौ (धान्यक), जीरा (जीरक) | ९३ |
| | सेतो जीरा (शुक्लजीरक), कालो जीरा (कृष्णजीरक), वनजीरा (वन्यजीर) | ९४ |
| | पिप्ला (पिप्पली), पिप्लाको जरा (पिप्पलीमूल), चाभो (चविका) | ९५ |
| | गजपिप्पली, चित्तू (चित्रक), सुठो वा अदुवा (शुण्ठी) | ९६ |
| | मरिच, सेतो मरिच (शुभ्र मरिच), ज्वानो (यवानी) | ९७ |

विषयसूची

| वर्ग | विषय | पेज नं. |
|----------|--|---------|
| | ज्वानु विशेष (चौहार), ज्वानु विशेष (तुरुष्क), भकिअमिलो (वृक्षाम्ल) | ९८ |
| | अम्लवेत (अम्लवेतस), जङ्गली ज्वानु (अजमोदा), अजगन्धा | ९९ |
| | कैथ (कपित्थ), चिनी (शर्करा) | १०० |
| | महको चिनी (मधुशर्करा), दुरालभाको चिनी (यवासशर्करा), उपसंहार, पुष्पिका | १०१ |
| चन्दनादि | चन्दन वा श्रीखण्ड (चन्दन), रातो चन्दन (रक्तचन्दन), चन्दनविशेष (बकचन्दन) | १०२ |
| | पहिलो चन्दन विशेष (कालीयक), सेतो चन्दन विशेष (बर्बरिक), केशर (कुङ्कुम) | १०३ |
| | उशीर, दयाँलो (प्रियङ्गु) | १०४ |
| | टुनी (तूणि), गोरोचन (रोचना), शिलारस (तुरुष्क), | १०५ |
| | अगर (अगरु), अगर विशेष (कालेयक), कस्तूरी (कस्तूरिका) | १०६ |
| | कपूर (कर्पूर), जाइपत्री (जातिपत्री) | १०७ |
| | जाइफल (जातीफल), फलकपूर (कङ्काल), सुपारी (पूगफल) | १०८ |
| | लवाङ (लवङ्ग), महारङ्गी (नलिका), जटामसी (मांसी) | १०९ |
| | जटामसी विशेष (गन्धमांसी), कूट (कुष्ठ) | ११० |
| | शीतलचिनी (रेणुका), तगर, मोथे विशेष (परिप्लव) | १११ |
| | नखी (नख), नखी विशेष (व्याघ्रनख) | ११२ |
| | कपुरपाती (स्पृक्का), बोल, दमना भार (दमन) | ११३ |
| | दमना भार (दमन), कालो जटामसी (मुरा), लोठसल्लो (स्थौणैयक) | ११४ |
| | गन्धपाला विशेष (चोरक), पत्थरकुङ्कुम (शैलेय) | ११५ |
| | सिलटिमुर (एलवालुक), सल्लो (सरल), छतिवन (सप्तपर्ण) | ११६ |
| | लाहा (लाक्षा), भुइँ अमला (तामलकी) | ११७ |
| | उशीरको जरा (लामज्जक), पैयुँ (पद्मक), धर्यैरो (धातकी) | ११८ |
| | धूपी विशेष (प्रपौण्डरीक), कचूर (कर्चूर), मनशिला | ११९ |
| | सिन्दूर, सिन्दूर विशेष (गिरिसिन्दूर), गोपी चन्दन (सौराष्ट्री मृत्तिका) | १२० |
| | गन्धक, गन्धक विशेष (वटसौगन्धिक) | १२१ |
| | अमिली विशेष (अम्बष्ठा), मैन (सिक्थक), | १२२ |
| | सालधूप (राल), हीराकसी (कासीस), गोकुलधूप (थुग्गुलु) | १२३ |
| | काँडिसल्लाको खोटो (कुन्दुरु), सल्लाको खोटो वा तारपिन (श्रीवेष्टक), काँडिसल्लो (शल्लकी) | १२४ |
| | सिँदुरे (कम्पिल्लक), मुर्दाशङ्ख (कङ्कुष्ठ), भलायो (भल्लातक) | १२५ |
| | निलोतुथो (तुत्थ), सुनामक्खी (माक्षिक) | १२६ |
| | सुर्मा (अञ्जन), गेरु (गैरिक) | १२७ |
| | सुवर्णगेरु (स्वर्णगैरिकम्), समुद्रफेन, गहत (चक्षुष्या) | १२८ |

विषयसूची

| वर्ग | विषय | पेज नं. |
|----------|--|---------|
| | रसाञ्जन, पुष्पाञ्जन, सिलाजित (शिलाजतु) | १२९ |
| | निर्मली (कतक), सेतो लोध (लोघ) | १३० |
| | रातो लोध (पट्टिकालोघ), शङ्ख, दबदबे (जिङ्गिणी) | १३१ |
| | पान (ताम्बूली), उपसंहार | १३२ |
| करवीरादि | कैडेल (करवीर), ताप्रे (चक्रमर्द) | १३३ |
| | धतुरो (धतूर), कलिहारी वा गुन्यामधुरा (लाङ्गली), भृङ्गीराज (भृङ्गराज) | १३४ |
| | रातो आँक (अर्क), सेतो आँक (राजार्क) | १३५ |
| | ठुलो मौलसिरी वा गुम्पाती (बुक), कबई (काकमाची), काकजङ्घा | १३६ |
| | कौवाठोरी (काकनासा), सेतीगेडी (काकादनी), रातीगेडी (चूडामणी) | १३७ |
| | सेतीगेडी (श्वेतगुञ्जा), मूला (मूलकम्) | १३८ |
| | प्युठाने मूला (चाणख्यमूलकम्), गान्तेमूला (गृञ्जन), सजिवन (शिग्रु) | १३९ |
| | सर्सिउँ (सर्षप), रायो (राजिका) | १४० |
| | रोहिष भार (भूस्तृण), तुलसी | १४१ |
| | मरुवा (जम्बीर), तुलसी विशेष (अर्जक), वनतुलसी (शालुक) | १४२ |
| | सेतो तुलसी (सुमुख), रायो (आसुरी), करेलो (काण्डीर) | १४३ |
| | जलपिप्ला (जलपिप्पली), लसुन (रसोन) | १४४ |
| | गाजर (गर्जरम्), प्याज (पलाण्डु) | १४५ |
| | केरा (कदली), काठेकेरा (काष्ठकदली) | १४६ |
| | सेतो फुल्ने सिमाली (सिन्दुवार), फुस्रो फुल्ने सिमाली (शेफालिका), अपराजिता | १४७ |
| | चप्रा लाहा (जन्तुकारी), स्थलकमल (पद्मचारिणी) | १४८ |
| | रानीगीठो (गृष्टि), मांसरोहिणी, ऐजेरु (वन्दाक) | १४९ |
| | हुरहुरे (सुवर्चला), ब्राह्मी, नाकुली | १५० |
| | गन्धनाकुली (महासुगन्धा), बाटुल्पाते विशेष (वृद्धदारुक) | १५१ |
| | लज्जावती (रक्तपादी), कानेसिन्को (विश्वग्रन्थि), शङ्खपुष्पी | १५२ |
| | निलो शङ्खपुष्पी (विष्णुक्रान्ता), लुँडे (तण्डुलीयक), ठुलो ताप्रे (कासमर्द) | १५३ |
| | उखु (इक्षु), सक्खर (गुड) | १५४ |
| | काँस भार (काश), मुज भार (मुञ्ज) | १५५ |
| | कुश (मृदुदर्भ), मुज विशेष (शर), बाँस (वंश) | १५६ |
| | बाँसको टुसा (वंशाग्र), नर्कट (नल), घौनिगालो (महानल) | १५७ |
| | दुबो (दूर्वा), सेतो कमल (पुण्डरीक), नीलो कमल (नीलपद्म) | १५८ |
| | रातो कमल (रक्तपद्म), सेतो चन्द्रकमल (कुमुद) | १५९ |

विषयसूची

| वर्ग | विषय | पेज नं. |
|---------|---|---------|
| | साना जातका कमल (क्षुद्रकमल), फूल सहितको पुरा कमलको बोट (पद्मिनी), मखाना (पद्मबीज) | १६० |
| | कमलको डाँठ (मृणाल), कमलको गानो (पद्ममूल), कमलको केशर (पद्मकेशर) | १६१ |
| | उपसंहार, जयन्ती (बलामोटा), सोमलता (सोमवल्ली) | १६२ |
| | पवै (उपोदकी), ओल (अशोघन), पुष्पिका | १६३ |
| आम्रादि | आँप (आम्र), | १६४ |
| | आँपविशेष (क्षुद्राम्र), कलमी आँप (राजाम्र) | १६५ |
| | अमारो (आम्रातक), ज्यामिर (बम्बीर), जुनार (मधुजम्बीर) | १६६ |
| | सुन्तला (नारङ्ग), बिमिरो (बीजपूर) | १६७ |
| | मधुबिमिरो (मधुकर्कटी), अमिली (अम्लिका) | १६९ |
| | चरीअमिलो (क्षुद्राम्लिका), आरु (आरुक), रामफल (भव्य) | १७० |
| | तिँदू (तिन्दूक), मयल (विकङ्कत), महुवा (मधुक) | १७१ |
| | पानी महुवा (जलमधुक), दाँति ओखर (पीलु) | १७२ |
| | खजूर (खजूरी), खजूरी विशेष (पिण्डखजूरी), अङ्गूर (द्राक्षा) | १७३ |
| | मुनक्का (मृद्वीका), ओखर (अक्षोड), असारे वा फाल्सा (परूषक) | १७४ |
| | किम्बु (तूद), हरिफल (पालेवत) | १७५ |
| | ताड (ताल), ताड विशेष वा जगर (माड), चिरौजी (प्रियाल) | १७६ |
| | नरिवल (नारिकेल), बर (वट), पीपल (अश्वत्थ) | १७७ |
| | पारिसपिप्पल (प्लक्ष), जामुनु वा फणिर (जम्बू) | १७८ |
| | डुम्री (उदुम्बर), खसेतो (काकोदुम्बरिका), खिनी (राजादन) | १७९ |
| | लप्सी (श्लेष्मातक), शमी, बयर(बदर) | १८० |
| | करीर, करौजी (करमर्दक) | १८१ |
| | कदम (कदम्ब), करञ्ज | १८२ |
| | करञ्ज विशेष (उदकीर्य), करञ्ज विशेष (अङ्गारवल्लिका), शिरीष | १८३ |
| | काउलो वा खरी (अर्जुन), बेत (वेतस), सिप्लिकान (वरुण) | १८४ |
| | सिसौ (शिशपा), साल (सर्जक) | १८५ |
| | विजयसाल (असन), सिमल (शाल्मली), बुढेत्रो (मुष्कक) | १८६ |
| | कालो सिमल (कूटशाल्मली), गनाउने खयर (इरिमेद), लहरेबेली (मल्लिका) | १८७ |
| | बेली (वार्षिकी), चमेली (जाती) | १८८ |
| | सानो नेवारी (वासन्ती), नेवारी (गैष्मी), चाँप (चम्पक) | १८९ |
| | फूलविशेष (तरुणी), बाह्रमासे फूल (कुब्जक), जूही (यूथिका) | १९० |
| | फूल विशेष (कुन्द), गुलाफ विशेष (शतपत्री), माघवी लता (अतिमुक्तक) | १९१ |

विषयसूची

| वर्ग | विषय | पेज नं. |
|-----------|--|---------|
| | मौलसिरी (बकुल), किङ्किरात, तिल्को (तिलक) | १९२ |
| | अशोक, पल्लोस (किंशुक) | १९३ |
| | उपसंहार | १९४ |
| | क्यात्तुके (केतकीद्वयम्), सयपत्री (गणेरुका), टीक (साग), धर्यैरो विशेष (धव) | १९५ |
| | पुष्पिका | १९६ |
| सुवर्णादि | सुन (सुवर्ण), चाँदी (रौप्य) | १९७ |
| | ताम्र (तामा), राड (वज्र) | १९८ |
| | पित्तल | १९९ |
| | सिसा (नाग), काँस धातु (कांस्य) | २०० |
| | फलाम (लोह) | २०१ |
| | फलाम विशेष (वर्तलोह), कीट (मण्डूर) | २०२ |
| | पारो (पारद), हिङ्गुल | २०३ |
| | बिल्लौर (वैक्रान्त) | २०४ |
| | पन्ना (गारुत्मत) | २०५ |
| | हीरा (वज्र), यूँ (राजावर्त) | २०६ |
| | मोति (मौक्तिक), मुगा (प्रवाल) | २०७ |
| धान्य | मार्सिधान (शालि) | २०८ |
| | सठिया धान (षष्टिक), मार्सीधान र व्रीहिका गुण (शालिव्रीहिगुण) | २०९ |
| | जौ (यव), मुगी (मुद्ग) | २१० |
| | राज्मा वा बोडी (राजमाष), कोदो (कोद्रव) | २११ |
| | नावो धान (नीवार), सामाधान (श्यामाक), कागुनू (प्रियङ्गु) | २१२ |
| | वनमुगी (मकुष्ठ), रह्र (आढकी), मुसुरो (मसूर) | २१३ |
| | गहुँ (गोधूम), मास (धान्यमाष), चना (चणक) | २१४ |
| | केराउ (कलाय), गहत (कुलत्थ) | २१५ |
| | जुनेलो (जूर्णा), खेसरी (करट), सिमी (निष्पाव) | २१६ |
| | मेथी (मेथिका), वनमेथी (वनमेथिका), आलस (अतसी) | २१७ |
| | कुसु (कुसुम्भ), अफिम (खसतिल), अफिमको चोप (अहिफेन) | २१८ |
| | तिल, तेल (तैल) | २१९ |
| | तिलको तेल (तिलतैल), आलसको तेल (अतसीतैल), सरसिउँको तेल (सर्षपतैल) | २२० |
| | अँडिरको तेल (ऐरण्डतैल), कुसुमको तेल (कुसुम्भतैल), आँपको तेल (कोशाम्रतैल) | २२१ |

विषयसूची

| वर्ग | विषय | पेज नं. |
|------|---|---------|
| | काउसोको तेल (कपिकच्छू तैल), नीमको तेल (निम्बतैल), बर्रोको तेल (अक्षतैल), विभिन्न तेल | २२२ |
| | घिउ (घृत), गाईको घिउ (गोधृत) | २२३ |
| | भैंसीको घिउ (महिषीघृत), बाख्रीको घिउ (अजाघृत), भेडको घिउ (आविकघृत) | २२४ |
| | उँटको घिउ (आष्टीघृत), घोडीको घिउ (अश्वघृत), गधाको घिउ (गर्दभीकृत) | २२५ |
| | ढोईको घिउ (हस्तिनीघृत), स्त्रीको घि (स्त्रीघृत), पुरानो घिउ (पुराणघृत) | २२६ |
| | दूध (दुग्ध), गाईको दूध (गोदुग्ध) | २२७ |
| | बाख्रीको दूध (अजापय), भेडीको दूध (औरभ्रपय), भैंसीको दूध (महिषीपय) | २२८ |
| | उँटको दूध (औष्ट्रीपय), घोडको दूध (अश्वपय), गधाको दूध (गर्दभीपय), स्त्रीको दूध (मानुषीपय) | २२९ |
| | ढोईको दूध (हस्तिनीपय), दूधका गुण-अवगुण (सामान्यदुग्ध गुण) | २३० |
| | दही (दधि), मथिएको दही (मथितदधि), | २३२ |
| | गाईको दही (गोदधि), बाख्रीको दही (अजादधि), भेडीको दही (औरभ्रदधि) | २३३ |
| | भैंसीको दही (महिषीदधि), उँटको दही (उष्ट्रीदधि), घोडीको दही (अश्वदधि), गधाको दही (गर्दभीदधि) | २३४ |
| | ढोईको दही (हस्तिनीदधि), स्त्रीको दही (स्त्रीदधि), दहीका गुण र दोष (सामान्यदधिगुण) | २३५ |
| | ऋतु अनुसार दहीको गुण, गाई दहीको श्रेष्ठता, दही खाने नियम | २३६ |
| | मोही (तक्र), मोहीका प्रकार, मोहीको सामान्य गुण | २३७ |
| | राम्ररी जमेको र नजमेको दहीको मोही, मोही खान नहुने अवस्था | २३९ |
| | मोही पिउन हुने अवस्था, मोहीका गुण, मोहीको परिकार, मण्ड, मोरट | २४० |
| | नौनी (नवनीत) | २४१ |
| | मह (मधु), महका सामान्य गुण | २४२ |
| | भ्रामर मह, शौद्र मह, माक्षिक मह, महका गुण र दोष | २४३ |
| | महको चिनी, अर्क विशेष (शुक्त) | २४४ |
| | मद्य विशेष (आसुत), काँजी (काञ्जिक), मद्यविशेष (सौवीरक, तुषोदक) | २४५ |
| | मदिराविशेष (गौड, रसशुक्त, मधुशुक्त), मदिराविशेष (चुक्र), सुराका जात | २४६ |
| | मद्यका सामान्य गुण, सुरा | २४७ |
| | मदिराविशेष (प्रसन्ना), जौको मदिरा (यवसुरा), मद्यविशेष (मधूलिका), मदिराविशेष (आक्षिकी) | २४८ |
| | सीधु नामक मद्यका प्रकार, मद्यविशेष (मधुकसीधु), मदिराविशेष (रसासव), मद्यविशेष (कोहल) | २४९ |
| | मदिराविशेष (जगल), मदिराविशेष (बक्कस), मदिराविशेष (मार्द्विक), मदिराविशेष (खार्जूर) | २५० |
| | मदिराविशेष (गौडसीधु, शार्करासीधु, शीतरसिक), मध्वासव | २५१ |
| | मदिराविशेष (शार्करासव, सुरासव, मैरेय, आक्षिकसीधु) | २५२ |
| | मदिराविशेष (जाम्बवसीधु, अरिष्ट), नयाँ र पुरानो मद्यको गुण | २५३ |
| | खान नहुने मद्य | २५४ |

विषयसूची

| वर्ग | विषय | पेज नं. |
|------|--|---------|
| | मदिरा र नसा, मानिसको प्रकृति अनुसार मद्यले दिने नसा, | २५५ |
| | सिखनी (मर्जिका), पानीका पर्याय, पानीका सामान्य गुण | २५६ |
| | आकाशको पानी, बेमौसममा परेको पानी | २५७ |
| | हंसोदक नामक पानी, चन्द्रकान्त जल, नदीको पानी | २५८ |
| | प्राकृतिक तलाउको पानी, पोखरीको पानी, वापीको पानी, चौण्ड्य पानी, भनूको पानी | २५९ |
| | कुवाको पानी, औद्भिद पानी, खेतको पानी, साना खोपिल्टाको पानी, समुद्रको पानी | २६० |
| | नदीको पानी विशेष, पानी विशेष, आनूपजल | २६१ |
| | जाङ्गल र साधारण क्षेत्रको पानी, गुनिलो पानी, अहितकर पानी, हितकर पानी | २६२ |
| | तताएको पानी, रातमा पिइने पानी, तताएर सेलाएको पानी, उमालेको पानी | २६३ |
| | चिसो पानी पिउन नहुने अवस्था, चिसो पानी पिउन हुने अवस्था, पानी पिउने मात्रा | २६५ |
| | पचाउन सहज र असहज पानी, पिउन नहुने पानी, पानी पिउने नियम, पानी र खाना खाने नियम | २६६ |
| | खाना खाँदा पानी पिउने नियम, पाँच थरी जमिनमा हुने पानी | २६७ |
| | नरीवलको पानी, मानिस, मानिसको मासु र मूत्र | २६८ |
| | स्त्री, शरीर, बोली | २६९ |
| | हावा, शरीरको हावा, पित्त | २७० |
| | कफ, मोह, शरीरको प्रकृति | २७१ |
| | हाड, मासु, बोसोका पर्याय | २७२ |
| | रगत, वीर्य, मासी, रस | २७३ |
| | शरीरका सात धातु, | २७४ |
| जीव | हात्ती, घोडा | २७४ |
| | उँट, गधा | २७५ |
| | खच्चड, बोका, भेडा | २७६ |
| | भेडाको जात विशेष, ब्वाँसो, बाघ | २७७ |
| | चितुवा, सिंह, बनेल, सुँगुर | २७८ |
| | मृग, राँगो, भैसी | २७९ |
| | राँगोभैसीको मासु, अर्ना, सँढे, गाई | २८० |
| | माछा, | २८१-२८२ |
| | माछाका जात, रहुमाछा, पाठीन माछा, शफरी माछा | २८३ |
| | माछाका सामान्य गुण, नदीका माछा, गोही आदि | २८४ |
| | कछुवा, सानो मुसा, मुसा | २८५ |
| | ठुलो मुसा, बिरालो, बिरालो विशेष | २८६ |

विषयसूची

| वर्ग | विषय | पेज नं. |
|--------|--|---------|
| | स्याल, हुँडार, कुकुर, वानर | २८७ |
| | मुजुर, भ्रमरा | २८८ |
| | सुँगा, मैना, चखेवा | २८९ |
| | हाँस, कुखुरा, लाभेचरा | २९० |
| | कोइली | २९१ |
| | काग, काग विशेष, पानी काग | २९२ |
| | कागको मासु, लाटोकोसेरो, सानो जातको लाटोकोसेरो, लाटोकोसेरोको मासु | २९३ |
| | सर्प, सर्पविशेष | २९४ |
| | भ्यागुतो, गँगटो, दिसा | २९५ |
| | गोबर, पिसाब, गहुँत, बाख्रीको मूत्र | २९६ |
| | भेडीको मूत्र, भैसीको मूत्र, हात्तीको मूत्र, घोडाको मूत्र | २९७ |
| | उँटको मूत्र, गधाको मूत्र, मानिसको मूत्र, बोसो | २९८ |
| | छाला, रौं, उपसंहार, पुष्पिका | २९९ |
| मिश्रक | त्रिफला, स्वादुत्रिफला, सुगन्धि त्रिफला | ३०० |
| | त्रिकटुक, त्रिकार्षिक, भातुर्भद्रक, कटुचातुर्भद्रक | ३०१ |
| | तृतीय चातुर्भद्रक, त्रिजातक, पञ्चकोल, पञ्चवल्कल | ३०२ |
| | पञ्चभृङ्ग, मध्यमपञ्चमूल, लघुपञ्चमूल, बृहत्पञ्चमूल, दशमूल | ३०३ |
| | जीवनीय पञ्चमूल, तृणपञ्चमूल, पञ्च-पञ्चमूल | ३०४ |
| | जीवनीय गण, वेशवार | ३०५ |
| | कासमर्द वटक, सम्भार, शिखरिणी | ३०६ |
| | सर्वौषधि, सुगन्धामलक, पञ्चसुगन्धिक | ३०७ |
| | परार्ध, वाटचपुष्प, यक्षकदर्दम, मन्थ | ३०८ |
| | सन्तर्पण, पञ्चामृत, पञ्चगव्य, आम्लपञ्चक | ३०९ |
| | द्वितीय पञ्चाम्लक, पञ्चनिम्बक, लवणपञ्चक, पञ्चशिरीषक | ३१० |
| | पञ्चाङ्ग, पञ्चशार्पक, पञ्चशूरण, पञ्चसिद्धौषधि | ३११ |
| | रक्तवर्ग, शुक्लवर्ग, पञ्चगण, मूत्राष्टक | ३१२ |
| | क्षारत्रय, क्षारपञ्चक, क्षारषट्क, क्षाराष्टक | ३१३ |
| | त्रिलवण, लवणषट्क, त्रिमधुर, षड्रस, ओखतीका पर्याय | ३१४ |
| | ओखतीका किसिम, शरीरले सहने कुरा, आरोग्य, नीरोग | ३१५ |
| | रोगी, वैद्य, आहार, आहारका किसिम | ३१६ |
| | सात धातु, सात उपधातु, महारत्न, पञ्चरत्न | ३१७ |

विषयसूची

| वर्ग | विषय | पेज नं. |
|--------------------|--|---------|
| | उपरत्न, उपरस, साधारणरस, नौ ग्रहका धातु | ३१८ |
| | विषका प्रकार, स्थावर विष, वर्ज्य विष | ३१९ |
| | कालकूट, वत्सनाभ, शृङ्गिक, प्रदीपन | ३२० |
| | हालाहल, ब्रह्मपुत्र, हारिद्र, सक्तुक | ३२१ |
| | सौराष्ट्रिक, जङ्गम विष, विषको काम | ३२२ |
| | हरिताल विष, अमृत विष, उपविषगण | ३२३ |
| | विष शान्त पार्ने उपाय, | ३२४ |
| | उपसंहार, पुष्पिका | ३२५ |
| विषसूची समाप्त भयो | | |

सङ्कलन : मोहन प्रसाद सापकोटा

मङ्गलाचरण, प्रस्तावना

मङ्गलाचरण

नमामि धन्वन्तरिमादिदेवं सुरासुरैर्वन्दितपादपद्मम् ।
लोके जरारुग्भयमृत्युनाशं धातारमीशं विविधौषधीनाम् ॥१॥

देवता र असुर दुवैले चरणकमल वन्दना गरिएका एवं संसारमा हुने अकाल बुढ्यौली, रोग र मृत्युको भय नाशगर्ने अनेक थरी औषधीलाई धारण गर्ने आदिदेव धन्वन्तरिलाई म नमस्कार गर्दछु ।

औषधीका अनेक नाम

अनेकदेशान्तरभाषितेषु सर्वेष्वथ प्राकृतेषु ।
गूढेष्वगूढेषु च नास्ति सङ्ख्या द्रव्याभिधानेषु तथौषधीषु ॥२॥

देश-देशका भाषा अनुसार वा अन्य प्राकृत भाषाका विभिन्न नामले चिनिने पत्ता लागेका र नलागेका असङ्ख्य औषधीहरू छन् ।

ग्रन्थको श्रोत

प्रयोजनं यस्य तु यावदेव तावत्स गृह्णाति यथाऽम्बु कूपात् ।
तथा निघण्टाम्बुनिधेरनन्ताद् गृह्णाम्यहं किञ्चिदिहैकदेशम् ॥३॥

जसरी मानिसले आफ्नो क्षमता र आवश्यकता अनुसार कुवाबाट पानी निकाल्दछ त्यसरी नै म (लेखक) निघण्टुरूपी सागरबाट यो देशमा पाइने केही औषधीहरूका बारेमा जानकारी दिँदैछु ।

औषधीका नाममा हुने भिन्नता

नामोक्तमेकस्य यदौषधस्य नामापरस्यापि तदेव चोक्तम् ।
शास्त्रेषु लोकेषु च यत् प्रसिद्धं न गृह्यतेऽसौ पुनरुक्तदोषः ॥४॥

कुनै एउटा औषधीको जुन नाम हुन्छ अर्को औषधीलाई पनि त्यही नामले चिन्ने गरिन्छ । यो कुरा शास्त्र र लोकव्यवहार दुवैमा प्रसिद्ध भएकोले पुनरावृत्ति भयो वा दोहोरियो भन्न सकिँदैन ।

औषधीको उपयोगमा विचार

तुल्याभिधानानि तु यानि शिष्टैर्द्रव्याणि योगे विनिवेशितानि ।
अर्थाधिकारागमसम्प्रदायैर्विभज्य तर्केण च तानि युज्ज्यात् ॥५॥

जब समान नाम भएका विभिन्न किसिमका औषधिहरू एउटै श्लोकमा उल्लेख भएका हुन्छन् तब उद्देश्य, सन्दर्भ ग्रन्थ र तर्क हेरी उपयोग गर्ने निर्णय गर्नुपर्दछ ।

औषधीको विषयमा जानकारी वर्ग

किरातगोपालकतापसाद्या वनेचरास्तत्कुशलास्तथाऽन्ये ।
विदन्ति नानाविधभेषजानां प्रमाणवर्णाकृतिनामजातीः ॥६॥

सङ्कलन : मोहन प्रसाद सापकोटा

किरात आदि आदिवासी (वा जनजाति), बनमा गाईबस्तु चराउने गोठाला, सन्यासी र अन्य वनस्पति-विज्ञहरूलाई अनेक थरी जडीबुटीको पहिचान, रङ, आकार, नाम र जात थाहा हुन्छ ।

औषधीको उपयोगमा विचार

तेभ्यः सकाशादुपलभ्य वैद्यः पश्चाच्च शास्त्रेषु विमृश्य बुद्ध्या ।
विकल्पयेद् द्रव्यरसप्रभावान् विपाकवीर्याणि तथा प्रयोगात् ॥७॥

यसैले वैद्यले माथि उल्लेखित श्रोतबाट आवश्यक जानकारी लिई शास्त्रीय ज्ञानलाई समेत मन्थन गर्दै औषधिको रस, प्रभाव, वीर्य र विपाकका सम्बन्धमा गहन अध्ययन गरी अनि मात्र प्रयोग गर्नुपर्दछ ।

औषधीको नाममा भिन्नता हुने कारण

प्रायो जनाः सन्ति वनेचरास्ते गोपादयः प्राकृतनामसञ्ज्ञाः ।
प्रयोजनार्था वचनप्रवृत्तिर्यस्मात्ततः प्राकृतमित्यदोषः ॥८॥

सन्यासी, गोठाला र वनमा विचरण गर्ने मानिसले विभिन्न ओखतीको प्राकृत (स्थानीय) भाषामा नाम राखेका हुन्छन् । विचार आदानप्रदान गर्ने माध्यम भएकोले यस्तो भाषामा राखिएको नामलाई कमजोरी भन्न मिल्दैन ।

औषधीको नाममा भिन्नता

एकं तु नाम प्रथितं बहूनामेकस्य नामानि तथा बहूनि ।
द्रव्यस्य जात्याकृतिवर्णवीर्यरसप्रभावादिगुणैर्भवन्ति ॥१॥

कुनै कुनै एउटै नामले धेरै थरी औषधिलाई बुझाउँदछ भने एउटै औषधिका पनि अनेक थरी नाम हुने गर्दछन् । एउटै औषधिको विभिन्न नाम दिँदा त्यसको फरक फरक जात, आकार, रङ, वीर्य, रस, प्रभाव आदि अनुसार दिइएको हुन्छ ।

औषधीको आफूले जानेको नाम मात्र सही हुँदैन

नाम श्रुतं केनचिदेकमेव तेनैव जानाति स भेषजं तु ।
अन्यस्तथाऽन्येन तु वेत्ति नाम्ना तदेव चान्योऽथ परेण कश्चित् ॥१०॥

कसैले कुनै औषधिको एउटै नाम मात्र सुनिरहेको हुन्छ, उ त्यो औषधिलाई त्यही एक नामले मात्र चिन्दछ । तर, कुनै अर्को व्यक्तिले त्यही औषधिलाई अर्कै नामले चिनिरहेको हुन्छ भने तेश्रो व्यक्तिले पुनः अर्कै नामले चिनिरहेको हुन्छ । यसरी नै स्थान अनुसार समान औषधिका नाममा भिन्नता हुने गर्दछ ।

औषधीको पहिचान

बहून्यतः प्राकृतानि नामानि विज्ञाय बहूँश्च पृष्ट्वा ।
दृष्ट्वा च संस्पृश्य च जातिलिङ्गैर्विद्याद्विषग्भेषजमादरेण ॥११॥

यसैले र अधिकाधिक स्थानीय नामहरू सोधखोज गर्दै सङ्कलन गरी स्पर्श, जात, लिङ्ग, विशेषता आदिलाई सावधानीपूर्वक अवलोकन गर्दै औषधिलाई पहिचान गर्नुपर्दछ ।

वन्य औषधीका विज्ञ

गोपालास्तापसा व्याधा ये चान्ये वनचारिणः ।
मूलजातिश्च ये तेभ्यो भेषजव्यक्तिरिष्यते ॥१२॥

गोठाला, तपस्वी, शिकारी, वनवासी वा बनमा गइरहने र कन्दमूल मात्र खाएर बाँच्ने मानिस (मूलजाति) लाई औषधिका बारेमा विशेष जानकारी हुन्छ ।

निघण्टुको महत्व

अनामविन्मोहमुपैति वैद्यो न वेत्ति पश्यन्नपि भेषजानि ।
क्रियाक्रमो भेषजमूलमेव तद्भेषजं चापि निघण्टुमूलम् ॥१३॥

वैद्यहरू नाम नबुझेर अलमलमा पर्दछन् र औषधीको बिरुवा देखेर पनि चिन्न नसक्ने हुन्छन् । यसबेला रोगको उचित व्यवस्थापनका लागि औषधीको भरपर्दो ज्ञान आवश्यक हुन्छ र यो ज्ञान निघण्टु ग्रन्थले दिने गर्दछ ।

सङ्कलन : मोहन प्रसाद सापकोटा

ग्रन्थको महत्व

तस्मान्निघण्टुरित्येष नातिसङ्क्षेपविस्तरः ।
हिताय वैद्यपुत्राणां यथावत्सम्प्रकाश्यते ॥१४॥

त्यसैकारण आयुर्वेदका विद्यार्थीहरूका लागि न धेरै संक्षिप्त न त धेरै विस्तृत अर्थात् ठिक्क खालको यो निघण्टु रचना गरिएको छ ।

द्रव्यावलं विना वैद्यास्ते वैद्या हास्यभाजनम् ।
द्रव्यावल्यभिधानानां तृतीयमपि लोचनम् ॥१५॥
द्रव्यावलिनिविष्टानां द्रव्याणां नामनिर्णयम् ।
लोकप्रसिद्धं वक्ष्यामि यथागमपरिस्फुटम् ॥१६॥

निघण्टु ग्रन्थको ज्ञान बिनाका वैद्यहरू हाँसोका पात्र बन्दछन् । निघण्टु ग्रन्थले वैद्यलाई उपचारका

क्रममा तेश्रो आँखा बनेर सहयोग गर्न सक्दछ । यसैले म यहाँ अर्थात् यस ग्रन्थमा प्रसिद्ध औषधिहरूको प्रचलित र शास्त्रीय नामका बारेमा वर्णन गर्नेछु ।

अनन्तपारस्य निगृह्य किञ्चित्सारं चिकित्सागमसागरस्य ।
उक्तो मया सम्प्रति कल्पयोगाद्व्यावलीनामसमुच्चयोऽयम् ॥१७॥

उपचाररूपी अनन्त सागरबाट केही सार निकाली विभिन्न माध्यमहरूबाट सङ्कलित ज्ञानलाई सूत्र बनाएर मैले यो ग्रन्थ तयार पारेको छु ।

वैद्यले ध्यान दिनुपर्ने कुराहरू

विचार्य दोषौषधदेशकालं वपुर्वयः सात्म्यबलाग्निमात्रम् ।
विकारहेत्वाकृतिसाध्यताश्च ततश्चिकित्सेद्विषगामयार्तिम् ॥१८॥

बुद्धिमान् वैद्यले रोगको अवस्था, ओखती, देश, काल, शारीरिक अवस्था, उमेर, शरीरले सहने वा नसहने अवस्था, शारीरिक बल, पाचन शक्ति, कारण, आकार र ठिक हुने वा नहुने अवस्था हेरी रोगीको उपचार शुरू गर्नुपर्दछ ।

ज्वराभिभूते षडहे व्यतीते विषक्वदोषे कृतलङ्घनाद्यैः ।
यद्द्वेषजं वैद्यवरप्रयुक्तं निःसंशयं हन्त्यचिरेण रोगान् ॥१९॥

जस्तै : जरो आएको छ दिन बितिसकेको अवस्थामा अर्थात् विकार पाकिसकेको अवस्थामा विज्ञ वैद्यबाट गराइएको लङ्घनले निश्चय नै रोगीलाई रोगबाट मुक्त गराउँदछ ।

अथ गणद्रव्याबलिः
अथ गुडूच्यादिः प्रथमो वर्गः
(गुर्जोआदिको पहिलो वर्ग)

कफजन्य जरोको ओखती

गुडूच्यातिविषामूर्वामञ्जिष्ठाधन्वयासकैः । वासाखदिरनिम्बैश्च पिबेत्क्वाथं कफज्वरे ॥१॥

कफजन्य जरो आउँदा गुर्जो (गुडूची), अतीस (अतिविषा), मुज (मूर्वा), मजिठो (मञ्जिष्ठा), सिस्नुविशेष (धन्वयासक, दुरालभा), असुरो (वासा), खयर (खदिर) र नीम (निम्ब) को काँढापानी पकाएर खानू ।

पित्तजन्य जरोको ओखती

किराततिक्तकटुकामुस्तापर्पटिकाम्बुभिः । पटोलद्विनिशाभ्यां च पिबेत्क्वाथं तु पैत्तिके ॥२॥

पित्तजन्य जरो आउँदा चिराइतो (किराततिक्त), पिरेँ (कटुका), नागरमोथे (मुस्ता), पित्तपापडा (पर्पटिक), सुगन्धबाल (अम्बु), परबर (पटोल), हलेदो र चुत्रो (द्विनिशा) को काँढापानी पकाएर खानु पर्दछ ।

वातजन्य जरोको ओखती

शठीपुष्करभार्गीभिः पाठाकट्फलदारुभिः ।
कत्तृणेनाथ शृङ्ग्या च पिबेत्क्वाथं तु वातिके ॥३॥

वातजन्य जरो आउँदा कालो हलेदो (शठी), नीलकमल (पुष्कर), चिन्डे (भार्गी), गुन्दरगानु (पाठा), काफल (कट्फल), देवदार (दारु), नेपाले उशीर (कत्तृण) र कर्कटशृङ्गीको काँढापानी पकाएर खानू ।

सन्निपातजन्य जरोको ओखती

पण्यौ बृहत्यौ गोकण्टो बिल्वोऽग्निमन्थनोऽरलुः ।
काश्मर्यः पाटला चेति सन्निपातहरो गणः ॥४॥

दुई थरी पर्णी अर्थात् सतिबयर (पृश्निपर्णी) र बनमास (शालपर्णी), दुई थरी बृहती अर्थात् ठूलो र सानो कण्टकारी, ओदनेकाँडो (गोकण्ट), बेल (बिल्व), गिनेरी (अग्निमन्थन), टटलो (अरलु), खमारी (काश्मर्य) र पाडरी (पाटला) : यी सन्निपात नाशक ओखतीहरूको समूह (गण) हो ।

रक्तपित्त नाशक ओखती

जीवकर्षभकौ मेदे काकोल्यौ द्वे च योजिते ।
द्वे सुपण्यौ च जीवन्ती मधुकं रक्तपित्तनुत् ॥५॥
(रक्तपित्तहरो वृष्यो मधुरोऽयं गणः स्मृतः)

जीवक र ऋषभक, मेदा र महामेदा, कल्ले लहरो र दूधे कल्ले लहरो, बनमास र बनमुगी (सुपण्यौ, माषपर्णी र मुद्गपर्णी), जिरीको साग (जीवन्ती) र महुवा (मधुक) : यी ओखतीले रक्तपित्त नाश गर्दछन् । (रक्तपित्त नाश गर्ने तथा वीर्यवर्धक यी औषधीको समूहलाई “मधुर-गण” भनिन्छ) ।

सङ्कलन : मोहनप्रसाद सापकोटा

रक्तवात नाशक ओखती

ऋद्धिर्विदार्यात्मगुप्ता शितिवाराश्मभेदकौ ।
श्रावण्यौ सारिवे चोभे बाकुची रक्तवातनुत् ॥६॥

ऋद्धि, वृद्धि, काउसो, सिरुबारे (सुनिषण्णक, शितिवार), पाषाणभेद, सानो र ठूलो गोरखमुण्डी (श्रावण्यौ), दुई थरी अनन्तमूल (सारिवे चोभे) र बाकुचीले रक्तवात ठिक गर्दछन् ।

कफजन्य रोगमा बान्ता गराउनका लागि उपयुक्त ओखती

मदनेक्ष्वाकुजीमूतस्त्रपुसं कृतवेधनम् ।
धामार्गवोऽश्मन्तकश्च कोविदारो विषाणिकः ॥७॥
शणपुष्पी तथा बिम्बी स्निग्धस्विन्नवतां ततः ।
श्रेष्ठमेतत्प्रयोक्तव्यं वमनं श्लेष्मरोगिणाम् ॥८॥

मइनफल (मदन), तीतोतुम्बा (डल्ले लौका, इक्ष्वाकु), नागरमोथे (जीमूत), काँक्रो (त्रपुसम्), घिरौँलो (कृतवेधनम्), पाटेघिरौँलो (धामार्गव), काभ्रो (अश्मन्तक), कोइरालो (कोविदार), भेडासिङ्गी (विषाणिक), सनपाट (शणपुष्पी) र गोलकाँक्री (बिम्बी) : यी औषधीहरू स्नेहन र स्वेदन गराएपछि बान्ता गराउनका लागि उपयोगी हुन्छन् । यी विशेषगरी कफजन्य रोग लागेका बिरामीलाई बान्ता गराउन उत्तम हुन्छन् ।

पित्तजन्य रोगमा विरेचन गराउनका लागि उपयुक्त ओखती

त्रिफलाऽऽरग्वधो दन्ती द्रवन्ती नीलिनी सुधा ।

सप्तला काञ्चनक्षीरी त्रिवृता चेन्द्रवारुणी ॥१॥

विशाला त्रायमाणा च शङ्खिन्यङ्गोल एव च । श्रेष्ठं पित्तविकारेषु योज्यमेतद्विरेचनम् ॥१०॥

हरो, बरो र अमला (त्रिफला), राजवृक्ष (आरग्वध), जमालगोटा (दन्ती), मुसाकाने भार (द्रवन्ती), नीलो पुनर्नवा वा नीर ? (नीलिनी), अमला वा हरो वा गुर्जो वा सिउँडीविशेष वा वनमास वा मरुईलहरो मध्ये एक (सुधा), पहुँला नेवारी फूल वा हात्तीकाने वा रिठो वा रातीगेडीमध्ये एक (सप्तला), बनकाँडे थाकल (काञ्चनक्षीरी), सेतो निसोथ (त्रिवृता), ठूलो ऐरेलु (इन्द्रवारुणी), ऐरेलुविशेष (विशाला), मुडिलो (त्रायमाणा), ऐरेलुविशेष (शङ्खिनी) र अम्फीफल (अङ्गोल) : यी औषधीहरू पित्तजन्य रोगमा विरेचन गराउन प्रयोग गर्नु उत्तम हुन्छ ।

नाकमा नस हाल्न उपयुक्त ओखती

अपामार्गस्तेजवती तथा ज्योतिष्मतीफलम् ।

योज्यं नस्यं कृमिव्याधौ शिरोरोगे च पीनसे ॥११॥

पेटमा कीरा पर्दा, टाउकाका रोगमा र पिनासमा दतिवन (अपामार्ग), चाभोविशेष (तेजवती) र मालकागुनु (ज्योतिष्मती) को फलको धुलोलाई नाकमा नस हाल्नका लागि प्रयोग गर्नु ।

तेलविशेष

रास्नाऽश्वगन्धा वर्षाभूस्तथा सहचरो बला ।

प्रसारणीशतावयविरण्डश्चापि सर्वतः ॥१२॥

आस्थापनं कल्पमेतैस्तथा वातानुलोमनम् ।
तैलं कषायपिष्टैश्च गोक्षीरैः साधितं जयेत् ॥१३॥
वातशोणितमर्शांसि ज्वरमुन्मादमर्दितम् ।
कट्यूरुपार्श्वपृष्ठार्ति शोषं शोफं सेवेपथुम् ॥१४॥

गाईतिहारे वा सेतो कण्टकारी वा काकजङ्घा वा तीतेपाती (रास्त्रा)मध्ये एक ?, अश्वगन्धा, रातो पुनर्नवा (वर्षाभू), पहुँलो कटसुरैया (सहचर), नीलो कटसुरैया वा बलु (बला), बिरी लहरो (प्रसारणी), कुरिलो (शतावरी) र अँडिर (एरण्ड) तथा गाईको दूध हाली तयार पारिएको तेललाई आस्थापन वस्ति र वायुको उल्टो गति ठिक गर्न प्रयोग गर्नु । यो तेल वातरक्त (वातशोणित), अल्काई (अर्श), जरो (ज्वर), पागलपन (उन्माद), अनुहार आदिको आंशिक पक्षाघात (अर्दित), कम्मरको दुखाई, तिघ्राको दुखाई, कोखको दुखाई, ढाडको दुखाई, सुकेनास (शोष), सुजन (शोफ) र शरीर काम्ने रोग (वेपथु) मा प्रयोग गर्न सकिन्छ ।

गुडूच्यादिरयं वर्गः प्रथमः परिकीर्तितः ।
ऊर्ध्वाधोदोषहरणः सर्वामयविनाशनः ॥१५॥

सङ्कलन : मोहन प्रसाद सापकोटा

शरीरको माख्लो र तल्लो भागमा त्रिदोषले हुने सबै किसिमका रोगहरू नाश गर्ने यो गुडूच्यादि नामक पहिलो वर्ग पूर्ण भयो ।

॥ इति गुडूच्यादिः प्रथमो वर्गः ॥

॥ गुडूच्यादि नामक पहिलो वर्गको नेपाली भावानुवाद पूर्ण भयो ॥

॥ अथ शतपुष्पादिर्द्वितीयो वर्गः ॥ (दोश्रो शतपुष्पादि वर्ग)

शतपुष्पादि धिउ

शतपुष्पा मिशिर्वचा हपुषा कृमिहा तथा ।
सवत्सकश्चेन्द्रयवा त्रिक्षारा लवणानि च ॥१६॥
हिङ्गुर्हिङ्गुशिवाटी च तुम्बुरुत्वक्फलानि च ।
एभिः सुसाधितं सर्पिः पयसा योनिदोषनुत् ॥१७॥
मूत्रकृच्छ्रार्तिशूलघ्नं वन्ध्यानामपि गर्भदम् ।
ग्रहण्यर्शः पाण्डुरोगप्लीहगुल्मोदरापहम् ॥१८॥

पहाडे सुप (शतपुष्पा), मदिसे सुप (मिशि), बोभो (वचा), हपुषा, वायुबिडङ्ग (कृमिहा), ठूलोकुरो (वत्सक), इन्द्रजौ (इन्द्रयव), त्रिक्षार, नुनहरू, हिङ्गु (हिङ्गु), जिम्बु (हिङ्गुशिवाटी) र टिमु (तुम्बुरु) : यी औषधीका बोक्रा र फललाई गाईको दूधमा हाली तयार पारिएको घिउले स्त्री-जननेन्द्रियका रोगहरू नाश गर्दछ । यो औषधीले मूत्रकृच्छ्र र शूल रोग नाश गर्दछ तथा बाँझी आईमाईलाई पनि गर्भ बसाउन मद्दत गर्दछ । यसले ग्रहणी, अल्काई, पाण्डुरोग, फियोको सुजन, गुल्म र पेटका रोगहरू समेत नाश गर्दछ ।

अग्निप्रद चूर्ण

सूक्ष्मैला केसरं त्वक् च पत्रं तालीसकं तुगा ।
पृथ्वीका दाडिमं धान्यं जीरकं च द्विकार्षिकम् ॥१९॥
पिप्पली पिप्पलीमूलं चव्यचित्रकनागरम् ।
मरीचं दीप्यकं चैव वृक्षाम्लं साम्लवेतसम् ॥२०॥
अजमोदाऽजगन्धे च दधित्थं चेति कार्षिकम् ।
प्रदेयमिह शुद्धायाः शर्करायाश्चतुष्पलम् ॥२१॥
चूर्णमग्निप्रदं नाम परमं रुचिवर्धनम् ।
प्लीहाकासामयार्शांसि श्वासं शूलं ज्वरं वमिम् ॥२२॥
निहन्ति दीपयत्यग्निं बलवर्णकरं परम् ।
वातानुलोमनं हृद्यं कण्ठजिह्वाविशोधनम् ॥२३॥

सुकुमेल (सुकुमैला), केसर, दालचिनी (त्वक्), तेजपात (पत्र), सुनपाती (तालीसक), वंशलोचन (तुगा), अलैंची (पृथ्वीका), दारिम (दाडिम), धनियाँ (धान्यम्) र जिरा (जीरकम्) दुई दुई कर्ष (दुई दुई तोला) तथा पिप्ला (पिप्पली), पिप्लाको जरा (पिप्पलीमूलम्), चाभो (चव्य), चितु (चित्रक), अदुवा (नागरम्), मरिच (मरीचम्), ज्वानु (दीप्यकम्), वृक्षाम्ल, अम्लवेत, अजमोदा, अजगन्धा र कैथ (दधित्थम्) गरी एक एक कर्ष (एक एक तोला) तथा मिश्री (शर्करा) सोह तोला (चतुष्पल) को धूलो मिसाउनु । यो अति रुचिप्रद धुलोलाई “अग्निप्रद चूर्ण” भनिन्छ । यो धुलोले फियोका रोग, खोकीजन्य रोग, अल्काई, दम, शूल, जरो र वाकवाकी नाश गर्दछ । यसले पाचनशक्ति, बल र वर्ण धेरै नै बढाउँदछ ।

शतपुष्पादिको वर्गः द्वितीयः परिकीर्तितः ।
कायाग्निदीपनो बल्यो वक्त्रसौगन्ध्यतीक्ष्णकृत् ॥२४॥

शरीरको पाचनशक्ति बढाउने, बल बढाउने र मुखको सुगन्ध र क्षमता तिखो बनाउने दोश्रो शतपुष्पादि वर्गका बारेमा बताइयो ।

सङ्कलन : मोहन प्रसाद सापकोटा
॥ इति शतपुष्पादिद्वितीयो वर्गः ॥

॥ शतपुष्पादि नामक दोश्रो वर्गको नेपाली भावानुवाद पूर्ण भयो ॥

॥ अथ चन्दनादिस्तृतीयो वर्गः ॥ (तेश्रो चन्दनादि वर्ग)

महासुगन्ध तेल

चन्दनं कुङ्कुमोशीरं प्रियङ्गुस्तुणिरोचना ।
तुरुष्कागरुकस्तूर्यः कर्पूरो जातिपत्रिका ॥२५॥
जातिकङ्कोलपूगानां लवङ्गस्य फलानि च ।
नलिका नलदं कुष्ठं हरेणुस्तगरं प्लवम् ॥२६॥
नखं व्याघ्रनखं स्पृक्का बोलो दमनकं मुरा ।
स्थौणेयकं चोरकं च शैलेयं त्वेलवालुकम् ॥२७॥
सरलं सप्तपर्णं च लाक्षा तामलकी तथा ।
लामज्जकं पद्मकं च धातक्याः कुसुमानि च ॥२८॥
प्रपौण्डरीकं कर्चूरं समांशैः सममात्रिकैः ।
महासुगन्धमित्येतत् प्रस्थं तैलस्य साधयेत् ॥२९॥
प्रस्वेदमलदौर्गन्ध्यकण्डुकुष्ठहरं परम् ।
अनेनाभ्यक्तगात्रस्तु वृद्धः सप्ततिकोऽपि वा ॥३०॥
युवा भवति शुक्राढ्यः स्त्रीणामत्यन्तवल्लभः ।
सुभगो दर्शनीयश्च गच्छेच्च प्रमदाशतम् ॥३१॥
वन्ध्याऽपि लभते गर्भं षण्ढोऽपि पुरुषायते ।
अपुत्रः पुत्रमाप्नोति जीवेच्च शरदां शतम् ॥३२॥

रक्तचन्दन (चन्दन), केसर (कुङ्कुम), खसखस (उशीर), दहीगुयैलो (प्रियङ्गु), टुनी (तुणि), रक्तकमल वा वंशलोचन वा गोरोचनमध्ये एक ? (रोचना), शिलारस (तुरुष्क), धूपी (अगरु), कस्तूरी, कपूर, जाइपत्री (जातिपत्रिका), जाइफल (जाति), बढहर (कङ्कोल), सुपारी (पूग), ल्वाङ्को फल (लवङ्ग फल), नरिचो (नलिका), पहेँलो उशीर वा जटामसी ? (नलद), कूट (कुष्ठ), केराउ (हरेणु), तगर, नागरमोथे (प्लव), नखी (नख), सानो नखी वा नखीविशेष (व्याघ्रनख), कपुरपाती वा लज्जावती वा मालती वा घोडताप्रे वा गुलाफ मध्ये एक ? (स्पृक्का), बोल, दमना भार (दमनक), कालो जटामसी (मुरा), भेडेकुरो (स्थौणेयक), गन्धपालाविशेष (चोरक), पत्थरकुङ्कुम (शैलेय), सिलटिमुर् (एलवालुक), सल्लो (सरल), छतिवन (सप्तपर्ण), लाहा (लाक्षा), भुइँअमला (तामलकी), लामज्जक, पैयुँ (पद्मक), धयैराको फूल (धातकी कुसुमानि), धूपी (प्रपौण्डरीक) र कचुर (कर्चूर) : यी औषधी

समान भाग र समान मात्रामा एक प्रस्थ तिलको तेलमा हाली पकाएर “महासुगन्ध तेल” तयार पार्नु । यो तेल शरीरमा दल्नाले पसिना धेरै आउने रोग, मलको दुर्गन्ध, शरीर चिलाउने रोग र कुष्ठरोगलाई विशेष किसिमले निको पार्दछ । सत्तरी वर्षको वृद्ध नै भएपनि शरीरमा यो तेल दिनहुँ दलेर मालिस गर्दछ भने उ जवान सरह बन्दछ, उसको वीर्य बढ्दछ र स्त्रीहरूको प्रिय बन्दछ । उ सुन्दर, हेरिन्छु जस्तो हुन्छ र सय वटी स्त्रीसँग पनि रमण गर्न सक्दछ । यो तेल दल्ने गरेकी स्त्री बाँभी भए गर्भवती हुन्छे, पुरुष नपुंसक भए मर्द हुन्छ, छोरो नहुनेले छोरो पाउँदछ र सय वर्ष बाँच्दछ ।

विद्रावण तेल

मनःशिला ससिन्दूरं सौराष्ट्री गन्धकद्वयम् (गन्धकोमची) ।

ससिक्थकः सर्जरसः कासीसं पुरकुन्दरु ॥३३॥

श्र्याह्वः सल्लकिकम्पिल्लं सकङ्कुष्ठमरुष्करम् ।

एभिर्गोमूत्रसंसिद्धं कटुतैलं विपाचयेत् ॥३४॥

पामाविचर्चिकादद्रुकण्डूकुष्ठकृमित्रणान् ।

अभ्यङ्गान्नाशयत्येव नाम्ना विद्रावणं मतम् ॥३५॥

मनशिला, सिन्दूर, गोपीचन्दन (सौराष्ट्री), गन्धक र अम्बष्ठा (गन्धकद्वयम्), मैत्र (सिक्थक), सालधूप (सर्जरस), हिराकसी (कासीस), गोकुलधूप (पुर), काँडे सल्लाको खोटो (कुन्दुरु), श्र्याह्व (?), काँडेसल्लो (सल्लकि), सिंदूरे (कम्पिल्ल), कङ्कुष्ठ (?) र भलायो (अरुष्कर) : यी औषधीलाई गहुँतमा भिजाई ससिउँको तेलमा (कटुतैल) पकाउनु । यसरी निकालिने तेललाई “विद्रावण तेल” भनिन्छ । यो तेल शरीरमा दल्नाले पामारोग, विचर्चिका रोग, दाद, लुतो, कुष्ठरोग र कीरा नाश गर्दछ ।

गाजल विशेष

तुत्थं तु ताप्याञ्जनधातुफेनैश्चक्षुष्यरीतीकतरोध्रशङ्खैः ।

नेत्राञ्जनं काचमलार्तिकण्डूरुग्दाहतैर्मिर्यहरं परं च ॥३६॥

नीलोतुथो (तुत्थ), सुनामक्खी (ताप्य), सुर्मा बनाइने खनिज (अञ्जन), गेरु (धातु), समुद्रफेन (फेन), गाजल (चक्षुष्य, सुर्मा), पुष्पाञ्जन (रीति), निर्मली (कत), लोध (रोध्र) र शङ्ख : यी ओखती मिसाएर बनाइएको गाजलले काचरोग, चिप्रासम्बन्धी रोग, आँखा चिलाउने रोग, आँखामा हुने डाह र तिमिररोग नाश गर्दछ ।

**चन्दनादिरयं वर्गस्तृतीयः परिकीर्तितः ।
श्रीमतां भोगिनामर्हः प्रायो गन्धगुणाश्रयः ॥३७॥**

विशेषतः धनीमानीले उपभोग गर्ने अत्तर आदि सुगन्धका बारेमा बताइएको यो तेश्रो चन्दनादि वर्ग पूर्ण भयो ।

॥ इति चन्दनादिस्तृतीयो वर्गः ॥

॥ चन्दनादि नामक तेश्रो वर्गको नेपाली भावानुवाद पूर्ण भयो ॥

सङ्कलन : मोहन प्रसाद सापकोटा

॥ अथ करवीरादिश्चतुर्थो वर्गः ॥ (करवीरादि चौथो वर्ग)

करवीरादि तेल

करवीरस्त्वेडगजो धत्तूरो लाङ्गली तथा ।
भृङ्गार्कबूककाकाह्वा मूलकं शिगुसर्षपौ ॥३८॥
भूतिः सुरसजम्बीरं कुठेरः सुमुखासुरी ।
एभिः सुतक्रसौवीरैर्दद्रुमण्डलतां जयेत् ॥३९॥
सिध्मातिपामापिटकाकृमिकुष्ठानि नाशयेत् ।
एभिः गोमूत्रसंसिद्धं कटुतैलं विपाचयेत् ॥४०॥

कणेल (करवीर), ताप्रे (एडगज), धत्तूरो (धत्तुर), कलिहारी वा मजिठो वा नरिवल वा सतिबयर वा हलहले ? (लाङ्गली), भृङ्गीराज (भृङ्ग), आँक (अर्क), ठूलो मौलसिरी (बूक), काकाह्वा ?, खसखस वा मूला ? (मूलक), सजिवन (शिगू), सर्सिउँ (सर्षप), भूति ?, सुरस ?, काठे ज्यामिर (जम्बीर), बाबरी (कुठेर), सेतो तुलसी (सुमुख) र रायो (आसुरी) : यी औषधीलाई तक्र, सौवीर, गहुँत र पिरो तेल (कटुतेल) हाली तेल निकालेर लगाउँदा गोलाकार दादलाई जित्दछ । यो तेलले सिध्म, कडा खालको पामा, पिटका, पेटका कीरा र कुष्ठ नाश गर्दछ ।

कीरानाशक ओखती

काण्डीरजलपिप्पल्यौ रसोनो गृञ्जनं तथा ।
पलाण्डुर्दुर्दुमश्चैव योज्यं कृमिविनाशनम् ॥४१॥

करेला लहरो (काण्डीर), जलपिप्ला (जलपिप्पली), लसुन (रसोन), छ्यापी (गृञ्जन), प्याज (पलाण्डु) र प्याज विशेष ? (दुर्दुम) : यी ओखती (पेटका) कीरा मार्न प्रयोग गर्नु ।

नस हाल्न प्रयोग हुने ओखती

कदली सिन्दुवारौ निर्गुण्डी गिरिकर्णिका ।
जन्तुकारी च पद्मा च वाराही मांसरोहिणी ॥४२॥

वन्दाकादित्यकान्ता च नाकुल्यौ वृद्धदारकः ।
 रक्तपाद्यौ शङ्खपुष्पी तण्डुली कासमर्दकः ॥४३॥
 पिष्टैस्तु बस्तमूत्रेण योज्यमेतद् गदे ज्वरे ।
 नस्ये धूमप्रयोगेषु सर्वभूतग्रहापहम् ॥४४॥
 उन्मादमोहज्वरकृच्छ्रलूताजलाग्निचोरोरगवृश्चिकादीन् ।
 उपद्रवानेष विषाणि हन्ति स कृत्रिमस्थावरजङ्गमानि ॥४५॥

केरा (कदली), सेतो फुल्ने सिमाली (सिन्धुवार), नीलो फुल्ने सिमाली (निर्गुण्डी), अपराजिता (गिरिकर्णिका), कालीलहरो वा माहुरमध्ये एक ? (जन्तुकारी), ल्वाङ् वा थलकमल वा चिन्डे वा मज्जिठोमध्ये एक ? (पद्मा), सेतो कुभिण्डो वा कागुनुमध्ये एक ? (वाराही), ऎसेलु (मांसरोहिणी), ऎभेरु (वन्दाक), हुहुरे (आदित्यकान्ता), ऐरेलुविशेष (नाकुली), बाटुलपाते (वृद्धदारक), बर (रक्तपाद), शङ्खपुष्पी, कालानाथ (तण्डुली) र करौंजी (कासमर्द) : यी औषधी बाख्रीको मूत्रमा पिसेर सबै खालका जरोमा प्रयोग गर्नु । यसलाई नसका रूपमा प्रयोग गर्न सकिन्छ । यसलाई सबै खालका भूतबाधा र ग्रहबाधा नाश गर्न धूपका रूपमा प्रयोग गर्न पनि सकिन्छ । यसले पागलपन (उन्माद), भ्रम (मोह), जरो (ज्वर), कृच्छ्र, माकुरो, पानी, आगो, चोर, सर्प, बिच्छी आदिले मच्चाउने उपद्रो तथा प्राकृतिक र कृत्रिम विषको असर नाश गर्दछ ।

रक्तपित्तमा प्रयोग गर्ने ओखती

इक्षवस्त्रिविधाः काशो दर्भौ द्वौ च शरस्तथा ।
 वंशो नलश्च दूर्वा च श्वेतनीलारुणोत्पलम् ॥४६॥
 पद्मिनी पद्मबीजं च मृणालं मूलकेसरम् ।
 एतद्धि रक्तपित्तोत्थे विकारे परमं हितम् ॥४७॥

तीन प्रकारका उखु (?), काँस (घाँस), सानो र ठूलो जातको कुश (दर्भौ द्वौ), ढड्डी भार (शर), बाँस (वंश), निगालो वा नर्कट (नल), दूबो (दूर्वा), सेतो कमल, नीलकमल, अरुण रङ्को कमल, सम्पूर्ण अवयव सहितको कमलको बोट (पद्मिनी), कमलका बीज, कमलको डाँठ, कमलको जरा, कमलको केसर : यी औषधी रक्तपित्त र यसले गर्ने विकारमा (कसै कसैले रक्तविकार र पित्तविकार भनी अर्थ लगाएको) प्रयोग गर्नु लाभदायक हुन्छ ।

करवीरादिको वर्गश्चतुर्थः समुदाहृतः ।

नानाव्याधिप्रशमनो नानाद्रव्यसमाश्रयः ॥४८॥

अनेक थरी रोग ठिक गर्ने अनेक पदार्थ समावेश भएको करवीरादि नामक चौथो वर्ग बताइयो ।

॥ इति करवीरादिश्चतुर्थो वर्गः ॥

॥ करवीरादि नामक चौथो वर्गको नेपाली भावानुवाद पूर्ण भयो ॥

सङ्कलन : मोहन प्रसाद सापकोटा

॥ अथ आम्रादिवर्गः ॥

फलफूलको प्रयोग

आम्राम्रातकजम्बीरं नारङ्गं बीजपूरकम् ।
अम्लिकाऽऽरुकभव्यानि तिन्दुकश्च विकङ्कतम् ॥१॥
मधूकं पीलु खर्जूरं द्राक्षाऽक्षोडपरुषकम् ।
तूदं पालेवतं तालं प्रियालं नारिकेलकम् ॥२॥
वटाश्वत्थप्लक्षजम्बूदुम्बरं फल्गु क्षीरिणी ।
श्लेष्मातकः शमी कोलं करीरं करमर्दकम् ॥३॥
एषां फलानि हृद्यानि यथाकालर्तुकानि च ।
समाहृत्य प्रयोज्यानि बलवर्णाग्निवृद्धये ॥४॥

आँप (आम्र), अमारो (आम्रातक), फणिर (जम्बीर), सुन्तला (नारङ्ग), बीजपूरक (बिमिरो), अमिली (अम्लिका), आरु (आरुक), लिची वा कमरख वा नीम (भव्य), तिँदु (तिन्दुक), मयल (विकङ्कत), महुवा (मधूक), दाँते ओखर (पीलु), खजूर (खर्जूर), दाख (द्राक्षा), ओखर ? (अक्षोड), फाल्सा (परुषक), किम्बू (तूद), ज्यामिर (पालेवत), ताड (ताल), चिरौजी (प्रियाल), नरिवल (नारिकेल), बर (वट), पीपल (अश्वत्थ), पाखरी (प्लक्ष), जामुनू (जम्बू), डुम्री (उदुम्बर), खसेटो वा डुम्रीविशेष (फल्गु), खमारी (क्षीरिणी), लप्सी (श्लेष्मातक), शमी, चाभो वा अगुजे बयर (कोल), करीर र पनेरु (करमर्दक) : मुटुका लागि हितकर हुने यी फलफूललाई काल र ऋतु अनुसार टिपी लेराएर बल, वर्ण र पाचनशक्ति बढाउन प्रयोग गर्नु ।

रुखका बोक्राको प्रयोग

कदम्बौ द्वौ करञ्जौ च शिरीषार्जुनवेतसाः ।
वरुणः शिंशपा सर्जः शाल्मली मुष्ककोऽरिमः ॥५॥
एषां पयः प्रविष्टानि वल्कलानि च योजयेत् ।
विसर्पव्रणरुग्दाहशोफार्तानां प्रशान्तये ॥६॥

दुई थरी कदम (कदम्बौ द्वौ), दुई थरी करञ्ज, शिरीष, काउलो (अर्जुन), पानीबेत (वेतस), सिप्लिकान (वरुण), सिसौ (शिंशपा), साज (सर्ज), सिमल (शाल्मली), लोधविशेष (मुष्कक) र गनाउने खयर

(अरिमेद ?, अरिम) : यी औषधीहरूको दूध पसेको बोक्राहरूलाई विसर्प, घाउखटिरा, डाह र सुजन शान्त पार्न प्रयोग गर्नु ।

नोट : के.यन.स्वामीले तीन थरी र आचार्य बालकृष्णले अनेक थरी कदमका बारेमा बताएका छन् । राज निघण्टुमा चार थरी कदमको चर्चा गरिएको छ । यहाँ दुई थरी कदम भनेर कदम, धाराकदम्ब, धूलीकदम्ब र भूमिकदम्ब मध्ये कुन कुन कदमलाई लिन खोजिएको स्पष्ट छैन । यसैगरी करञ्ज पनि छ थरी हुन्छन् । यहाँ कुन दुई थरी करञ्जको नाम लिइएको हो यकीन गर्न सकिएन ।

पुष्पवर्गः

सुगन्धका लागि प्रयोग हुने फूल

मल्लिका वार्षिका जाती वासन्ती गैष्मचम्पकाः ।

तरुण्यौ यूथिका कुन्दशतपत्रातिमुक्तकाः ॥७॥

बकुलः किङ्किरातश्च तिलकाशोककिंशुकाः ।

पुष्पाण्येतानि धार्याणि हृद्यसौगन्ध्यमिच्छता ॥८॥

लहरे बेली (मल्लिका), वर्खे बेली (वार्षिका), जाई (जाती), सानो नेवारी फूल (वासन्ती), गैष्म (?), चाँप (चम्पक), तरुण्यौ (?), जुही (यूथिका), कुन्द, कमल (शतपत्र), राजबेली (अतिमुक्तका), मौलसिरी (बकुल), किङ्किरात, चुवा (तिलक) अशोक र पल्लोश (किंशुक) : मनमोहक सुगन्ध चाहनेले यी फूलहरूलाई धारण वा प्रयोग गर्नु ।

आम्रादिरयमुद्दिष्टो वर्गः श्रेष्ठस्तु पञ्चमः ।

हर्षणो गन्धसौरभ्यफलत्वक्पुष्पसंश्रयः ॥९॥

मनमोहक सुगन्ध, रस, फल, बोक्रा र फूलहरूका बारेमा उल्लेख भएको पाँचौँ आम्रादिवर्ग बताएर सकियो ।

॥ इति आम्रादिः पञ्चमो वर्गः ॥

॥ पाँचौँ आम्रादिवर्गको नेपाली भावानुवाद पूर्ण भयो ॥

॥ अथ सुवर्णादिवर्गः ॥ (सुवर्णादिवर्ग)

धातुको प्रयोग

सुवर्णरौप्यताम्राणि त्रपु रीतिश्च सीसकम् ।
कांस्यं लौहं च योज्यानि गरदोषप्रशान्तये ॥१॥

सुन (सुवर्ण), चाँदी (रौप्य), तामा (ताम्र), राड (त्रपु), पित्तल (रीति), सिसा (सीसक), काँस (कांस्य) र फलाम (लौह) : कृत्रिम विषको असर नाश गर्न यी धातुहरूको प्रयोग गर्नु ।

रत्नको प्रयोग

रसवैक्रान्तगारुत्मं हीरमुक्ताप्रवालकम् ।
क्षयं पाण्डुमतीसारं गरलादि विषं जयेत् ॥२॥

सङ्कलन : मोहन प्रसाद सापकोटा

पारो (रस), खानीबाट निकाल्दा विकृत भएको हीरा (वैक्रान्त), पन्ना (गारुत्म), हीरा (हीर), मोती (मुक्ता) र मुगा (प्रवाल) : यी रत्नहरूले क्षयरोग, पाण्डु, अतिसार र सर्प आदिको विषविकारलाई जित्दछन् ।

अनाज, दलहन आदिको गुण

शालिव्रीहियवा मुद्गा राजमाषाश्च कोद्रवाः ।
नीवारश्यामकौ कङ्गुर्वनमुद्गाऽऽढकी तथा ॥३॥
श्लेष्मपित्तहरा ह्येताः शीतलाः शुक्रला अपि ।
तद्वन्मसूरीकां हन्ति मसूरीं ग्रहणीं तथा ॥४॥

मार्सीधान (शालि), व्रीहि, जौ (यव), मुगी (मुद्ग), राजमा (राजमाष), कोदो (कोद्रव), नाभो धान (नीवार), श्यामाधान (श्यामक), कागुनु (कङ्गु), वनमुगी (वनमुद्ग) र रहर (आढकी) : यी अनाजले कफविकार र पित्तविकार नाश गर्दछन् तथा शीतल गर्दछन् । यी वीर्यवर्धक पनि हुन्छन् । यसैगरी मुसुरोले दादुरा र ग्रहणी रोग नाश गर्दछ ।

गोधूमधान्यमाषाद्या विज्ञेया गुरुशीतलाः ।
वृष्याः मलकराः प्रोक्ताः स्निग्धवातविनाशनाः ॥५॥
चणका वर्तुलाः प्रोक्ता वातला रक्तपित्तहाः ।
कुलित्थाः श्वासहिक्कार्शः कफशुक्रानिलापहाः ॥६॥

गहुँ (गोधूम), धान, मास आदि अनाज पचाउन कठिन, शीतल गर्ने, वीर्यवर्धक, दिसा बढाउने तथा चिल्ला र वातविकार नाशक हुन्छन् । चना (चणक) र केराउ (वर्तुल) वातविकार गर्ने र रक्तपित्त नाशगर्ने गुणका हुन्छन् । गहतले दम, बाडुली, अल्काई, कफविकार, शुक्र र वातविकारलाई नाश गर्दछ ।

तरल र लेस्याइला पदार्थको प्रयोग

तैलं सर्पिः पयस्तक्रं क्षौद्रं युक्तं सकाञ्जिकम् ।
सुरासवं मर्जिका च जलं च विविधं शुभम् ॥७॥
पानाय परिषेकाय नस्यायाऽऽलोडनाय च ।
भेषजानां प्रयोज्यं स्यात् प्रयोगेषु यथाविधि ॥८॥

तेल, घिउ, दूध, तक्र, मह, काँजी, सुरा, आसव, मर्जिका (?) र अनेक थरी पानीलाई पिउन, सेक्न, नस हाल्न, मथ्न र विविध ओखतीका लागि विधिपूर्वक प्रयोग गर्नु ।

शरीर

पुरुषः स्त्रीवपुर्वाचा वातपित्तकफास्तथा ।
मोहं प्रकृतिरेतानि शरीरं यैश्च तिष्ठति ॥९॥

उल्लेखित विविध ओखतीहरू पुरुष वा स्त्रीको शरीर, बोली, वात, पित्त, कफ, मोह र प्रकृति हेरी प्रयोग गर्नु (?) ।

सात धातु

अस्थि मांसं वसा रक्तं शुक्रं मज्जा तथा रसः ।
इमानि सप्तधातूनि ज्ञातव्यानि भिषग्वरैः ॥१०॥

वैद्यजनले हाड, मासु, बोसो, रगत, शुक्र, मासी र रस : यी सात धातुहरू हुन् भनी थाहा पाउनु ।

मासु

हस्त्यश्वेष्ट्रखराजाविवृकव्याघ्राश्च केसरी ।
वराहमृग इत्येषां मांसं योज्यं तु बृंहणम् ॥११॥

हात्ती, घोडा, उँट, गधा, खसीबोका, भेडा, ब्वाँसो, बाघ, सिंह, बँदेल र मृग : यी जनावरको मासु पौष्टिकताका लागि प्रयोग गर्नु ।

महिषोऽथ बलीवर्दो मत्स्यः कच्छप एव च ।
आमूषिकाबिडालानां शृगालकपिबर्हिषाम् ॥१२॥
शिलीमुखशुकस्यापि सारिकाचक्रवाकयोः ।
हंसकुक्कुटलावानां कोकिलोलूकभोगिनाम् ॥१३॥
भेकादीनां च विण्मूत्रैर्मैदस्त्वग्रोमसंयुतैः ।
धूपं दद्याज्वरार्तेभ्य उन्मत्तेभ्यो विशेषतः ॥१४॥
अपस्माराभिभूतेभ्यो ग्रहार्तेभ्यस्तथैव च ।
प्राप्नुयादायुरारोग्यं बलवर्णं मनःस्थिरम् ॥१५॥
योगानेतान् समाश्रित्य मांसद्रव्यसमाश्रयान् ।
द्रव्यावलिः समादिष्टा धन्वन्तरिमुखोद्भूता ॥१६॥

राँगो, साँढे, माछा, कछुवा, मुसा, बिरालो, स्याल, बाँदर, मयूर (बर्हिष), भमरा (शिलीमुख), सुँगा, मैना, चखेवा, हाँस, कुखुरो, लाभे चरो, कोइली, लाटोकोसेरो, सर्प र भ्यागुतो : यी जीवको दिसा, पिसाब, बोसो, छाला र रौलाई छारेरोग, भूतबाधा र ग्रहबाधा हुनेहरूका लागि धूप हाल्ने काममा प्रयोग गर्नु । यसबाट रोगीले आयु, आरोग्य, बल, वर्ण र स्थिर चित्त प्राप्त गर्दछ । यसरी धन्वन्तरिको

मुखबाट निस्किएको मासु, द्रव्य आदिको सम्मिश्रणका बारेमा बताइएको यो द्रव्यावलिका बारेमा बताइयो ।

सुवर्णादिरयं वर्गः षष्ठ उक्तो यथाक्रमम् ।
धातुद्रव्यद्रवद्रव्यमांसद्रव्यसमाश्रयः ॥१७॥

धातु, तरल र मासु आदि पदार्थका बारेमा क्रमैले बताइएको छैटौँ सुवर्णादि वर्ग पूर्ण भयो ।

॥ इति सुवर्णादिः षष्ठो वर्गः ॥

॥ सुवर्णादि वर्ग नामक छैटौँ वर्गको नेपाली भावानुवाद पूर्ण भयो ॥

सङ्कलन : मोहन प्रसाद सापकोटा

॥ मिश्रकादिवर्गः ॥ (मिश्रकादि वर्ग)

मिश्रको व्यस्तरोगाश्च विषाण्यष्टादशापि च ।
उपविषाणि सर्वाणि तथा प्रशमनानि च ॥१॥
एतत् सर्वं समासेन वक्ष्याम्यत्र यथाक्रमम् ।
योगानेतान् प्रयुञ्जीत पुरुषे नित्यमात्मवान् ॥२॥
सत्सु पूजामवाप्नोति परत्रेह च विन्दति ।

अठार थरी विष, सबै उपविष, विषको उपचार जस्ता विषयमा क्रमैले संक्षेपमा बताइयो । आत्मसंयमी मानिसले सदा यसको उचित प्रयोग गर्नु । यसो गर्नाले वैद्य अरुबाट पूजिन्छ र सुखी पनि हुन्छ ।

शतत्रयं च द्रव्याणां त्रिसप्तत्यधिकोत्तरम् ॥३॥
हिताय वैद्यविदूषां द्रव्यावल्यां प्रकाशितम् ।
गणद्रव्यावली ह्युक्ता सयोगा सहमात्रया ॥
पर्यायनामान्युच्यन्ते गुडूच्यादेर्यथाक्रमम् ॥४॥

आयुर्वेदका विद्यार्थीका लागि यो द्रव्यावलिमा तीन सय त्रिहत्तर वटा द्रव्यका बारेमा बताइयो । यो गणद्रव्यावलिमा योग र मात्रा बताइयो अब गुर्जो आदि द्रव्यका गुणदोष र पर्यायवाची शब्दहरूका बारेमा बताइन्छ ।

॥ इति मिश्रकादिः सप्तमो वर्गः ॥

॥ मिश्रकादि वर्ग नामक सातौं वर्गको नेपाली भावानुवाद पूर्ण भयो ॥

॥ इति धन्वन्तरीये गणद्रव्यावली समाप्ता ॥

॥ धन्वन्तरी निघण्टु अन्तर्गत गणद्रव्यावलि खण्डको नेपाली भावानुवाद पूर्ण भयो ॥

अथ धन्वन्तरिनिघण्टु

गुडूच्यादिवर्गः

मङ्गलाचरण

धन्वन्तरिपदद्वन्द्वं नत्वा लोकहितार्थिनाम् ।
रसवीर्यविपाकादि द्रव्याणां कथ्यते मया ॥१॥

भगवान् धन्वन्तरी दुवै चरणमा बन्दना गर्दै लोकहितका लागि पदार्थका रस, वीर्य र विपाकका बारेमा मबाट बताइन्छ ।

गुर्जो र गानेगुर्जो

गुडूच्यमृतवल्ली च छिन्ना छिन्नरुहाऽमृता ।
छिन्नोद्भवाऽमृतलता धारा वत्सादनी स्मृता ॥२॥
सैवोक्ता सोमवल्ली च कुण्डली चक्रलक्षणा ।
प्रोक्ता नागकुमारी च च्छिन्नाङ्गी ज्वरनाशिनी ॥३॥
जीवनी मधुपर्णी च तन्त्रिका देवनिर्मिता ।
वयःस्था मण्डली सौम्या विशल्याऽमृतसम्भवा ॥४॥
रसायनी मृत्तिका च चन्द्रहासा भिषग्जिता ।
पिण्डामृता बहुच्छिन्ना सा चोक्ता कन्दरोहिणी ॥५॥
अन्या कन्दोद्भवा कन्दाऽमृतकन्दागुडूचिका ।
गुडूची स्वरसे तित्ता कषायोष्णा गुरुस्तथा ॥६॥
त्रिदोषजन्तुरक्ताशःकुष्ठज्वरहरा परा ।
गुडूच्यायुष्प्रदा मेध्या तित्ता सङ्गाहिणी बला ॥७॥
ज्वरतृट्पाण्डुवातासृक्छर्दिमेहत्रिदोषजित् ।
गुडूची कफवातघ्नी पित्तमेदोविशोषिणी ॥८॥
रक्तवातप्रशमनी कण्डूविसर्पनाशिनी ।
कन्दोद्भवा गुडूची च कटूष्णा सन्निपातहा ॥९॥
विषघ्नी ज्वरभूतघ्नी वलीपलितनाशिनी ।

गुडूची, अमृतवल्ली, छिन्ना, छिन्नरुहा, अमृता, छिन्नोद्भवा, अमृतलता, धारा, वत्सादनी, सोमवल्ली, कुण्डली, चक्रलक्षणा, नागकुमारी, छिन्नाङ्गी, ज्वरनाशिनी, जीवनी, मधुपर्णी, तन्त्रिका, देवनिर्मिता, वयस्था, मण्डली, सौम्या, विशल्या, अमृतसम्भवा, रसायनी, मृत्तिका, चन्द्रहासा र भिषग्जिता : यी गुर्जोका पर्यायवाची नामहरू हुन् । अर्कोथरी गुर्जो अर्थात् गानेगुर्जोका पिण्डामृता, बहुच्छिन्ना, कन्दरोहिणी, कन्दोद्भवा, कन्दा, अमृतकन्दा र गुडूचिका : यी पर्यायवाची नामहरू हुन् । गुर्जो तीतो, टरो, उष्णवीर्यको र पचाउन कठिन हुने गुणको हुन्छ । यसले त्रिदोष, कीरा, रगत बहने खालको अल्काई, कुष्ठ र जरो नाश गर्दछ । गुर्जो आयुवर्धक, दिमागको ग्रहण गर्ने क्षमता बढाउने, तीतो, कब्जियत गराउने र बलदायक हुन्छ तथा यसले जरो, तिखा, पाण्डु, वातरक्त, वाकवाकी, प्रमेह र त्रिदोषलाई जित्दछ । गुर्जोले कफविकार र वातविकारलाई नाश गर्दछ तथा पित्तविकार र बोसोविकारलाई सोस्दछ । यसले रक्तवातलाई शान्त पार्दछ तथा लुतो र विसर्पलाई नाश गर्दछ । यसैगरी गानेगुर्जो पिरो, उष्णवीर्यको तथा सन्निपात, विषविकार, जरो, भूतबाधा, उमेर नपुगी छाला चाउरी पर्ने रोग र उमेर नपुगी कपाल फुल्ने रोग नाशक हुन्छ ।

परबर

अतीस

अतिविषा शुक्लकन्दा ज्ञेया विश्वा च भङ्गुरा ॥१०॥
श्यामकन्दा प्रतिविषा शृङ्गी चोपविषा विषा ।
आर्द्रा श्वेता विरूपा च विषदा पित्तवल्लभा ॥११॥
घुणप्रियाऽतिसारघ्नी बालानां रोगनाशिनी ।

अतीस दुई थरी हुन्छ । शुक्लकन्दा, विश्वा र भङ्गुरा : यी सेतो कन्द हुने अतीसका तथा श्यामकन्दा, प्रतिविषा, शृङ्गी, उपविषा, विषा, आर्द्रा, श्वेता, विरूपा, विषदा, पित्तवल्लभा, घुणप्रिया, अतिसारघ्नी र बालरोगनाशिनी : यी कालोकन्द हुने अतीसका पर्यायवाची नामहरू हुन् ।

कटूष्णाऽतिविषा तिक्ता कफपित्तज्वरापहा ॥१२॥
आमातीसारकासघ्नी विषच्छर्दिविनाशिनी ।

अतीस पिरो, उष्णवीर्यको, तीतो तथा कफविकार, पित्तविकार, जरो, आमविकार जन्य अतिसार, खोकी, विषविकार र वाकवाकी नाशक हुन्छ ।

मुज (मूर्वा)

मूर्वा मधुरसा देवी पृथक्पर्णी त्रिपर्णी ॥१३॥
देवश्रेणी स्वादुरसा स्निग्धपर्णी च मोरटा ।
मूर्वा स्वादुरसा चोष्णा हृद्रोगकफवातजित् ॥१४॥
कुष्ठकण्डूवमीमेहविषमज्वरनाशिनी ।

मूर्वा, मधुरसा, देवी, पृथक्पर्णी, त्रिपर्णी, देवश्रेणी, स्वादुरसा, स्निग्धपर्णी र मोरटा : यी मुजका पर्यायवाची नामहरू हुन् । मुज गुलियो, उष्णवीर्यको तथा मुटुका रोग, कफविकार र वातविकारलाई जित्ने गुणको हुन्छ । यसले कुष्ठ, लुतो, वाकवाकी, प्रमेह र विषमज्वर नाश गर्दछ ।

मुजविशेष (मोरट)

मोरटः कीर्णपुष्पश्च पीलुपुष्पो मधुस्रवः ॥१५॥
तेजनी दीर्घमूला च पुरुषः क्षीरमोरटः ।
ज्वरघ्नो मुखवैरस्यतृष्णादाहविनाशनः ॥१६॥
कफपित्तहरश्चासौ विज्ञेयः क्षीरमोरटः ।

मोरट, कीर्णपुष्प, पीलुपुष्प, मधुस्रव, तेजनी, दीर्घमूला, पुरुष र क्षीरमोरट : यी मुजविशेषका पर्यायवाची नामहरू हुन् । यो मुजले जरो, मुखको स्वादविहीनता, तिर्खारोग, डाह, कफविकार र पित्तविकार नाश गर्दछ ।

मजिठो (मञ्जिष्ठा)

मञ्जिष्ठा कालमेषी च समङ्गा विकसाऽरुणा ॥१७॥
मञ्जुका रक्तयष्टी च भाण्डी योजनवल्ल्यपि ।
क्षेत्रिणी विजया रक्ता रक्ताङ्गी वस्त्रभूषणा ॥१८॥
जिङ्गी भण्डी तथा काला गण्डाली कालमेषिका ।
मञ्जिष्ठा मधुरा स्वादे कषायोष्णा गुरुस्तथा ॥१९॥
कफोग्रव्रणमेहास्रविषनेत्रामयाञ्जयेत् ।

मज्जिष्ठा, कालमेषी, समझा, विकसा, अरुणा, मञ्जुका, रक्तयष्टी, भाण्डी, योजनवल्ली, क्षेत्रिणी, विजया, रक्ता, रक्ताङ्गी, वस्त्रभूषणा, जिङ्गी, भण्डी, काला, गण्डाली र कालमेषिका : यी मज्जिठोका पर्यायवाची नामहरू हुन् । मज्जिठो गुलियो र टर्रो स्वादको हुन्छ । यो उष्णवीर्यको र पचाउन कठिन हुने गुणको हुन्छ । यसले कफविकार, कडा खालका घाउखटिरा, प्रमेह, रक्तविकार, विषविकार र आँखाका रोगलाई जित्दछ ।

दुरालभा विशेष (धन्वयास)

धन्वयासो दुरालम्भा ताम्रमूली च कच्छुरा ॥२०॥
दुरालभा च दुःस्पर्शा यासो धन्वयवासकः ।
दुरालम्भा स्वादुशीता तिक्ता दाहविनाशिनी ॥२१॥
विषमज्वरतृट्छर्दिमोहविनाशिनी ।

धन्वयास, दुरालम्भा, ताम्रमूली, कच्छुरा, दुरालभा, दुःस्पर्शा, यास र धन्वयवासक : यी दुरालभा विशेषका पर्यायवाची नामहरू हुन् । यो गुलियो, शीतवीर्यको र तीतो हुन्छ । यसले डाह, विषमज्वर, तिखारोग, वाकवाकी, प्रमेह र भ्रम नाश गर्दछ ।

संकलन : मोहन प्रसाद सापकोटा

दुरालभा विशेष (यास)

यासो यवासकोऽनन्तो बालपत्रोऽधिकण्टकः ॥२२॥
दूरमूलः समुद्रान्तो दीर्घमूलो मरूद्भवः ।
यवासकः स्वादुतिक्तो ज्वरतृड्द्रक्तपित्तनुत् ॥२३॥

यास, यवासक, अनन्त, बालपत्र, अधिकण्टक, दूरमूल, समुद्रान्त, दीर्घमूल र मरूद्भव : यी अर्को थरी दुरालभाका पर्यायवाची नामहरू हुन् । यो गुलियो, तीतो तथा जरो, तिखारोग र रक्तपित्त नाशक हुन्छ ।

असुरो (वासक)

वासकः सिंहपर्णी च वृषो वासाऽथ सिंहिका ।
आटरूषः सिंहमुखी भिषङ्माताऽऽटरूषकः ॥२४॥

आटरूषो हिमस्तिक्तः पित्तश्लेष्मास्रकासजित् ।
क्षयहृच्छर्दिकुष्ठघ्नो ज्वरतृष्णाविनाशनः ॥२५॥

वासक, सिंहपर्णी, वृष, वासा, सिंहिका, आटरूष, सिंहमुखी, भिषङ्माता र आटरूषक : यी असुरोका पर्यायवाची नामहरू हुन् । असुरो शीतवीर्यको र तीतो हुन्छ । यसले पित्तविकार, कफविकार, रक्तविकार र खोकीलाई जित्दछ । असुरोले क्षयरोग, मुटुका रोग, वाकवाकी, कुष्ठ, जरो र तिर्खारोग नाश गर्दछ ।

खयर (खदिर)

खदिरो रक्तसारश्च गायत्री दन्तधावनः ।
कण्टकी बालपत्रश्च जिह्मशल्यः क्षतक्षमः ॥२६॥
खदिरः स्याद्रसे तिक्तो हिमपित्तकफास्रनुत् ।
कुष्ठामकासकण्डूतिकृमिदोषहरः स्मृतः ॥२७॥

खदिर, रक्तसार, गायत्री, दन्तधावन, कण्टकी, बालपत्र, जिह्मशल्य र क्षतक्षम : यी खयरका पर्यायवाची नामहरू हुन् । खयर तीतो र शीतवीर्यको हुन्छ । यसले पित्तविकार, कफविकार, रक्तविकार, कुष्ठ, आमविकार, खोकी, लुतो र कीरा नाशक हुन्छ ।

सेतो र कालो खयर (श्वेतसार, श्यामसार)

खदिरः श्वेतसारोऽन्यः सोमवल्कः पथिद्रुमः ।
श्यामसारो नेमिवृक्षः कार्मुकः कुब्जकण्टकः ॥२८॥
श्वेतस्तु खदिरस्तिक्तः शीतपित्तकफापहः ।
रक्तदोषहरश्चैव कण्डूकुष्ठविनाशनः ॥२९॥

श्वेतसार, सोमवल्क, पथिद्रुम, श्यामसार, नेमिवृक्ष, कार्मुक र कुब्जकण्टक : यी अर्को थरी खयरका पर्यायवाची नामहरू हुन् । सेतो खयर तीतो र शीतवीर्यको हुन्छ । यसले पित्तविकार, कफविकार, रक्तविकार, लुतो र कुष्ठ नाश गर्दछ ।

नीम (निम्ब)

निम्बो नियमनो नेता पिचुमन्दः सुतिक्तकः ।
अरिष्टः सर्वतोभद्रः प्रभद्रः पारिभद्रकः ॥३०॥
निम्बस्तिक्तरसः शीतो लघुः श्लेष्मास्रपित्तनुत् ।
कुष्ठकण्डूव्रणान् हन्ति लेपाहारादि शीलितः ॥३१॥
अपक्वं पाचयेच्छोफं व्रणं पक्वं विशोधयेत् ।

निम्ब, नियमन, नेता, पिचुमन्द, सुतिक्तक, अरिष्ट, सर्वतोभद्र, प्रभद्र र पारिभद्रक : यी नीमका पर्यायवाची नामहरू हुन् । नीम तीतो, शीतवीर्यको र पचाउन सहज हुने गुणको हुन्छ । नीमखानाले वा लेप बनाएर दलनाले कफविकार, रक्तपित्त, कुष्ठ, लुतो र घाउखटिरा नाश गर्दछ । सुन्निएर नपाकेको खटिरालाई पकाउँदछ र पाकेको खटिरालाई सफा पार्दछ वा प्रशोधन गर्दछ ।

बकाइनु (महानिम्ब)

महानिम्बः स्मृतो द्रेकी कार्मुको विषमुष्टिकः ॥३२॥
केशमुष्टिर्निम्बरको रम्यकोऽक्षीव एव च ।
महानिम्बो रसे तिक्तः शीतः पित्तकफापहः ॥३३॥
कुष्ठरक्तविनाशी च विषूचीं हन्ति शीलितः ।

महानिम्ब, द्रेकी, कार्मुक, विषमुष्टिक, केशमुष्टि, निम्बरक, रम्यक र अक्षीव : यी बकाइनुका पर्यायवाची नामहरू हुन् । बकाइनु तीतो र शीतवीर्यको हुन्छ । यसलाई युक्तिपूर्वक प्रयोग गरिए यसले पित्तविकार, कफविकार, कुष्ठ, रक्तविकार र हैजा समेत ठिक गर्दछ ।

चिराइतो (किरातिक्तक)

किराततिक्तको हैमः काण्डस्तिक्तः किरातकः ॥३४॥
भूनिम्बोऽनार्यतिक्तश्च किरातो रामसेनकः ।
नेपालः कथितश्चान्यो जातिभेदो ज्वरान्तकः ॥३५॥
महातिक्तश्च तिक्तश्च निद्रारिः सन्निपातहा ।
किरातको रसे तिक्तोऽनुष्णशीतो लघुस्तथा ॥३६॥

श्लेष्मपित्तास्रशोफादिकासतृष्णाज्वरापहा ।

किराततिक्तक, हैम, काण्डतिक्त, किरातक, भूनिम्ब, अनार्यतिक्त, किरात र रामसेनक : यी पहिलो थरी चिराइतोका तथा नेपाल, ज्वरान्तक, महातिक्त, तिक्त, निद्रारि र सन्निपातहा : यी दोश्रो थरी चिराइतोका पर्यायवाची नामहरू हुन् । चिराइतो तीतो, धेरै उष्णवीर्य र शीतवीर्य नभएको र पचाउन हलुका हुने गुणको हुन्छ । यसले कफविकार, रक्तपित्त, सुजन, खोकी, तिर्खारोग र जरो नाश गर्दछ ।

पिरे वा कुटकी (कटुका)

कटुका मत्स्यशकला मत्स्यपित्ता च रोहिणी ॥३७॥
कृष्णभेदा काण्डरुहा नाम्ना कटुकरोहिणी ।
अशोकरोहिणी तिक्ता चक्राङ्गी शकुलादनी ॥३८॥
कटुरोहिण्यरिष्टा च प्रोक्ता तिक्तकरोहिणी ।
आमघ्नी शतपर्वा च विप्राङ्गी जननी जना ॥३९॥
कटुका पित्तजित्तिक्ता कटुः शीतास्रदाहजित् ।
बलासारोचकान् हन्ति विषमज्वरनाशिनी ॥४०॥

कटुका, मत्स्यशकला, मत्स्यपित्ता, रोहिणी, कृष्णभेदा, काण्डरुहा, कटुकरोहिणी, अशोकरोहिणी, तिक्ता, चक्राङ्गी, शकुलादनी, कटुरोहिणी, अरिष्टा, तिक्तकरोहिणी, आमघ्नी शतपर्वा, विप्राङ्गी, जननी र जना : यी पिरे वा कुटकीका पर्यायवाची नामहरू हुन् । पिरेले पित्तविकारलाई जित्दछ । यो तीतो र पिरो हुन्छ । पिरे शीतवीर्यको हुन्छ । यसले रक्तविकार र डाहलाई जित्दछ । पिरेले कफविकार, अरुची र विषमज्वर नाश गर्दछ ।

मोथे र नागरमोथे (मुस्ता, नागरमुस्ता)

मुस्ता चाम्बुधरो मेघो घनो राजकसेरुकः ।
भद्रमुस्तो वराहोऽब्दो गाङ्गेयः कुरुविन्दकः ॥४१॥
जीमूतोऽथ वृषध्वाङ्गी जलदोऽथ बलाहकः ।
नादेयः पिण्डमुस्तोऽन्यो नागरः परिकीर्तितः ॥४२॥
मुस्ता तिक्तकषायाऽतिशिशिरा श्लेष्मरक्तजित् ।

पित्तज्वरातिसारघ्नी तृष्णाकृमिविनाशिनी ॥४३॥

मुस्ता, अम्बुधर, मेघ, घन, राजकसेरुक, भद्रमुस्त, वराह, अब्द, गाङ्गेय, कुरुविन्दक, जीमूत, वृषध्वाङ्गी, जलद, बलाहक र नादेय : यी मोथेका तथा पिण्डमुस्ता र नागर : यी नागरमोथेका पर्यायवाची नामहरू हुन् । मोथे तीतो र टर्रो हुन्छ । यो अती नै शीतवीर्यको हुन्छ । यसले कफविकार र रक्तविकारलाई जित्दछ तथा पित्तजन्य जरो, अतिसार, तिखारोग र कीरालाई नाश गर्दछ ।

पानी-मोथे (जलमुस्त)

जलमुस्तं दाशपुरं वानेयं परिपेलवम् ।
कैवर्तिमुस्तं शैवालं जलजं च शुकाह्वयम् ॥४४॥
जलजं तिक्तकटुकं कषायं कान्तिदं हिमम् ।
मेध्यं वातान्ध्यवीसर्पकण्डूकुष्ठविषापहम् ॥४५॥

जलमुस्त, दाशपुर, वानेय, परिपेलव, कैवर्तिमुस्त, शैवालं जलज र शुकाह्वय : यी जलमोथेका पर्यायवाची नामहरू हुन् । यो तीतो, पिरो र टर्रो हुन्छ । यसले शरीरमा चमक लेराउँदछ । यो शीतवीर्यको हुन्छ । यसले दिमागको ग्रहण गर्ने क्षमता बढाउँदछ । यो मोथेले वातविकार, अन्धोपन, वीसर्प, लुतो, कुष्ठ र विषविकार नाश गर्दछ ।

पित्तपापडा (पर्पट)

पर्पटः स्यात्पर्पटको वरतिक्तः सुतिक्तकः ।
रजो रेणुश्च पांशुश्च कवचो वर्मकण्टकः ॥४६॥
पर्पटः शीतलस्तिक्तः पित्तश्लेष्मज्वरापहः ।
रक्तदाहारुचिग्लानिमदभ्रमविनाशनः ॥४७॥

पर्पट, पर्पटक, वरतिक्त, सुतिक्तक, रज, रेणु, पांशु, कवच र वर्मकण्टक : यी पित्तपापडाका पर्यायवाची नामहरू हुन् । पित्तपापडा शीतवीर्यको र तीतो हुन्छ । यसले पित्तविकार, कफविकार, जरो, रक्तविकार, डाह, अरुचि, मानसिक थकाई, नसा र भ्रम नाश गर्दछ ।

सुगन्धबाल (बालक)

बालकं वारि तोयं च ह्रीवेरं जलमम्बु च ।
केश्यं वज्रमुदीच्यं च पिङ्गमाचमनं कचम् ॥४८॥
बालकं शीतलं तिक्तं पित्तश्लेष्मविसर्पजित् ।
ज्वरकुष्ठातिसारघ्नं केश्यं श्वित्रव्रणापनुत् ॥४९॥

बालक, वारि, तोय, ह्रीवेर, जल, अम्बु, केश्य, वज्र, उदीच्य, पिङ्ग, आचमन र कच : यी सुगन्धबालका पर्यायवाची नामहरू हुन् । सुगन्धबाल शीतवीर्यको र तीतो हुन्छ । यसले पित्तविकार, कफविकार र विसर्पलाई जित्दछ । सुगन्धबालले जरो, कुष्ठ र अतिसार नाश गर्दछ । यो कपालका लागि हितकर हुन्छ । यसले सेतोकुष्ठ र घाउखटिरा हटाउँदछ ।

परबर (पटोल)

पटोलः कुलकः प्रोक्तः पाण्डुकः कर्कशच्छदः ।
राजीफलः पाण्डुफलो राजनामाऽमृताफलः ॥५०॥
वीर्यगर्भप्रतानश्च कुष्ठहा कासमुक्तिदः ।
पटोलं कटुकं तिक्तमुष्णं पित्तविरोधि च ॥५१॥
कफासृक्कण्डुकुष्ठानि ज्वरदाहौ च नाशयेत् ।

पटोल, कुलक, पाण्डुक, कर्कशच्छद, राजीफल, पाण्डुफल, राजनामा, अमृताफल, वीर्यगर्भप्रतान, कुष्ठहा र कासमुक्तिद : यी परबरका पर्यायवाची नामहरू हुन् । परबर पिरो, तीतो, उष्णवीर्यको र पित्तविकार विरोधी हुन्छ । यसले कफविकार, रक्तविकार, लुतो, कुष्ठ, जरो र डाह नाश गर्दछ ।

परबर विशेष (स्वादुपत्रफला)

पटोली स्याद् द्वितीयाऽन्या स्वादुपत्रफला च सा ॥५२॥
पटोलायस्तु पर्यायैर्योजयेद्विषगुत्तमः ।
पटोलपत्रं पित्तघ्नं वल्ली चास्य कफापहा ॥५३॥
फलं त्रिदोषशमनं मूलं चास्य विरेचनम् ।

अर्को किसिमको परबर पनि हुन्छ जसलाई पटोली वा स्वादुपत्रफला भनिन्छ । यसलाई उत्तम वैद्यजनले यसका अन्य पर्यायवाची नाममा परबरका नाम नै प्रयोग गरुन् । परबरको पातले पित्तविकार तथा यसको लहराले कफविकार नाश गर्दछ । परबरको फलले त्रिदोष शान्त पार्दछ भने यसको जरा विरेचन गराउनमा प्रयोग हुन्छ ।

हलेदो (हरिद्रा)

हरिद्रा पीतिका पिङ्गा रजनी रञ्जनी निशा ॥५४॥
गौरी वर्णवती पीता हरिता वरवर्णिनी ।
हलदीका भद्रलता ज्ञेया वर्णविलासिनी ॥५५॥
विषघ्नी च जयन्ती च दीर्घरङ्गा तु रङ्गिणी ।
हरिद्रा स्वरसे तित्ता रूक्षोष्णा विषमेहनुत् ॥५६॥
कण्डूकुष्ठव्रणान् हन्ति देहवर्णविधायिनी ।
विशोधनी कृमिहरा पीनसारुचिनाशिनी ॥५७॥

हरिद्रा, पीतिका, पिङ्गा, रजनी, रञ्जनी, निशा, गौरी, वर्णवती, पीता, हरिता, वरवर्णिनी, हलदीका, भद्रलता, वर्णविलासिनी, विषघ्नी, जयन्ती, दीर्घरङ्गा र रङ्गिणी : यी हलेदोका पर्यायवाची नामहरू हुन् । यो तीतो, रुखो र उष्णवीर्यको हुन्छ । यसले विषविकार, प्रमेह, लुतो, कुष्ठ र घाउखटिरा नाश गर्दछ । यसले शरीरको वर्ण सुन्दर बनाएर राख्दछ । यो प्रशोधक, कीरा नाशक, तथा पिनास र अरुचि नाशक समेत हुन्छ ।

चुत्रो (दारुहरिद्रा)

अन्या दारुहरिद्रा च पीतद्रुः पीतचन्दनम् ।
निर्दिष्टा काष्ठरजनी सा च कालेयका स्मृता ॥५८॥
कालीयकं दारुनिशा दार्वी पीताह्वपीतका ।
कटङ्कटेरी पर्जन्या पीतदारु पचम्पचा ॥५९॥
हेमवर्णवती पीता हेमकान्ता कुसुम्भका ।
तित्ता दारुहरिद्रा स्याद्रूक्षोष्णा व्रणमेहजित् ॥६०॥
कणनित्रमुखोद्भूतां रुजं कण्डूं च नाशयेत् ।

दारुहरिद्रा, पीतदु, पीतचन्दन, काष्ठरजनी, कालेयका, कालीयक, दारुनिशा, दावी, पीताह्वपीतका, कटङ्कटेरी, पर्जन्या, पीतदारु, पचम्पचा, हेमवर्णवती, पीता, हेमकान्ता र कुसुम्भका : यी चुत्रोका पर्यायवाची नामहरू हुन् । चुत्रो तीतो, रुखो र उष्णवीर्यको हुन्छ । यसले घाउखटिरा र प्रमेहलाई जित्दछ तथा कान, आँखा र मुखमा हुने रोगहरू एवं लुतो पनि नाश गर्दछ ।

कपुरहलेदो (शठी)

श(स)टी श(स)ठी पलाशा च ज्ञेया पृथुपलाशिका ॥६१॥

सुगन्धमूला गन्धाली षड्ग्रन्था सुव्रता वधूः ।

चन्द्राणी चन्द्रगन्धा च दुर्विधेयेति सञ्ज्ञिता ॥६२॥

शटी स्यात्तित्ततीक्ष्णोष्णा सन्निपातज्वरापहा ।

कफोग्रव्रणकासघ्नी वक्त्रशुद्धिविधायिनी ॥६३॥

श(स)टी, श(स)ठी, पलाशा, पृथुपलाशिका, सुगन्धमूला, गन्धाली, षड्ग्रन्था, सुव्रता, वधू, चन्द्राणी, चन्द्रगन्धा र दुर्विधेया : यी कपुरहलेदोका पर्यायवाची नामहरू हुन् । कपुरहलेदो तीतो, तिक्खर र उष्णवीर्यको हुन्छ । यसले सन्निपात ज्वर, कफविकार, नराम्रा खटिरा र खोकी नाश गर्दछ । यसले मुखको शुद्धिकरण गर्दछ ।

कपुरहलेदो विशेष (गन्धपलाशी)

अन्या गन्धपलाशी च स्थूलका तित्तकन्दका ।

तापसी ज्वलनी चैव हरिद्रापत्रकन्दका ॥६४॥

कासश्वासहरा सिध्माज्वरशूलानिलापहा ।

श(स)टी स्वर्या गन्धमूला कषायकटुका सरा ॥६५॥

गन्धपलाशी, स्थूलका, तित्तकन्दका, तापसी, ज्वलनी र हरिद्रापत्रकन्दका : यी कपुरहलेदो विशेषका पर्यायवाची नामहरू हुन् । यो कपुरहलेदोले खोकी, दम, सिध्म, जरो, शूल र वातविकार नाश गर्दछ । यसको जरो स्वरका लागि हितकर, टरौं, पिरो र मलमूत्रलाई तलतिर सार्ने गुणको हुन्छ ।

पुष्करमूल

मूलं पुष्करमूलं च पौष्करं पुष्कराह्वयम् ।
काश्मीरं पुष्करजटा धीरं तत्पद्मपत्रकम् ॥६६॥
तिक्तं पुष्करमूलं तु कटूष्णं कफवातजित् ।
ज्वरारोचककासघ्नं शोफाध्मानविनाशनम् ॥६७॥
श्वासं हिक्कां जयत्येव सेव्यमानं शनैः शनैः ।

मूल, पुष्करमूल, पौष्कर, पुष्कराह्वय, काश्मीर, पुष्करजटा, धीर र पद्मपत्रक : यी पुष्करमूलका पर्यायवाची नामहरू हुन् । पुष्करमूल तीतो, पिरो, उष्णवीर्यको तथा कफविकार र वातविकारलाई जित्ने गुणको हुन्छ । यसले जरो, अरुचि, खोकी, सुजन र आध्मान नाश गर्दछ । नियमित खाने गर्नाले यसले विस्तार विस्तार दम र बाडुलीरोगलाई पनि जित्दछ ।

चिन्डे (भारङ्गी)

भार्ङ्गी गर्दभशाकं च पद्मा ब्राह्मणयष्टिका ॥६८॥
अङ्गारवल्ली फञ्जी च सैव ब्रह्मसुवर्चला ।
शक्रमाता च कासघ्नी भृङ्गजा भार्गवा मता ॥६९॥
भार्ङ्गी स्यात्स्वरसे तिक्ता चोष्णा श्वासकफापहा ।
गुल्मज्वरासृग्वातघ्नी यक्ष्माणं हन्ति पीनसम् ॥७०॥

भार्ङ्गी, गर्दभशाक, पद्मा, ब्राह्मणयष्टिका, अङ्गारवल्ली, फञ्जी, ब्रह्मसुवर्चला, शक्रमाता, कासघ्नी, भृङ्गजा र भार्गवा : यी चिन्डेका पर्यायवाची नामहरू हुन् । चिन्डे तीतो र उष्णवीर्यको हुन्छ । यसले दम, कफविकार, गुल्म, जरो, रक्तविकार, वातविकार, क्षयरोग र पिनास नाश गर्दछ ।

पुष्करमूल विशेष (श्वासारि)

श्वासारिः पद्मतीर्थं च पद्मं पुष्परसागरम् ।
वृक्षरोहं शूलहरं समूलं सुखसम्भवम् ॥७१॥

श्वासारि, पद्मतीर्थ, पद्म, पुष्परसागर, वृक्षरोह, शूलहर, समूल र सुखसम्भव : यी पुष्करमूल विशेषका पर्यायवाची नामहरू हुन् ।

गुन्दरगानु (पाठा)

पाठाऽम्बष्ठाऽम्बष्ठी च प्राचीना पापचेलिका ।
वरतिक्ता बृहत्तिक्ता पाठिका स्थापनी वृकी ॥७२॥
मालती च वरा देवी त्रिवृताऽन्या शुभा मता ।
पाठा तिक्तरसा वृष्या विषघ्नी कुष्ठकण्डुनुत् ॥७३॥
छर्दिहृद्रोगज्वरजित् त्रिदोषशमनी परा ।
पाठाऽतिसारशूलघ्नी कफपित्तज्वरापहा ॥७४॥

पाठा, अम्बष्ठा, अम्बष्ठी, प्राचीना, पापचेलिका, वरतिक्ता, बृहत्तिक्ता, पाठिका, स्थापनी, वृकी, मालती, वरा र देवी : यी गुन्दरगानुका पर्यायवाची नामहरू हुन् । त्रिवृता जातको गुन्दरगानु बढी गुनिलो हुन्छ । गुन्दरगानु तीतो, वीर्यवर्धक तथा विषविकार, कुष्ठ र लुतो नाशक हुन्छ । यसले वाकवाकी र मुटुका रोगलाई जित्दछ तथा विशेष किसिमले त्रिदोषलाई शान्त पार्दछ । यसले अतिसार, शूल, कफविकार, पित्तविकार र जरो नाश गर्दछ ।

काफल (कट्फल)

कट्फलः सोमवल्कश्च श्रीपर्णी कुमुदा तथा ।
महाकुम्भा च कुम्भीका भद्रा भद्रवतीति च ॥७५॥
कट्फलः कफवातघ्नो गुल्ममेहाग्निमान्द्यजित् ।
रुचिष्यो ज्वरदुर्नामग्रहणीपाण्डुरोगहा ॥७६॥

कट्फल, सोमवल्क, श्रीपर्णी, कुमुदा, महाकुम्भा, कुम्भीका, भद्रा र भद्रवती : यी काफलका पर्यायवाची नामहरू हुन् । काफलले कफविकार र वातविकार नाश गर्दछ । यसले गुल्म, प्रमेह र पाचनशक्तिको कमजोरी माथि विजय हासिल गर्दछ । काफलले रुचि जगाउँदछ तथा जरो, अल्काई, ग्रहणी र पाण्डुरोग नाश गर्दछ ।

देवदार (देवदारु)

देवदारु स्मृतं दारु सुराहं किलिमं च तत् ।
स्नेहविद्धं महादारु भद्रदार्विन्द्रदारु च ॥७७॥
देवकाष्ठं भद्रकाष्ठं पूतिकाष्ठं सुदारु च ।
सुरदार्विन्द्रवृक्षश्च तथैवामरदारु च ॥७८॥
देवदारु रसे तिक्तं स्निग्धोष्णं श्लेष्मवातजित् ।
आमदोषविबन्धाध्मप्रमेहविनिवर्तकम् ॥७९॥

देवदारु, दारु, सुराह, किलिम, स्नेहविद्ध, महादारु, भद्रदारु, इन्द्रदारु, देवकाष्ठ, भद्रकाष्ठ, पूतिकाष्ठ, सुदारु, सुरदारु, इन्द्रवृक्ष र अमरदारु : यी देवदारका पर्यायवाची नामहरू हुन् । देवदार तीतो, चिल्लो र उष्णवीर्यको हुन्छ । यसले कफविकार र वातविकारलाई जित्दछ । देवदारले आमविकार, विबन्ध, आध्मान र प्रमेहलाई रोक्दछ ।

नेपाले उशीर (कत्तृण)

सङ्कलन : मोहन प्रसाद सापकोटा

कत्तृणं सकलं भूति भूतिदं रोहिषं तृणम् ।
ध्यामकं श्यामकं पौरं पाटलं देवदंशकम् ॥८०॥
कत्तृणं श्वासकासघ्नं हृद्रोगशमनं परम् ।
विषूच्यजीर्णशूलघ्नं कफपित्तास्रनाशनम् ॥८१॥

कत्तृण, सकल, भूति, भूतिद, रोहिष, तृण, ध्यामक, श्यामक, पौर, पाटल र देवदंशक : यी नेपाले उशीरका पर्यायवाची नामहरू हुन् । नेपाले उशीरले दम र खोकी नाश गर्दछ । यसले विशेषगरी मुटुका रोगलाई शान्त पार्दछ । यो उशीरले विषूचि, अजीर्ण, शूल, कफविकार, पित्तविकार र रक्तविकार नाश गर्दछ ।

कत्तृणविशेष (कपट)

कपटं च सुमङ्गल्यं चिडा गन्धवधूस्तथा ।
तरुणं तरुणी तारा वातभूतविनाशनी ॥८२॥
कफवातहरा चोष्णा दीपनी रक्तपित्तजित् ।

कपट, सुमङ्गल्य, चिडा, गन्धवधू, तरुण, तरुणी, तारा र वातभूतविनाशनी : यी कपटका पर्यायवाची नामहरू हुन् । कपटले कफविकार र वातविकार नाश गर्दछ । यो उष्णवीर्यको र दीपनी हुन्छ । यसले रक्तपित्तलाई जित्दछ ।

गुण्ठ

गुण्ठो वृत्तगुणः शुण्ठः शृङ्गभेदीभमूलकः ॥८३॥

शुण्ठं कुण्ठं तृणशुण्ठो वर्तुलः पृथुकन्दकः ।

कषायानुरसः स्वादुः शीतलो मूत्रकृच्छ्रहा ॥८४॥

रक्तपित्तहरो गुण्ठो रजःशुक्रविशोधनः ।

गुण्ठ, वृत्तगुण, शुण्ठ, शृङ्गभेदी, इभमूलक, शुण्ठं, कुण्ठं, तृणशुण्ठ, वर्तुल र पृथुकन्दक : यी गुण्ठका पर्यायवाची नामहरू हुन् । यो अन्तमा टर्रो र गुलियो हुन्छ । गुण्ठ शीतवीर्यको र मूत्रकृच्छ्र नाशक हुन्छ । यसले रक्तपित्त नाश गर्नुका साथै रज र वीर्यलाई प्रशोधन गर्दछ ।

सङ्कलन : मोहनप्रसाद सापकोटा
कर्कटशृङ्गी

शृङ्गी कर्कटशृङ्गी च कुलीरा कर्कटाह्वया ॥८५॥

कुलीरशृङ्गी वक्रा च महाघोषा नताङ्गिनी ।

चन्द्रास्पदा विषाणी च शृङ्गी वनजमूर्धजा ॥८६॥

तिक्ता कर्कटशृङ्गी च गुरुश्चोर्ध्वसमीरजित् ।

कासश्वासार्तियक्ष्मघ्नी वान्तिवृष्णारुचीजयेत् ॥८७॥

शृङ्गी, कर्कटशृङ्गी, कुलीरा, कर्कटाह्वया, कुलीरशृङ्गी, वक्रा, महाघोषा, नताङ्गिनी, चन्द्रास्पदा, विषाणी, शृङ्गी (दोहोरो परेको ?) र वनजमूर्धजा : यी कर्कटशृङ्गीका पर्यायवाची नामहरू हुन् । कर्कटशृङ्गी तीतो हुन्छ । यो पचाउन कठिन हुन्छ । यसले शरीरको माख्लो भागको वातविकारलाई जित्दछ । यसले खोकी, दम र क्षयरोग नाश गर्दछ तथा वाकवाकी, तिखारोग र अरुचिलाई जित्दछ ।

भेडासिङ्गी (अजशृङ्गी)

अजशृङ्गी मेषशृङ्गी सर्पदंष्ट्रा च वर्तिका ।
द्वितीया दक्षिणावर्ता वृश्चिकाली विषाणिका ॥८८॥
अजशृङ्गी हिमा स्वादुः शोफतृष्णावमीर्जयेत् ।
चक्षुष्या श्वासहृद्रोगविषकासार्तिकुष्ठनुत् ॥८९॥

अजशृङ्गी, मेषशृङ्गी, सर्पदंष्ट्रा र वर्तिका : यी भेडासिङ्गीका पर्यायवाची नामहरू हुन् । दोश्रो दाहिनेतिर बेरिएर रूख चढ्ने खालको लहरा हुने भेडासिङ्गीलाई भाषामा वृश्चिकाली र विषाणिका भनिन्छ । भेडासिङ्गी शीतवीर्यको र गुलियो हुन्छ । यसले सुजन, तिखारोग र वाकवाकीलाई जित्दछ । यो आँखाका लागि हितकर हुन्छ । यसले दम, मुटुका रोग, विषविकार, खोकी र कुष्ठरोग नाश गर्दछ ।

साकिनु वा बनगहत (शालपर्णी)

शालिपर्णी स्थिरा सौम्या त्रिपर्ण्यतिगुहा ध्रुवा ।
विदारिगन्धांशुमती दीर्घमूलांशुपत्रिका ॥९०॥

शालिपर्णी, स्थिरा, सौम्या, त्रिपर्णी, अतिगुहा, ध्रुवा, विदारिगन्धा, अंशुमती, दीर्घमूला र अंशुपत्रिका : यी शालपर्णीका पर्यायवाची नामहरू हुन् ।

शालपर्णीविशेष

आलकं पालकं दग्धं सबलं भूमिगन्धकम् ।
ज्वलनाभं विशुद्धं च गन्धं बोटं कुसुम्भकम् ॥९१॥

आलक, पालक, दग्ध, सबल, भूमिगन्धक, ज्वलनाभ, विशुद्ध, गन्ध, बोट र कुसुम्भक : यी शालपर्णीविशेषका पर्यायवाची नामहरू हुन् ।

दुवै शालपर्णीका गुण

शालिपर्णी रसे तिक्ता गुरूष्णा वातदोषजित् ।

विषमज्वरमेहघ्नी शोफवातविनाशनी ॥९२॥

शालपर्णी तीतो, पचाउन कठिन र उष्णवीर्यको हुन्छ । यसले वातविकारलाई जित्दछ तथा विषमज्वर, प्रमेह, सुजन र वातविकार नाश गर्दछ ।

सतिबयर (पृश्निपर्णी)

पृष्टि(श्रि)पर्णी पृथक्पर्णी कलशी धावनी गुहा ।
शृगालविन्नाऽङ्घ्रिबला पर्णी क्रोष्टुकपुच्छिका ॥९३॥

पृष्टि(श्रि)पर्णी, पृथक्पर्णी, कलशी, धावनी, गुहा, शृगालविन्ना, अङ्घ्रिबला, पर्णी र क्रोष्टुकपुच्छिका : यी पृश्निपर्णीका पर्यायवाची नामहरू हुन् ।

पृश्निपर्णीविशेष

सर्वानुकारिणी तन्वी दीर्घपर्णी च पर्णिका ।
कुमुदाऽतिगुहा चैव विषघ्नी सैव कीर्तिता ॥९४॥

सर्वानुकारिणी, तन्वी, दीर्घपर्णी, पर्णिका, कुमुदा, अतिगुहा र विषघ्नी : यी पृश्निपर्णीविशेषका पर्यायवाची नामहरू हुन् ।

पृश्निपर्णीका गुण

पृश्निपर्णी रसे स्वादुर्लघूष्णाऽस्रत्रिदोषजित् ।
कासश्वासप्रशमनी ज्वरतृड्दाहनाशिनी ॥९५॥

पृश्निपर्णी गुलियो, पचाउन सहज र उष्णवीर्यको हुन्छ । यसले रक्तविकार र त्रिदोषलाई जित्दछ तथा खोकी र दमलाई शान्त पार्दछ । पृश्निपर्णीले जरो, तिखारोग र डाह नाश गर्दछ ।

बिहीं

बृहती सिंहिका कान्ता वार्ताकी राष्ट्रिका कुली ।

विषदा स्थूलकण्टाकी महती तु महोटिका ॥९६॥
सिंहिका कफवातघ्नी श्वासशूलज्वरापहा ।
छर्दिहृद्रोगमन्दाग्निमामदोषांश्च नाशयेत् ॥९७॥

बृहती, सिंहिका, कान्ता, वार्ताकी, राष्ट्रिका, कुली, विषदा, स्थूलकण्टाकी, महती र महोटिका : यी बिहीँका पर्यायवाची नामहरू हुन् । बिहीँले कफविकार, वातविकार, दम, शूल, जरो, वाकवाकी, मुटुका रोग, पाचनशक्तिको कमजोरी र आमविकारलाई नाश गर्दछ ।

कण्टकारी

कण्टकारी तु दुःस्पर्शा क्षुद्रा व्याघ्री निदिग्धिका ।
कण्टालिका कण्टकिनी धावनी दुष्प्रधर्षिणी ॥९८॥
कण्टकारी कटुस्तिक्ता तथोष्णा श्वासकासजित् ।
अरुचिज्वरवातामदोषहृद्दनाशिनी ॥९९॥
कण्टकारीद्वयं तिक्तं वातामकफकासजित् ।
क्षुद्रिकायाः फलं ज्ञेयं कटु तिक्तं ज्वरापहम् ॥१००॥
कण्डूकुष्ठकृमिघ्नश्च कफवातहरं तथा ।

कण्टकारी, दुःस्पर्शा, क्षुद्रा, व्याघ्री, निदिग्धिका, कण्टालिका, कण्टकिनी, धावनी र दुष्प्रधर्षिणी : यी कण्टकारीका पर्यायवाची नामहरू हुन् । कण्टकारी पिरो, तीतो र उष्णवीर्यको हुन्छ । यसले दम र खोकीलाई जित्दछ तथा अरुचि, जरो, वातविकार, आमविकार र मुटुका रोग नाश गर्दछ । दुवै थरी कण्टकारी तीता तथा वातविकार, आमविकार, कफविकार र खोकी नाशक हुन्छन् । कण्टकारीको फल पिरो, तीतो र जरो नाशक हुन्छ । यो फलले लुतो, कुष्ठ, कीरा, कफविकार र वातविकार नाश गर्दछ ।

सेतो कण्टकारी (लक्ष्मणा)

लक्ष्मणा क्षेत्रदूती च सितासिंही कुवार्तिका ॥१०१॥
सुश्वेता कण्टकारी च दुर्लभा च महौषधी ।

लक्ष्मणा, क्षेत्रदूती, सितासिंही, कुवार्तिका, सुश्वेता, कण्टकारी, दुर्लभा र महौषधी : यी सेतो कण्टकारीका पर्यायवाची नामहरू हुन् ।

बिहींविशेष (कासघ्नी, सेतो फुल्ने कण्टकारी ?)

कासघ्नी क्षुद्रमाता च क्वचिद्वार्ताकिनी विदुः ॥१०२॥
वनजा किञ्चिदाटव्या कपटा कपटेश्वरी ।
मलिना मलिनाङ्गी च कटुवार्ताकिनीति च ॥१०३॥
गर्दभी बहुवाहा च चन्द्रपुष्पा प्रियङ्करी ।

कासघ्नी, क्षुद्रमाता, वार्ताकिनी, वनजा, आटव्या, कपटा, कपटेश्वरी, मलिना, मलिनाङ्गी, कटुवार्ताकिनी, गर्दभी, बहुवाहा, चन्द्रपुष्पा र प्रियङ्करी : यी बिहींविशेषका पर्यायवाची नामहरू हुन् ।

बिहींविशेष वा भन्टा

वृन्ताकी वार्तिका वृन्ता भण्टाकी भण्टिका मता ॥१०४॥
वृन्ताकं स्वादु तीक्ष्णोष्णं कटुपाकमपित्तलम् ।
कफवातहरं हृद्यं दीपनं शुक्रलं लघु ॥१०५॥

सङ्कलन : मोहन प्रसाद सापकोटा

वृन्ताकी, वार्तिका, वृन्ता, भण्टाकी र भण्टिका : यी बिहींविशेष वा भन्टाका पर्यायवाची नामहरू हुन् । भन्टा गुलियो, तिक्खर र उष्णवीर्यको हुन्छ । यो पचेपछि पिरो हुन्छ । यसले पित्तविकार पनि गर्दैन । यसले कफविकार र वातविकार नाश गर्दछ । यो मुटुका लागि हितकर, दीपनी, शुक्रवर्धक र पचाउन सहज हुन्छ ।

ओदानेकाँडो (गोक्षुर)

गोक्षुरः स्याद् गोक्षुरको भक्षकः स्वादुकण्टकः ।
गोकण्टको भक्षकः षडङ्गः कण्टकत्रिकः ॥१०६॥
श्वदंष्ट्रो बृंहणो वृष्यस्त्रिदोषशमनोऽग्निकृत् ।
शूलहृद्रोगकृच्छ्रघ्नः प्रमेहविनिवर्तकः ॥१०७॥
(गोकण्टो गोक्षुरः कण्टीः षडङ्गः क्षुरकः क्षुरः ।
त्रिकण्टकः कण्टफलः श्वदंष्ट्रो व्यालदंष्ट्रकः ॥
-इत्यानन्दाश्रम पुस्तके अधिकः पाठः ।
गोक्षुरः स्याद् गोक्षुरको भक्षकः स्वादुकण्टकः ।

गोकण्टको भक्षकण्टः षडङ्गः क्षुरकः क्षुरः ॥
 गोकण्टो गोक्षुरः कण्टी षडङ्गः त्रिकट स्त्रिकः ।
 त्रिकण्टकः कण्टफलः श्वदंष्ट्रः व्यालदंष्ट्रकः ॥
 इति क्षीरस्वामी टीकायामुद्धृतः पाठः ।) ।

गोक्षुर, गोक्षुरक, भक्षक, स्वादुकण्टक, गोकण्टक, भक्षकण्ट, षडङ्ग र कण्टकत्रिक : यी गोखुरका पर्यायवाची नामहरू हुन् । यो पौष्टिक, वीर्यवर्धक, त्रिदोष शान्त पार्ने, पाचनशक्ति बढाउने तथा शूल, मुटुका रोग, कृच्छ्र र प्रमेह नाशक हुन्छ । (गोकण्ट, गोक्षुर, कण्टी, षडङ्ग, क्षुरक, क्षुर, त्रिकण्टक, कण्टफल, श्वदंष्ट्र र व्यालदंष्ट्रक : यी आनन्दाश्रममा रहेको पुस्तकमा भएको थप श्लोक अनुसार गोखुरका नामहरू हुन् । यसैगरी गोक्षुर, गोक्षुरक, भक्षक, स्वादुकण्टक, गोकण्टक, भक्षकण्ट, षडङ्ग, क्षुरक, क्षुर, गोकण्ट, गोक्षुर, कण्टी, षडङ्ग (दोहोरो परेको ?), त्रिकट, स्त्रिक, त्रिकण्टक, कण्टफल, श्वदंष्ट्र र व्यालदंष्ट्रक : यी नाम क्षीरस्वामीले लेखेको टीकाबाट लिइएका गोखुरका नामहरू हुन् ।

बेल (बिल्व)

बिल्वः शलाटुः शाण्डिल्यो हृद्यगन्धो महाफलः ।
 शैलूषः श्रीफलश्चाह्वः कर्कटः पूतिमारुतः ॥१०८॥
 लक्ष्मीफलो गन्धगर्भः सत्यकर्मा दुरारुहः ।
 वातसारोऽरिमेदश्च कण्टकाढ्योऽसिताननः ॥१०९॥
 बिल्वमूलं त्रिदोषघ्नं छर्दिघ्नं मधुरं लघु ।
 बिल्वस्य तु फलं बालं स्निग्धं सङ्गाहि दीपनम् ॥११०॥
 कटुतिक्तकषायोष्णं तीक्ष्णं वातकफापहम् ।
 विद्यात्तदेव सम्पक्वं मधुरानुरसं गुरु ॥१११॥
 विदाहि विष्टम्भकरं दोषहृत्पूतिमारुतम् ।

बिल्व, शलाटु, शाण्डिल्य, हृद्यगन्ध, महाफल, शैलूष, श्रीफलश्चाह्व, कर्कट, पूतिमारुत, लक्ष्मीफल, गन्धगर्भ, सत्यकर्मा, दुरारुह, वातसार, अरिमेद, कण्टकाढ्य र असितानन : यी बेलका पर्यायवाची नामहरू हुन् । बेलको जराले त्रिदोष र वाकवाकी नाश गर्दछ । यो गुलियो र पचाउन सहज हुन्छ । बेलको काँचो फल चिल्लो, सङ्गाही र दीपनी हुन्छ । यो पिरो, तीतो, टर््रो, उष्णवीर्यको, तिक्खर तथा वातविकार र कफविकार नाशक हुन्छ । पाकेको फलमा पनि यिनै गुणहरू हुन्छन् भनी जान्छ । यसको

पछिल्लो स्वाद गुलियो हुन्छ । यो पचाउन कठिन, डाह गर्ने, कब्जियत गराउने तथा सासको दुर्गन्ध नाश गर्ने गुणको हुन्छ ।

गिनेरी (अग्निमन्थ)

अग्निमन्थोऽग्निमथनस्तर्कारी वैजयन्तिका ॥११२॥
वह्निमन्थोऽरणी केतुः श्रीपर्णी कर्णिका जया ।
नादेयी वह्निमथनो द्वितीयश्चाग्निमन्थनः ॥११३॥
रक्ताङ्गो मन्थनश्चैव स चैवारणिको मतः ।
(क्षुद्राग्निमन्थस्त्वपरः पूर्वनाम नियोजितः ।
क्षुद्राग्निमन्थ इत्यादिनामानि परिचक्षते ॥)
तर्कारी कटुका तिक्ता तथोष्णाऽनिलपाण्डुजित् ॥११४॥
शोफश्लेष्माग्निमान्द्यांश्च विबन्धांश्च विनाशयेत् ।

अग्निमन्थ, अग्निमथन, तर्कारी, वैजयन्तिका, वह्निमन्थ, अरणी, केतु, श्रीपर्णी, कर्णिका र जया : यी पहिलो थरी गिनेरीका; नादेयी र वह्निमथन : यी दोश्रो थरी गिनेरीका तथा रक्ताङ्ग, मन्थन र अरणिक : यी तेस्रो थरी गिनेरीका पर्यायवाची नामहरू हुन् । (अर्को क्षुद्राग्निमन्थ पनि हुन्छ, यो माथि बताइएका नामका अगाडि क्षुद्र शब्द जोडेपछि यसलाई बुझिन्छ) । गिनेरी पिरो, तीतो, उष्णवीर्यको तथा वातविकार र पाण्डुरोगलाई जित्ने गुणको हुन्छ । यसले सुजन, कफविकार, पाचनशक्तिको कमजोरी र विबन्ध नाश गर्दछ ।

टटलो (श्योनाक)

श्योनाकः शुकनासश्च कट्वङ्गोऽथ कटम्भरः ॥११५॥
मयूरजङ्घोऽरलुकः प्रियजीवः कुटन्नटः ।
स प्रोक्तः पृथगिम्बश्च टिण्टुको दीर्घवृन्तकः ॥११६॥
भल्लूकः शिल्लको फल्गुवृन्ताको जम्बुको मतः ।
टिण्टुकः शिशिरस्तित्तो वस्तिरोगहरः परः ॥११७॥
पित्तश्लेष्मामवातातीसारकासारुचीर्जयेत् ।

श्योनाक, शुकनास, कट्वङ्ग, कटम्भर, मयूरजङ्घ, अरलुक, प्रियजीव र कुटन्नट : यी पहिलो थरी टटलोका तथा पृथशिम्ब, टिण्टुक, दीर्घवृन्तक, भल्लूक, शिल्लक, फल्गुवृन्ताक र जम्बुक : यी दोश्रो थरी टटलोका पर्यायवाची नामहरू हुन् । टटलो शीतवीर्यको, तीतो र प्रभावकारी ढङ्गले तल्लोपेटका रोग नाश गर्ने गुणको हुन्छ । यसले पित्तविकार, कफविकार, आमविकार, वातविकार, अतीसार, खोकी र अरुची माथि विजय हासिल गर्दछ ।

खमारी (काश्मर्या)

काश्मर्या काश्मरी हीरा काश्मर्यो मधुपर्ण्यपि ॥११८॥

श्रीपर्णी सर्वतोभद्रा गम्भारी कृष्णवृन्तका ।

श्रीपर्णी स्वरसे तिक्ता गुरूष्णा रक्तपित्तजित् ॥११९॥

त्रिदोषश्रमदाहार्तिज्वरतृष्णाविषाञ्जयेत् ।

काश्मर्या, काश्मरी, हीरा, काश्मर्य, मधुपर्णी, श्रीपर्णी, सर्वतोभद्रा, गम्भारी र कृष्णवृन्तका : यी खमारीका पर्यायवाची नामहरू हुन् । खमारी तीतो, पचाउन कठिन र उष्णवीर्यको हुन्छ । यसले रक्तपित्तलाई जित्दछ तथा त्रिदोष, थकाई, डाह, पीडा, जरो, तिर्खा र विषविकार नाश गर्दछ ।

पाडरी (पाटला)

पाटलोक्ता तु कुम्भीका ताम्रपुष्पाऽम्बुवासिनी ॥१२०॥

स्थाली वसन्तदूती स्यादमोघा कालवृन्तिका ।

पाटला तु रसे तिक्ता गुरूष्णा पवनास्रजित् ॥१२१॥

पित्तहिक्कावमीशोफकफारोचकनाशिनी ।

पाटला, कुम्भीका, ताम्रपुष्पा, अम्बुवासिनी, स्थाली, वसन्तदूती, अमोघा र कालवृन्तिका : यी पाडरीका पर्यायवाची नामहरू हुन् । पाडरी तीतो, पचाउन कठिन र उष्णवीर्यको हुन्छ । यसले वातविकार र रक्तविकारलाई जित्दछ तथा पित्तविकार, बाडुलीरोग, वाकवाकी, सुजन, कफविकार र अरुची नाश गर्दछ ।

पाडरीविशेष (जीऋद्धिकाष्ठपाटला)

द्वितीया पाटला श्वेता निर्दिष्टा काष्ठपाटला ॥१२२॥
सा चैव श्वेतकुम्भीका कुबेराक्षी फलेरुहा ।
पाटलाया गुणस्तद्वत्किञ्चिन्मारुतकृद्भवेत् ॥१२३॥

दोश्रो थरी सेतो पाडरीलाई काष्ठपाटला भनिन्छ । यसलाई श्वेतकुम्भीका, कुबेराक्षी र फलेरुहा पनि भनिन्छ । यसको गुण पाडरीको जस्तै हुन्छ तर यसले थोरै वातविकार गर्दछ ।

जीवक

जीवकः शृङ्गकः क्ष्वेडो दीर्घायुः कूर्चशीर्षकः ।
ह्रस्वाङ्गी मधुरः स्वादुः प्राणदश्चिरजीव्यपि ॥१२४॥
जीवको मधुरः शीतो रक्तपित्तानिलाञ्जयेत् ।
दाहज्वरक्षयं हन्ति कफशुक्रविवर्धनः ॥१२५॥

सङ्कलन : मोहन प्रसाद सापकोटा

जीवक, शृङ्गक, क्ष्वेड, दीर्घायु, कूर्चशीर्षक, ह्रस्वाङ्गी, मधुर, स्वादु, प्राणद र चिरजीवी : यी जीवकका पर्यायवाची नामहरू हुन् । जीवक गुलियो, शीतवीर्यको तथा रक्तपित्त र वातविकारलाई जित्ने गुणको हुन्छ । यसले डाह, ज्वर र क्षयरोग नाश गर्दछ तथा कफ र शुक्र बढाउँदछ ।

ऋषभक

ऋषभो दुर्धरो धीरो मातृको वृषभो वृषः ।
विषाणी ककुदिन्द्राक्षो बन्धुरो गोपतिस्तथा ॥१२६॥
ऋषभस्तु रसे स्वादुः पित्तरक्तसमीरहा ।
क्षयदाहज्वरान् हन्ति श्लेष्मशुक्रविवर्धनः ॥१२७॥

ऋषभ, दुर्धर, धीर, मातृक, वृषभ, वृष, विषाणी, ककुद, इन्द्राक्ष, बन्धुर र गोपति : यी ऋषभकका पर्यायवाची नामहरू हुन् । ऋषभक गुलियो हुन्छ । यसले रक्तपित्त, वातविकार, क्षयरोग, डाह र जरो नाश गर्दछ तथा कफविकार र शुक्र बढाउँदछ ।

मेदा र महामेदा

मेदा ज्ञेया मणिच्छिद्रा शल्यपर्णी धराऽपि च ।
महामेदा देवमणिर्वसुच्छिद्रा प्रकीर्तिता ॥१२८॥
मेदा स्वादुरसा शीता क्षयदाहज्वरापहा ।
सा पित्तं तु जयेच्छुक्रं सकफं च विवर्धयेत् ॥१२९॥
महामेदा हिमा स्वादुः कफशुक्रविवर्धनी ।
हन्ति दाहास्रपित्तानि क्षयवातज्वरैः सह ॥१३०॥

मेदा, मणिच्छिद्रा, शल्यपर्णी र धरा : यी मेदाका तथा महामेदा, देवमणि र वसुच्छिद्रा : यी महामेदाका पर्यायवाची नामहरू हुन् । मेदा गुलियो, शीतवीर्यको तथा क्षयरोग, डाह र जरो नाशक हुन्छ । यसले पित्तविकारलाई जित्दछ तथा शुक्र र कफविकार बढाउँदछ । महामेदा गुलियो र शीतवीर्यको हुन्छ । यसले कफविकार र शुक्र बढाउँदछ तथा डाह, रक्तपित्त, क्षयरोग, वातविकार र जरो नाश गर्दछ ।

भाङ (विजया)

सङ्कलन : मोहन प्रसाद सापकोटा
विजया रञ्जिका भङ्गा तन्द्राकृद् बहुवादिनी ।
मादिनी मादिका मातुः प्रोक्ता गञ्जाकिनिस्तथा ॥१३१॥
भङ्गी कफहरी तिक्ता ग्राहिणी पाचनी लघुः ।
तीक्ष्णोष्णा पित्तला मोहमन्दवाग्वह्निवर्धनी ॥१३२॥

विजया, रञ्जिका, भङ्गा, तन्द्राकृद्, बहुवादिनी, मादिनी, मादिका, मातु र गञ्जाकिनि : यी भाङका पर्यायवाची नामहरू हुन् । भाङले कफविकार नाश गर्दछ । यो तीतो ग्राही, पाचनी र पचाउन सहज हुन्छ । भाङ तिक्खर, उष्णवीर्यको, पित्तविकार गर्ने तथा मोह, लोसोपन, बोली र पाचनशक्ति बढाउँदछ ।

कल्लेलहरो (काकोली)

काकोली मधुरा शुक्ला क्षीरा ध्वाङ्गोलिका स्मृता ।
वयस्था स्वादुमांसी च वायसोली च कर्णिका ॥१३३॥
काकोली स्वादुशीता च वातपित्तज्वरापहा ।

दाहघ्नी क्षयहन्त्री च श्लेष्मशुक्रविवर्धिनी ॥१३४॥

काकोली, मधुरा, शुक्ला, क्षीरा, ध्वाङ्गोलिका, वयस्था, स्वादुमांसी, वायसोली र कर्णिका : यी कल्छेलहरोका पर्यायवाची नामहरू हुन् । काकोली गुलियो, शीतवीर्यको तथा वातविकार, पित्तविकार, जरो, डाह र क्षयरोग नाशक हुन्छ । यसले कफविकार र शुक्र बढाउँदछ ।

दूधेकल्छेलहरो (क्षीरकाकोली)

द्वितीया क्षीरकाकोली क्षीरशुक्ला पयस्विनी ।

वयःस्था क्षीरमधुरा वीरा क्षीरविषाणिका ॥१३५॥

रुचिष्या कफपित्तासहद्रोगशमनी मता ।

श्वासकासक्षयहरा वृष्या वस्तिविशोधनी ॥१३६॥

क्षीरकाकोली, क्षीरशुक्ला, पयस्विनी, वयःस्था, क्षीरमधुरा, वीरा र क्षीरविषाणिका : यी दोश्रो थरी काकोली अर्थात् दूधेकल्छेलहरोका पर्यायवाची नामहरू हुन् । दूधे कल्छेलहरो रुचिप्रद तथा कफविकार, रक्तपित्त र मुटुका रोग शान्त पार्ने गुणको हुन्छ । यसले दम, खोकी र क्षयरोग नाश गर्दछ । यो वीर्यवर्धक र तल्लोपेट (मूत्राशय) सफा गर्ने गुणको हुन्छ ।

वनमास (माषपर्णी)

माषपर्णी च काम्बोजी कृष्णवृन्ता महासहा ।

आर्द्रमाषा सिंहविन्ना मांसमाषाऽश्वपुच्छिका ॥१३७॥

माषपर्णी रसे तिक्ता शीतला रक्तपित्तजित् ।

कफशुक्रकरी स्वादुर्हन्ति दाहज्वरानिलान् ॥१३८॥

माषपर्णी, काम्बोजी, कृष्णवृन्ता, महासहा, आर्द्रमाषा, सिंहविन्ना, मांसमाषा र अश्वपुच्छिका : यी वनमासका पर्यायवाची नामहरू हुन् । वनमास तीतो, शीतवीर्यको तथा रक्तपित्तलाई जित्ने गुणको हुन्छ । यसले कफविकार र शुक्र बढाउँदछ । यो गुलियो हुन्छ । यसले डाह, जरो र वातविकार नाश गर्दछ ।

वनमुगी (मुद्रपर्णी)

मुद्रपर्णी क्षुद्रसहा शिम्बी मार्जारगन्धिका ।
वनजा रिङ्गिणी ह्रस्वा शूर्पपर्ण्यावुभे स्मृते ॥१३९॥
मुद्रपर्णी हिमा स्वादुर्वातरक्तविनाशिनी ।
पित्तदाहज्वरान् हन्ति कृमिघ्नी कफशुक्रकृत् ॥१४०॥

मुद्रपर्णी, क्षुद्रसहा, शिम्बी, मार्जारगन्धिका, वनजा, रिङ्गिणी, ह्रस्वा र शूर्पपर्णी : यी वनमुगीका पर्यायवाची नामहरू हुन् । वनमुगी शीतवीर्यको, गुलियो तथा वातविकार, रक्तविकार, पित्तविकार, डाह, जरो र कीरा नाशक हुन्छ । यसले कफविकार र शुक्र बढाउँदछ ।

जीवन्ती

जीवन्ती जीवनीया च जीवनी जीववर्धनी ।
माङ्गल्यनामधेया च शाकश्रेष्ठा यशस्करी ॥१४१॥
चक्षुष्या सर्वदोषघ्नी जीवन्ती मधुरा हिमा ।
शाकानां प्रवरा न्यूना द्वितिया किञ्चिदेव तु ॥१४२॥

जीवन्ती, जीवनीया, जीवनी, जीववर्धनी, माङ्गल्यनामधेया, शाकश्रेष्ठा र यशस्करी : यी जीवन्तीका पर्यायवाची नामहरू हुन् । जीवन्ती आँखाका लागि हितकर, सबै रोग (त्रिदोष) नाशक, गुलियो र शीतवीर्यको हुन्छ । यो सागपातमध्येमा उत्तम सागपात हो । दोश्रो थरी जीवन्ती केही कम गुनिलो हुन्छ ।

जेठीमधु (मधुयष्टी)

मधुयष्टी च यष्टी च यष्टीमधु मधुस्रवा ।
यष्टीकं मधुकं चैव यष्ट्याहं मधुयष्टिका ॥१४३॥
स्थलजा जलजाऽन्या तु मधुपर्णी मधूलिका ।
मधुयष्टी स्वादुरसा शीता पित्तविनाशिनी ॥१४४॥
वृष्या शोषक्षयहरा विषच्छर्दिविनाशिनी ।

मधुयष्टी, यष्टी, यष्टीमधु, मधुस्रवा, यष्टीक, मधुक, यष्ट्याह्व, मधुयष्टिका र स्थलजा : यी जमिनमा हुने जेठीमधुका तथा जलजा, मधुपर्णी र मधूलिका : यी पानीमा हुने जेठीमधुका पर्यायवाची नामहरू हुन् । जेठमधु गुलियो, शीतवीर्यको तथा पित्तविकार नाशक हुन्छ । यो वीर्यवर्धक तथा सुकेनास, क्षयरोग, विषविकार र वाकवाकी नाशक हुन्छ ।

जेठीमधुविशेष (क्लीतनकम्)

तल्लक्षणं क्लीतनकं क्लीतनं क्लीतिका च सा ॥१४५॥

यष्टीकायुगलं स्वादु तृष्णापित्तास्रजित् हिमम् ।

यही जलीय जेठीमधुलाई क्लीतनक, क्लीतन र क्लीतिका पनि भनिन्छ । दुवै जेठीमधु गुलिया तथा तिर्खा र रक्तपित्तलाई जित्ने एवं शीतवीर्यका हुन्छन् ।

ऋद्धि

ऋद्धिर्वृद्धिः सुखं सिद्धी रथाङ्गं मङ्गलं वसु ॥१४६॥

ऋषिसृष्टा युगं योग्यं लक्ष्मीः सर्वजनप्रिया ।

ऋद्धिर्मधुरशीता स्यात् क्षयपित्तानिलाञ्जयेत् ॥१४७॥

रक्तदोषं ज्वरं हन्ति वर्धनी कफशुक्रयोः ।

ऋद्धि, वृद्धिः सुख, सिद्धी, रथाङ्ग, मङ्गल, वसु, ऋषिसृष्टा, युग, योग्य, लक्ष्मी र सर्वजनप्रिया : यी ऋद्धिका पर्यायवाची नामहरू हुन् । ऋद्धि गुलियो, शीतवीर्यको तथा क्षयरोग, पित्तविकार र वातविकारलाई जित्ने गुणको हुन्छ । यसले रक्तविकार र जरो नाश गर्दछ तथा कफविकार र शुक्र बढाउँदछ ।

बिराले लहरो (विदारी)

विदारिका मता शुक्ला स्वादुकन्दा शृगालिका ॥१४८॥

वृष्यकन्दा विदारी च वृष्यवल्ली विडालिका ।

विदारी शिशिरा स्वादुर्गुरुः स्निग्धा समीरजित् ॥१४९॥

पित्तास्रजित् तथा बल्या वृष्या चैव प्रकीर्तिता ।

विदारिका, शुक्ला, स्वादुकन्दा, शृगालिका, वृष्यकन्दा, विदारी, वृष्यवल्ली र विडालिका : यी बिरालेलहरोका पर्यायवाची नामहरू हुन् । बिराले लहरो शीतवीर्यको, गुलियो, पचाउन कठिन, चिल्लो तथा वातविकार र रक्तपित्तलाई जित्ने गुणको हुन्छ । यो बलदायक र वीर्यवर्धक पनि हुन्छ ।

दूधे बिराले लहरो (क्षीरविदारी)

अन्या क्षीरविदारी स्यादिक्षुगन्धेक्षुवल्लीपि ॥१५०॥

क्षीरवल्ली क्षीरकन्दा क्षीरशुक्ला पयस्विनी ।

क्षीरविदारिका बल्या वातपित्तहरा च सा ॥१५१॥

मधुरो बृंहणो वृष्यः शीतस्पर्शोऽतिमूत्रलः ।

स्तन्यदोषस्य हरणी पित्तशूलनिषूदनी ॥१५२॥

अर्को थरी बिराले लहरो (दूधे बिराले लहरो)का क्षीरविदारी, इक्षुगन्धा, इक्षुवल्ली, क्षीरवल्ली, क्षीरकन्दा, क्षीरशुक्ला र पयस्विनी पर्यायवाची नामहरू हुन् । यो बलदायक, वातविकार नाशक, पित्तविकार नाशक, गुलियो, पौष्टिक, वीर्यवर्धक, छुँदा चिसो, धेरै पिसाब गराउने, स्त्रीको दूध-दोष नाशक र पित्तजन्य शूल नाशक हुन्छ ।

काउसो (कपिकच्छू)

कपिकच्छूरात्मगुप्ता स्वयङ्गुप्ता महर्षभी ।

लाङ्गूली कण्डुला चण्डा मर्कटी दुरभिग्रहा ॥१५३॥

कपिकच्छूः रसे स्वादुस्तिक्ता शीताऽनिलापहा ।

वृष्या पित्तास्रहन्त्री च दुष्टव्रणविनाशिनी ॥१५४॥

कपिकच्छू, आत्मगुप्ता, स्वयंगुप्ता, महर्षभी, लाङ्गूली, कण्डुला, चण्डा, मर्कटी र दुरभिग्रहा : यी काउसोका पर्यायवाची नामहरू हुन् । काउसो स्वादिलो, तीतो, शीतवीर्यको, वातविकार नाशक, वीर्यवर्धक, रक्तपित्त नाशक र खराब खटिरा नाशक हुन्छ ।

काउसेसिमी (दधिपुष्पी)

दधिपुष्पी तु खट्वाङ्गी खट्वा पर्यङ्कपादिका ।

ऋषभी सा तु काकाण्डी ज्ञेया शूकरपादिका ॥१५५॥
कफपित्तहरा गुर्वी रञ्जनी वातनाशिनी ।
उष्णवीर्या स्वादुरसा काकाण्डी माषवद्भवेत् ॥१५६॥

दधिपुष्पी, खट्वाङ्गी, खट्वा, पर्यङ्कपादिका, ऋषभी, काकाण्डी र शूकरपादिका : यी काउसेसिमीका पर्यायवाची नामहरू हुन् । यो कफविकार नाशक, पित्तविकार नाशक, पचाउन कठिन, स्वादिलो (रञ्जनी ?), वातविकार नाशक, उष्णवीर्यको, स्वादिलो रस भएको र मासजस्तै हुन्छ ।

सुनिषण्णक

शितिवारः सूचिपत्रः सूच्याहः सुनिषण्णकः ।
श्रीवारकः शितिवरः स्वस्तिकः कुक्कुटः शिखी ॥१५७॥
शितिवारस्तु सङ्गाही कषायः सर्वदोषजित् ।
हृद्रोगप्लीहगुल्मार्शोबस्तिशुद्धिकरः परः ॥१५८॥

शितिवार, सूचिपत्र, सूच्याह, सुनिषण्णक, श्रीवारक, शितिवर, स्वस्तिक, कुक्कुट र शिखी : यी सुनिषण्णकका पर्यायवाची नामहरू हुन् । यो ग्राही, टर्पो, सबै दोषलाई जित्ने तथा मुटुका रोग, फियोको सुजन, गुल्म, अल्काई नाशक तथा विशेषतः मूत्राशय प्रशोधक हुन्छ ।

पाषाणभेद

पाषाणभेदकोऽश्मघ्नः शिलाभेदोऽश्मभेदकः ।
स चैवोपलभेदश्च नगभिदृषदश्मजित् ॥१५९॥
अश्मभेदो हिमस्तिक्तः शर्कराशिशूलजित् ।
हृद्रोगप्लीहगुल्मार्शोबस्तिशुद्धिकरः परः ॥१६०॥

पाषाणभेदक, अश्मघ्न, शिलाभेद, अश्मभेदक, उपलभेद, नगभिद र दृषदश्मजित् : यी पाषाणभेदका पर्यायवाची नामहरू हुन् । यो शीतवीर्यको र तीतो हुन्छ । यसले मधुमेह र पुरुष जननेन्द्रियको शूलरोगलाई जित्दछ । पाषाणभेद मुटुका रोग, फियोका रोग, गुल्म, अल्काई र मूत्राशयलाई विशेष तरिकाले शुद्ध पार्दछ ।

सानो र ठूलो गोरखमुण्डी (मुण्डी)वन

श्रावणी स्यान्मुण्डिनि(ति)का भिक्षुः श्रवणशीर्षिका ।
श्रवणाह्वा प्रव्रजिता परिव्राजी तपोधना ॥१६१॥
महाश्रावणिका मुण्डी लोभनीया तथाऽन्यका ।
कदम्बपुष्पिका प्रोक्ता छिन्नग्रन्थिनिका च सा ॥१६२॥
मुण्डिका कटुतिक्ता स्यादनिलासविनाशिनी ।
आमारुचिघ्न्यपस्मारगण्डश्लीपदनाशिनी ॥१६३॥

श्रावणी, मुण्डिनिका, भिक्षु, श्रवणशीर्षिका, श्रवणाह्वा, प्रव्रजिता, परिव्राजी र तपोधना : यी सानो गोरखमुण्डीका तथा महाश्रावणिका, मुण्डी, लोभनीया, कदम्बपुष्पिका र छिन्नग्रन्थिनिका : यी ठूलो गोरखमुण्डीका पर्यायवाची नामहरू हुन् । गोरखमुण्डी पिरो र तीतो हुन्छ । यसले वातविकार, रक्तविकार, आमविकार, अरुची, छारेरोग, गलगौड र हात्तीपाइले रोग नाश गर्दछ ।

सेतो अनन्तमूल (सारिवा)

सङ्कलन : मोहन प्रसाद सापकोटा
सारिवा शारदा गोपा गोपवल्ली प्रतानिका ।
गोपकन्या लताऽऽस्फोता श्वेतोक्ता काष्ठसारिवा ॥१६४॥

सारिवा, शारदा, गोपा, गोपवल्ली, प्रतानिका, गोपकन्या, लता, आस्फोता, श्वेता र काष्ठसारिवा : यी सेतो अनन्तमूलका पर्यायवाची नामहरू हुन् ।

कालो अनन्तमूल (कृष्णमूली)

सारिवाऽन्या कृष्णमूली कृष्णा चन्दनसारिवा ।
भद्रा चन्दनगोपा तु चन्दना कृष्णवल्ल्यपि ॥१६५॥

कृष्णमूली, कृष्णा, चन्दनसारिवा, भद्रा, चन्दनगोपा, चन्दना र कृष्णवल्ल्य : यी अर्को थरी अर्थात् कालो अनन्तमूलका पर्यायवाची नामहरू हुन् ।

अनन्तमूल (सारिवा) का गुण

सारिवे द्वे तु मधुरे कफवातास्रनाशने ।
कुष्ठकण्डूज्वरहरे मेहदुर्गन्धिनाशने ॥१६६॥
कृष्णमूली तु सङ्गाहिशिशिरा कफवातजित् ।
तृष्णारुचिप्रशमनी रक्तपित्तहरा स्मृता ॥१६७॥

दुवै थरी अनन्तमूल गुलिया हुन्छन् । यिनले कफविकार, वातविकार, रक्तविकार, कुष्ठ, लुतो, जरो, प्रमेह र शरीरको गन्ध नाश गर्दछन् । कालो अनन्तमूल ग्राही, शीतवीर्यको तथा कफविकार र वातविकारलाई जित्ने गुणको हुन्छ । यसले तिर्खा र अरुचीलाई शान्त पार्दछ तथा रक्तपित्तलाई नाश गर्दछ ।

बाकुची (बाकुची)

बाकुची सोमराजी तु सोमवल्ली सुवल्ल्यपि ।
अवल्गुजा कृष्णफला सैव पूतिफला मता ॥१६८॥
चन्द्रलेखेन्दुलेखा च शशिलेखा मता च सा ।
पूतिकर्णी कालमेषी दुर्गन्धा कुष्ठनाशनी ॥१६९॥
बाकुची शीतला तिक्ता श्लेष्मकुष्ठकृमीञ्जयेत् ।
रसायनोपयुक्ता च रुचिमेधाविवर्धनी ॥१७०॥
बाकुची कटुका पाके ग्राहिकुष्ठव्रणापहा ।

बाकुची, सोमराजी, सोमवल्ली, सुवल्ली, अवल्गुजा, कृष्णफला, पूतिफला, चन्द्रलेखा, इन्दुलेखा, शशिलेखा, पूतिकर्णी, कालमेषी, दुर्गन्धा र कुष्ठनाशनी : यी बाकुचीका पर्यायवाची नामहरू हुन् । यो शीतवीर्यको, तीतो तथा कफविकार, कुष्ठ, घाउखटिरा र कीरालाई जित्ने गुणको हुन्छ । यो रसायनी, रुचिवर्धक र दिमागको सम्भ्रना शक्ति वर्धक हुन्छ । बाकुची पचेपछि पिरो हुन्छ । यो ग्राही हुन्छ । यसले कुष्ठ र घाउखटिरा निको पार्दछ ।

मइनफल (मदन)

मदनः शल्यको राठः पिण्डी पिण्डीतकः फलः ॥१७१॥

तगरः करहाटश्चच्छर्दनो विषपुष्पकः ।
मदनः कटुकस्तिक्तस्तथा चोष्णो व्रणापहः ॥१७२॥
श्लेष्मज्वरप्रतिश्यायगुल्मेषु विद्रधीषु च ।
शोफदोषापहो बस्तौ वमने चेह शस्यते ॥१७३॥

मदन, शल्यक, राठ, पिण्डी, पिण्डीतक, फल, तगर, करहाट, छर्दन र विषपुष्पक : यी मइनफलका पर्यायवाची नामहरू हुन् । यो पिरो, तीतो, उष्णवीर्यको र घाउखटिरा नाशक हुन्छ । यो कफविकार, जरो, पिनास, गुल्म, विद्रधी, सुजन र मूत्राशयमा विकार हुँदा बान्ता गराउनका लागि उपयोगी हुन्छ ।

लौका वा तुम्बा (तुम्बी)

कटुकालाम्बुनी तुम्बी लम्बा पिण्डफला च सा ।
इक्ष्वाकुः क्षत्रियवरा तिक्तबीजा महाफला ॥१७४॥
कासश्वासच्छर्दिहरो विषार्ते कफकर्शति ।
इक्ष्वाकुर्वमने शस्तः प्रताम्यति च मानवे ॥१७५॥
कटुतुम्बी कटुस्तिक्ता वातकृच्छ्वासकासजित् ।
कफघ्नी शोधनी शोफव्रणशूलविषापहा ॥१७६॥
द्वितीया भिन्नविक्रान्ता गुर्वी रूक्षाऽतिशीतला ।

कटुकालाम्बुनी, तुम्बी, लम्बा, पिण्डफला, इक्ष्वाकु, क्षत्रियवरा, तिक्तबीजा र महाफला : यी तुम्बाका पर्यायवाची नाम हुन् । तुम्बामा खोकी, दम र वाकवाकी नाश गर्ने गुण हुन्छ । यो विषविकार, कफविकार र आँखा अगिल्टिर अँध्यारो देखिने जस्ता मानिसका रोगमा बान्ता गराउन उपयोगी हुन्छ । पिरो वा तीते लौका पिरो र तीतो हुन्छ । यसले वातविकार गर्दछ तथा दम र खोकीलाई जित्दछ । यसले कफविकार नाश गर्दछ । शरीरलाई प्रशोधन गर्न उपयोगी हुन्छ । यसले सुजन, खटिरा, शूल र विषविकार नाश गर्दछ । अर्को थरी लौका भने फरक) गुणको, पचाउन कठिन, रुखो र अती शीतवीर्यको हुन्छ ।

बन-घिरौलो (जीमूतक)

जीमूतको देवताडो वृत्तकोशो गरागरी ॥१७७॥

प्रोक्ताऽऽखुविषहा वेणी देवदाली च ताडका ।
जीमूतको ज्वरश्वासकासहिध्मारुचिक्षये ॥१७८॥
शोफपाण्डुविषध्वंसी गरेषु वमने हितः ।

जीमूतक, देवताड, वृत्तकोश, गरागरी, आखुविषहा, वेणी, देवदाली र ताडका : यी वनघिरौलाका पर्यायवाची नाम हुन् । जरो, दम, खोकी, बाडुली, अरुचि, क्षयरोग, सुजन, पाण्डु र विषविकार यसले नाश गर्दछ । यो कृत्रिमविषमा बान्ता गराउन हितकर हुन्छ ।

कौक्रोविशेष (त्रपुसम्)

त्रपुसं कटुकं तिक्तं विपाण्डुर्हस्तिपर्णिनी ॥१७९॥
दीर्घपर्णी मूत्रफला लता कर्कटिकाऽपि च ।
त्रपुसं छर्दिहृत्प्रोक्तं मूत्रबस्तिविशोधनम् ॥१८०॥

त्रपुस, कटुक, तिक्त, विपाण्डु, हस्तिपर्णिनी, दीर्घपर्णी, मूत्रफला र लताकर्कटिका : यी कौक्रोविशेषका पर्यायवाची नाम हुन् । यसले वाकवाकी नाश गर्दछ तथा तल्लोपेट वा मूत्राशयलाई सफा गर्दछ ।

कौक्रोविशेष (उर्वारु)

उर्वारुः कर्कटी प्रोक्ता व्यालपत्रा च लोमशा ।
स्थूला तोयफला चैव हस्तिदन्तफला मुनिः ॥१८१॥
उर्वारुकं पित्तहरं सुशीतलं मूत्रामयघ्नं मधुरं रुचिप्रदम् ।
सन्तापमूर्च्छापहरं सुतृप्तिदं वातप्रकोपाय घ्नं तु सेवितम् ॥१८२॥

उर्वारु, कर्कटी, व्यालपत्रा, लोमशा, स्थूला, तोयफला र हस्तिदन्तफला : यी सात नामश कौक्रोविशेषका पर्यायवाची नाम हुन् । उर्वारु पित्तविकार नाशक, अति शीतवीर्यको, पिसाबसम्बन्धी रोग नाशकर्ता, गुलियो, रुचिप्रद, डाह र बेहोसीपन नाशक, तृप्तिदायक तथा धेरै खाए वातविकार गर्ने गुणको हुन्छ ।

काँक्रोविशेष (बालुकम्)

बालुकं काण्डकं बालु तच्छीतं मधुरं गुरु ।
रक्तपित्तहरं भेदि लघूष्णं पक्वमग्निकृत् ॥१८३॥

बालुक, काण्डक र बालु : यी बालुकका पर्यायवाची नाम हुन् । यो शीतवीर्यको, गुलियो, पचाउन कठिन, रक्तपित्त नाशक, भेदनी तथा पचेपछि (पाकेपछि) पचाउन सहज, उष्णवीर्यको र पाचनशक्ति बढाउने गुणको हुन्छ ।

काँक्रोविशेष (चित्रफल)

शीर्णवृन्तं चित्रफलं विचित्रं पीतवर्णकम् ।
शीर्णवृन्तं लघु स्वादु भेद्युष्णं वह्निपित्तकृत् ॥१८४॥

शीर्णवृन्त, चित्रफल, विचित्र र पीतवर्णक : यी शीर्णवृन्तका पर्यायवाची नाम हुन् । यो पचाउन सहज, स्वादिलो, भेदनी, उष्णवीर्यको तथा पाचनशक्ति र पित्तविकार बढाउने गुणको हुन्छ ।

काँक्रोविशेष (चिर्भटम्)

चिर्भटं धेनुदुग्धं च ज्ञेयं गोरक्षकर्कटी ।
चिर्भटं मधुरं रूक्षं गुरु पित्तकफापहम् ॥१८५॥

चिर्भट, धेनुदुग्ध र गोरक्षकर्कटी : यी चिर्भटका पर्यायवाची नाम हुन् । यो गुलियो, रुखो, पचाउन कठिन तथा पित्तविकार र कफविकार नाशगर्ने गुणको हुन्छ ।

काँक्रोविशेष वा फर्सी (डङ्गरी)

डङ्गरी डङ्गरी चैव दीर्घोर्वारुश्च डङ्गरिः ।
डङ्गरी नागशुण्डी च गजदन्तफला मुनिः ॥१८६॥
डङ्गरी शीतला रुच्या दाहपित्तास्रदोषजित् ।
शोषहृत्तर्पणी गौल्या जाड्यहा मूत्ररोधनुत् ॥१८७॥

डङ्गरी, डाङ्गरी, दीर्घोर्वारु, डङ्गरी, डाङ्गरी, नागशुण्डी र गजदन्तफला : यी डङ्गरीका पर्यायवाची नाम हुन् । यो शीतवीर्यको, रुचिप्रद तथा डाह, पित्तविकार र रक्तविकारलाई जित्ने गुणको हुन्छ । यसले सुकेनास नाश गर्दछ । यो तृप्तिदायक, गुलियो तथा शरीरको लाटोपन र पिसाब रोकिने रोग नाशगर्ने गुणको हुन्छ ।

कुभिण्डो (कूष्माण्डी)

कूष्माण्डिका कुम्भफला तथा स्थिरफला मता ।
कूष्माण्डी सोमसृष्टा च पीतिका च बृहत्फला ॥१८८॥
वल्लीफलानां प्रवरं कूष्माण्डं वातपित्तजित् ।
वस्तिशुद्धिकरं वृष्यं हृद्यं चेतोविकारजित् ॥१८९॥

कूष्माण्डिका, कुम्भफला, स्थिरफला, कूष्माण्डी, सोमसृष्टा, पीतिका र बृहत्फला : यी कुभिण्डोका पर्यायवाची नाम हुन् । यो लहरे फल-तरकारीमध्येमा उत्तम तरकारी हो । यसले वातविकार र पित्तविकारलाई जित्दछ । कुभिण्डोले तल्लो पेट वा मूत्राशय सफा गर्दछ । यो वीर्यवर्धक, मुटुका लागि हितकर तथा मानसिक विकार नाशगर्ने गुणको हुन्छ ।

फल नफल्ने चठेल (वन्ध्याकर्कोटकी)

वन्ध्याकर्कोटकी देवी मनोज्ञा च कुमारिका ।
नागारिः सर्पदमनी विषकण्टकिनी तथा ॥१९०॥
विज्ञेया नागदमनी सर्वभूतप्रमर्दिनी ।
वन्ध्यापुत्रपदा चैव ज्ञेया योगेश्वरी तथा ॥१९१॥

वन्ध्याकर्कोटकी, देवी, मनोज्ञा, कुमारिका, नागारि, सर्पदमनी, विषकण्टकिनी, नागदमनी, सर्वभूतप्रमर्दिनी, वन्ध्यापुत्रपदा र योगेश्वरी : यी फल नफल्ने चठेलका पर्यायवाची नाम हुन् ।

चठेल (कर्कोटकी)

कर्कोटकी स्वादुफला मनोज्ञा च कुमारिका ।

अवन्ध्या चैव देवी च विषप्रशमनी तथा ॥१९२॥

कर्कोटकी, स्वादुफला, मनोज्ञा, कुमारिका, अवन्ध्या, देवी र विषप्रशमनी : यी चठेलका पर्यायवाची नाम हुन् ।

चठेलका गुण (कर्कोटकी गुणः)

कर्कोटकीयुगं तिक्तं हन्ति श्लेष्मविषद्वयम् ।
मधुना च शिरोरोगे कन्दस्तस्याः प्रशस्यते ॥१९३॥

दुवै थरी चठेल तीता तथा कफविकार र दुवै थरी विषविकार नाशगर्ने गुणका हुन्छन् । टाउकाका रोगमा यस्को कन्द महसँग प्रयोग गर्नु हितकर हुन्छ ।

धिरौलो विशेष (धामार्गव)

धामार्गवः कोशफला राजकोशातकी तथा ।
कर्कोटकी पीतपुष्पा महाजालिनिरुच्यते ॥१९४॥

धामार्गव, कोशफला, राजकोशातकी, कर्कोटकी, पीतपुष्पा र महाजालिनि : यी धिरौलो विशेषका पर्यायवाची नाम हुन् ।

धिरौलो विशेष (महाकोशातकी)

महाकोशातकी धन्या हस्तिघोषा महाफला ।
धामार्गवो गदेष्विष्टः स्थिरेषु च महत्सु च ॥१९५॥

महाकोशातकी, हस्तिघोषा र महाफला : यी अर्को थरी धिरौलोका पर्यायवाची नाम हुन् । धामार्गव जरो गढेका र फैलिएका रोगमा हितकर हुन्छ ।

घिरौलो (कोशातकी)

कोशातकी सुतिक्तोष्णा पक्वामाशयशोधिनी ।
कासगुल्मोदरगरे वाते श्लेष्माशयस्थिते ॥१९६॥
कफे च कण्ठवक्त्रस्थे कफसञ्चयनेषु च ।
अन्या स्वादुस्त्रिदोषघ्नी ज्वरस्यान्ते हिता स्मृता ॥१९७॥

कोशातकी तीतो, उष्णवीर्यको तथा पक्वाशय र आमाशयलाई प्रशोधन गर्ने गुणको हुन्छ । कफविकार, गुल्म, पेटका रोग, कृत्रिम विषविकार, कफजन्य वातविकार, घाँटी र मुखमा कफ जम्मा भएको रोग र कफ थुप्रिने रोगमा यो हितकर हुन्छ । अर्को गुलियो खालको घिरौलोविशेष त्रिदोष नाशक र जरोका अन्तमा हितकर हुन्छ ।

घिरौलो विशेष (क्ष्वेड)

कोशातकी कृतच्छिद्रा जालिनी कृतवेधनी ।
क्ष्वेडा सुतिक्ता घण्टाली मृदङ्गफलिका मता ॥१९८॥
क्ष्वेडस्तिक्तः कटुस्तीक्ष्णोऽप्रगाढश्च प्रशस्यते ।
कुष्ठपाण्ड्वामयप्लीहशोफगुल्मगरादिषु ॥१९९॥

कोशातकी, कृतच्छिद्रा, जालिनी, कृतवेधनी, क्ष्वेडा, सुतिक्ता, घण्टाली र मृदङ्गफलिका : यी अर्को थरी घिरौलाका पर्यायवाची नाम हुन् । यो तीतो, पिरो, तिक्खर तथा कडा खालका कुष्ठ, पाण्डु, फियोका रोग, सुजन, गुल्म र कृत्रिम विषविकारमा हितकर हुन्छ ।

मृग

रातो कोइरालो, काभ्रो (अश्मन्तक)

अश्मन्तकश्चन्द्रकस्तु कुश(द्वा)ली चाम्लपत्रकः ।
श्लक्ष्णस्त्वग्गव(म)ालुकापर्णः स्मृतो यमलपत्रकः ॥२००॥
अश्मन्तकः कषायस्तु हिमः पित्तकफापहः ।
मधुरः शीतसङ्गाही दाहतृष्णाप्रमेहजित् ॥२०१॥

अश्मन्तक, चन्द्रक, कुश(द्वा)ली), अम्लपत्रक, श्लक्ष्णत्वक्, व(म)लुकापर्ण र यमलपत्रक : यी कोइरालो विशेषका पर्यायवाची नाम हुन् । कोइरालो विशेष टर्रो, शीतवीर्यको तथा पित्तविकार र कफविकार नाशगर्ने गुणको हुन्छ । यो गुलियो, शीतवीर्यको, ग्राहि तथा डाह, तिखा र प्रमेहलाई जित्ने गुणको हुन्छ ।

सेतो कोइरालो (कोविदार)

कोविदारेऽथ काञ्चनारः कुद्दालः (कुद्दालः कुम्भारः) कुण्डली कुली ।

ताम्रपुष्पश्चमरिको महायमलपत्रकः ॥२०२॥

कोविदारः कषायस्तु सङ्गाही व्रणरोपणः ।

गण्डमालागुदभ्रंशशमनः कुष्ठकेशहा ॥२०३॥

कोविदार, काञ्चनार, कुद्दाल, (कुम्भार), कुण्डली, ताम्रपुष्प, चमरिक र महायमलपत्रक : यी सेतो कोइरालोका पर्यायवाची नाम हुन् । यो टर्रो, ग्राहि, घाउखटिरा भर्ने, गण्डमाला र गुदभ्रंश शान्तपार्ने तथा कुष्ठ र कपाल (कपालका रोग ?) नाशगर्ने गुणको हुन्छ ।

सङ्कलन : मोहन प्रसाद सापकोटा
मृगासिङ्गा (आवर्तकी)

आवर्तकी तिन्दुकिनी विभाण्डी पीतकीलका ।

चर्मरङ्गा पीतपुष्पा महाजालीनिरुच्यते ॥२०४॥

आवर्तकी च कुष्ठघ्नी सोध्वाधोदोषनाशनी ।

कषाया शीतला वृष्या त्रिदोषघ्न्यतिसारजित् ॥२०५॥

शोफगुल्मोदरानाहकृमिजालविनाशिनी ।

आवर्तकी, तिन्दुकिनी, विभाण्डी, पीतकीलका, चर्मरङ्गा, पीतपुष्पा र महाजालीनि : यी मृगासिङ्गाका पर्यायवाची नाम हुन् । यो कुष्ठ तथा शरीरका तलमाथिका रोग नाशगर्ने गुणको हुन्छ । मृगासिङ्गाले टर्रो, शीतवीर्यको, वीर्यवर्धक, त्रिदोष नाशक र अतिसारलाई जित्ने गुण बोकेको हुन्छ । यसले सुजन, गुल्म, पेटका रोग, आनाह र पेटका कीराको जालो (अथवा पेटका रोग र भ्रम) नाश गर्दछ ।

शणपुष्पी

शणपुष्पी बृहत्पुष्पी सा चोक्ता शणघण्टिका ॥२०६॥
महाशणो माल्यपुष्पी वमनी कटुतिक्तका ।
शणपुष्पी रसे तिक्ता वमनी कफपित्तजित् ॥२०७॥
वातघ्नी कण्ठहृद्रोगमुखरोगविनाशिनी ।

शणपुष्पी, बृहत्पुष्पी, शणघण्टिका, महाशण, माल्यपुष्पी, वमनी र कटुतिक्तका : यी शणपुष्पीका पर्यायवाची नाम हुन् । यो तीतो, बान्ता गराउने, कफविकार र पित्तविकारलाई जित्ने तथा वातविकार, घाँटीका रोग, मुटुका रोग र मुखका रोग नाश गर्ने गुणको हुन्छ ।

गोलकौंक्री (बिम्बी)

बिम्बी रक्तफला तुण्डी तुण्डिकेरफला च सा ॥२०८॥
ओष्ठोपमफला गोल्हा पीलुपर्णी च तुण्डिका ।
तुण्डिका कफपित्तासृक्शोफपाण्डुज्वरापहा ॥२०९॥
श्वासकासापहा तज्जं फलं वातकफापहम् ।

बिम्बी, रक्तफला, तुण्डी, तुण्डिकेरफला, ओष्ठोपमफला, गोल्हा, पीलुपर्णी र तुण्डिका : यी गोलकौंक्रीका पर्यायवाची नाम हुन् । यसले कफविकार, पित्तविकार, रक्तविकार, सुजन, पाण्डु, जरो, दम र खोकी नाश गर्दछ । यसको फलले वातविकार र कफविकार नाश गर्दछ ।

हरो (हरीतकी)

हरीतक्याभया पथ्या प्रपथ्या पूतनाऽमृता ॥२१०॥
जयाऽव्यथा हैमवती वयःस्था चेतकी शिवा ।
प्राणदा नन्दिनी चैव रोहिणी विजया च सा ॥२११॥

हरीतकी, अभया, पथ्या, प्रपथ्या, पूतना, अमृता, जया, अव्यथा, हैमवती, वयःस्था, चेतकी, शिवा, प्राणदा, नन्दिनी, रोहिणी र विजया : यी हरोका पर्यायवाची नामहरू हुन् ।

कषायाऽम्ला च कटुका तिक्ता मधुरसान्विता ।
इति पञ्चरसा पथ्या लवणेन विवर्जिता ॥२१२॥

हरोमा नुनिलो बाहेक टर्रो, अमिलो, पिरो, तीतो र गुलियो गरी पाँच रस हुन्छ ।

अम्लभावाज्जयेद्वातं पित्तं मधुरतिक्तकात् ।
कफं रूक्षकषायत्वात्त्रिदोषघ्नी ततोऽभया ॥२१३॥

हरोमा हुने अमिलो रसले वातविकारलाई; गुलियो र तीतो रसले पित्तविकारलाई तथा रुखोपन र टर्रो रसले कफविकारलाई जित्दछ । यसैले हरोलाई त्रिदोष नाशक ओखती भनिन्छ ।

प्रपथ्या लेखनी लघ्वी मेध्या चक्षुर्हिता सदा ।
मेहकुष्ठव्रणच्छर्दिशोफवातास्रकृच्छ्रजित् ॥२१४॥

हरो लेखनी, पचाउन सहज, दिमागको ग्रहण गर्ने क्षमता बढाउने, सधैं आँखाका लागि हित गर्ने तथा प्रमेह, कुष्ठ, खटिरा, वाकवाकी, सुजन, वातविकार, रक्तविकार र कृच्छ्ररोग नाशगर्ने गुणको हुन्छ ।

वातानुलोमनी हृद्या सेन्द्रियाणां प्रसादनी ।
सन्तर्पणकृतान् रोगान् प्रायो हन्ति हरीतकी ॥२१५॥

हरो वायुलाई आफ्नो बाटोमा हिँडाउने, मुटुका लागि हितकर, इन्द्रियलाई प्रसन्न पार्ने, तृप्तिदायक र प्रायः सबै रोग नाशगर्ने गुणको हुन्छ ।

तृष्णायां मुखशोषे च हनुस्तम्भे गलग्रहे ।
नवज्वरे तथा क्षीणे गर्भिण्यां न प्रशस्यते ॥२१६॥

तिर्खा लाग्दा, मुख सुक्दा, हनुस्तम्भ रोगमा, गलग्रहमा, भर्खर शुरु भएको जरोमा, शरीर खिइएको अवस्थामा र गर्भावस्थामा हरो खानु हितकर हुँदैन ।

हरस्य भवने जाता हरीता च स्वभावतः ।

सर्वरोगांश्च च हरते तेन ख्याता हरीतकी ॥२१७॥

हर अर्थात् शिवको भवनमा उम्रिएको, स्वभावैले हरियो र सबै रोग हरण गर्ने हुनाले हरौंलाई हरीतकी भनिएको हो ।

बरोँ (विभीतक)

विभीतकः कर्षफलो वासन्तोऽक्षः कलिद्रुमः ।
संवर्तको भूतवासः कसल्कोहार्यो बहेडक ॥२१८॥
विभीतकः कटुः पाके लघुवैस्वर्यजित्सरः ।
कासाक्षिवक्त्ररोगघ्नः केशवृद्धिकरः परः ॥२१९॥
विभीतकं कषायं च कृमिवैस्वर्यजित्सरम् ।
चक्षुष्यं कटुरूक्षोष्णं पाके स्वादु कफास्रजित् ॥२२०॥

विभीतक, कर्षफल, वासन्त, अक्ष, कलिद्रुम, संवर्तक, भूतवास, कल्किहार्य र बहेडक : यी बरोँका पर्यायवाची नाम हुन् । यो पचेपछि टरोँ, पचाउन सहज, विकृत स्वरलाई जित्ने र मलमूत्रलाई तलतिर सार्ने गुणको हुन्छ । बरोँ टरोँ, कीरा र विकृत स्वरलाई जित्ने, मलमूत्रलाई तलतिर सार्ने, आँखाका लागि हितकर, पिरो, रुखो, उष्णवीर्यको, पचेपछि गुलियो तथा कफविकार र रक्तविकारलाई जित्ने गुणको हुन्छ ।

अमला (आमलक)

वयःस्थाऽऽमलकं वृष्यं जातीफलरसं शिवम् ।
धात्रीफलं श्रीफलं च तथाऽमृतफलं स्मृतम् ॥२२१॥
कषायं कटुतिक्तोष्णं (क्ताम्लं) स्वादु चाऽऽमलकं हिमम् ।
सरं त्रिदोषहृद्दृष्यं ज्वरघ्नं च रसायनम् ॥२२२॥
हन्ति वातं तदम्लत्वात्पित्तं माधुर्यशैत्यतः ।
कफं रूक्षकषायत्वात्फलं धात्र्यास्त्रिदोषजित् ॥२२३॥

वयस्था, आमलक, वृष्य, जातीफलरस, शिव, धात्रीफल, श्रीफल र अमृतफल : यी अमलाका पर्यायवाची नामहरू हुन् । यो टरोँ, पिरो, तीतो, अमिलो र गुलियो हुन्छ । यो शीतवीर्यको, मलमूत्रलाई

तलतिर सार्ने, त्रिदोष नाशक, वीर्यवर्धक, जरो नाशक र रसायनी हुन्छ । यसमा रहेको अमिलोले वातविकार, गुलियो र शीतवीर्यले पित्तविकार, रुखोपन र टर्नेले कफविकार गरी अमलाले त्रिदोषलाई नाश गर्दछ ।

आमलकीविशेष, पानीअमला (प्राचीनामलक)

प्राचीनामलकं प्राचीनारङ्गं रक्तकं मतम् ।
तत्पक्वं पित्तकफकृद्दुर्जरं गुरु वातजित् ॥२२४॥

प्राचीनामलक, प्राचीनारङ्ग र रक्तक : यी पानीअमलाका पर्यायवाची नाम हुन् । यसको पाकेको फल पित्तविकार र कफविकार गर्ने, ढिलो पच्ने, पचाउन कठिन तथा वातविकारलाई जित्ने गुणको हुन्छ ।

ठुलो वा तीतो राजवृक्ष (आरग्वध)

आरग्वधो दीर्घफलो व्याधिहा चतुरङ्गुलः ।
आरेवतस्तथा कर्णी कर्णिकारोऽथ रेचनः ॥२२५॥
आरग्वधो रसे तिक्तो गुरूष्णः कृमिशूलनुत् ।
कफोदरप्रमेहघ्नः कृच्छ्रगुल्मत्रिदोषजित् ॥२२६॥

आरग्वध, दीर्घफल, व्याधिहा, चतुरङ्गुल, आरेवत, कर्णी, कर्णिकार र रेचन : यी राजवृक्षका पर्यायवाची शब्द हुन् । यो तीतो, पचाउन कठिन, उष्णवीर्यको तथा कीरा, शूल, कफविकार, पेटका रोग र प्रमेह नाशगर्ने तथा कृच्छ्र, गुल्म र त्रिदोषलाई जित्ने गुणको हुन्छ ।

सानो वा गुलियो राजवृक्ष (कर्णिकार)

कर्णिकारो राजवृक्षः प्रग्रहः कृतमालकः ।
आरोग्यशिम्बी शम्पाको व्याधिघातो व्यथान्तकः ॥२२७॥
कृतमालो लघुः शीतः पित्तघ्नो मधुरः सरः ।
तत्फलं मधुरं बल्यं वातपित्तामजित्सरम् ॥२२८॥

कर्णिकार, राजवृक्ष, प्रग्रह, कृतमालक, आरोग्यशिम्बी, शम्पाक, व्याधिघात र व्यथान्तक : यी सानो राजवृक्षका पर्यायवाची नाम हुन् । यो पचाउन सहज, शीतवीर्यको, पित्तविकार नाशक, गुलियो र मलमूत्रलाई तलतिर सार्ने गुणको हुन्छ । त्यसको फल गुलियो, बलदायक तथा वातविकार, पित्तविकार र आमविकारलाई जित्ने एवं मलमूत्रलाई तलतिर सार्ने गुणको हुन्छ ।

अजयपाल (दन्ती)

दन्ती शीघ्रा निकुम्भा स्याद् उपचित्रा मुकूलकः ॥२२९॥

तथोदुम्बरपर्णी च विशल्या च घुणप्रिया ।

दन्ती तीक्ष्णोष्णकटुका कफवातोदराञ्जयेत् ॥२३०॥

अशोत्रणाश्मरीशूलान् हन्ति दीपनशोधनी ।

दन्ती, शीघ्रा, निकुम्भा, उपचित्रा, मुकूलक, उदुम्बरपर्णी, विशल्या र घुणप्रिया : यी दन्तीका पर्यायवाची नामहरू हुन् । यो तिक्खर, उष्णवीर्यको र पिरो हुन्छ । यसले कफविकार वातविकारलाई जित्दछ तथा अल्काई, घाउखटिरा, पत्थरी र शूललाई नाश गर्दछ । यो दीपनी र शोधनी हुन्छ ।

सङ्कलन : मोहन प्रसाद सापकोटा
अजयपालविशेष (वरणी)

अरणी च वराङ्गी च तथैव च जयावहा ॥२३१॥

आवर्तकी केशरुहा तथैव विषभद्रिका ।

दन्ती रसेषु तिक्तोष्णा शूलत्वग्दोषनशिनी ॥२३२॥

कफवातोदरार्शसि हन्ति दीपनशोधनी ।

अरणी, वराङ्गी, जयावहा, आवर्तकी, केशरुहा र विषभद्रिका : यी दन्तीविशेषका पर्यायवाची नामहरू हुन् । यो तीतो र उष्णवीर्यको हुन्छ । यसले शूल र छालाका रोग नाश गर्दछ तथा कफविकार, पेटको वातरोग र अल्काई पनि नाश गर्दछ । यो दीपनी र शोधनी हुन्छ ।

अजयपालका गेडा (जयपाल)

रेचको जयपालश्च सारकस्तिन्तिडीफलम् ॥२३३॥

दन्तीबीजं मलद्रावी निकुम्भो बीजेरेचकः ।

कुम्भीबीजं निकुम्भाह्वबीजं तत्कुम्भिनीफलम् ॥२३४॥

जेपालः कटुरुष्णश्च कृमिहारी विरेचनः ।

दीपनः कफवातघ्नो जठरामयशोधनः ॥२३५॥

रेचक, जयपाल, सारक, तिन्तिडीफल, दन्तीबीज, मलद्रावी, निकुम्भ, बीजरेचक, कुम्भीबीज, निकुम्भाह्वबीज र कुम्भिनीफल : यी जयपालका पर्यायवाची नामहरू हुन् । यो पीरो, उष्णवीर्यको, कीरा नाशक, दिसा लगाउने, दीपनी, कफविकार नाशक, वातविकार नाशक र पेटका रोगलाई प्रशोधन गर्ने गुणको हुन्छ ।

मुसाकाने (द्रवन्ती)

द्रवन्ती शम्बरी चित्रा न्यग्रोधा मूषकाह्वया ।

प्रत्यक्श्रेणी वृषा चण्डा पुत्रश्रेण्याखुपर्णिका ॥२३६॥

द्रवन्ती ग्रहणीतृष्णात्रिदोषशमनी हिता ।

अभिष्यणतनौ ग्रन्थ्यां प्रमेहे जठरे गरे ॥२३७॥

कफपित्तामये पाण्डौ कृमिकोष्ठभगन्दरे ।

द्रवन्ती हृद्रोगहरा कफकृमिविनाशनी ॥२३८॥

द्रवन्ती, शम्बरी, चित्रा, न्यग्रोधा, मूषकाह्वया (मुसाका पर्याय), प्रत्यक्श्रेणी, वृषा, चण्डा, पुत्रश्रेणी र आखुपर्णिका : यी मुसाकानेका पर्यायवाची नाम हुन् । मुसाकानेले ग्रहणी, तिर्खा र त्रिदोष शान्त पार्दछ । यो गाँठा सुन्निएर शरीर लाटो हुँदा, प्रमेहमा, पेटका रोगमा, कृत्रिम विषविकारमा, कफविकारमा, पित्तविकारमा, पाण्डुरोगमा, पेटमा कीरा पर्दा र भगन्दर रोगमा पनि यो हितकर हुन्छ । यसले मुटुका रोग तथा कफजन्य कीरा नाश गर्दछ ।

नीर (नीलिनी)

नीलिनी नीलिका काला ग्राम्या दोला विशोधनी ।

तुत्था श्रीफलिका मोचा भारवाही च रञ्जनी ॥२३९॥

नीली तिक्ता रसे चोष्णा कटिवातकफापहा ।

केश्या विषोदरं हन्ति वातासृक्कृमिनाशिनी ॥२४०॥

नीलिनी, नीलिका, काला, ग्राम्या, दोला, विशोधनी, तुत्था, श्रीफलिका, मोचा, भारवाही र रञ्जनी : यी नीरका पर्यायवाची नाम हुन् । यो तीतो, उष्णवीर्यको तथा कम्मरको वातरोग र कफविकार नाशगर्ने गुणको हुन्छ । नीर कपालका लागि हितकर तथा पेटको विषविकार, वातविकार, रक्तविकार र कीरा नाशक हुन्छ ।

सिउँडी (सुही)

सुक् सुही च महावृक्षो गुडा निस्त्रिंशपत्रिका ।
समन्तदुग्धा गण्डीरः सीहुण्डो वज्रकण्टकः ॥२४१॥
सेहुण्डस्तु रसे तिक्तो गुरूष्णः कफवातजित् ।
दुष्टव्रणाश्मरीं हन्ति तथा वातविशोधनः ॥२४२॥
सुहीक्षीरं विषाध्मानगुल्मोदरहरं परम् ।

सुक्, सुही, महावृक्ष, गुडा, निस्त्रिंशपत्रिका, समन्तदुग्धा, गण्डीर, सीहुण्ड र वज्रकण्टक : यी सिउँडीका पर्यायवाची नाम हुन् । यो तीतो, पचाउन कठिन, उष्णवीर्यको, कफविकार र वातविकारलाई जित्ने, खराब खटिरा र पत्थरी नाशगर्ने तथा वातविकारलाई प्रशोधन गर्ने गुणको हुन्छ । सिउँडीको दूधले विषविकार, आध्मान, गुल्म र पेटका रोग प्रभावकारी ढङ्गले नाश गर्दछ ।

हात्तीकाने (सातला)

सातला सप्तला सारी(रा) विदुला विमलाऽमला ।
बहुफेना चर्मकषा फेना दीप्ता मरालिका(सनालिका) ॥२४३॥
सातला शोधनी तिक्ता कफपित्तास्रदोषनुत् ।
शोफोदराध्मानहरा किञ्चिन्मारुतकृतद्भवेत् ॥२४४॥

सातला, सप्तला, सारी(रा), विदुला, विमला, अमला, बहुफेना, चर्मकषा, फेना, दीप्ता र मरालिका (सनालिका) : यी हात्तीकाने पर्यायवाची नाम हुन् । यो सोधनी, तीतो तथा कफविकार, पित्तविकार र रक्तविकार नाशगर्ने गुणको हुन्छ । यसले सुजन, पेटका रोग र आध्मान नाश गर्दछ तथा केही वातविकार पनि गर्दछ ।

पहेँलो दुधे थाकल (क्षीरिणी, काञ्चनक्षीरी)

क्षीरिणी काञ्चनक्षीरी कटुपर्णी च कर्षणी ।
तिक्तदुग्धा हैमवती हेमदुग्धा हिमावती ॥२४५॥
तिक्ता तु काञ्चनक्षीरी पित्तकृमिविषापहा ।
शोधनी दोषसङ्घातशमनी रक्तपित्तजित् ॥२४६॥

क्षीरिणी, काञ्चनक्षीरी, कटुपर्णी, कर्षणी, तिक्तदुग्धा, हैमवती, हेमदुग्धा र हिमावती : यी पहेँलो दुधे थाकलका पर्यायवाची नाम हुन् । यो तीतो हुन्छ । यसले पित्तविकार, कीरा र विषविकार नाश गर्दछ । यो प्रशोधक हुन्छ । यसले दोषका समूहलाई शान्त पार्दछ तथा रक्तपित्तलाई जित्दछ ।

सियालकाने, थाकलविशेष (स्वर्णक्षीरी)

स्वर्णक्षीरी स्वर्णदुग्धा सुवर्णक्षीरिकाऽपि च ।
हेमाह्वा कनकक्षीरी हेमक्षीरी च काञ्चनी ॥२४७॥
क्षीरिणीयुगलं तिक्तं कृमिपित्तकफापहम् ।

स्वर्णक्षीरी, स्वर्णदुग्धा, सुवर्णक्षीरिका, हेमाह्वा, कनकक्षीरी, हेमक्षीरी र काञ्चनी : यी सियालकानेका पर्यायवाची नाम हुन् । दुवै थरी थाकल तीता तथा कीरा, पित्तविकार र कफविकार नाशगर्ने गुणका हुन्छन् ।

कालो निसोथ (श्यामात्रिवृत्)

श्यामा त्रिवृन्मालविका मसूरविदला च सा ॥२४८॥
कालाऽर्धचन्द्रा का(पा)लिन्दी सुषेणी कालमेष्पि ।
त्रिवृता कटुरुष्णा तु कृमिश्लेष्मोदरज्वरान् ॥२४९॥
शोफपाण्ड्वामयप्लीहान्हन्ति श्रेष्ठा विरेचने ।

श्यामा, त्रिवृत्, मालविका, मसूरविदला, काला, अर्धचन्द्रा, का(पा)लिन्दी, सुषेणी र कालमेष्पि : यी कालो निसोथका पर्यायवाची नाम हुन् । यो पिरो, उष्णवीर्यको तथा कीरा, कफविकार, पेटका रोग,

जरो, सुजन, पाण्डु, आमविकार र फियोका रोग नाशगर्ने गुणको हुन्छ । यो दिसा लगाउनका लागि उत्तम हुन्छ ।

सेतो निसोथ (त्रिवृत्)

शुक्लभण्डी त्रिभण्डी स्यात्काकाक्षी सरला त्रिवृत् ॥२५०॥
सर्वानुभूतिस्त्रिपुटा त्र्यस्रा कुमुदगन्धिनी ।
कषाया मधुरा चोष्णा विपाके कटुका त्रिवृत् ॥२५१॥
कफपित्तप्रशमनी रूक्षा चानिलकोपनी ।

शुक्लभण्डी, त्रिभण्डी, काकाक्षी, सरला, त्रिवृत्, सर्वानुभूति, त्रिपुटा, त्र्यस्रा र कुमुदगन्धिनी : यी सेतो निसोथका पर्यायवाची नाम हुन् । यो टर्रो, गुलियो, उष्णवीर्यको र पचेपछि पिरो हुन्छ । यसले कफविकार र पित्तविकारलाई शान्त पार्दछ । यो रुखो हुन्छ । यसले वातविकारलाई उत्तेजित पार्दछ ।

ऐरेलु (इन्द्रवारुणी-विशाला)

सङ्कलन : मोहन प्रसाद सापकोटा

ऐन्द्रीन्द्रवारुणीन्द्राह्वाऽथेन्द्रवारुर्मृगादनी २५२॥
गवादनी क्षुद्रफला वृषभाक्षी गवाक्ष्यपि ।
इन्द्रवारुणिकाऽत्युष्णा रेचनी कटुका तथा ॥२५३॥
कृमिश्लेष्मव्रणान् हन्ति हन्ति सर्वौदराण्यपि ।

ऐन्द्री, इन्द्रवारुणी, इन्द्र र यसका पर्याय, इन्द्रवारु, मृगादनी, गवादनी, क्षुद्रफला, वृषभाक्षी र गवाक्षी : यी ऐरेलुका पर्यायवाची नामहरू हुन् । यो अति उष्णवीर्यको, रेचनी, पिरो तथा कीरा, कफविकार, घाउखटिरा र सबैखालका पेटका रोग नाशक हुन्छ ।

अन्येन्द्रवारुणी प्रोक्ता विशाला च महाफला ॥२५४॥
आत्मरक्षा चित्रफला त्रपुसी त्रपुसा च सा ।
इन्द्रवारुद्वयं तिक्तं कटु पाके रसे लघु ॥२५५॥
वीर्योष्णं कामलापित्तकफश्लीपदनाशनम् ।

इन्द्रवारुणी, विशाला, महाफला, आत्मरक्षा, चित्रफला, त्रपुसी र त्रपुसा : यी ठूलो खालको ऐरेलुका पर्यायवाची नामहरू हुन् । दुवै खालका ऐरेलु तीता, पचेपछि पिरा, पचाउन सहज, उष्णवीर्यका, तथा कमलपित्त, पित्तविकार, कफविकार र हात्तीपाइले रोग नाशगर्ने गुणका हुन्छन् ।

ऐरेलुविशेष (श्वेतपुष्पी)

श्वेतपुष्पी मृगाक्षी च मृगैर्वारुर्मृगादनी ॥२५६॥
हस्तिदन्ती नागदन्ती वारुणी गजचिर्भटा ।
कण्ठरोगापचीश्वासकासप्लीहकफोदरान् ॥२५७॥
मूढगर्भं च हरति कुष्ठदुष्टव्रणाञ्जित् ।

श्वेतपुष्पी, मृगाक्षी, मृगैर्वारु, मृगादनी, हस्तिदन्ती, नागदन्ती, वारुणी र गजचिर्भटा : यी ऐरेलुविशेषका पर्यायवाची नामहरू हुन् । यो घाँटीका रोग, अपची, दम, खोकी, फियोका रोग, कफविकार, पेटका रोग, मूढगर्भ, कुष्ठ र खराब घाउखटिरा नाशक हुन्छ ।

मुडिलो (त्रायमाणा)
सङ्कलन : मोहनप्रसाद सापकोटा

त्रायमाणा कृतत्राणा त्रायन्ती त्रायमाणका ॥२५८॥
बलदेवा बलभद्रा वार्षिकी गिरिजानुजा ।
त्रायन्ती कफपित्तास्रगुल्मज्वरहरा मता ॥२५९॥
उष्णा कटु कषाया च सूतिकाशूलनाशिनी ।

त्रायमाणा, कृतत्राणा, त्रायन्ती, त्रायमाणका, बलदेवा, बलभद्रा, वार्षिकी र गिरिजानुजा : यी मुडिलोका पर्यायवाची नाम हुन् । यसले कफविकार, पित्तविकार, रक्तविकार, गुल्म र जरो नाश गर्दछ । यो उष्णवीर्यको, पित्त, टरो तथा सुत्केरीलाई हुने शूलरोग नाशगर्ने गुणको हुन्छ ।

नाकुली (यवतिक्ता)

यवतिक्ता शङ्खिनी तु दृढपादा विसर्पिणी ॥२६०॥
नाकुली चाक्षपीडा च नेत्रमीला यशस्करी ।
शङ्खिनी कटुतिक्ताम्ला गुरुः स्निग्धा विशोधनी ॥२६१॥

त्रिदोषशमनी कुष्ठश्वयथूदरनाशनी ।

यवतित्ता, शङ्खिनी, दृढपादा, विसर्पिणी, नाकुली, अक्षपीडा, नेत्रमीला र यशस्करी : यी नाकुलीका पर्यायवाची नाम हुन् । यो पिरो, तीतो, अमिलो, पचाउन कठिन, चिल्लो, प्रशोधक, त्रिदोषलाई शान्त पार्ने, तथा कुष्ठ, श्वयथु र पेटका रोग नाशगर्ने गुणको हुन्छ ।

असारे (अङ्कोट)

अङ्कोटोऽङ्कोलको रेची निर्दिष्टो दीर्घकीलकः ॥२६२॥

पीतसारस्ताम्रफलो गन्धपुष्पो निकोचकः ।

अङ्कोलः स्निग्धतीक्ष्णोष्णः कटुको वातनाशनः ॥२६३॥

कुक्कुराखुविषं हन्ति ग्रहजन्तुविषापहः ।

भूतहृद्विषहृच्चैव कण्ठशूलस्य शोधनः ॥२६४॥

अङ्कोट, अङ्कोलक, रेची, दीर्घकीलक, पीतसार, ताम्रफल, गन्धपुष्प र निकोचक : यी असारेका नाम हुन् । यो चिल्लो, तिक्खर, उष्णवीर्यको, पिरो र वातविकार नाशगर्ने गुणको हुन्छ । यसले कुकुर र मुसाको विषविकार तथा ग्रहबाधा र अन्य जीवको विषविकार पनि नाश गर्दछ । यसले भूतबाधा र विषविकार पनि नाश गर्दछ । यसले घाँटीको शूललाई प्रशोधन गर्दछ ।

दतिवन (अपामार्ग)

अपामार्गस्तु शिखरी प्रत्यक्पुष्पी मयूरकः ।

अधःशल्योऽथ किणिही दुर्गहा खरमञ्जरी ॥२६५॥

स चैवोक्तः शैखरिको मर्कटी दुरभिग्रहः ।

पराक्पुष्पी वशीरश्च कण्ठी मर्कटपिप्पली ॥२६६॥

अपामार्गस्तु तिक्तोष्णः कटुश्च कफनाशनः ।

अर्शःकण्डूदरामघ्नो रक्तहृद् ग्राहिवान्तिकृत् ॥२६७॥

अपामार्ग, शिखरी, प्रत्यक्पुष्पी, मयूरक, अधःशल्य, किणिही, दुर्गहा, खरमञ्जरी, शैखरिक, मर्कटी, दुरभिग्रह, पराक्पुष्पी, वशीर, कण्ठी र मर्कटपिप्पली : यी दतिवनका पर्यायवाची नामहरू हुन् ।

दतिवन तीतो, उष्णवीर्यको, पिरो तथा कफ, अल्काई, लुतो, पेटको आम रोग र रक्तविकार नाशक हुन्छ । यो ग्राहि र बान्ता गराउने गुणको हुन्छ ।

दतिवनविशेष (रक्तपुष्प)

अन्यो रक्तो रक्तपुष्पो वशीरः कपिपिप्पली ।
क्षुद्रापामार्गको रक्तः ख्यातको रक्तपूर्वकः ॥२६८॥
अपामार्गोऽरुणो वातविष्टम्भी कफनाशनः ।
व्रणकण्डूविषघ्नश्च सङ्गाही वान्तिकृत्परः ॥२६९॥

रक्तपुष्प, वशीर, कपिपिप्पली, क्षुद्रापामार्गक, रक्त र रक्तपूर्वक : यी रातो दतिवनका पर्यायवाची नामहरू हुन् । यो वातविकार गर्ने, विष्टम्भी तथा कफविकार, घाउखटिरा, लुतो र विषविकार नाशक हुन्छ । यो सङ्गाही र अत्यन्त बान्ता गराउने गुणको हुन्छ ।

मालकागुनो (तेजस्विनी)

सङ्कलन : मोहन प्रसाद सापकोटा
तेजस्विनी तेजवती तेजोह्वा तेजनीति च ।
अश्वघ्नी वल्कला शीता पारिजाता महौजसी ॥२७०॥
तेजोह्वा श्लेष्मवातघ्नी रुच्या दीपनपाचनी ।

तेजस्विनी, तेजवती, तेजोह्वा (तेजका पर्याय), तेजनी, अश्वघ्नी, वल्कला, शीता, पारिजाता र महौजसी : यी मालकागुनुका पर्यायवाची नाम हुन् । यो कफविकार र वातविकार नाशगर्ने, रुचिप्रद, दीपनी र पाचनी हुन्छ ।

मालकागुनुविशेष (ज्योतिष्मती)

ज्योतिष्मती तु कटभी सुवर्णलतिकेति च ॥२७१॥
ज्योतिष्कायाऽग्निभासा च लवणोक्ता च दुर्जरा ।
ज्योतिष्मती कटुस्तिक्ता सरा कफसमीरजित् ॥२७२॥
अत्युष्णा वमनी तीक्ष्णा वह्निबुद्धिस्मृतिप्रदा ।

ज्योतिष्मती, कटभी, सुवर्णलतिका, ज्योतिष्काया, अग्निभासा, लवणोक्ता र दुर्जरा : यी मालकागुणविशेषका पर्यायवाची नाम हुन् । यो पिरो, तितो, मलमूत्रलाई तलतिर सार्ने, कफविकार र वातविकारलाई जित्ने, अति उष्णवीर्यको, बान्ता गराउने, तिक्खर तथा पाचनशक्ति, बुद्धि र सम्भनाशक्ति प्रदान गर्ने गुणको हुन्छ ।

गाईतिहारे वा फ्याक्सेकन्द (रास्ना)

रास्ना युक्तरसा रस्या श्रेयसी रसना रसा ॥२७३॥
सुगन्धमूलाऽतिरसा सैव पूतिरसा स्मृता ।
रास्ना तिक्तोष्णगुर्वी स्याद्विषवातास्रकासजित् ॥२७४॥
शोफकम्पोदरश्लेष्मशमन्यामस्य पाचनी ।

रास्ना, युक्तरसा, रस्या, श्रेयसी, रसना, रसा, सुगन्धमूला, अतिरसा र पूतिरसा : यी गाईतिहारेका पर्यायवाची नाम हुन् । यो तितो, उष्णवीर्यको, पचाउन कठिन तथा विषविकार, वातविकार, रक्तविकार र खोकीलाई जित्ने गुणको हुन्छ । यसमा सुजन, कम्पन, पेटका रोग र कफविकार शान्तपार्ने तथा आमलाई पचाउने गुण पनि हुन्छ ।

संकलन : मोहन प्रसाद सापकोटा

अश्वगन्धा

अश्वगन्धा वाजीगन्धा कञ्चुकाऽश्वावरोहकः ॥२७५॥
वराहकर्णी तुरगी बल्या वाजीकरी स्मृता ।
अश्वगन्धा कषायोष्णा तिक्ता वातकफापहा ॥२७६॥
विषत्रणक्षयान् हन्ति कान्तिवीर्यबलप्रदा ।

अश्वगन्धा, वाजीगन्धा, कञ्चुका, अश्वावरोहक, वराहकर्णी, तुरगी, बल्या र वाजीकरी : यी अश्वगन्धाका पर्यायवाची नामहरू हुन् । यो टर््रो, उष्णवीर्यको, तीतो तथा वातविकार कफविकार नाशक हुन्छ । यसले विषविकार, घाउखटिरा र क्षयरोग नाश गर्दछ । यसले शरीरको चमक, वीर्य र बल दिन्छ ।

पुनर्नवा

पुनर्नवा विशाखश्च कठिल्लश्च शिवाटिका ॥२७७॥
वृश्चीरः क्षुद्रवर्षाभूर्दीर्घपत्रः कठिल्लकः ।
पुनर्नवा भवेदुष्णा तिक्ता रूक्षा कफापहा ॥२७८॥
सशोफपाण्डुहृद्रोगकासोरःक्षतशूलनुत् ।

पुनर्नवा, विशाख, कठिल्ल, शिवाटिका, वृश्चीर, क्षुद्रवर्षाभू, दीर्घपत्र र कठिल्लक : यी पुनर्नवाका पर्यायवाची नाम हुन् । यो उष्णवीर्यको, तितो, रुखो तथा कफविकार, सुजन, पाण्डु, मुटुका रोग, खोकी, उरक्षत र शूलरोग नाशगर्ने गुणको हुन्छ ।

पुनर्नवाविशेष (वर्षाभू)

पुनर्नवोऽपरः क्रूरः सद्योमण्डलपत्रकः ॥२७९॥
श्वेतमूलो वर्षकेतुर्महावर्षाभूरुच्यते ।
रक्ता पुनर्नवा तिक्ता सारिणी शोफनाशिनी ॥२८०॥
रक्तप्रदरदोषघ्नी पाण्डुपित्तप्रमर्दनी ।

क्रूर, सद्योमण्डलपत्रक, श्वेतमूल, वर्षकेतु र महावर्षाभू : यी पुनर्नवाविशेषका पर्यायवाची नामहरू हुन् । यो रातो पुनर्नवा तितो, मलमूत्रलाई तलतिर सार्ने, सुजन, रक्तप्रदर, पाण्डु र पित्तविकार नाशगर्ने गुणको हुन्छ ।

कटसरैया (सैरियक)

सैरियकः सहचरः सैरियश्च सहाचरः ॥२८१॥
पीतो रक्तोऽथ नीलश्च कुसुमैस्तं विभावयेत् ।
पीतःकुरण्टको ज्ञेयो रक्तः कुरबकः स्मृतः ॥२८२॥
कुरण्टको हिमस्तिक्तः शोफतृष्णाविदाहनुत् ।
केश्यो वृष्योऽथ बल्यश्च त्रिदोषशमनो मतः ॥२८३॥

सैरैयक, सहचर, सैरैय र सहाचर : यी कटसैरैयाका पर्यायवाची नाम हुन् । फूलका आधारमा यो पहेँलो, रातो र नीलो गरी तीन किसिमको हुन्छ । पहेँलो फूल फुल्ने कटसैरैयालाई कुरण्टक तथा रातो फूल फुल्ने कटसैरैयालाई कुरबक भनिन्छ । कटसैरैया शीतवीर्यको, तीतो तथा सुजन, तिर्खा र डाह नाशगर्ने गुणको हुन्छ । यो कपालका लागि हितकर, वीर्यवर्धक, बलदायक र त्रिदोषलाई शान्त पार्ने खालको हुन्छ ।

बला (बलु)

बला भद्रौदनी वाटी समङ्गा खरयष्टिका ।
महासमङ्गौदनिका शीतपाक्योदनाह्वया ॥२८४॥
बला स्निग्धा हिमा स्वादुर्वृष्या बल्या त्रिदोषनुत् ।
रक्तपित्तं क्षयं हन्ति बलौजो बर्धयत्यपि ॥२८५॥

बला, भद्रौदनी, वाटी, समङ्गा, खरयष्टिका, महासमङ्गा, ओदनिका, शीतपाकी र ओदनाह्वया (ओदनका पर्याय) : यी बलुका पर्यायवाची नाम हुन् । यो चिल्लो, शीतवीर्यको, गुलियो, वीर्यवर्धक, बलदायक तथा त्रिदोष, रक्तपित्त र क्षयरोग नाशगर्ने गुणको हुन्छ । यसले बल र ओज पनि बढाउँदछ ।

महाबलु (महाबला)

महाबला वाटचपुष्पी तथा वाटचायनी स्मृता ।
सहदेवा देवसहा पीतपुष्पा बृहत्फला ॥२८६॥
महाबला तु हृद्रोगवातार्शःशोफनाशिनी ।
शुक्रवृद्धिकरी हन्याद् विषमं च ज्वरं नृणाम् ॥२८७॥

महाबला, वाटचपुष्पी, वाटचायनी, सहदेवा, देवसहा, पीतपुष्पा र बृहत्फला : यी महाबलुका पर्यायवाची नाम हुन् । यसले मुटुका रोग, वातविकार, हर्सा र सुजन नाश गर्दछ । महाबलुले वीर्य बढाउँदछ तथा मानिसको विषमज्वर नाश गर्दछ ।

नागबलु (नागबला)

गाङ्गेरुकी नागबला खरगन्धनिका भूषा ।

विश्वदेवा तथाऽरिष्टा खण्डा ह्रस्वगवेधुका ॥२८८॥
गाङ्गेरुकी मधुराम्ला कषायोष्णा गुरुस्तथा ।
कटुस्तिक्ता च वातघ्नी व्रणपित्तविकारजित् ॥२८९॥

गाङ्गेरुकी, नागबला, खरगन्धिनिका, भूषा, विश्वदेवा, अरिष्टा, खण्डा र ह्रस्वगवेधुका : यी नागबलाका पर्यायवाची नामहरू हुन् । यो गुलियो, अमिलो, टर्रो, उष्णवीर्यको, पचाउन कठिन, पिरो, तीतो, वातविकार नाशगर्ने तथा खटिरा र पित्तविकारलाई जित्ने गुणको हुन्छ ।

बलुविशेष (अतिबला)

बलिकाऽतिबला प्रोक्ता वाटचपुष्पी च कङ्कता ।
ऋष्यप्रोक्ता ऋष्यगन्धा सैव भूरिबला मता ॥२९०॥
वातपित्तापहं ग्राहि बल्यं वृष्यं बलात्रयम् ।

बलिका, अतिबला, वाटचपुष्पी, कङ्कता, ऋष्यप्रोक्ता, ऋष्यगन्धा र भूरिबला : यी अतिबलाका पर्यायवाची नाम हुन् । तीन किसिमका बलुले वातविकार र पित्तविकार नाश गर्दछन् । यी ग्राहि, बलदायक र वीर्यवर्धक हुन्छन् ।

पाँच थरी बलु (बलापञ्चकम्)

बला चातिबला चैव महाबलबला बला ॥२९१॥
अन्या राजबला चेति बलायाः पञ्चकं मतम् ।
तत्पित्तवातजिह्वाहि बल्यं वृष्यं च कृच्छ्रजित् ॥२९२॥
स्निग्धं मधुरमायुष्यं वातासृग्दरनाशनम् ।

बला, अतिबला, महाबला, नागबला र राजबला : यी पाँच किसिमका बलुका नाम हुन् । यिनले पित्तविकार र वातविकारलाई जित्दछन् । यी ग्राहि, बलदायक, वीर्यवर्धक, कृच्छ्रलाई जित्ने, चिल्ला, गुलिया, आयु वर्धक तथा वातविकार, रक्तविकार र पेटका रोग नाशगर्ने गुणका हुन्छन् ।

बिरी लहरो (प्रसारणी)

प्रसारणी सुप्रसरा सरणी सारणी च सा ॥२९३॥
चारुपर्णी राजबला भद्रपर्णी प्रतानिका ।
प्रसारणी गुरुस्तित्ता सरा सन्धानकृन्मता ॥२९४॥
त्रिदोषशमनी वृष्या तेजःकान्तिबलप्रदा ।

प्रसारणी, सुप्रसरा, सरणी, सारणी, चारुपर्णी, राजबला, भद्रपर्णी र प्रतानिका : यी बिरी लहराका पर्यायवाची नाम हुन् । यो पचाउन कठिन, तितो, मलमूत्रलाई तलतिर सार्ने, खमीरा बनाउन उपयोगी, त्रिदोषलाई शान्त पार्ने, वीर्यवर्धक तथा तेज, चमक र बल प्रदान गर्ने गुणको हुन्छ ।

कुरिलो (शतावरी)

शतावरी शतपदी पीवरीन्दीवरी वरी ॥२९५॥
ऋष्यप्रोक्ता द्वीपिशत्रुद्वीपिका चोर्ध्वकण्टका ।
शतावरी हिमा तिक्ता रसे स्वादुः क्षयास्रजित् ॥२९६॥
वातपित्तहरा वृष्या रसायनवरा स्मृता ।

शतावरी, शतपदी, पीवरी, इन्दीवरी, वरी, ऋष्यप्रोक्ता, द्वीपिशत्रु, द्वीपिका र उर्ध्वकण्टका : यी कुरिलोका पर्यायवाची नाम हुन् । यो शीतवीर्यको, तितो, गुलियो, क्षयरोग र रक्तविकारलाई जित्ने, वातविकार र पित्तविकारलाई नाश गर्ने, वीर्यवर्धक तथा अति नै रसायनी हुन्छ ।

कुरिलोविशेष (सहस्रवीर्या)

सहस्रवीर्याऽभीरुश्च तुङ्गिनी बहुपुत्रिका ॥२९७॥
महापुरुषदन्ता च शतावर्यूर्ध्वकण्टिका ।
सहस्रवीर्या मेध्या तु हृद्या वृष्या रसायनी ॥२९८॥
शीतवीर्या निहन्त्यशोऽग्रहणीनयनामयान् ।
तदङ्कुरस्त्रिदोषघ्नो लघुरशःक्षयापहः ॥२९९॥

सहस्रवीर्या, अभीरु, तुङ्गिनी, बहुपुत्रिका, महापुरुषदन्ता, शतावरी र उर्ध्वकण्टिका : यी कुरिलोविशेषका पर्यायवाची नाम हुन् । यो दिमागको ग्रहण गर्ने क्षमता बढाउने, मुटुका लागि हितकर, वीर्यवर्धक, र रसायनी हुन्छ । यो कुरिलो शीतवीर्यको हुन्छ । यसले हर्सा, ग्रहणी र आँखाका रोग नाश गर्दछ । यसका टुसाले त्रिदोष, हर्सा र क्षयरोग नाश गर्दछ तथा पचाउन सहज हुन्छ ।

अँडिर (एरण्ड)

एरण्डः तरुणः शुक्लश्चित्रो गन्धर्वहस्तकः ।
 पञ्चाङ्गुलो वर्धमान आमण्डो दीर्घदण्डकः ॥३००॥
 रक्तोऽपरो हस्तपर्णो व्याघ्रो व्याघ्रदलो रुबुः ।
 रुबुको हस्तिकर्णी च चञ्चुकोत्तानपत्रकः ॥३०१॥
 एरण्डस्तु रसे तिक्तः स्वादूष्णोऽनिलनाशनः ।
 उदावर्तप्लीहगुल्मबस्तिशूलान्त्रवृद्धिनुत् ॥३०२॥
 गुरुर्वातप्रशमनो विकाराञ्छौणिताञ्जयेत् ।
 फलं स्वादु च सक्षारं लघूष्णं भेदि वातजित् ॥
 एरण्डयुगलं वृष्यं स्वादु पित्तसमीरजित् ॥३०३॥

एरण्ड, तरुण, शुक्ल, चित्र, गन्धर्वहस्तक, पञ्चाङ्गुल, वर्धमान, आमण्ड र दीर्घदण्डक : यी अँडिरका पर्यायवाची नामहरू हुन् । हस्तपर्ण, व्याघ्र, व्याघ्रदल, रुबु, रुबुक, हस्तिकर्णी, चञ्चुक र उत्तानपत्रक : यी अर्को रातो अँडिरका पर्यायवाची नामहरू हुन् । अँडिर तीतो, गुलियो, उष्णवीर्यको तथा वातविकार, उदावर्त, फियोका रोग, गुल्म, मूत्राशय वा तल्लोपेटको शूल, आन्द्राको सुजन, पचाउन कठिन, वातविकार शान्त पार्ने र रक्तविकारलाई जित्ने गुणको हुन्छ । यसको फल गुलियो वा स्वादिलो, केही नुनिलो वा क्षारयुक्त, पचाउन सहज, उष्णवीर्यको, भेदनी र वातविकारलाई जित्ने गुणको हुन्छ । दुवै थरी अँडिर वीर्यवर्धक, स्वादिला वा गुलिया तथा पित्तविकार र वातविकारलाई जित्ने गुणका हुन्छन् ।

बाटुलपाते (छागलान्त्रिका)

वृषमेधा च मेषान्त्रिर्बस्तान्त्रिच्छगलान्त्रिका ।
 वृषगन्धा रसे तिक्ता कषाया मधुरा कटुः ॥
 विपाकशमनी शीता लघ्वी मारुतकोपनी ॥

वृषमेधा, मेषान्त्रि, बस्तान्त्रि र छगलान्त्रिका : यी बाटुलपातेका पर्यायवाची नाम हुन् । वृषगन्धा तितो, टर्रो, गुलियो, पिरो, पचेपछि त्रिदोष शान्त पार्ने, शीतवीर्यको, पचाउन सहज तथा वातविकारलाई उत्तेजित पार्ने गुणको हुन्छ ।

उपसंहार

गुडूच्यादिरयं वर्गः प्रथमः परिकीर्तितः । ऊर्ध्वाधोदोषहरणः सर्वामयविनाशनः ॥३०४॥

यसरी माथितलका सबै रोग नाशगर्ने यो पहिलो गुडूच्यादि वर्गका बारेमा बताइयो ।

पुष्पिका

इति रसवीर्यविपाकसहिते धन्वन्तरिनिघण्टौ गुडूच्यादिः प्रथमो वर्गः ॥

धन्वन्तरि निघण्टुमा रस, वीर्य र पचेपछिका गुण सहितको पहिलो गुडूच्यादि वर्ग समाप्त भयो ।

अथ शतपुष्पादिवर्ग (शतपुष्पादि वर्ग)

पहाडी सुप (शतपुष्पा)

शतपुष्पा मिशिर्घोषा पीतिका माधवी शिफा ।
अतिच्छत्रा त्ववाक्पुष्पी शताह्वा कारवी स्मृता ॥१॥
शताह्वा कटुका तिक्ता स्निग्धोष्णा श्लेष्मवातजित् ।
ज्वरनेत्रव्रणान्हन्ति बस्तिकर्मणि शस्यते ॥२॥
शतपुष्पादलं चोक्तं वृष्यं रुधिरगुल्मजित् ।
वातघ्नं दीपनं स्तन्यं कफकृद्गुचिदायकम् ॥३॥

शतपुष्पा, मिशि, घोषा, पीतिका, माधवी, शिफा, अतिच्छत्रा, अवाक्पुष्पी, शताह्वा र कारवी : यी पहाडे सुपका पर्यायवाची नाम हुन् । यो पिरो, तितो, चिल्लो, उष्णवीर्यको तथा कफविकार र वातविकारलाई जित्ने गुणको हुन्छ । यसले जरो र आँखाका रोग र खटिरा नाश गर्दछ । यो बस्तिकर्ममा उपयोगी हुन्छ । यो सुपको पात वीर्यवर्धक, तथा रक्तविकार र गुल्मलाई जित्ने, वातविकार नाश गर्ने, दीपनी, दूध बढाउने, कफविकार गर्ने र रुचिप्रद गुणको हुन्छ ।

मदिसे सुप (मिश्रेया)

मिश्रेया तालपर्णी तु तालपत्री मिशिस्तथा ।
शालेयः स च शालीनो नाम्ना शीतशिवो मतः ॥४॥
तिक्ता स्वादुहिमा वृष्या दुर्नामक्षयजिन्मिशी ।
क्षतक्षीणहिता बल्या वातपित्तास्रदोषजित् ॥५॥

मिश्रेया, तालपर्णी, तालपत्री, मिशि, शालेय, शालीन र शीतशिव : यी मदिसे सुपका पर्यायवाची नाम हुन् । यो सुप तितो, गुलियो, शीतवीर्यको, वीर्यवर्धक, हर्सा र क्षयरोगलाई जित्ने, चोटपटक र खिङ्कोमा हितकर, बलदायक तथा वातविकार, पित्तविकार र रक्तविकारलाई जित्ने गुणको हुन्छ ।

बोजो (वचा)

वचोग्रगन्धा गोलोमी जटिलोग्रा च लोमशा ।
अन्या श्वेतवचा मेध्या षड्ग्रन्था हैमवत्यपि ॥६॥
वामनी कटुतिक्तोष्णा वातश्लेष्मरुजापहा ।
कण्ठ्या च मेध्या कृमिहृद्विबन्धाध्मानशूलनुत् ॥७॥
वचाद्वयं तु कटुकं रूक्षोष्णं मलमूत्रलम् ।
दीपनं कफवातघ्नं मेध्यायुष्यं च पाचनम् ॥८॥
जन्तुघ्नं चोग्रगन्धं च स्याल्लघु कण्ठास्यरोगजित् ।

वचा, उग्रगन्धा, गोलोमी, जटिला, उग्रा र लोमशा : यी बोजोका तथा श्वेतवचा, मेध्या, षड्ग्रन्था र हैमवती : यी अर्को थरी सेतो बोजोका पर्यायवाची नाम हुन् । बोजो बान्ता गराउन उपयोगी, पिरो, तितो, उष्णवीर्यको; वातविकार र कफविकार नाशगर्ने; घाँटीका लागि फाइदाजनक, दिमागको ग्रहण गर्ने क्षमता बढाउने तथा पेटका कीरा, कब्जियत, आध्मान र शूल नाशगर्ने गुणको हुन्छ । दुवै थरी बोजो पिरो, रुखो, उष्णवीर्यको, दिसापिसाब गराउने, दीपनी; कफविकार र वातविकार नाशगर्ने, दिमागको ग्रहण गर्ने क्षमता बढाउने, आयुवर्धक, पाचक, कीरा नाशगर्ने, कडा गन्ध आउने, पचाउन सहज तथा घाँटी र मुखका रोग नाशगर्ने गुणका हुन्छन् ।

हपुषा

हपुषा विपुषा विश्रा विश्रगन्धाऽतिगन्धिका ॥९॥
अपरा चाश्वत्थफला कच्छूघ्नी ध्वाङ्गनाशिनी ।
हपुषा कटुतिक्तोष्णा गुरुर्वातबलासजित् ॥१०॥
अर्शासि गुल्मशूलानि हन्ति जन्तूदरैः सह ।
प्लीहोदरविबन्धघ्नी शूलगुल्मार्शसां हिता ॥११॥

हपुषा, विपुषा, विश्रा, विश्रगन्धा र अतिगन्धिका : यी हपुषाका तथा अश्वत्थफला, कच्छूघ्नी र ध्वाङ्गनाशिनी : यी अर्को थरी हपुषाका पर्यायवाची नाम हुन् । हपुषा पिरो, तितो, उष्णवीर्यको, पचाउन कठिन; वातविकार र कफविकारलाई जिले; हर्सा, गुल्म, शूल र पेटका कीरा नाशगर्ने; फियोका रोग, पेटका रोग र कब्जियत नाशगर्ने तथा शूल, गुल्म र हर्सा रोगमा हित गर्ने गुणको हुन्छ ।

वायुविडङ्ग (विडङ्ग)

विडङ्गं जन्तुहन्त्री च कृमिघ्नी चित्रतण्डुला ।
तण्डुली कृमिहाऽमोघा कैरली मृगगामिनी ॥१२॥
रूक्षोष्णं कटुकं पाके लघु वातकफापहम् ।
ईषत्तित्तं विषान्हन्ति विडङ्गं कृमिनाशनम् ॥१३॥

विडङ्ग, जन्तुहन्त्री, कृमिघ्नी, चित्रतण्डुला, तण्डुली, कृमिहा, अमोघा, कैरली र मृगगामिनी : यी वायुविडङ्गका पर्यायवाची नाम हुन् । यो रुखो, उष्णवीर्यको, पचेपछि पिरो, पचाउन सहज, वातविकार र कफविकार नाशगर्ने, केही तितो तथा विषविकार र पेटका कीरा नाशगर्ने गुणको हुन्छ ।

ठूलोकुरो (कुटज)

कुटजः कौटजः कौटो वत्सको गिरिमल्लिका ।
कलिङ्गो मल्लिकापुष्प इन्द्रवृक्षोऽथ वृक्षकः ॥१४॥
कुटजः कटुकस्तिक्तः कषायो रूक्षशीतलः ।
कुष्ठातीसारपित्तास्रगुदजानि विनाशयेत् ॥१५॥

कुटज, कौटज, कौट, वत्सक, गिरिमल्लिका, कलिङ्ग, मल्लिकापुष्प, इन्द्रवृक्ष र वृक्षक : यी ठूलोकुरोका पर्यायवाची नाम हुन् । यो पिरो, तीतो, टर्रो, रुखो, शीतवीर्यको तथा कुष्ठ, अतीसार, पित्तविकार, रक्तविकार र मलद्वारका रोग नाशगर्ने गुणको हुन्छ ।

इन्द्रजौ (इन्द्रयव)

फलानि तस्येन्द्रयवाः शक्राह्वाः स्युः कलिङ्गका ।
तथा वत्सकबीजानि प्रोक्ता भद्रयवास्तथा ॥१६॥
(वल्लजं गहरं चैव सा चोक्ता कृष्णतण्डुला ।)
शक्राह्वाः कटुतिक्तोष्णास्त्रिदोषघ्नाश्च दीपनाः ॥१७॥
रक्ताशीस्यतिसारं च घ्नन्ति शूलवमीस्तथा ।

इन्द्रयव, शक्राह्व, (इन्द्रका पर्याय), कलिङ्गक, वत्सकबीजा, भद्रयवा, (वल्लज, गह्वर, र कृष्णतण्डुला) : यी ठूलोकुरोका बीज अर्थात् इन्द्रजौका पर्यायवाची नाम हुन् । यो पिरो, तीतो, उष्णवीर्यको, त्रिदोष नाशगर्ने, दीपनी तथा रक्तविकार, हर्सा, अतिसार, शूल र वाकवाकी नाशगर्ने गुणको हुन्छ ।

जवाखार (यवक्षार)

यवक्षारः स्मृतः पाक्यो यवजो यवशूकजः ॥१८॥
यवाह्वः शूकजो यव्यो यावशूको यवाग्रजः ।
यवक्षारः कटूष्णश्च कफवातोदरार्तिजित् ॥१९॥
आमशूलाश्मरीकृच्छ्रविषदोषहरः सरः ।
उष्णो विरूक्षणस्तीक्ष्णो दीपनः कफवातजित् ॥२०॥
पित्तास्रदूषणो हृद्यो यवजः क्षार उच्यते ।

यवक्षार, पाक्य, यवज, यवशूकज, यवशूक (जौका पर्यायवाची शब्दका पछाडी शूक जोडिएका शब्द), यव्य, यावशूक र यवाग्रज : यी जवाखारका पर्यायवाची नाम हुन् । यो पिरो, उष्णवीर्यको; कफविकार, वातविकार र पेटका रोगलाई जित्ने; आमविकार, शूल, पत्थरी, कृच्छ्ररोग र विषविकार नाशगर्ने; मलमूत्रलाई तलतिर सार्ने, रक्तविकार र पित्तविकारलाई दूषित बनाउने तथा मुटुका लागि हितकर हुने गुणको हुन्छ ।

सज्जीखार (स्वर्जिकाक्षार)

क्षारोऽन्यः स्वर्जिकाक्षारः स्वर्जिकाऽथ सुवर्चिका ॥२१॥
सुवर्चिकः सुवर्चोऽथ सुखवर्चः स एव च ।
स्वर्जिकोष्णा कटुः क्षाररसा वातकफौ जयेत् ॥२२॥
गुल्माध्मानकृमीन् हन्ति मेदोजठरनाशिनी ।

स्वर्जिकाक्षार, स्वर्जिका, सुवर्चिका, सुवर्चिक, सुवर्चा र सुखवर्च : यी सज्जीखारका पर्यायवाची नाम हुन् । यो उष्णवीर्यको, पिरो, क्षाररसले वातविकार र कफविकारलाई जित्ने तथा गुल्म, आध्मान, कीरा, बोसोविकार र पेटका रोग नाशगर्ने गुणको हुन्छ ।

सुहागा (टङ्कणक्षार)

टङ्कणष्टङ्कणक्षारो मालतीरससम्भवः ॥२३॥
द्रावी द्रावणकश्चैव लोहानां शुद्धिकारकः ।
कथितष्टङ्कणक्षारः कटूष्णः कफनाशनः ॥२४॥
स्थावरादिविषघ्नश्च कासश्वासापहारकः ।
विरूक्षणोऽनिलहरः श्लेष्महा पित्तदूषणः ॥
अग्निदीप्तिकरस्तीक्ष्णष्टङ्कणक्षार उच्यते ॥२५॥

टङ्कण, टङ्कणक्षार, मालतीरससम्भव, द्रावी, द्रावणक र लोहशुद्धिकारक : यी सुहागाका पर्यायवाची नाम हुन् । यो पिरो, उष्णवीर्यको, कफविकार र स्थावरादि विषविकार नाशगर्ने, खोकी र दम नाशगर्ने, पाचकाग्निलाई बाल्ने र तिक्खर स्वादको हुन्छ ।

सिँधेनुन (सैन्धव)

सैन्धवं सिन्धु सिन्धूत्थं नादेयं सिन्धुजं शिवम् ।
शुद्धं शीतशिवं चान्यन्मणिमन्थं शिलात्मकम् ॥२६॥
सैन्धवं शिशिरं स्निग्धं लघु स्वादु त्रिदोषजित् ।
हृद्यं हृन्नेत्ररोगघ्नं व्रणारोचकनाशनम् ॥२७॥
सैन्धवं स्वादु चक्षुष्यं वृष्यं रोचनदीपनम् ।
अविदाहि विबन्धघ्नं सुखदं स्यात्त्रिदोषजित् ॥२८॥

सैन्धव, सिन्धु, सिन्धूत्थ, नादेय, सिन्धुज, शिव, शुद्ध, शीतशिव, मणिमन्थ र शिलात्मक : यी सिँधेनुनका पर्यायवाची नाम हुन् । यो शीतवीर्यको, चिल्लो, पचाउन सहज, स्वादिलो, त्रिदोषलाई जित्ने, मुटुका लागि हितकर, मुटुका र आँखाका रोग नाशगर्ने, खटिरा र अरुचि नाशगर्ने, गुलियो, आँखाका लागि तिहकर, वीर्यवर्धक, रुचिप्रद, दीपनी, डाह नगर्ने, कब्जियत नाशगर्ने, सुखदायक र त्रिदोषलाई जित्ने गुणको हुन्छ ।

बिरे नुन (विडलवण)

बिडं कृत्रिमकं धूर्तं क्षारं द्रावणमासुरम् ।

सुपाक्यं खण्डलवणं कृतकं चेति नामतः ॥२९॥
सक्षारं दीपनं शूलहृद्रोगकफनाशनम् ।
रोचनं तीक्ष्णमुष्णं च बिडं वातानुलोमनम् ॥३०॥

बिड, कृत्रिमक, धूर्त, क्षार, द्रावण, आसुर, सुपाक्य, खण्डलवण र कृतक : यी बिरे नुनका पर्यायवाची नाम हुन् । यो क्षारयुक्त, दीपनी तथा शूल, मुटुका रोग र कफविकार नाशगर्ने गुणको हुन्छ । साथै यो रुचिप्रद, तिक्खर, उष्णवीर्यको र वायुलाई आफ्नो बाटोमा हिँडाउने गुणको समेत हुन्छ ।

सौचर नुन (सौवर्चललवण)

अक्षं सौवर्चलं प्रोक्तं रुचकं हृद्यगन्धकम् ।
तिलकं कृष्णलवणं तत्काललवणं स्मृतम् ॥३१॥
लघु सौवर्चलं पाके वीर्योष्णं विशदं कटु ।
गुल्मशूलविबन्धघ्नं हृद्यं सुरभि रोचनम् ॥३२॥

अक्ष, सौवर्चल, रुचक, हृद्यगन्धक, तिलक, कृष्णलवण र काललवण : यी सौचर नुनका पर्यायवाची नाम हुन् । यो पचाउन सहज, पचेपछि उष्णवीर्यको, मनोहर, पिरो तथा गुल्म, शूल र कब्जियत नाशगर्ने गुणको हुन्छ । यो मुटुका लागि हितकर, सुन्दर र रुचिप्रद पनि हुन्छ ।

माटे नुन (औद्भिदलवण)

औद्भिदं पांशुलवणं रोमकं वसुकं वसु ।
ऊषरं पांसवक्षारमौर्वं सार्वगुणं तथा ॥३३॥
लघु तीक्ष्णोष्णमुत्क्लेदि सूक्ष्मं वातानुलोमनम् ।
सतिक्तं कटुकं क्षारं विद्याल्लवणमौद्भिदम् ॥३४॥

औद्भिद, पांशुलवण, रोमक, वसुक, वसु, ऊषर, पांसवक्षार, और्व र सार्वगुण : यी माटे नुनका पर्यायवाची नाम हुन् । यो पचाउन सहज, तिक्खर, उष्णवीर्यको, आर्द्रता बढाउने, सूक्ष्म, वायुलाई आफ्नो बाटोमा हिँडाउने, तितो, पिरो र क्षारयुक्त हुन्छ ।

समुद्री नुन (सामुद्रलवण)

सामुद्रलवणं प्राहुः क्षारं च शिशिरं तथा ।
समुद्रजं सागरजं लवणोदधिसम्भवम् ॥३५॥
सामुद्रलवणं पाके नात्युष्णमविदाहि च ।
भेदनं स्निग्धमीषच्च शूलघ्नं नातिपित्तलम् ॥३६॥

सामुद्रलवण, क्षार, शिशिर, समुद्रज, सागरज र लवणोदधिसम्भव : यी समुद्री नुनका पर्यायवाची नाम हुन् । यो पचेपटि धेरै उष्णवीर्यको हुँदैन र डाह पनि गर्दैन । यो भेदनी, केही चिल्लो, शूलरोग नाशक र धेरै पित्तविकार पनि नगर्ने गुणको हुन्छ ।

हिङ्ग (हिङ्गु)

हिङ्गु रामठमत्युग्रं जन्तुघ्नं भूतनाशनम् ।
अगूढगन्धं बाह्लीकं जरणं सूपधूपनम् ॥३७॥
हिङ्गुष्णं कटुकं हृद्यं सरं वातकफौ कृमीन् ।
हन्ति गुल्मोदराध्मानबन्धशूलहृदामयान् ॥३८॥

हिङ्गु, रामठ, अत्युग्र, जन्तुघ्न, भूतनाशन, अगूढगन्ध, बाह्लीक, जरण र सूपधूपन : यी हिङ्गुका पर्यायवाची नाम हुन् । यो उष्णवीर्यको, पिरो, मुटुका लागि हितकर, मलमूत्रलाई तलतिर सार्ने तथा वातविकार, कफविकार, कीरा, गुल्म, आध्मान, कब्जियत, शूल र मुटुका रोग नाशगर्ने गुणको हुन्छ ।

जिम्बु (हिङ्गुपत्रि)

हिङ्गुपत्री तु कबरी पृथ्वीका पृथुला पृथुः ।
बाष्पिका दीर्घिका तन्वी बिल्विका दारुपत्रिका ॥३९॥
बाष्पिका कटुतीक्ष्णोष्णा हृद्या वातकफापहा ।
कृमिप्लीहविबन्धाशौगुल्महृद्वस्तिशूलनुत् ॥४०॥

हिङ्गुपत्री, कबरी, पृथ्वीका, पृथुला, पृथु, बाष्पिका, दीर्घिका, तन्वी, बिल्विका र दारुपत्रिका : यी जिम्बुका पर्यायवाची नाम हुन् । यो पिरो, तिक्खर, उष्णवीर्यको, मुटुका लागि हितकर तथा वातविकार, कफविकार, कीरा, फियोका रोग, कब्जियत, हर्सा, गुल्म र मूत्राशयको शूलरोग नाशगर्ने गुणको हुन्छ ।

नाडीहिङ्गु

नाडीहिङ्गु पलाशा तु जन्तुका रामठी च सा ।
वंशपत्री वेणुपत्री पिण्डाहिङ्गुशिवाटिका ॥४१॥
नाडीहिङ्गु कटूष्णं च कफवातार्तिशान्तिकृत् ।
विष्टम्भनविबन्धामदोषघ्नं दीपनं परम् ॥४२॥

नाडीहिङ्गु, पलाशा, जन्तुका, रामठी, वंशपत्री, वेणुपत्री, पिण्डा र हिङ्गुशिवाटिका : यी नाडीहिङ्गुका पर्यायवाची नाम हुन् । यो पिरो, उष्णवीर्यको, कफविकार र वातविकारलाई शान्त पार्ने, तथा विष्टम्भ, कब्जियत र आमविकारलाई नाशगर्ने एवं अति नै दीपनी हुन्छ ।

सङ्कलन : मोहनप्रसाद सापकोटा सुकुमेल (सूक्ष्मैला)

सूक्ष्मैला द्राविडी तुत्था कोरङ्गी बहुला त्रुटिः ।
एला कपोतवर्णा च चन्द्रबाला च निष्कुटी ॥४५॥
सूक्ष्मैला मूत्रकृच्छ्रघ्नी श्वासकासक्षये हिता ।
सूक्ष्मैला शीतला स्वादुहृद्या रोचनदीपनी ॥४६॥

सूक्ष्मैला, द्राविडी, तुत्था, कोरङ्गी, बहुला, त्रुटि, एला, कपोतवर्णा, चन्द्रबाला र निष्कुटी : यी सुकुमेलका पर्यायवाची नाम हुन् । यसले मूत्रकृच्छ्र रोगलाई नाश गर्दछ । यो दम, खोकी र क्षयरोगमा हितकर हुन्छ । यो शीतवीर्यको, स्वादिलो, मुटुका लागि हितकर, रुचिप्रद र दीपनी हुन्छ ।

अलैंची (बृहदेला)

भद्रैला बृहदेला तु त्रिपुटा त्रिपुटोद्भवा ।
स्थूलैला त्वक्सुगन्धा च पृथ्वीका कन्यका पुटा ॥४७॥

एला तित्ता च लघ्वी स्यात्कफवातविषव्रणान् ।
बस्तिकण्ठरुजो हन्ति मुखमस्तकशोधिनी ॥४८॥

भद्रेला, बृहदेला, त्रिपुटा, त्रिपुटोद्भवा, स्थूलैला, त्वक्सुगन्धा, पृथ्वीका, कन्यका र पुटा : यी अलैंचीका पर्यायवाची नामहरू हुन् । अलैंची तीतो, पचाउन सहज, तल्लोपेट र घाँटीका रोग नाशगर्ने, कफविकार, वातविकार, विषविकार र घाउखटिरा नाशगर्ने तथा मुख र टाउको प्रशोधन गर्ने गुणको हुन्छ ।

नागकेशर

नागपुष्पं मतं नागं केशरं नागकेशरम् ।
चाम्पेयं नागकिञ्जल्कं कनकं हेमकाञ्चनम् ॥४९॥
नागकेशरमल्पोष्णं लघु तिक्तं कफापहम् ।
बस्तिरुग्विषवातास्रकण्डूघ्नं शोफनाशनम् ॥५०॥

नागपुष्प, नाग, केशर, नागकेशर, चाम्पेय, नागकिञ्जल्क, कनक र हेमकाञ्चन : यी नागकेशरका पर्यायवाची नाम हुन् । यो थोरै उष्णवीर्यको, पचाउन सहज, तिक्तो तथा कफविकार, मूत्राशयका रोग, विषविकार, वातविकार, रक्तविकार, लुतो र सुजन नाशगर्ने गुणको हुन्छ ।

दालचिनी (त्वक्)

त्वचं वराङ्गं भृङ्गं त्वक्चोचं शकलमुत्कटम् ।
सैहलं लाटपर्णं च मुखशोध्यं वनप्रियम् ॥५१॥
वराङ्गं लघु तीक्ष्णोष्णं कफवातविषापहम् ।
कण्ठवक्त्ररुजो हन्ति शिरोरुग्बस्तिशोधनम् ॥५२॥

त्वच, वराङ्ग, भृङ्ग, त्वक्, चोच, शकल, उत्कट, सैहल, लाटपर्ण, मुखशोध्य र वनप्रिय : यी दालचिनीका पर्यायवाची नाम हुन् । यो पचाउन सहज, तिक्खर, उष्णवीर्यको तथा कफविकार, वातविकार, विषविकार, घाँटीका रोग, मुखका रोग र टाउकाका रोग नाशगर्ने गुणको हुन्छ । यसले मूत्राशयलाई सफा पनि गर्दछ ।

तेजपात (तमालपत्र)

तमालपत्रं पत्रं स्यात्पलाशं छदनं दलम् ।
रामं तापसजं वासो गोपनं वस्त्रमंशुकम् ॥५३॥
पत्रकं कफवाताशौहृल्लासारोचकापहम् ।

तमालपत्र, पत्र, पलाश, छदन, दल, राम, तापसज, वास, गोपन, वस्त्र र अंशुक : यी तेजपातका पर्यायवाची नाम हुन् । यो कफविकार, वातविकार, हर्सा, छातिको पीडा वा बाडुली रोग र अरुचि नाशगर्ने गुणको हुन्छ ।

सुनपाती वा गोब्रेसल्लो (तालीसपत्र)

तालीसकं तु तालीसं पत्रं तालीसपत्रकम् ॥५४॥
नीलमामलकीपत्रं पत्राढ्यं च शुकोदरम् ।
तालीसं श्वासकासघ्नं दीपनं श्लेष्मपित्तजित् ॥५५॥
मुखरोगहरं हृद्यं सुपत्रं पत्रसंवृतम् ।

तालीसक, तालीस, पत्र, तालीसपत्रक, नील, आमलकीपत्र, पत्राढ्य र शुकोदर तथा सुपत्र र पत्रसंवृत : यी सुनपातीका पर्यायवाची नाम हुन् । यो दम र खोकी नाशक, दीपनी, कफविकार र पित्तविकारलाई जित्ने, मुखका रोग नाशक र मुटुका रोगलाई लाभगर्ने गुणको हुन्छ ।

वंशलोचन (वंशरोचना)

स्याद्वंशरोचना वांशी तुगाक्षीरी तुगा शुभा ॥५६॥
त्वक्क्षीरी वंशजा शुभ्रा वंशक्षीरी च वैणवी ।
वंशक्षीरी स्मृता वंश्या यवजा यवसम्भवा ॥५७॥
गोधूमसम्भवा चान्या षष्टितण्डुलजोद्भवा ।
कषाया मधुरा तिक्ता कासघ्नी वंशरोचना ॥५८॥
मूत्रकृच्छ्रक्षयश्वासहिता बल्या च बृंहणी ।

वंशरोचना, वांशी, तुगाक्षीरी, तुगा, शुभा, त्वक्षीरी, वंशजा, शुभ्रा, वंशक्षीरी र वैणवी : यी वंशलोचनका पर्यावाची नाम हुन् । बाँसबाट वंशलोचन बनेजस्तै जौबाट यवजा, गहुँबाट गोधुमसम्भवा र सठिया धानबाट षष्ठितण्डुलजोद्धवा नामक पदार्थ बन्दछ । वंशलोचन टर्छ, गुलियो, तितो र खोकी नाशगर्ने गुणको हुन्छ । यो मूत्रकृच्छ्र, क्षयरोग र दममा हितकर हुनुका साथै बलदायक र पौष्टिक समेत हुन्छ ।

वंशरोचनाविशेष (पलाशगन्ध)

अन्या पलाशगन्धा च त्वक्षीरी प्रकीर्तिता ॥५९॥
त्वक्षीरी मधुरा रूक्षा कषायाऽस्रा रुचित्रणान् ।
पित्तश्वासक्षयान्हन्ति कासदाहनिषूदनी ॥६०॥

अन्य थरी एक वंशलोचनलाई पलाशगन्धा, त्वक्षीरी वा त्वक्षीरी भनिन्छ । यो गुलियो, रुखो, टर्छ तथा रक्तविकार, अरुचि, खटिरा, पित्तविकार, दम, क्षयरोग, खोकी र डाह नाशगर्ने गुणको हुन्छ ।

मुङ्गेलो (उपकुञ्जी)

सङ्कलन : मोहन प्रसाद सापकोटा

उपकुञ्जा चोपकुञ्जी कालिका चोपकालिका ।
सुषवी कुञ्जिका कुञ्जी पृथ्वीका स्थूलजीरकः ॥६१॥
पृथ्वीका कटुका पाके रुच्या पित्ताग्निदीपनी ।
श्लेष्माध्मानहराऽजीर्णजन्तुघ्नी च प्रकीर्तिता ॥६२॥

उपकुञ्जा, उपकुञ्जी, कालिका, उपकालिका, सुषवी, कुञ्जिका, कुञ्जी, पृथ्वीका र स्थूलजीरक : यी मुङ्गेलोका पर्यावाची नाम हुन् । यो पचेपछि पिरो, रुचिप्रद, पित्त र पाचक-अग्नि बढाउने तथा कफविकार, आध्मान, अजीर्ण र कीरा नाशगर्ने गुणको हुन्छ ।

दाडिम

दाडिमो दाडिमीसारः कुट्टिमः फलषाडवः ।
स्वाद्वम्लो रक्तबीजश्च करकः शुकवल्लभः ॥६३॥
स्निग्धोष्णं दाडिमं हृद्यं कफपित्तविरोधि च ।

द्विविधं तच्च विज्ञेयं मधुरं चाम्लमेव च ॥६४॥

दाडिम, दाडिमीसार, कुट्टिम, फलषाडव, स्वादुम्ल, रक्तबीज, करक र शुकवल्लभ : यी दाडिमका पर्यायवाची नाम हुन् । यो चिल्लो, उष्णवीर्यको, मुटुका लागि हितकर तथा कफविकार र पित्तविकारको विरोधी हुन्छ । यो गुलियो र अमिलो गरी दुई प्रकारको हुन्छ ।

धनियौं (धान्यक)

धान्यकं धान्यका धान्या धानी धानेयकं तथा ।
कुस्तुम्बरुश्चाल्लका च च्छत्रधान्यं वितुन्नकम् ॥६५॥
आर्द्रा कुस्तुम्बुरुः कुर्यात्स्वादुः सौगन्ध्यहृद्यताम् ।
सा शुष्का मधुरा पाके स्निग्धा तृड्दाहनाशिनी ॥६६॥
धान्यकं कासतृट्छर्दिज्वरहृच्चक्षुषो हितम् ।
कषायं तिक्तमधुरं हृद्यं रोचनदीपनम् ॥६७॥

धान्यक, धान्यका, धान्या, धानी, धानेयक, कुस्तुम्बरु, अल्लका, छत्रधान्य र वितुन्नक : यी धनियौंका पर्यायवाची नाम हुन् । ताजा धनिया गुलियो, सुगन्धी र स्वादिष्ट हुन्छ । सुकेको धनिया पचेपछि गुलियो र चिल्लो हुन्छ । यसले तिर्खा र डाह नाश गर्दछ । धनियौं खोकी, तिर्खा, वाकवाकी र जरो नाश गर्ने तथा आँखाका लागि फाइदाजनक हुन्छ । यो टर्रो, तितो, गुलियो, मुटुका लागि हितकर, रुचिप्रद र दीपनी हुन्छ ।

जीरा (जीरक)

जीरकं दीर्घकं हृद्यमजाजी दीप्यमागधम् ।
मनोज्ञं वरुणं रुच्यं पीताभं पूज्यमानकम् ॥६८॥
जीरकं कटु रूक्षं च वातहृदीपनं परम् ।
गुल्माध्मानातिसारघ्नं ग्रहणीकृमिहृत्परम् ॥६९॥

जीरक, दीर्घक, हृद्य, अजाजी, दीप्य, मागध, मनोज्ञ, वरुण, रुच्य, पीताभ र पूज्यमानक : यी जीराका पर्यायवाची नाम हुन् । यो पिरो, रुखो, वातविकार नाशक, अति दीपनी तथा गुल्म, आध्मान, अतिसार, ग्रहणी र अति नै कीरा नाश गर्ने गुणको हुन्छ ।

सेतो जीरा (शुक्लजीरक)

शुक्लाजाजी कणा ख्याता दीर्घकः कणजीरकः ।
स्तन्यो दीर्घकणा गौरजीरको दीर्घजीरकः ॥७०॥
गौराजाजी हिमा रुच्या कटुर्मधुरदीपनी ।
कृमिघ्ना विषहन्त्री च चक्षुष्याऽऽध्माननाशिनी ॥७१॥

शुक्लाजाजी, कणा, दीर्घक, कणजीरक, स्तन्य, दीर्घकणा, गौरजीरक र दीर्घजीरक : यी सेतो जीराका पर्यायवाची नाम हुन् । यो शीतवीर्यको, रुचिप्रद, पिरो, गुलियो, दीपनी, कीरा नाशक, विषविकार नाशक, आँखाका लागि हितकर र आध्मान रोग नाशगर्ने गुणको हुन्छ ।

कालो जीरा (कृष्णजीरक)

कृष्णाजाजी तु जरणा सुगन्धः कणजीरकः ।
काश्मीरजीरका वर्षा कालिः स्यात्कालपेशिका ॥७२॥
जरणा कटुरूष्णा च कफशोफनिकृन्तनी ।
रुच्याऽजीर्णज्वरघ्नी च चक्षुष्या ग्राहिणी परा ॥७३॥

कृष्णाजाजी, जरणा, सुगन्ध, कणजीरक, काश्मीरजीरका, वर्षा, कालि र कालपेशिका : यी कालोजीराका पर्यायवाची नाम हुन् । यो पिरो, उष्णवीर्यको, कफविकार र सुजनलाई कोतरेर निकाल्ने, रुचिप्रद, अजीर्ण र जरो नाशगर्ने, आँदाका लागि हितकर तथा अति नै ग्राही हुन्छ ।

वनजीरा (वन्यजीर)

बृहत्पाली सूक्ष्मपत्रा वन्यजीरः कणा तथा ।
वन्यजीरः कटुः शीतो व्रणहा जन्तुनाशनः ॥७४॥

बृहत्पाली, सूक्ष्मपत्रा, वन्यजीर र कणा : यी वनजीराका पर्यायवाची नाम हुन् । यो पिरो, शीतवीर्यको तथा खटिरा र पेटका कीरा नाशगर्ने गुणको हुन्छ ।

पिप्ला (पिप्पली)

पिप्पली मागधी कृष्णा चपला तीक्ष्णतण्डुला ।
उपकुल्या कणा श्यामा कोला शौण्डी तथोषणा ॥७५॥
पिप्पली कटुका स्वादुर्हिमा स्निग्धा त्रिदोषजित् ।
तृड्ज्वरोदरजन्त्वामनाशिनी च रसायनी ॥७६॥

पिप्ला, मागधी, कृष्णा, चपला, तीक्ष्णतण्डुला, उपकुल्या, कणा, श्यामा, कोला, शौण्डी र ऊषणा : यी पिप्लाका पर्यायवाची नाम हुन् । यो पिरो, गुलियो, शीतवीर्यको, चिल्लो, त्रिदोषलाई जित्ने तथा तिखा, जरो, पेटका रोग, कीरा र आमविकार नाशगर्ने एवं रसायनी हुन्छ ।

पिप्लाको जरा (पिप्पलीमूल)

मूलं च पिप्पलीमूलं ग्रन्थिकं चविकाशिरः ।
कोलमूलं कटुग्रन्थि सर्वग्रन्थिकमूषणम् ॥७७॥
कटूष्णं पिप्पलीमूलं श्लेष्मसङ्घातनाशनम् ।
वातोच्छित्तिकरं हन्ति कृमीन्वह्निप्रदीप्तिकृत् ॥७८॥

मूल, पिप्पलीमूल, ग्रन्थिक, चविकाशिर, कोलमूल, कटुग्रन्थि, सर्वग्रन्थिक र ऊषण : यी पिप्लाको जराका पर्यायवाची नाम हुन् । यो पिरो, उष्णवीर्यको, गढेको कफविकार नाशक, वातविकार नाशक, कीरा नाशगर्ने तथा पाचकअग्निलाई बाल्ने गुणको हुन्छ ।

चाभो (चविका)

चविका कोलवल्ली च चव्यं चविकमेव च ।
चव्यं च कटुकोष्णं स्याज्जन्तुहृदीपनं परम् ॥७९॥
कफोद्रेकहरं वातप्रकोपशमनं भवेत् ।

चविका, कोलवल्ली, चव्य र चविक : यी चाभोका पर्यायवाची नाम हुन् । यो पिरो, उष्णवीर्यको, कीराम नाशगर्ने, अति दीपनी, बढेको कफविकार नाशगर्ने तथा वातविकारलाई शान्तपार्ने गुणको हुन्छ ।

गजपिप्पली

तस्याः फलं विनिर्दिष्टं श्रेयसी गजपिप्पली ॥८०॥
तत्फलं श्रेयसी हस्तिमगधा गजपिप्पली ।
गजकृष्णा करिकणा इभकणा द्विपिप्पली ॥८१॥
गजपिप्पलिका स्वादुः कटुरूष्णा च कीर्तिता ।
बलासं हन्ति वातेन सार्धं जन्तुजयप्रदा ॥८२॥

चाभोको फललाई गजपिप्पली भनिन्छ । यसका अन्य नाम श्रेयसी, हस्तिमगधा, गजकृष्णा, करिकणा, इभकणा र द्विपिप्पली हुन् । यो गुलियो, पिरो, उष्णवीर्यको, कफविकार र वातविकार नाश गर्ने तथा पेटका कीरालाई जिल्ले गुणको हुन्छ ।

चित् (चित्रक)

चित्रको दहनो व्यालः पाठिनो दारुणोऽग्निकः ।
ज्योतिष्को वल्लरी वह्निः पाली पाठी कटुः शिखी ॥८३॥
कृष्णारुणोऽनलो द्वीपी चित्रभानुश्च पावकः ।
चित्रकोऽग्निसमः पाके कटुकः कफशोफजित् ॥८४॥
वातोदराशौग्रहणीक्षयपाण्डुविनाशनः ।

चित्रक, दहन, व्याल, पाठिन, दारुण, अग्निक, ज्योतिष्क, वल्लरी, वह्नि, पाली, पाठी, कटु, शिखी, कृष्ण, अरुण, अनल, द्वीपी, चित्रभानु र पावक : यी चित्का पर्यायवाची नाम हुन् । यो उष्णवीर्यको, पचेपछि पिरो, कफविकार र सुजनलाई जिल्ले तथा वातविकार, पेटका रोग, हर्सा, ग्रहणी, क्षयरोग र पाण्डुरोग नाश गर्ने गुणको हुन्छ ।

सुठो वा अदुवा (शुण्ठी)

शुण्ठी महौषधं विश्वं नागरं विश्वभेषजम् ॥८५॥
विश्वौषधं शृङ्गवेरं कटुभद्रं तथाऽऽर्द्रकम् ।
स्निग्धोष्णा कटुका शुण्ठी वृष्या शोफकफारुचीन् ॥८६॥
हन्ति वातोदरश्वासपाण्डुश्लेपदनाशिनी ।

**कफानिलहरं स्वयं विबन्धानाहशूलजित् ॥८७॥
कटूष्णं रोचनं वृष्यं हृद्यं चैवाऽऽर्द्रकं स्मृतम् ।**

शुण्ठी, महौषध, विश्व, नागर, विश्वभेषज, विश्वौषध, शृङ्गबेर, कटुभद्र र आर्द्रक : यी अदुवा वा सुठोका पर्यायवाची नामहरू हुन् । सुठो चिल्लो, उष्णवीर्यको, पिरो र वीर्यवर्धक हुन्छ । यसले सुजन, कफविकार, अरुची, वातोदर, दम, पाण्डु र हात्तीपाइले रोग नाश गर्दछ । अदुवाले कफविकार, वातविकार नाश गर्दछ । यो स्वरका लागि लाभदायक हुन्छ । यसले विबन्ध, आनाह र शूललाई जित्दछ । अदुवा पिरो, उष्णवीर्यको, रोचनी, वीर्यवर्धक र मुटुका लागि हितकर हुन्छ ।

मरिच (मरिचम्)

**मरिचं पलितं श्यामं वल्लीजं कृष्णमूषणम् ॥८८॥
यवनेष्टं शिरोवृत्तं कोलकं धर्मपत्तनम् ।
मरिचं कटुतिक्तोष्णं पित्तकृच्छ्लेष्मनाशनम् ॥८९॥
वायुं निवारयत्येव जन्तुसन्ताननाशनम् ।**

सङ्कलन : मोहन प्रसाद सापकोटा

मरिच, पलित, श्याम, वल्लीज, कृष्ण, ऊषण, यवनेष्ट, शिरोवृत्त, कोलक र धर्मपत्तन : यी मरिचका पर्यायवाची नाम हुन् । यो पिरो, तितो, उष्णवीर्यको, पित्तविकार गर्ने, कफविकार र वातविकार नाशगर्ने, र कीराको समूह सखाप पार्ने गुणको हुन्छ ।

सेतो मरिच (शुभ्रमरिच)

**मरीचं शुभ्रमरिचं बीजं शिग्रोस्तु शिग्रुजम् ॥९०॥
नात्युष्णं नातिरूक्षं च वीर्यतो मरिचं सितम् ।**

मरिच, शुभ्रमरिच, शिग्रुबीज र शिग्रुज : यी सेतो मरिचका पर्यायवाची नाम हुन् । यो न धेरै उष्णवीर्यको न त धेरै रुखो नै हुन्छ ।

ज्वानो (यवानी)

यवानी दीप्यको दीप्यो यवसाहो यवाग्रजः ॥९१॥

यवानिकोग्रगन्धा च दीपनीया च दीपनी ।
यवानी कटुतिक्तोष्णा वातश्लेष्मविषामयान् ॥९२॥
हन्ति गुल्मोदरं शूलं दीपयत्याशु चानलम् ।

यवानी, दीप्यक, दीप्य, यवसाह्व, यवाग्रज, यवानिका, उग्रगन्धा, दीपनीया र दीपनी : यी ज्वानुका पर्यायवाची नाम हुन् । यो पिरो, तीतो, उष्णवीर्यको तथा वातविकार, कफविकार, विषविकार, गुल्म, पेटका रोग र शूल नाशगर्ने एवं पाचकाग्निलाई तुरुन्त बाल्ने गुणको हुन्छ ।

ज्वानुविशेष (चौहार)

यवानिका यवानी स्याच्चौहारो जन्तुनाशनः ॥९३॥
चौहारस्तद्गुणाः प्रोक्तो विशेषात्कृमिनाशनः ।

यवानिका, यवानी, चौहार र जन्तुनाशन : यी ज्वानुविशेषका पर्यायवाची नाम हुन् । यसमा पनि ज्वानुका जस्तै गुण हुन्छन् । विशेषतः यसले कीरा नाश गर्दछ ।

सङ्कलन : मोहन प्रसाद सापकोटा
ज्वानुविशेष (तुरुष्क, पारसीक यवानी)

यवानी यावनी तीव्रा तुरुष्को मदकारिणी ॥९४॥
यवानी यावनी रूक्षा ग्राहिणी मादिनी कटुः ।

यवानी, यावनी, तीव्रा, तुरुष्का र मदकारिणी : यी अर्को थरी ज्वानुका पर्यायवाची नाम हुन् । यो रुखो, ग्राहि, नसा लगाउने र पिरो हुन्छ ।

भकिअमिलो (वृक्षाम्ल)

वृक्षाम्लं तिक्तीडीकं च शाखाम्लं रक्तपूरकम् ॥९५॥
अम्लवृक्षोऽम्लशाखः स्यादपरोऽम्लमहीरुहः ।
तिक्तीडीकं च वातघ्नं ग्राह्युष्णं रुचिकृल्लघुः ॥९६॥

वृक्षाम्ल, तित्तिडीक, शाखाम्ल, रक्तपूरक, अम्लवृक्ष र अम्लशाख : यी भकिअमिलोका तथा अम्लमहरिह भकिअमिलोविशेषका पर्यायवाची नाम हुन् । यो वातविकार नाशगर्ने, ग्राहि, उष्णवीर्यको, रुचिप्रद र पचाउन सहज हुने गुणको हुन्छ ।

अम्लवेत (अम्लवेतस)

अम्लोऽम्लवेतसो भीमो रसाम्लो वरवेतसः ।
रक्तस्रावी वेतसाम्लः शतवेधी च भेदकः ॥९७॥
कषायं कटुरूक्षोष्णमम्लवेतसकं विदुः ।
तृट्कफानिलजन्त्वर्शोहृद्बाधाश्मरिगुल्मजित् ॥९८॥

अम्ल, अम्लवेतस, भीम, रसाम्ल, वरवेतस, रक्तस्रावी, वेतसाम्ल, शतवेधी र भेदक : यी अम्लवेतका पर्यायवाची नामहरू हुन् । यो टर्पो, पिरो, रुखो र उष्णवीर्यको हुन्छ भनी बताइएको छ । यसले तिखा, कफविकार, वातविकार, कीरा, अल्काई, मुटुको अडचन, पत्थरी र गुल्मलाई जित्दछ ।

जङ्गली ज्वानु (अजमोदा)

सङ्कलन : मोहन प्रसाद सापकोटा

अजमोदा बस्तमोदा दीप्यको लोचमर्कटः ।
खराह्वा कारवी वल्लीमोदा हस्तिमयूरकः ॥९९॥
अजमोदा च शूलघ्नी तिक्तोष्णा कफवातजित् ।
हिक्काध्मानारुचिर्हन्ति कृमिजिद्वहिदीपनी ॥१००॥

अजमोदा, बस्तमोदा, दीप्यक, लोचमर्कट, खराह्वा, कारवी, वल्ली, मोदा र हस्तिमयूरक : यी अजमोदाका पर्यायवाची नामहरू हुन् । यसले शूल नाश गर्दछ । यो तीतो र उष्णवीर्यको हुन्छ । यसले कफविकार र वातविकारलाई जित्दछ । अजमोदाले बाडुली रोग, आध्मान र अरुचि नाश गर्दछ । यसले कीरालाई जित्दछ र पाचनशक्ति बढाउँदछ ।

अजगन्धा

अजगन्धा खरपुष्पा बस्तगन्धा विगन्धिका ।
कारवी बर्बरा गन्धा तुङ्गी पूतिमयूरिका ॥१०१॥
अजगन्धा वातहरा वीर्योष्णा तु ज्वरापहा ।

गुल्माष्ठीलाकफानाहशूलजिद्वहिकृत्परा ॥१०२॥

अजगन्धा, खरपुष्पा, बस्तगन्धा, विगन्धिका, कारवी, बर्बरा, गन्धा, तुङ्गी र पूतिमयूरिका : यी अजगन्धाका पर्यायवाची नामहरू हुन् । यो वातविकार नाशक, उष्णवीर्यको, जरो नाशक, तथा गुल्म, अष्ठीला, कफविकार, आनाह र शूल रोगलाई जित्ने गुणको हुन्छ । यसले धेरै नै पाचनशक्ति बढाउँदछ ।

कैथ (कपित्थ)

कपित्थोऽथ दधित्थस्तु ग्राही गन्धफलश्च सः ।
अक्षसस्यो दधिफलश्चिरपाकी कपिप्रियः ॥१०३॥
कपित्थमाममस्वर्यं कफघ्नं ग्राहि वातलम् ।
कफानिलहरं पक्वं मधुराम्लरसं गुरु ॥१०४॥
श्वासकासारुचिहरं तृष्णाघ्नं कण्ठशोधनम् ।

कपित्थ, दधित्थ, ग्राही, गन्धफल, अक्षसस्य, दधिफल, चिरपाकी र कपिप्रिय : यी कैथका पर्यायवाची नाम हुन् । काँचो कैथ स्वरका लागि हितकर हुँदैन । यसले कफविकार नाश गर्दछ, ग्राही हुन्छ र वातविकार गर्दछ । पाकेको कैथ कफविकार र वातविकार नाशगर्ने, गुलियो, अमिलो, पचाउन कठिन तथा दम, खोकी, अरुची र तिर्खा नाशगर्ने एवं घाँटी सफा गर्ने गुणको हुन्छ ।

चिनी वा मिस्री (शर्करा)

शर्करोक्ता तु मीनाण्डी श्वेता मत्स्यण्डिका सिता ॥१०५॥
अहिच्छत्रा तु सिकता शुद्धा शुभ्रा सितोपला ।
शर्करा शीतवीर्या तु सर्वदाहविनाशनी ॥१०६॥
रक्तपित्तप्रशमनी छर्दिमूर्च्छातृषापहा ।

शर्करा, मीनाण्डी, श्वेता, मत्स्यण्डिका, सिता, अहिच्छत्रा, सिकता, शुद्धा, शुभ्रा र सितोपला : यी चिनी वा मिस्रीका पर्यायवाची नाम हुन् । यो शीतवीर्यको, सबै खालका डाह नाशगर्ने, रक्तपित्तलाई शान्तपार्ने तथा वाकवाकी, बेहोसीपन र तिर्खा नाशगर्ने गुणको हुन्छ ।

महको चिनी (मधुशर्करा)

शर्कराऽन्या मधुभवा माधवी मधुशर्करा ॥१०७॥
माक्षीकशर्करा प्रोक्ता शर्करा मदनोद्भवा ।
शर्करा मधुसम्भूता छर्द्यतीसारनाशिनी ॥१०८॥

मधुभवा, माधवी, मधुशर्करा, माक्षीकशर्करा, शर्करा र मदनोद्भवा : यी महको चिनीका पर्यायवाची नाम हुन् । यो चिनीले वाकवाकी र अतीसार नाश गर्दछ ।

दुरालभाको चिनी (यवासशर्करा)

यवासशर्करा चान्या निर्दिष्टा यासशर्करा ।
स्वेदनी ह्लादनी रूक्षा कषाया स्वादुपाकिका ॥१०९॥
(यवासशर्करा शीता रसे स्वादुर्ज्वरास्रजित् ।)

यवासशर्करा र यासशर्करा : यी दुरालभाबाट बनाइने चिनीका नाम हुन् । यो पसिना निकाल्ने, आनन्ददायक, रुखो, टर्रो र पचेपछि गुलियो हुने गुणको हुन्छ । (यो चिनी शीतवीर्यको, पचेपछि गुलियो तथा जरो र रक्तविकारलाई जित्ने गुणको हुन्छ) ।

उपसंहार

शतपुष्पादिको वर्गः द्वितीयः परिकीर्तितः ।
कायाग्निदीपनो बल्यो वक्त्रसौगन्ध्यतीक्ष्णकृत् ॥

शरीरको अग्नि बाल्ने, बलदायक, मुखको सुगन्ध बढाउने र तिक्खर स्वादका पदार्थहरूका बारेमा उल्लेख गरिएको शतपुष्पादिक वर्ग नामक दोश्रो वर्ग बताइयो ।

पुष्पिका

इति रसवीर्यविपाकसहिते धन्वन्तरिनिघण्टौ शतपुष्पादिर्द्वितीयो वर्गः समाप्तः ॥

रस, वीर्य र पाक सहित धन्वन्तरिनिघण्टुको शतपुष्पादि नामक दोश्रो वर्ग समाप्त भयो ।

अथ चन्दनादिस्तृतीयो वर्गः (तेश्रो चन्दनादि वर्ग)

चन्दन वा श्रीखण्ड (चन्दनम्)

चन्दनं गन्धसारं च महार्हं श्वेतचन्दनम् ।
भद्रश्रीस्तु मलयजं गोशीर्षं तिलपर्णकम् ॥१॥
श्रीखण्डं शीतलं स्वादु तिक्तं पित्तविनाशनम् ।
रक्तप्रसादनं वृष्यमन्तर्दाहापहारकम् ॥२॥
पित्तास्रविषतृड्दाहकृमिघ्नं गुरु रूक्षणम् ।
सर्वं सतिक्तमधुरं चन्दनं शिशिरं परम् ॥३॥

चन्दन, गन्धसार, महार्ह, श्वेतचन्दन, भद्रश्री, मलयज, गोशीर्ष र तिलपर्णक : यी चन्दनका पर्यायवाची नाम हुन् । यो शीतवीर्यको, गुलियो, तितो, पित्तविकार नाशगर्ने, रगतलाई प्रशोधन गर्ने, वीर्यवर्धक तथा भित्री डाह, रक्तपित्त, विषविकार, तिर्खा, डाह र किरा नाशगर्ने गुणको हुन्छ । यो पचाउन कठिन र रुखो हुन्छ । सबै चन्दन तितो र गुलियो स्वादका र अत्यन्त शीतवीर्यका हुन्छन् ।

रातो चन्दन (रक्तचन्दन)

रक्तचन्दनमप्यन्यल्लोहितं हरिचन्दनम् ।
रक्तसारं ताम्रसारं निर्दिष्टं क्षुद्रचन्दनम् ॥४॥
रक्तचन्दनमप्याहू रक्षोघ्नं तिक्तशीतलम् ।
रक्तोद्रेकहरं हन्ति पित्तकोपं सुदारुणम् ॥५॥

रक्तचन्दन, लोहित, हरिचन्दन, रक्तसार, ताम्रसार र क्षुद्रचन्दन : यी रातो चन्दनका पर्यायवाची नाम हुन् । यसले राक्षसबाधा नाश गर्दछ । यो तितो, शीतवीर्यको तथा रक्तविकार र कडा खालको पित्तविकारलाई नाशगर्ने गुणको हुन्छ ।

चन्दनविशेष, बकचन्दन (कुचन्दन)

कुचन्दनं पतङ्गं च रक्तकाष्ठं सुरङ्गकम् ।

पत्राङ्गं पट्टरागं च पट्टरञ्जनमेव च ॥६॥
स्वादु पाकरसे शीतं श्लेष्मलं नातिपित्तलम् ।
कुचन्दनं तु तिक्तं स्यात्सुगन्धि व्रणरोपणम् ॥७॥

कुचन्दन, पत्राङ्ग, रक्तकाष्ठ, सुरङ्गक, पत्राङ्ग, पट्टराग र पट्टरञ्जन : यी बकचन्दनका पर्यायवाची नाम हुन् । यो शुरुमा र पचेपछि गुलियो, शीतवीर्यको, कफविकार गर्ने, धेरै पित्तविकार नगर्ने, तितो, सुगन्धी र खटिरालाई भर्ने गुणको हुन्छ ।

पहेँलो चन्दनविशेष (कालीयक)

कालीयकं तु पीतं स्यात्तथा नारायणप्रियम् ।
मलयोत्थं पीतकाष्ठं चतुर्थं हरिचन्दनम् ॥८॥
कालीयकं पवित्राढ्यं शीतलं रक्तपित्तजित् ।

कालीयक, पीत, नारायणप्रिय, मलयोत्थ, पीतकाष्ठ र हरिचन्दन : यी चौथो थरी चन्दन अर्थात् पहेँलोचन्दनका पर्यायवाची नाम हुन् । यो पवित्र, शीतवीर्यको र रक्तपित्तलाई जित्ने गुणको हुन्छ ।

सेतो चन्दनविशेष (बर्बरिक)

अथ बर्बरिकं श्वेतं निर्गन्धं बर्बरोद्भवम् ॥९॥
पित्तासृक्कफदाहघ्नं कृमिघ्नं गुरु रूक्षणम् ।
सर्वाण्येतानि तुल्यानि रसतो वीर्यतस्तथा ॥१०॥
गन्धेन तु विशेषः स्यात् पूर्व श्रेष्ठतमं गुणैः ।

बर्बरिक, श्वेत, निर्गन्ध र बर्बरोद्भव : यी सेतो चन्दनविशेषका पर्यायवाची नाम हुन् । यो पित्तविकार, रक्तविकार, कफविकार, डाह र कीरा नाशगर्ने तथा पचाउन कठिन र रुखो गुणको हुन्छ । सबै चन्दन रस र वीर्यमा समान गुणका हुन्छन् ।

केशर (कुङ्कुम)

कुङ्कुमं रुधिरं रक्तमसृगसं च पीतकम् ॥११॥

काश्मीरं चारु बाह्लीकं सङ्कोचं पिशुनं वरम् ।
कुङ्कुमं कटुकं तिक्तमुष्णं श्लेष्मसमीरजित् ॥१२॥
व्रणदृष्टिशिरोरोगविषहृत्कायकान्तिकृत् ।

कुङ्कुम, रुधिर, रक्त, असृग्, अस्र, पीतक, काश्मीर, चारु, बाह्लीक, सङ्कोच, पिशुन र वर : यी केशरका पर्यायवाची नाम हुन् । यो पिरो, तितो, उष्णवीर्यको, कफविकार र वातविकारलाई जित्ने तथा खटिरा, आँखाका रोग, टाउकाका रोग र विषविकार नाशगर्ने गुणको हुन्छ । यसले शरीरको चमक बढाउँदछ ।

उशीर

उशीरं चा मृणालं स्यादभयं समगन्धिकम् ॥१३॥
रणप्रियं वीरतरं वीरं वीरणमूलकम् ।

अन्यच्च-

उशीरं वीरणीमूलं वालकं तृणवालुकम् ॥१४॥
उशीरं शीतलं तिक्तं दाहक्लान्तिहरं च तत् ।
वातघ्नं ज्वरतृण्मेहनुद्रक्तं हन्ति योगतः ॥१५॥
उशीरं स्वेददौर्गन्ध्यपित्तघ्नं स्निग्धतिक्तकम् ।

उशीर, मृणाल, अभय, समगन्धिक, रणप्रिय, वीरतर, वीर र वीरणमूलक : यी खसखस विशेषका पर्यायवाची नाम हुन् । अन्य श्रोतमा उशीर, वीरणीमूल, वालक र तृणवालुकलाई खसखस विशेषका पर्यायवाची नाम भनी दिइएको छ । यो शीतवीर्यको, तितो, डाह र थकाई नाशगर्ने; वातविकार, जरो, तिखा र प्रमेह नाशगर्ने; अरु ओखतीसँग मिसाएर प्रयोग गर्दा रक्तविकार नाशगर्ने; पसिना, दुर्गन्ध र पित्तविकार नाशगर्ने तथा चिल्लो र तितो स्वादको हुन्छ ।

दर्रौलो (प्रियङ्गु)

प्रियङ्गुः प्रियवल्ली च फलिनी कङ्गुनी प्रिया ॥१६॥
वृत्ता गोवन्दनी श्यामा करम्भा वर्णभेदनी ।
प्रियङ्गुः शीतला तिक्ता मोहदाहविनाशिनी ॥१७॥
ज्वरवान्तिहरा रक्तमुद्रिक्तं च प्रसादयेत् ।

प्रियङ्गु, प्रियवल्ली, फलिनी, कङ्गुनी, प्रिया, वृत्ता, गोवन्दनी, श्यामा, करम्भा र वर्णभेदनी : यी दयाँलोका पर्यायवाची नाम हुन् । यो शीतवीर्यको, तितो तथा मोह, डह, जरो र वाकवाकी नाशगर्ने एवं रक्तविकारलाई प्रशोधन गर्ने गुणको हुन्छ ।

टुनी (तूणि)

तूणिस्तूणीकमापीतस्तूणिकः कनकस्तथा ॥१८॥

कुठेरकः कान्तलको नन्दिवृक्षोऽथ नन्दिकः ।

तूणी त्रिदोषहृद्दृष्यकण्डूकुष्ठव्रणापहः ॥१९॥

गण्डमालापहरणः सन्निपातनिकृन्तनः ।

तूणि, तूणीक, आपीत, तूणिक, कनक, कुठेरक, कान्तलक, नन्दिवृक्ष र नन्दिक : यी टुनीको पर्यायवाची नाम हुन् । यो त्रिदोष नाशक, वीर्यवर्धक तथा लुतो, कुष्ठ, खटिरा र गण्डमाला नाशगर्ने तथा सन्निपातलाई खोस्ने बाहिर निकाल्ने गुणको हुन्छ ।

सङ्कलन : मोहन प्रसाद सापकोटा
गोरोचन (रोचना)

रोचना पिङ्गला पिङ्गा मेध्या गौरी च गोमती ॥२०॥

माङ्गल्या वन्दनीयाऽग्रा पावनी रुचिरा रुचिः ।

रोचना पाचनी शीता विषनेत्ररुजो हरेत् ॥२१॥

सौभाग्यकरणी भूतग्रहदोषं च नाशयेत् ।

रोचना, पिङ्गला, पिङ्गा, मेध्या, गौरी, गोमती, माङ्गल्या, वन्दनीया, अग्रा, पावनी, रुचिरा र रुचि : यी गोरोचनका पर्यायवाची नाम हुन् । यो पाचनी, शीतवीर्यको, विषविकार आँखाका रोग नाशगर्ने, सौभाग्यदायक तथा भूतबाधा र ग्रहबाधा हटाउने गुणको हुन्छ ।

शिलारस (तुरुष्क)

तुरुष्को यावनः कल्कः पिण्याकः पिण्डितः कपिः ॥२२॥

कपिजः कृत्रिमो धूमजाइप्रो धूम्रवर्णश्च सिहकः ।

सुगन्धिः कृतकश्चैव युक्तियुक्तश्च पिण्डकः ॥२३॥
कपितैलमिति ख्यातं तथा पिङ्गलनामकम् ।
तुरुष्कः कटुतिक्तोष्णः स्निग्धो वातबलासजित् ॥२४॥
स्वादुश्च कटुकः पाके सुरभिर्देवताप्रियः ।

तुरुष्क, यावन, कल्क, पिण्याक, पिण्डित, कपि, कपिज, कृत्रिम, धूम्र, धूम्रवर्ण, सिंहक, सुगन्धि, कृतक, युक्तियुक्त, पिण्डक, कपितैल र पिङ्गल : यी शिलारसका पर्यायवाची नाम हुन् । यो पिरो, तितो, उष्णवीर्यको, चिल्लो, वातविकार र कफविकारलाई जित्ने, गुलियो, पचेपछि पिरो, सुगन्धित तथा देवताका लागि प्रिय हुने गुणको हुन्छ ।

अगर (अगरु)

अगरु प्रवरं लोहं कृमिजग्धमनार्यकम् ॥२५॥
कृष्णागरु स्वाद्वगुरु योगजं विश्वरूपकम् ।
कटुतिक्तोष्णमगरु स्निग्धं वातकफापहम् ॥२६॥
श्रुतिनेत्ररुजं हन्ति माङ्गल्यं कुष्ठनुत्परम् ।

अगरु, प्रवर, लोह, कृमिजग्ध, अनार्यक, कृष्णागरु, स्वाद्वगुरु, योगज र विश्वरूपक : यी धूपीका पर्यायवाची नामहरू हुन् । धूपी तीतो, उष्णवीर्यको, चिल्लो तथा वातविकार, कफविकार, कानका रोग र आँखाका रोग नाशक हुन्छ । यो मङ्गलदायक तथा प्रभावकारी ढङ्गले कुष्ठ नाश गर्ने गुणको हुन्छ ।

अगरविशेष (कालेयक)

कालेयकं ससारं च पीतवर्णं च शब्दतः ॥२७॥
वर्णप्रसादनं चैव लघुचन्दनमेव च ।

कालेयक, ससार, पीतवर्ण, वर्णप्रसादन र लघुचन्दन : यी पहेँलो धूपीका पर्यायवाची नामहरू हुन् ।

कस्तूरी (कस्तूरिका)

कस्तूरिका मृगमदो मृगनाभिर्मृगाण्डजा ॥२८॥

मार्जारी वेधमुख्या च मदनी गन्धचेलिका ।
कस्तूरिका रसे तित्ता कटुः श्लेष्मानिलापहा ॥२९॥
विषघ्नी दोषशमनी मुखशोषहरा परा ।

कस्तूरिका, मृगमद, मृगनाभि, मृगाण्डजा, मार्जारी, वेधमुख्या, मदनी र गन्धचेलिका : यी कस्तूरीका पर्यायवाची नाम हुन् । यो तीतो, पिरो तथा कफविकार, वातविकार र विषविकार नाशगर्ने एवं त्रिदोषलाई शान्तपार्ने गुणको हुन्छ । यसले मुखको सुकाई वा तिर्खा प्रभावकारी ढङ्गले नाश गर्दछ ।

कपूर (कर्पूर)

कर्पूरः शीतलरजः शीताभ्रः स्फटिको हिमः ॥३०॥
चन्द्रस्तुषारस्तुहिनः शशीन्दुर्हिमवालुकः ।
कर्पूरं कटुतिक्तं च मधुरं शिशिरं विदुः ॥३१॥
तृणमेदोविषदोषघ्नं चक्षुष्यं मदकारकम् ।

कर्पूर, शीतलरज, शीताभ्र, स्फटिक, हिम, चन्द्र, तुषार, तुहिन, शशी, इन्दु र हिमवालुक : यी कपूरका पर्यायवाची नाम हुन् । यो पिरो, तितो, गुलियो, शीतवीर्यको तथा तिर्खा, बोसोविकार र विषविकार नाशगर्ने एवं आँखाका लागि हितकर र नसा लगाउने गुणको हुन्छ ।

जाइपत्री (जातिपत्री)

जातिपत्री जातिकोशा सुमनःपत्रिकाऽपि च ॥३२॥
मालतीपत्रिका चैव प्रोक्ता सा मलनाशिनी ।
जातिपत्री कटूष्णा स्यात् सुरभिः कफनाशिनी ॥३३॥
वक्त्रदौर्गन्ध्यहृद्वर्ण्य विषहृत् कायशान्तिदा ।

जातिपत्री, जातिकोशा, सुमनःपत्रिका, मालतीपत्रिका र मलनाशिनी : यी जाइपत्रीका पर्यायवाची नाम हुन् । यो पिरो, उष्णवीर्यको, सुगन्धित, कफविकार र मुखको दुर्गन्ध नाशगर्ने, शरीरको वर्णमा निखार लेराउने, विषविकार नाशगर्ने तथा शरीरलाई शान्ति दिने गुणको हुन्छ ।

जाइफल (जातीफलम्)

जातीफलं जातिसस्यं शालूकं मालतीफलम् ॥३४॥
मदशौण्डं जातिशृङ्गं पुटं सौमनसं फलम् ।
जातीफलं कषायोष्णं कटु कण्ठामयार्तिजित् ॥३५॥
वातातिसारमेहघ्नं लघु वृष्यं च दीपनम् ।

जातीफल, जातिसस्य, शालूक, मालतीफल, मदशौण्ड, जातिशृङ्ग, पुट र सौमनसफल : यी जाइफलका पर्यायवाची नाम हुन् । यो टर्रो, उष्णवीर्यको, पिरो, घाँटीका रोगलाई जित्ने, वातविकार र अतीसार नाशगर्ने, पचाउन सहज, वीर्यवर्धक र दीपनी गुणको हुन्छ ।

फलकपूर (कङ्कोलम्)

कङ्कोलकं कृतफलं कोलकं कटुकं फलम् ॥३६॥
चूर्णं कन्दफलं द्वीपं मारिचं माधवोचितम् ।
कङ्कोलं कटुतिक्तोष्णं वक्त्रवैरस्यनाशनम् ॥३७॥
मुखजाड्यहरं रुच्यं वातश्लेष्महरं परम् ।

कङ्कोलक, कृतफल, कोलक, कटुकफल, चूर्ण, कन्दफल, द्वीपमारिच र माधवोचित : यी फलकपूरका पर्यायवाची नाम हुन् । यो पिरो, तितो, उष्णवीर्यको, मुख स्वादहीनता र मुखको लाटोपन नाशगर्ने, रुचिप्रद तथा प्रभावकारी ढङ्गले वातसवकार र कफविकार नाशगर्ने गुणको हुन्छ ।

सुपारी (पूगफल)

स्यात्पूगफलमुद्वेगं संसि घोण्टाफलं स्मृतम् ॥३८॥
चिक्कणं चिक्कणा चिक्का गुर्वाकः खपुरं च तत् ।
भेदि सम्मोहकृतपूगं कषायं स्वादु रोचनम् ॥३९॥
कफपित्तहरं रूक्षं वक्त्रक्लेदमलापहम् ।

पूगफल, उद्वेग, संसि, घोण्टाफल, चिक्कण, चिक्कणा, चिक्का, गुर्वाक र खपुर : यी सुपारीका पर्यायवाची नाम हुन् । यो भेदनी, मोहकारी, टर्रो, गुलियो, रुचिप्रद, कफविकार र पित्तविकार नाशगर्ने,

रुखो तथा मुखको पीडा र मुखको मल नाशगर्ने गुणको हुन्छ ।

ल्लाङ (लवङ्गम्)

लवङ्गं देवकुसुमं भृङ्गारं शिखरं लवम् ॥४०॥
दिव्यं चन्दनपुष्पं च श्रीपुष्पं वारिसम्भवम् ।
लवङ्गं कुसुमं हृद्यं शीतलं पित्तनाशनम् ॥४१॥
चक्षुष्यं विषहृद्ध्यं माङ्गल्यं मूर्धरोगहृत् ।

लवङ्ग, देवकुसुम, भृङ्गार, शिखर, लव, दिव्य, चन्दनपुष्प, श्रीपुष्प र वारिसम्भव : यी सुपारीका पर्यायवाची नाम हुन् । ल्लाङको फूल मुटुका लागि हितकर, शीतवीर्यको, पित्तविकार नाशगर्ने, आँखाका लागि हितकर, विषविकार नाशगर्ने, वीर्यवर्धक, मङ्गलदायक र टाउकाका रोग नाशगर्ने गुणको हुन्छ ।

महारङ्गी (तग)

नलिका विद्रुमलता कपोतचरणा नली ॥४२॥
सुषिरा धमनी शून्या निर्मथ्या नर्तकी नटी ।
नलिका रक्तपित्तघ्नी चक्षुष्या विषनाशिनी ॥४३॥
नलिका वातला तिक्ता गुर्वी च मधुरा हिमा ।

नलिका, विद्रुमलता, कपोतचरणा, नली, सुषिरा, धमनी, शून्या, निर्मथ्या, नर्तकी र नटी : यी नलिकाका पर्यायवाची नाम हुन् । यो रक्तपित्त नाशगर्ने, आँखाका लागि हितकर, विषविकार नाशगर्ने, वातविकार गर्ने, तितो, पचाउन कठिन, गुलियो र शीतवीर्यको हुन्छ ।

जटामसी (मांसी)

मांसी कृष्णजटा हिंसा नलदा जटिला मिशी ॥४४॥
जटा च पिशिता पेशी क्रव्यादी च तपस्विनी ।
मांसी स्वादुकषाया स्यात्कफपित्तासनाशिनी ॥४५॥
विषमारुतहृद्बल्या त्वचाकान्तिप्रसादनी ।

मांसी, कृष्णजटा, हिंस्र, नलदा, जटिला, मिशी, जटा, पिशिता, पेशी, क्रव्यादी र तपस्विनी : यी जटामसीको पर्यायवाची नाम हुन् । यो गुलियो, टर्रो तथा कफविकार, पित्तविकार, रक्तविकार, विषविकार र वातविकार नाशगर्ने गुणको हुन्छ । जटामसी बलदायक, छालामा चमक लेराउने र प्रशोधन वा सफा गर्ने गुणको समेत हुन्छ ।

जटामसीविशेष (गन्धमांसी)

द्वितीया गन्धमांसी स्यात् केशी भूतजटा स्मृता ॥४६॥

पिशाची पूतना केशी भूतकेशी च लोमशा ।

मांसीद्वयं कषायं च वर्ण्यं पित्तकफापहम् ॥४७॥

रक्षोघ्नं च सुगन्धि स्याद्वातघ्नं केश्यमुत्तमम् ।

गन्धमांसी, केशी, भूतजटा, पिशाची, पूतना, केशी, भूतकेशी र लोमशा : यी दोश्रो थरी जटामसीका पर्यायवाची नाम हुन् । दुवै थरी जटामसी टर्रा, वर्णमा निखार लेराउने, पित्तविकार कफविकार नाशगर्ने, राक्षसबाधा हटाउने, सुगन्धि, वातविकार नाशगर्ने तथा कपाललाई हित गर्ने गुणका हुन्छन् ।

कूट (कुष्ठम्)

कुष्ठं रोगोऽगदो व्याधिरुत्पलं पाकलं रुजा ॥४८॥

वाप्यं वानीरजं रामं कौबेरं पारिभद्रकम् ।

कुष्ठं कटूष्णं तिक्तं स्यात्कफमारुतरक्तजित् ॥४९॥

त्रिदोषविषकण्डूश्च कुष्ठरोगांश्च नाशयेत् ।

कुष्ठ, रोग, अगद, व्याधि, उत्पल, पाकल, रुजा, वाप्य, वानीरज, राम, कौबेर र पारिभद्रक : यी कूटका पर्यायवाची नाम हुन् । यो पिरो, उष्णवीर्यको, तितो तथा कफविकार, वातविकार र रक्तविकारलाई जित्ने गुणको हुन्छ । यसले त्रिदोष, विषविकार, लुतो र कुष्ठ समेत नाश गर्दछ ।

कवाफचिनी वा शीतलचिनी (रेणुका)

रेणुका राजपुत्री च नन्दिनी कपिला द्विजा ॥५०॥
कपिलोला पाण्डुपत्नी स्मृता कौन्ती हरेणुका ।
रेणुका शिशिराऽत्यन्ता तृष्णां कण्डूं च नाशयेत् ॥५१॥
विषघ्नी दाहदौर्बल्यमुन्मूलयति योजिता ।

रेणुका, राजपुत्री, नन्दिनी, कपिला, द्विजा, कपिलोला, पाण्डुपत्नी, कौन्ती र हरेणुका : यी शीतलचिनीका पर्यायवाची नाम हुन् । यो अति शीतवीर्यको तथा तिर्खा, लुतो र विषविकार नाशगर्ने गुणको हुन्छ । अन्य ओखतीमा मिसाएर प्रयोग गर्दा यसले डाह र दुर्बलता समेत उन्मूलन गर्दछ ।

तगर

तगरं कुटिलं वक्रं दीनं जिह्वं नतं शठम् ॥५२॥
कालानुसार्यमनृजु कुञ्चितं नहुषं नृपम् ।
तगरं स्यात् कषायोष्णं स्निग्धं दोषत्रयप्रणुत् ॥५३॥
दृक्शीर्षविषदोषघ्नं भूतापस्मारनाशनम् ।

तगर, कुटिल, वक्र, दीन, जिह्व, नत, शठ, कालानुसार्य, अनृजु, कुञ्चित, नहुष र नृप : यी तगरका पर्यायवाची नाम हुन् । यो टर्पो, उष्णवीर्यको, चिल्लो, त्रिदोष नाशगर्ने तथा आँखाका रोग, टाउकाका रोग, विषविकार, भूतबाधा र छारेरोग नाशगर्ने गुणको हुन्छ ।

मोथेविशेष (परिप्लव)

परिप्लवं प्लवं वन्यं गोपुटं स्यात्कुटन्नटम् ॥५४॥
सितपुष्पं दासपुरं गोनर्दं जीर्णपुष्पकम् ।
परिप्लवं सुगन्धि स्यात्प्रस्वेदमलकण्डुजित् ॥५५॥
जयेत्वातकफौ चापि मेध्यं कान्तिप्रदं भवेत् ।
अन्यच्च-
परिप्लवं वातकफौ जयेन्मेध्यं च कान्तिदम् ।
कफतृष्णाहरं प्रोक्तमस्रपित्तविनाशनम् ॥

परिप्लव, प्लव, वन्य, गोपुट, कुटन्नट, सितपुष्प, दासपुर, गोनर्द र जीर्णपुष्पक : यी मोथेविशेषका पर्यायवाची नाम हुन् । यो सुगन्धी हुन्छ । यसले पसिना, शरीरको मल र लुतोलाई जित्दछ । वातविकार र कफविकारलाई पनि यसले जित्दछ । यसले दिमागको ग्रहण गर्ने क्षमता बढाउँदछ र शरीरमा चमक लेराउँदछ । अन्यत्र भनिएको छ-मोथेविशेषले वातविकार र कफविकारलाई जित्दछ, दिमागको ग्रहण गर्ने क्षमता बढाउँदछ, शरीरको चमक लेराउँदछ, कफविकार, तिर्खा र रक्तपित्त नाश गर्दछ ।

नखी (नख)

नखः कररुहः शिल्पी करजोऽथ खुरः शफः ॥५६॥
शुक्तिः शङ्खश्चलः कोशी हनुर्नागहनुः सहः ।
नखं कटुकमुष्णं च विषं हन्ति प्रयोजितम् ॥५७॥
कृष्ठानि सादयत्येव कफं खण्डयति क्षणात् ।

नख, कररुह, शिल्पी, करज, खुर, शफ, शुक्ति, शङ्खश्चल, कोशी, हनु, नागहनु र सह : यी नखीका पर्यायवाची नाम हुन् । यो पिरो, उष्णवीर्यको, अन्य ओखतीमा मिसाए विषविकार नाश गर्ने, कुष्ठरोग नाशक र कफलाई खुकुल्याउने गुणको हुन्छ ।

नखीविशेष (व्याघ्रनख)

नखमन्यद् व्याघ्रनखं पुटं व्याघ्रायुधं मतम् ॥५८॥
अस्रं व्याघ्रतलं पादं कूटस्थं वज्रकारकम् ।
ग्रहभूतोपशमनं पवित्रं द्वीपिजं नखम् ॥५९॥
व्याघ्रनखस्तु तिक्तोष्णः कषायः कफवातजित् ।
कण्डूकुष्ठव्रणघ्नश्च वर्ण्यः सौगन्ध्यदः परः ॥६०॥

व्याघ्रनख, पुट, व्याघ्रायुध, अस्र, व्याघ्रतल, पाद, कूटस्थ, वज्रकारक, ग्रहभूतोपशमन, पवित्र, र द्वीपिजनख : यी नखीविशेषका पर्यायवाची नाम हुन् । यो तितो, उष्णवीर्यको, टर्रो, कफविकार र वातविकारलाई जित्ने; लुतो, कुष्ठ र खटिरा नाशगर्ने; वर्णमा निखार लेराउने र अत्यन्त सुगन्धी हुन्छ ।

कपुरपाती (स्पृक्का)

स्पृक्काऽसृग्ब्राह्मणी देवी मालाली कोटिका मता ।
पञ्चमुष्टिर्देवपुत्री निर्माल्या पिशुना वधूः ॥६१॥
स्पृक्का शीता सुगन्धा स्यात्तृष्णां मुष्णाति योजिता ।
विषं हन्ति हिनस्त्येव दाहं देहसमुद्भवम् ॥६२॥
स्पृक्का सुगन्धा कुष्ठघ्नी दौर्गन्ध्यस्वेदनाशिनी ।

स्पृक्का, असृक्, ब्राह्मणी, देवी, मालाली, कोटिका, पञ्चमुष्टि, देवपुत्री, निर्माल्या, पिशुना र वधू : यी कपुरपातीका पर्यायवाची नाम हुन् । यो शीतवीर्यको र सुगन्धी हुन्छ । अरु ओखतीसँग मिसाएर खाँदा तिखा, विषविकार र शरीरको भित्री डाह नाश गर्दछ । यो सुगन्धी तथा कुष्ठ, दुर्गन्ध र पसिना नाश गर्ने गुणको हुन्छ ।

बोल

बोलं गन्धरसं पिण्डं निर्लोहं बर्बरं रसम् ॥६३॥
गोपकं नालिकं पौरं रसं गन्धरसं विदुः ।
बोलं तिक्तं हिमं रक्तमुद्रितं हन्ति योगतः ॥६४॥
कफपित्तामयान् हन्ति प्रदरादिरुजापहम् ।

बोल, गन्धरस, पिण्ड, निर्लोह, बर्बर, रस, गोपक, नालिक पौररसं र गन्धरस (दोहोरो ?) : यी बोलका पर्यायवाची नाम हुन् । यो तितो, शीतवीर्यको तथा मिसाएर खाँदा रक्तविकार, कफविकार, पित्तविकार, प्रदर आदि रोग नाश गर्ने गुणको हुन्छ ।

दमना भार (दमन)

दमनः पाण्डुरागः स्याद्दान्तो गन्धोत्कटो मुनिः ॥६५॥
पुण्डरीको ब्रह्मजटतपस्वी ऋषिपुत्रकः ।
दमनः स्याद्रसे तिक्तो विषघ्नो भूतदोषनुत् ॥६६॥
त्रिदोषशमनो हृद्यः कण्डूकुष्ठापहः स्मृतः ।

दमन, पाण्डुराग, दान्त, गन्धोत्कट, मुनि, पुण्डरीक, ब्रह्मजट, तपस्वी र ऋषिपुत्रक : यी दमना भारका पर्यायवाची नाम हुन् । यो तितो, विषविकार र भूतबाधा नाशगर्ने, त्रिदोषलाई शान्त पार्ने, मुटुका लागि हितकर तथा लुतो र कुष्ठरोग नाश गर्ने गुणको हुन्छ ।

दमना भारविशेष (दमन)

दमनोऽन्यो दमः शान्तः ऋषिर्दमवशान्वितः ॥६७॥
क्षमाशान्तिपरः साधुः साधुकः साधुगन्धिकः ।

दम, शान्त, ऋषि, दमवशान्वित, क्षमाशान्तिपर, साधु, साधुक र साधुगन्धिक : यी दमनाविशेषका पर्यायवाची नाम हुन् ।

कालो जटामसी (मुरा)

मुरा गन्धवती दैत्या गन्धाढ्या गन्धमालिनी ॥६८॥
सुरभिर्भूरिगन्धा च कुटी गन्धकुटी स्मृता ।
मुराऽत्यन्तं भवेच्छीता तिक्ता सुरभिगन्धिनी ॥६९॥
क्षिणोति क्षतपुञ्जांश्च पित्तशान्तिं नियच्छति ।

मुरा, गन्धवती, दैत्या, गन्धाढ्या, गन्धमालिनी, सुरभि, भूरिगन्धा, कुटी र गन्धकुटी : यी कालो जटामसीका पर्यायवाची नाम हुन् । यो अति शीतवीर्यको, तितो, बास्नादार, गन्धयुक्त, घाउ नाशक र पित्तविकारलाई शान्त पार्ने गुणको हुन्छ ।

लोठसल्लो (स्थौणेयक)

स्थौणेयकं बर्हिचूडं शुकपुच्छं शुकच्छदम् ॥७०॥
विकर्णं शुकबर्हं च हरितं शीर्णरोमकम् ।
स्थौणेयं कफवातघ्नं सुगन्धि कटुतिक्तकम् ॥७१॥
पित्तप्रकोपशमनं बलपुष्टिविवर्धनम् ।

स्थौणेयक, बर्हिचूड, शुकपुच्छ, शुकच्छद, विकर्ण, शुकबर्ह, हरित र शीर्णरोमक : यी लोठसल्लोका पर्यायवाची नाम हुन् । यो कफविकार र वातविकार नाश गर्ने, सुगन्धि, पिरो, तितो, पित्तविकारलाई शान्त पार्ने तथा बल र पुष्टि प्रदान गर्ने गुणको हुन्छ ।

गन्धपालाविशेष (चोरक)

चोरकः शङ्कितश्चण्डा दुष्पत्रः क्षेमको रिपुः ॥७२॥

गणहासः कोपनकः कितवः फलचोरकः ।

चोरकः शिशिरोऽत्यन्तं विषरक्तान्तकारकः ॥७३॥

कुष्ठकण्डूव्रणान्हन्ति क्षणादोषान्प्रयोगतः ।

चोरकश्चोग्रगन्धश्च तिक्तः कृमिसमीरजित् ॥७४॥

चोरक, शङ्कित, चण्डा, दुष्पत्र, क्षेमक, रिपु, गणहास, कोपनक, कितव र फलचोरक : यी गन्धपालाविशेषका पर्यायवाची नाम हुन् । यो अती नै शीतवीर्यको, विषविकार र रक्तविकार नाश गर्ने तथा मिसएर प्रयोग गरिए कुष्ठ, लुतो र खटिरा नाशगर्ने गुणको हुन्छ । यो अत्यन्त कडा गन्ध आउने, तितो तथा कीरा र वातविकारलाई जित्ने गुणको हुन्छ ।

पत्थरकुङ्कुम (शैलेय)

शैलेयं पलितं वृद्धं जीर्णं कालानुसार्यकम् ।

स्थविरं च शिलादद्रुः शिलापुष्पं शिलोद्भवम् ॥७५॥

शैलेयकं हिमं प्रोक्तं दाहजिद्विषनाशनम् ।

रक्तदोषहरं चैव कण्डूनिर्मूलनं स्मृतम् ॥७६॥

(शैलेयं तिक्तकं शीतं सुगन्धि कफपित्तजित् ।

दाहतृष्णावमिश्रासत्रणदोषविनाशनम् ॥)

शैलेय, पलित, वृद्ध, जीर्ण, कालानुसार्यक, स्थविर, शिलादद्रु, शिलापुष्प र शिलोद्भव : यी पत्थरकुङ्कुमका पर्यायवाची नाम हुन् । यो शीतवीर्यको, डाहलाई जित्ने, विषविकार र रक्तविकारलाई नाश गर्ने र लुतो निर्मूल पार्ने गुणको हुन्छ । (यो तितो, शीतवीर्यको, सुगन्धी, कफविकार र पित्तविकारलाई जित्ने तथा डाह, तिखा, वाकवाकी, दम, खटिराका विकार नाश गर्ने गुणको हुन्छ ।) ।

सिलटिमुर (एलवालुक)

एलवालुकमालूकं वालुकं हरिवालुकम् ।
एलवालुकं कपित्थं स्यादुर्वर्णं प्रसरं दृढम् ॥७७॥
एलावालुः सुगन्धिः स्याच्छीतोऽत्यन्तं प्रकीर्तितः ।
विषविध्वंसनोऽत्युग्रः कण्डूकुष्ठव्रणान्तकृत् ॥७८॥

एलवालुक, आलूक, वालुक, हरिवालुक, एलवालुक, कपित्थ, दुर्वर्ण, प्रसर र दृढ : यी सिलटिमुरका पर्यायवाची नाम हुन् । यो बास्नादार, अत्यन्त शीतवीर्यको, प्रधावकारी ढङ्गले कडा विषविकार नाश गर्ने, तथा लुतो, कुष्ठ र खटिरा नाश गर्ने गुणको हुन्छ ।

सल्लो (सरल)

सरलः पूतिकाष्ठं च चीडा पित्तद्रुमो मतः ।
दीपवृक्षः स्निग्धदारुः प्रोक्तो मारीचपत्रकः ॥७९॥
सरलः स्निग्ध तिक्तोष्णः कफमारुतनाशनः ।
वक्त्रसावस्वरभ्रंशनेत्ररोगव्रणान्तकृत् ॥८०॥

सरल, पूतिकाष्ठ, चीडा, पित्तद्रुम, दीपवृक्ष, स्निग्धदारु र मारीचपत्रक : यी सल्लोका पर्यायवाची नाम हुन् । यो चिल्लो, तितो, उष्णवीर्यको तथा कफविकार, वातविकार, थुक आइरहने मुखको रोग, स्वर बसेको, आँखाका रोग र खटिरा नाश गर्ने गुणको हुन्छ ।

छतिवन (सप्तपर्ण)

सप्तपर्णः शुक्तिपर्णश्छत्रपर्णः सुपर्णकः ।
सप्तच्छदो गूढपुष्पस्तथा शाल्मलिपत्रकः ॥८१॥
त्रिदोषशमनो हृद्यः सुरभिर्दीपनः सरः ।
शूलगुल्मकृमीन्कुष्ठं हन्ति शाल्मलिपत्रकः ॥८२॥

सप्तपर्ण, शुक्तिपर्ण, छत्रपर्ण, सुपर्णक, सप्तच्छद, गूढपुष्प र शाल्मलिपत्रक : यी छतिवनका पर्यायवाची नाम हुन् । यो त्रिदोषलाई शान्त पार्ने, मुटुका लागि हितकर, बास्नादार, दीपनी र मलमूत्रलाई तलतिर सार्ने गुणको हुन्छ । यसले शूल, गुल्म, कीरा र कुष्ठ नाश गर्दछ ।

लाहा (लाक्षा)

लाक्षा पलङ्कषा रक्ता दीप्तिश्च कृमिजा जतु ।
क्षतघ्नी रङ्गमाता च दुमव्याधिरलक्तकः ॥८३॥
लाक्षा तिक्ता कषायोष्णा स्निग्धा शोणितपित्तनुत् ।
कृमिश्लेष्मव्रणान्हन्ति भूतज्वरार्तिनाशिनी ॥८४॥
(पित्तश्लेष्महरा रुच्या विशदा सुरभिलघुः ।
नेत्ररोगप्रशमनी व्रणशूलविनाशिनी ॥-) इति क्वचित् पुस्तके पाठः ।

लाक्षा, पलङ्कषा, रक्ता, दीप्ति, कृमिजा, जतु, क्षतघ्नी, रङ्गमाता, दुमव्याधि र अलक्तक : यी लाहाका पर्यायवाची नाम हुन् । यो तितो, टर्रो, उष्णवीर्यको, चिल्लो तथा रक्तपित्त, कीरा, कफविकार, खटिरा, भूतबाधा र जरो नाश गर्ने गुणको हुन्छ । कुनै पुस्तकमा लाहा पित्तविकार र कफविकार नाश गर्ने, रुचिप्रद, सुन्दर, बास्नादार, पचाउन सहज, आँखाका रोगलाई शान्त पार्ने तथा खटिरा र शूल नाश गर्ने गुणको हुन्छ भनिएको छ ।

भुइँअमला (तामलकी)

तामलक्यजटा ताली तमालं तु तमालिनी ।
वितुन्नभूता तमकं भूधात्री भ्वामलक्यपि ॥८५॥
भूधात्री मधुरा तिक्ता वीर्यतः शिशिरा स्मृता ।
पित्तं हन्ति कफास्रघ्नी दृष्टिदाहविनाशिनी ॥८६॥

तामलकी, अजटा, ताली, तमाल, तमालिनी, वितुन्नभूता, तमक, भूधात्री र भ्वामलकी : यी भुइँअमलाका पर्यायवाची नाम हुन् । यो गुलियो, तितो, शीतवीर्यको तथा पित्तविकार, कफविकार, रक्तविकार र दृष्टि-डाह (वा दृष्टि क्षमता र डाह) नाश गर्ने गुणको हुन्छ ।

उशीरको जरा (लामज्जक)

लामज्जकं सुनालं स्यादमृणालं लवं लघु ।
इष्टकापथकं शीघ्रं दीर्घमूलं जलाश्रयम् ॥८७॥
लामज्जकं भवेत्तित्तं हिमं चात्यन्तमिष्यते ।
पित्तप्रशान्तिजननं विषरक्तविनाशनम् ॥८८॥

लामज्जक, सुनाल, अमृणाल, लव, लघु, इष्टकापथक, शीघ्र, दीर्घमूल र जलाश्रय : यी लामज्जकका पर्यायवाची नाम हुन् । यो तितो, अत्यन्त शीतवीर्यको, पित्तविकार शान्त पार्ने तथा विषविकार र रक्तविकारलाई नाश गर्ने गुणको हुन्छ ।

पैयुँ (पद्मक)

पद्मको मलयश्चारुः पीतरक्तो मरुद्भवः ।
सुप्रभः शीतवीर्यश्च पाटलापुष्पवर्णकः ॥८९॥
पद्मकं शिशिरं स्निग्धं कषायं रक्तपित्तनुत् ।
गर्भस्थैर्यकरं प्रोक्तं ज्वरच्छर्दिषापहम् ॥९०॥
मोहदाहज्वरभ्रान्तिकुष्ठविस्फोटशान्तिकृत् ।

पद्मक, मलय, चारु, पीतरक्त, मरुद्भव, सुप्रभ, शीतवीर्य र पाटलापुष्पवर्णक : यी पैयुँका पर्यायवाची नाम हुन् । यो शीतवीर्यको, चिल्लो, टर्रो, रक्तपित्त नाश गर्ने, गर्भलाई स्थिर पार्ने; जरो, वाकवाकी र विषविकार नाश गर्ने तथा मोह, डाह, जरो, भ्रम, कुष्ठ र विस्फोटलाई शान्त पार्ने गुणको हुन्छ ।

धयैरो (धातकी)

धातकी ताम्रपुष्पी च कुञ्जरा मद्यवासिनी ॥९१॥
पार्वतीया सुभिक्षा च वह्निपुष्पा च शब्दिता ।
धातकी कटुकोष्णा च मदकृद्विषनाशिनी ॥९२॥
अतिसारहरा गर्भस्थापनी कृमिरक्तनुत् ।

धातकी, ताम्रपुष्पी, कुञ्जरा, मद्यवासिनी, पार्वतीया, सुभिक्षा र वह्निपुष्पा : यी ध्यैरोका पर्यायवाची नाम हुन् । यो पिरो, उष्णवीर्यको, नसा लगाउने, विषविकार र अतिसार नाश गर्ने, गर्भ स्थापना हुन मद्दत गर्ने तथा कीरा र रक्तविकार नाश गर्ने गुणको हुन्छ ।

गन्धक

धूपीविशेष (प्रपौण्डरीकम्)

प्रपौण्डरीकं चक्षुष्यं पुण्डर्यः पुण्डरीयकम् ॥९३॥

सितपुष्पं सुपुष्पं स्यात्स्त्रीपुष्पं सानुजानुजम् ।

प्रपौण्डरीकं मधुरं कषायं तिक्तशीतलम् ॥९४॥

रक्तपित्तव्रणान्हन्ति ज्वरदाहतृषापहम् ।

प्रपौण्डरीक, चक्षुष्य, पुण्डर्य, पुण्डरीयक, सितपुष्प, सुपुष्प, श्रीपुष्प र सानुजानुज : यी धूपीविशेषका पर्यायवाची नाम हुन् । यो गुलियो, टर्रो, तितो, शीतवीर्यको तथा रक्तपित्त, खटिरा, जरो, डाह र तिर्खा नाश गर्ने गुणको हुन्छ ।

कचूर (कर्चूर)

सङ्कलन : मोहन प्रसाद सापकोटा

कर्चूरो गन्धमूलश्च द्राविडः काश्य एव च ॥९५॥

वेधमुख्यो दुर्लभश्च कस्यचित्सम्मतः स(श)ठी ।

कर्चूरः कटुतिक्तोष्णो रुच्यो वातबलासजित् ॥९६॥

दीपनः प्लीहगुल्मार्शः शमनः कुष्ठकासहा ।

कर्चूर, गन्धमूल, द्राविड, काश्य, वेधमुख्य, दुर्लभ र (कसैको मतमा) स(श)ठी : यी कचूरका पर्यायवाची नाम हुन् । यो पिरो, तितो, उष्णवीर्यको, रुचिप्रद, वातविकार र कफविकारलाई जित्ने, दीपनी; फियोका रोग, गुल्म र हर्सालाई शान्त पार्ने तथा कुष्ठ र खोकीलाई नाश गर्ने गुणको हुन्छ ।

मनशिला (मनःशिला)

मनःशिला मनोगुप्ता मनोह्वा कुनटी शिला ॥९७॥

मनोज्ञा नागजिह्वा च गोला नेपालिका कला ।

मनःशिला कटुस्तिक्ता तथोष्णा विषनाशनी ॥९८॥

भूतावेशभय हन्ति प्रलेपतिलकादिभिः ।

मनःशिला, मनोगुप्ता, मनोह्वा, कुनटी, शिला, मनोज्ञा, नागजिह्वा, गोला, नेपालिका र कला : यी मनशिलाका पर्यायवाची नाम हुन् । यो पिरो, तितो, उष्णवीर्यको तथा विषविकार, भूतबाधा र लेप दल्नाले तिलक (क्लोम, रोगविशेष) आदि नाश गर्ने गुणको हुन्छ ।

सिन्दूर

सिन्दूरं रक्तरेणुश्च नागगर्भं च नागजम् ॥९९॥
शृङ्गारभूषणं श्रीमद् वसन्तोत्सव मण्डनम् ।
सिन्दूरमुष्णकटुकं विषदुष्टव्रणापहम् ॥१००॥
त्वग्दोषकुष्ठवीसर्पजीर्णज्वरहरं परम् ।

सिन्दूर, रक्तरेणु, नागगर्भ, नागज, शृङ्गारभूषण, श्रीमद् र वसन्तोत्सव-मण्डन : यी सिन्दूरका पर्यायवाची नाम हुन् । यो उष्णवीर्यको, पिरो तथा विषविकार, गढेका खटिरा, छालाका विकार, कुष्ठ, वीसर्प, र प्रभावकारी ढङ्गले थाड्ने जरो नाशगर्ने गुणको हुन्छ ।

सिन्दूरविशेष (गिरिसिन्दूर)

महागिरिषु चाल्पीयान्पाषाणान्तःस्थितो रसः ॥१०१॥
शुष्कः शोणः स निर्दिष्टः गिरिसिन्दूरसञ्ज्ञकः ।
त्रिदोषशमनं भेदि रसबन्धनमग्निदम् ॥१०२॥
देहलोहकरं नेत्र्यं गिरिसिन्दूरमीरितम् ।

पर्वततिर कुनै भागमा चट्टानबाट रातो रङ्को रस बहने गर्दछ । सुकेपछिको यो रसलाई गिरिसिन्दूर भनिन्छ । यो त्रिदोषलाई शान्त पार्ने, भेदनी, पारोलाई प्रशोधन गर्ने, पाचकाग्नि बढाउने, शरीरलाई बलियो पार्ने र आँखाका लागि हित गर्ने गुणको हुन्छ ।

गोपीचन्दन (सौराष्ट्री मृत्तिका)

सौराष्ट्री चामृतासङ्गा काङ्क्षी काक्षी सुराष्ट्रजा ॥१०३॥

अजिता तुवरी तुल्या मृत्सा मृत्स्ना मृतालकम् ।
(अन्यच्च- सौराष्ट्री चामृता काङ्क्षी फटिका मृत्तिका मता ।
आढकी तुवरी त्वन्या मृत्स्ना मृत् सुरमृत्तिका ॥) ।
काङ्क्षी कटुकषाया स्यात्केश्या चैव विषापहा ॥१०४॥
कण्डूविसर्पश्चित्राणां नाशनी व्रणरोपणी ।

सौराष्ट्री, अमृतासङ्गा, काङ्क्षी, काक्षी, सुराष्ट्रजा, अजिता, तुवरी, तुल्या, मृत्सा, मृत्स्ना र मृतालक : यी गोपीचन्दनका पर्यायवाची नाम हुन् (अन्य ग्रन्थमा सौराष्ट्री, अमृता, काङ्क्षी, फटिका, मृत्तिका, आढकी, तुवरी तथा मृत्स्ना र सुरमृत्तिका लाई गोपीचन्दनका पर्यायवाची नाम भनी लेखिएको छ) । यो पिरो, टर्रो, कपालका लागि हितकर तथा विषविकार, लुतो, विसर्प र सेतोकुष्ठ नाश गर्ने एवं खटिरालाई भर्ने गुणको हुन्छ ।

गन्धक

गन्धको गन्धपाषाणो लेलीनो(तो) गन्धमादनः ॥१०५॥
पूतिगन्धो बलिवसा गन्धाश्मा धातुहा बली ।
गन्धकः कटुतिक्तोष्णस्तीव्रगन्धोऽतिगन्धकृत् ॥१०६॥
विषघ्नः कुष्ठकण्डूतिकच्छूत्वग्दोषनाशनः ।

गन्धक, गन्धपाषाण, लेलीन(त), गन्धमादन, पूतिगन्ध, बलिवसा, गन्धाश्मा, धातुहा र बली : यी गन्धकका पर्यायवाची नाम हुन् । यो पिरो, तितो, उष्णवीर्यको, कडा गन्ध आउने, अति गनाउने तथा विषविकार, कुष्ठ, लुतो, कडा लुतो र छालाका अन्य रोग नाश गर्ने गुणको हुन्छ ।

गन्धकविशेष (वटसौगन्धिक)

वटसौगन्धिको गन्धो गन्धको गन्धमादनः ॥१०७॥
लेलीनो गन्धपाषाणो लेलीतश्च निकृन्तक(न): ।
त्वग्दोषकुष्ठवीसर्पलोहसंहारि सूतहा ॥१०८॥
रसायनवरो ह्येष कटूष्णो गन्धको मतः ।

वटसौगन्धिक, गन्ध, गन्धक, गन्धमादन, लेलीन, गन्धपाषाण, लेलीत र निकृन्तक(न) : यी गन्धकविशेषका पर्यायवाची नाम हुन् । यसले कुष्ठ, वीसर्प आदि जस्ता छालाका रोग नाश गर्दछ । फलाम र पारोलाई प्रशोधन गर्दछ । यो पिरो र उष्णवीर्यको हुन्छ भनिएको छ ।

अमिलीविशेष (अम्बष्ठा)

माचिका प्रथिताऽम्बष्ठा तथाऽम्बाऽम्बालिकाऽम्बिका ॥१०९॥

अम्बष्ठाका कषाया च सा प्रोक्ता मुखवाचिका ।

अम्बिका तु रसे तिक्ता तथोष्णा कफनाशनी ॥११०॥

अशौघ्नी श्वयथूत्थानपरिपन्थितया स्मृता ।

(अन्यच्च- माचिका तु कषाया च कण्ठ्या वातबलासजित् ।

पित्तप्रकोपशमनी व्रणशोधनरोपणी ॥) ।

माचिका, अम्बष्ठा, अम्बा, अम्बालिका, अम्बिका, अम्बष्ठाका, कषाया र मुखवाचिका : यी अमिली विशेषका पर्यायवाची नामहरू हुन् । यो तीतो, उष्णवीर्यको, कफविकार नाशक, अल्काई नाशक, श्वयथु नाशक हुन्छ । (अन्यका मतमा यो टर्रो, घाँटीका लागि लाभदायक तथा वातविकार र कफविकारलाई जित्ने गुणको हुन्छ । यसले पित्तको प्रकोपलाई शान्त पार्दछ तथा घाउ प्रशोधन र भर्ने काम गर्दछ) ।

मैन (सिक्थक)

सिक्थकं मधुकं सिक्थं मधूच्छिष्टं मधूत्थितम् ॥१११॥

मधुशेषं मदनकं मधुजं माक्षिकाश्रयम् ।

सिक्थकं स्निग्धमधुरं भूतघ्नं भग्नसन्धिकृत् ॥११२॥

हन्ति वीसर्पकण्ड्वादीन्व्रणरोपणमुत्तमम् ।

भेदनं पिच्छिलं स्वादु कुष्ठवातास्रजिन्मूदु ॥११३॥

सिक्थक, मधुक, सिक्थ, मधूच्छिष्ट, मधूत्थित, मधुशेष, मधुज र माक्षिकाश्रय : यी मैनका पर्यायवाची नाम हुन् । मैन चिल्लो, गुलियो, भूतबाधा नाशक, भौँचिएका अङ्ग जोड्ने; वीसर्प र लुतो आदि नाशक; घाउ भर्नमा उत्तम, भेदनी, चिप्लो, स्वादिलो; कुष्ठ, वातविकार र रक्तविकारलाई जित्ने तथा नरम गुणको हुन्छ ।

सालधूप (राल)

रालः सर्जरसः शालः क्षणः कलकलोद्भवः ।
ललनः शालनिर्यासो यक्षधूपोऽग्निवल्लभः ॥११४॥
रालः स्वादुः कषायोष्णः स्तम्भनो व्रणरोपणः ।
विषादिभूतहन्ता च भग्नसन्धानकृन्मतः ॥११५॥

राल, सर्जरस, शाल, क्षण, कलकलोद्भव, ललन, शालनिर्यास, यक्षधूप र अग्निवल्लभ : यी सालधूपको पर्यायवाची नाम हुन् । यो गुलियो, टर्रो, उष्णवीर्यको, जकड्याउने वा रोक्ने, घाउ भर्ने, विषविकार र भूतबाधा नाश गर्ने तथा भौँचिएका अङ्ग जोड्ने गुणको हुन्छ ।

हीराकसी (कासीस)

कासीसं धातुकासीसं केसरं तप्तलोमशम् ।
कासीसं तु कषायोष्णमम्लं वातबलासजित् ॥११६॥
विषनेत्ररुजः श्वित्रं हन्ति कुष्ठव्रणानपि ।

कासीस, धातुकासीस, केसर र तप्तलोमश : यी हिराकसीका पर्यायवाची नाम हुन् । यो टर्रो, उष्णवीर्यको, अमिलो, वातविकार र कफविकारलाई जित्ने तथा विषविकार, आँखाका रोग, सेतो कुष्ठ, कुष्ठ र खटिरा नाश गर्ने गुणको हुन्छ ।

गोकुलधूप (गुग्गुलु)

गुग्गुलुः कालनिर्यासो जटायुः कौशिकः पुरः ॥११७॥
नक्तञ्चरः शिवो दुर्गो महिषाक्षः पलङ्कषः ।
गुग्गुलुः पिच्छिलः प्रोक्तः कटुस्तिक्तः कषायवान् ॥११८॥
वण्यैः स्वर्यो लघुः सूक्ष्मो रूक्षो वातबलासजित् ।

गुग्गुलु, कालनिर्यास, जटायु, कौशिक, पुर, नक्तञ्चर, शिव, दुर्ग, महिषाक्ष र पलङ्कष : यी गोकुलधूपका पर्यायवाची नाम हुन् । यो लेस्याइलो, पिरो, तितो, टर्रो, शरीरको वर्णमा निखार लेराउने, स्वरका

लागि लाभदायक, पचाउन सहज, सूक्ष्म, रुखो तथा वातविकार र कफविकारलाई जित्ने गुणको हुन्छ ।

काँडे सल्लाको खोटो (कुन्दुरु)

कुन्दुरुः स्यात्कुन्दुरुकः शिखरी कुन्द्रगोपुरः ॥११९॥
सुकुन्द्रस्तीक्ष्णगन्धश्च पालिन्दो भीषणो बली ।
कुन्दुरुः कटुकस्तिक्तो वातश्लेष्मामयापहः ॥१२०॥
पाने लेपे च शिशिरः प्रदरामयशान्तिकृत् ।

कुन्दुरु, कुन्दुरुक, शिखरी, कुन्द्र, गोपुर, सुकुन्द्र, तीक्ष्णगन्ध, पालिन्द, भीषण र बली : यी काँडे सल्लाको खोटोका पर्यायवाची नाम हुन् । यो पिरो, तितो, वातविकार र कफविकार नाश गर्ने, पिउनाले वा लेप दल्नाले ठण्डी गर्ने तथा प्रदर रोगलाई शान्त पार्ने गुणको हुन्छ ।

सल्लाको खोटो, तारपिन (श्रीवेष्टक)

श्रीवेष्टको धूपवृक्षः क्षीरशीर्षः खरदुमः ॥१२१॥
श्रीवासः पायसः श्याहः क्षीरस्रावस्तथा दधि ।
श्रीवेष्टः स्वादुतिक्तस्तु कषायो व्रणरोपणः ॥१२२॥
कफपित्तास्रजान् हन्ति ग्रहघ्नः शीर्षरोगनुत् ।

श्रीवेष्टक, धूपवृक्ष, क्षीरशीर्ष, खरदुम, श्रीवास, पायस, श्याह, क्षीरस्राव र दधि : यी तारपिनका पर्यायवाची नाम हुन् । यो गुलियो, तितो, टर्पो, घाउखटिरा भर्ने तथा कफविकार, पित्तविकार, रक्तविकार, ग्रहबाधा र टाउकाका रोग नाश गर्ने गुणको हुन्छ ।

काँडे सल्लो (शल्लकी)

शल्लकी वल्लकी ह्लादा सुरभिः सुस्रवा च सा ॥१२३॥
अश्वमूत्री कुन्दुरुकी गजभक्षा महेरणा ।
शल्लकी स्यात्कषायाऽतिशीता वीर्ये प्रकीर्तिता ॥१२४॥
बलासं हन्ति पित्तस्य प्रकोपशमनी मता ।

शल्लकी, वल्लकी, ह्लादा, सुरभि, सुस्रवा, अश्वमूत्री, कुन्दुरुकी, गजभक्षा र महेरणा : यी काँडे सल्लोका पर्यायवाची नाम हुन् । यो टर्रो, अति शीतवीर्यको, कफविकार नाश गर्ने तथा पित्तविकारलाई शान्त पार्ने गुणको हुन्छ भनिएको छ ।

सिंदुरे (कम्पिल्लक)

कम्पिल्लकोऽथ रक्ताङ्गो रेची रेचनकस्तथा ॥१२५॥

रञ्जनो लोहिताङ्गश्च कम्पिल्लो रक्तचूर्णकः ।

कम्पिल्लको विरेची स्यात्कटूष्णो व्रणनाशनः ॥१२६॥

गुल्मोदरविबन्धाध्मश्लेष्मकृमिविनाशनः ।

कम्पिल्लक, रक्ताङ्ग, रेची, रेचनक, रञ्जन, लोहिताङ्ग, कम्पिल्ल र रक्तचूर्णक : यी सिंदुरेका पर्यायवाची नाम हुन् । यो दिसा लगाउने, पिरो, उष्णवीर्यको तथा खटिरा, गुल्म, पेटका रोग, कब्जियत, आध्मान, कफविकार र कीरा नाश गर्ने गुणको हुन्छ ।

सङ्कलन : मोहन प्रसाद सापकोटा
मुर्दा शङ्ख (कङ्कुष्ठ)

कङ्कुष्ठं कालकुष्ठं च विरङ्गं रङ्गनायकम् ॥१२७॥

रेचकं पुलकं हासं शोधनं कालपालकम् ।

कङ्कुष्ठं तिक्तकटुकं वीर्यं चोष्णं प्रकीर्तितम् ॥१२८॥

गुल्मोदावर्तशूलघ्नं रसरञ्जं व्रणापहम् ।

कङ्कुष्ठ, कालकुष्ठ, विरङ्ग, रङ्गनायक, रेचक, पुलक, हास, शोधन र कालपालक : यी मुर्दाशङ्खका पर्यायवाची नाम हुन् । यो तितो, पिरो, उष्णवीर्यको तथा गुल्म, उदावर्त र शूलरोग नाशगर्ने; पारोलाई प्रशोधन गर्ने एवं खटिरा निको पार्ने गुणको हुन्छ ।

भलायो (भल्लातक)

भल्लातकः स्मृतोऽरुष्को दहनस्तपनोऽग्निकः ॥१२९॥

अरुष्करो वीरतरुर्भल्लातोऽग्निमुखो धनुः ।

भल्लातः कटुतिक्तोष्णो मधुरः कृमिनाशनः ॥१३०॥
गुल्मार्शोग्रहणीकुष्ठान्हन्ति वातकफामयान् ।

भल्लातक, अरुष्क, दहन, तपन, अग्निक, अरुष्कर, वीरतरु, भल्लात, अग्निमुख र धनु : यी भलायोका पर्यायवाची नाम हुन् । यो पिरो, तितो, उष्णवीर्यको, गुलियो तथा कस्स्रा, गुल्म, हर्सा, ग्रहणी, कुष्ठ, वातविकार र कफविकार नाश गर्ने गुणको हुन्छ ।

नीलो तुथो (तुत्थ)

तुत्थं कर्परिकातुत्थममृतासङ्गमेव च ॥१३१॥
मयूरग्रीवकं चान्यच्छितिकण्ठं च तुत्थकम् ।
द्वितीयं कर्परीतुत्थं कर्परीतुत्थकं तथा ॥१३२॥
नेत्रनैर्मल्यकारि स्यात्तुत्थममृतोपमम् ।
तुत्थकं दृष्टिरोगघ्नं शीतं श्वित्रविनाशनम् ॥१३३॥
विषवेगप्रशमनं प्रशस्तं कथ्यते बुधैः ।

सङ्कलन : मोहन प्रसाद सापकोटा

तुत्थ, कर्परिकातुत्थ, अमृतासङ्गम, मयूरग्रीवक, शितिकण्ठ र तुत्थक : यी तुथोका तथा कर्परीतुत्थ र कर्परीतुत्थक : यी दोश्रो थरी तुथोका पर्यायवाची नाम हुन् । यसले आँखालाई निर्मल बनाउँदछ । यो अमृतसमान हुन्छ । नीलोतुथोले आँखाका रोग नाश गर्दछ । यो शीतवीर्यको, सेताकुष्ठ नाश गर्ने र विषको वेगलाई शान्त पार्ने गुणको हुन्छ भनेर विद्वानहरूले बताएका छन् ।

सुनामक्खी (माक्षिक)

हेममाक्षिकमावर्तं तापिजं धातुमाक्षिकम् ॥१३४॥
ताप्यं च माक्षिकं धातु मधुधातु विनिर्दिशेत् ।
माक्षिकं कटुतिक्तोष्णं रसायनमनुत्तमम् ॥१३५॥
बस्तिरोगहरं हन्यादर्शः शोफोदरक्षयान् ।
त्रिदोषशमनं वृष्यं चक्षुष्यं च विषापहम् ॥१३६॥
मन्दानलत्वं बलहानिमुग्धां विष्टम्भतां नेत्ररुजं च कुष्ठम् ।
करोति मालां व्रणपूर्विकां च माक्षीकधातुर्गुरुरप्यपक्वः ॥१३७॥

हेममाक्षिक, आवर्त, तापिज, धातुमाक्षिक, ताप्य, माक्षिकधातु र मधुधातु : यी सुनामखीका पर्यायवाची नाम हुन् । यो पिरो, तितो, उष्णवीर्यको, उत्तम रसायनी तथा मूत्राशयका रोग, हर्सा, सुजन, पेटका रोग र क्षयरोग नाशगर्ने गुणको हुन्छ । यसले त्रिदोषलाई शान्त पार्दछ, वीर्य बढाउँदछ, आँखालाई फाइदा गर्दछ र विषविकार पनि नाश गर्दछ । तर, राम्ररी प्रशोधन नगरिएको सुनामखीले पाचनशक्ति कमजोर बनाउँदछ, अति नै बल नाश गर्दछ, कब्जियत गर्दछ, आँखामा रोग निकाल्दछ, कुष्ठ हुन्छ, घाँटीमा खटिराको माला नै निकाल्दछ र ये पचाउन पनि कठिन हुन्छ ।

सुर्मा (अञ्जनम्)

अञ्जनं मेचकं कृष्णं सौवीरं च सुवीरजम् ।
कपोतं यामुनेयं च स्रोतो जं सारितं तथा ॥१३८॥
सौवीरमञ्जनं प्रोक्तमत्यन्तं शिशिरं बुधैः ।
विषहिध्माविकारघ्नमक्षिरोगविषापहम् ॥१३९॥

अञ्जन, मेचक, कृष्ण, सौवीर, सुवीरज, कपोत, यामुनेय, स्रोतो ज र सारित : यी सुर्माका पर्यायवाची नाम हुन् । सौवीर अति नै शीतवीर्यको हुन्छ । यसले विषविकार, बाडुलीका दोष, आँखाका रोग र विषविकार नाश गर्दछ ।

गेरु (गैरिक)

गैरिकं रक्तधातु स्यात्ताम्रधातुगविधुकम् ।
पाषाणगैरिकं चैव द्वितीयं स्वर्णगैरिकम् ॥१४०॥
पाषाणगैरिकं प्रोक्तं कठिनं ताम्रवर्णकम् ।
विशदो गैरिकः स्निग्धः कषायो मधुरो हिमः ॥१४१॥
चक्षुष्यो रक्तपित्तघ्नश्छर्दिहिध्माविषापहः ।

गैरिक, रक्तधातु, ताम्रधातु र गवेधुक : यी गेरुका पर्यायवाची नाम हुन् । यो पाषाणगैरिक र स्वर्णगैरिक गरी दुई किसिमको हुन्छ । पाषाणगैरिक साहो र तामाजस्तो रङ्गको हुन्छ । गेरु सफा, चिल्लो, टर्रो, गुलियो, शीतवीर्यको, आँखाका लागि हितकर तथा रक्तपित्त, वाकवाकी, बाडुली र विषविकार नाशगर्ने गुणको हुन्छ ।

सुवर्णगेरु (स्वर्णगैरिकम्)

सुवर्णगैरिकं चान्यत्ततो रक्तरजो विदुः ॥१४२॥
अत्यन्तशोणितं स्निग्धं मसृणं स्वर्णगैरिकम् ।
स्वादु स्निग्धं हिमं नेत्र्यं कषायं रक्तपित्तजित् ॥१४३॥
हिध्मावमिविषघ्नं च रक्तघ्नं स्वर्णगैरिकम् ।

अर्को थरी गेरुलाई सुवर्णगैरिकलाई रक्तरज पनि भनिन्छ । सुवर्णगैरिक रगत जस्तै अति नै रातो, चिल्लो र चम्किलो हुन्छ । यो गुलियो, चिल्लो, शीतवीर्यको, आँखाका लागि हितकर, टर्रो, रक्तपित्तलाई जित्ने तथा बाडुली, वाकवाकी, विषविकार र रक्तविकार नाशगर्ने गुणको हुन्छ ।

समुद्रफेन

समुद्रफेनं फेनं च शुष्काशुष्कं पयोधिजम् ॥१४४॥
विद्यादुदधिफेनं च प्रोक्तं सागरजं मलम् ।
समुद्रफेनं शिशिरं कर्णपाकनिवारणम् ॥१४५॥
लेखनं नेत्ररोगाणां हिमो विषविनाशनम् ।
चक्षुष्यं रक्तपित्तघ्नं गुल्मप्लीहहरं स्मृतः ॥१४६॥

समुद्रफेन, फेन, शुष्काशुष्क, पयोधिज, उदधिफेन र सागरजमल : यी समुद्रफेनका नाम हुन् । यो शीतवीर्यको, कान पाक्ने रोग ठिक गर्ने, आँखाका रोगलाई खुर्केर निकाल्ने, शीतल गर्ने, विषविकार नाशगर्ने, आँखालाई हितकारी, रक्तपित्त नाशगर्ने तथा गुल्म र फियोका रोग नाश गर्ने गुणको हुन्छ ।

गहत (चक्षुष्या)

चक्षुष्या दृक्प्रसादा च सैव प्रोक्ता कुलत्थिका ।
कुलाली लोचनहिता कुम्भकारी मलापहा ॥१४७॥
हिमा प्रोक्ता कषाया च विषं स्थावरजङ्गमम् ।
निहन्ति योजिता सम्यक् नेत्रसावाननेकशः ॥१४८॥
सा च विस्फोटकण्ड्वर्तिव्रणदोषनिबर्हिणी ।

चक्षुष्या, दृक्प्रसादा, कुलत्थिका, कुलाली, लोचनहिता, कुम्भकारी र मलापहा : यी गहतका पर्यायवाची नाम हुन् । यो शीतवीर्यको, टर्रो, स्थावर र जङ्गम विषविकार नाश गर्ने, अरु ओखतीमा मिसाएर प्रयोग गर्दा आँखाबाट रस आदि बहने अनेक रोग नाश गर्ने तथा विस्फोट, लुतो र खटिराका विकार नाश गर्ने गुणको हुन्छ ।

रसाञ्जन

रसाञ्जनं ताक्ष्यशैलं रसजातं रसोद्भवम् ॥१४९॥
रसगर्भं रसाऽग्नं च दार्वीक्वाथसमुद्भवम् ।
रसाञ्जनं हिमं तिक्तं रक्तपित्तकफापहम् ॥१५०॥
हिध्माश्वासहरं वर्ण्यं मुखरोगविषापहम् ।

रसाञ्जन, ताक्ष्यशैल, रसजात, रसोद्भव, रसगर्भ, रसाग्न र दार्वीक्वाथसमुद्भव : यी रसाञ्जनका पर्यायवाची नाम हुन् । यो शीतवीर्यको, तितो तथा रक्तपित्त, कफविकार, बाडुली र दम नाश गर्ने गुणको हुन्छ । यसले वर्णमा निखार लेराउँदछ र मुखका रोग र विषविकार नाश गर्दछ ।

पुष्पाञ्जन

पुष्पाञ्जनं पुष्पकेतुः कौसुम्भं कुसुमाञ्जनम् ॥१५१॥
रीतिजं रीतिकुसुमं रीतिपुष्पं च पौष्पिकम् ।
पुष्पाञ्जनं हिमं हन्ति हिक्कामत्यन्तदुस्तराम् ॥१५२॥
अक्षिरोगचयं हन्याद्विषं निर्विषतां नयेत् ।

पुष्पाञ्जन, पुष्पकेतु, कौसुम्भ, कुसुमाञ्जन, रीतिज, रीतिकुसुम, रीतिपुष्प र पौष्पिक : यी पुष्पाञ्जनका पर्यायवाची नाम हुन् । यो शीतवीर्यको हुन्छ र यसले कडा खालको बाडुलीलाई पनि ठिक गर्दछ । यसले आँखाका रोगका समूहलाई नाश गर्दछ र विषविकारलाई विहीन बनाउँदछ ।

सिलाजित (शिलाजतु)

शिलाजतु स्यादतिथिः शैलेयं गिरिजाश्मजम् ॥१५३॥

जत्वश्मजं चाश्मजतु प्रोक्तं धातुजमद्रिजम् ।
शिलाजतु भवेत्तित्तं कटूष्णं च रसायनम् ॥१५४॥
मेहोन्मादाश्मरीशोफकुष्ठापस्मारनाशनम् ।
क्षयशोफोदराशांसि हन्ति बस्तिरुजो जयेत् ॥१५५॥

शिलाजतु, अतिथि, शैलेय, गिरिजाश्मज, जत्वश्मज, अश्मजतु, धातुज र अद्रिज : यी शिलाजितका पर्यायवाची नाम हुन् । यो तितो, पिरो, उष्णवीर्यको, रसायनी तथा प्रमेह, पागलपन, पत्थरी, सुजन, कुष्ठ, छारेरोग, क्षयरोग, पेटको सुजन र हर्सालाई नाश गर्ने एवं मूत्राशयका रोगलाई जित्ने गुणको हुन्छ ।

निर्मली (कतक)

कतकं छेदनीयञ्च कतं कतफलं मतम् ।
अम्बुप्रसादनफलं श्लक्ष्णं नेत्रविकारजित् ॥१५६॥
कतकं शीतलं प्राहुस्तृष्णाविषविनाशनम् ।
नेत्रोत्थरोगविध्वंसि विधिनाऽञ्जनयोगतः ॥१५७॥
कतकस्य फलं तित्तं चक्षुष्यं पित्तलं मृदु ।
वारिप्रसादनं कृच्छ्रशर्करामश्मरीं जयेत् ॥१५८॥

कतक, छेदनीय, कत, कतफल, अम्बुप्रसादनफल, श्लक्ष्ण र नेत्रविकारजित् : यी निर्मलीका पर्यायवाची नाम हुन् । यो शीतवीर्यको, तिर्खा र विषविकार नाश गर्ने तथा विधिपूर्वक मिसाएर गाजल बनाउनाले आँखाका रोग नाश गर्ने गुणको हुन्छ । यसको फल तितो, आँखाका लागि हितकर, पित्तविकार गर्ने, कोमल, पानीलाई प्रशोधन गर्ने तथा कृच्छ्ररोग, शर्करारोग र पत्थरीलाई जित्ने गुणको हुन्छ ।

सेतो लोघ (लोघ्र)

लोघ्रोरोघ्रः शाबरकस्तित्वकस्तिलकस्तरुः ॥१५९॥
तिरीटकः काण्डहीनो भिल्ली शम्बरपादपः ।
लोघ्रः शीतः कषायश्च हन्ति तृष्णामरोचकम् ॥१६०॥
विषविध्वंसनः प्रोक्तो रूक्षो ग्राही कफापहः ।

लोघ्र, रोघ्र, शाबरक, तिल्वक, स्तिलकस्तरु, तिरीटक, काण्डहीन, भिल्ली र शम्बरपादप : यी सेतो लोधका पर्यायवाची नाम हुन् । यो शीतवीर्यको, टर्रो तथा तिरुवा, अरुची र विषविकार नाश गर्ने गुणको हुन्छ । यो रुखो, ग्राही र कफविकार नाश गर्ने गुणको समेत हुन्छ ।

रातो लोध (पट्टिकारोघ्र)

क्रमुकः पट्टिकारोघ्रो वल्कलः स्थूलवल्कलः ॥१६१॥

जीर्णपर्णो बृहत्पर्णः पट्टी लाक्षाप्रसादनः ।

लोघ्रयुग्मं कषायं तु शीतं वातकफास्रजित् ॥१६२॥

चक्षुष्यं विषहृत्तत्र विशिष्टो वल्करोघ्रकः ।

क्रमुक, पट्टिकारोघ्र, वल्कल, स्थूलवल्कल, जीर्णपर्ण, बृहत्पर्ण, पट्टी र लाक्षाप्रसादन : यी रातो लोधका पर्यायवाची नाम हुन् । दुवै थरी लोध टर्रो, शीतवीर्यका तथा वातविकार, कफविकार र रक्तविकारलाई जित्ने एवं आँखाका लागि हितकर हुन्छन् । रातो लोधले विशेष गरी विषविकार नाश गर्दछ ।

सङ्कलन : मोहनप्रसाद सापकोटा

शङ्खो वारिभवः कम्बुर्जलदो दीर्घनिस्वनः ॥१६३॥

सुस्वरो दीर्घनादश्च धवलः श्रीविभूषणः ।

शङ्खः स्वादुः कटुः पाके वीर्यं चोष्णः प्रकीर्तितः ॥

परिणामं जयेच्छूलं चक्षुष्यो रक्तपित्तजित् ॥१६४॥

शङ्ख, वारिभव, कम्बु, जलद, दीर्घनिस्वन, सुस्वर, दीर्घनाद, धवल र श्रीविभूषण : यी शङ्खका पर्यायवाची नाम हुन् । यो गुलियो, पचेपछि पिरो, उष्णवीर्यको तथा खाना पच्ने बेलामा पेट दुख्ने रोग र रक्तपित्तलाई जित्ने गुणको हुन्छ ।

ग्रन्थान्तरमा पाइएका केही थप श्लोकहरू

दबदबे (जिङ्गिणी)

जिङ्गिणी भिञ्जिणी ज्ञेयो मोदकी गुडमञ्जरी ।

पार्वतेया सुनिर्घोषा तथा मदनमञ्जरी ॥

वातघ्नी मधुरोष्णा च व्रणघ्नी योनिशोधनी ।
जिङ्गिणी कटुका पाके तथाऽतीसारनाशनी ॥

जिङ्गिणी, भिङ्गिणी, मोदकी, गुडमञ्जरी, पार्वतिया, सुनिर्घोषा र मदनमञ्जरी : यी दबदबे (हल्लुँडे) का पर्यायवाची नाम हुन् । यो वातविकार नाश गर्ने, गुलियो, उष्णवीर्यको, खटिरा नाश गर्ने, स्त्री-जननेन्द्रिय प्रशोधन गर्ने, पचेपछि पिरो र अतीसार नाश गर्ने गुणको हुन्छ ।

पान (ताम्बूली)

बहुला च बलाऽनन्ता भद्रा पातालवासिनी ।
मुखरागकरी सौम्या अमृता त्वमृतोद्भवा ॥
कामदा कामजननी जीवन्ती यावनीप्रिया ।
आमोदजननी हृद्या देवानां दानवप्रिया ॥
ताम्बूलवल्ली ताम्बूली दाहदा श्रमभञ्जनी ।
नागवल्ली च नागाह्वा रञ्जनी तीक्ष्णमञ्जरी ॥

सङ्कलन : मोहन प्रसाद सापकोटा

बहुला, बला, अनन्ता, भद्रा, पातालवासिनी, मुखरागकरी, सौम्या, अमृता, अमृतोद्भवा, कामदा, कामजननी, जीवन्ती, यावनीप्रिया, आमोदजननी, हृद्या, देवानां प्रिया, दानवप्रिया, ताम्बूलवल्ली, ताम्बूली, दाहदा, श्रमभञ्जनी, नागवल्ली, नागाह्वा, रञ्जनी र तीक्ष्णमञ्जरी : यी पानका पर्यायवाची नाम हुन् ।

उपसंहार

चन्दनादिरयं वर्गस्तृतीयः परिकीर्तितः ।
श्रीमतां भोगिनामर्हः प्रायो गन्धगुणाश्रयः ॥

विशेषतः धनी वा भाग्यमानी वा राजाका लागि काम लाग्ने खालका गन्ध र गुण बताइएको यो तेश्रो चन्दनादि वर्गका बारेमा बताइयो ।

इति रसवीर्यविपाकसहिते धन्वन्तरिनिघण्टौ चन्दनादिस्तृतीयो वर्गः ॥
धन्वन्तरि निघण्टुमा रस, वीर्य र विपाक सहितको चन्दनादि तेश्रो वर्ग समाप्त भयो ।

करवीरादिश्चतुर्थो वर्गः
करवीरादि चौथो वर्ग

कँडेल (करवीर)

करवीरोऽश्वहाऽश्वघ्नो हयमारोऽश्वमारकः ।
श्वेतकुन्दः श्वेतपुष्पः प्रतिहासोऽश्वमोहकः ॥१॥
द्वितीयो रक्तपुष्पश्च चण्डको लगुडस्तथा ।
चण्डातको गुल्मकश्च प्रचण्डः करवीरकः ॥२॥
करवीरः कटुस्तिक्तो वीर्ये चोष्णो ज्वरापहः ।
चक्षुष्यः कुष्ठकण्डूघ्नः प्रलेपाद्विषमन्यथा ॥३॥
करवीरद्वयं तिक्तं सविषं कुष्ठजित्कटु ।

करवीर, अश्वहा, अश्वघ्न, हयमार, अश्वमारक, श्वेतकुन्द, श्वेतपुष्प, प्रतिहास र अश्वमोहक : यी सेतो कँडेलका नाम हुन् । रक्तपुष्प, चण्डक, लगुड, चण्डातक, गुल्मक, प्रचण्ड र करवीरक : यी दोश्रो थरी रातो कँडेलका नाम हुन् । कँडेल पिरो, तीतो, उष्णवीर्यको, जरो नाशक, आँखाका लागि हितकर तथा लेप दल्नाले कुष्ठ र लुतो नाशक हुन्छ । यसको अन्य तरिकाले गरिने उपयोग विषालु हुन्छ । दुवै थरी कँडेल तीता, विषालु, कुष्ठलाई जित्ने र पिरा हुन्छन् ।

ताप्रे (चक्रमर्द)

चक्रमर्दस्त्वेडगजो मेषाक्षिकुसुमस्तथा ॥४॥
प्रपुन्नाटस्तरवटश्चक्राहश्चक्रिकस्तथा ।
(अन्यच्च-
चक्रमर्दस्त्वेडगजो मेषाक्षोऽण्डगजस्तथा ।
प्रपुन्नाटः प्रपुन्नाडश्चक्री व्यावर्तकस्तथा ॥)
चक्रमर्दः कटूष्णः स्यात् प्रोक्तो वातकफापहः ॥५॥
दद्रुकण्डूहरः कान्तिसौकुमार्यकरो मतः ।

चक्रमर्द, एडगज, मेषाक्षिकुसुम, प्रपुन्नाट, तरवट, चक्राह र चक्रिक : यी ताप्रेका पर्यायवाची नाम हुन् । (अन्यत्र-चक्रमर्द, एडगज, मेषाक्ष, अण्डगज, प्रपुन्नाट, प्रपुन्नाड, चक्री र व्यावर्तकलाई ताप्रेका

पर्याय भनी बताइएको छ । यो पिरो, उष्णवीर्यको तथा वातविकार, कफविकार, दाद र लुतो नाश गर्ने एवं शरीरमा चमक र कोमलता बढाउने गुणको हुन्छ ।

धतुरो (धत्तूर)

धत्तूरः कनको धूर्तो देवता कितवः शठः ॥६॥

उन्मत्तको मदनकः कालिश्च हरवल्लभः ।

धत्तूरः कटुरुष्णश्च कान्तिकारी व्रणार्तिनुत् ॥७॥

कुष्ठानि हन्ति लेपेन प्रभावेण ज्वरं जयेत् ।

त्वग्दोषकृच्छ्रकण्डूतिज्वरहारी भ्रमावहः ॥८॥

धत्तूर, कनक, धूर्त, देवता, कितव, शठ, उन्मत्तक, मदनक, कालि र हरवल्लभ : यी धतुरोका पर्यायवाची नाम हुन् । यो पिरो, उष्णवीर्यको, शरीरमा चमक दिने, खटिरा नाश गर्ने, लेप दल्नाले कुष्ठरोग नाश गर्ने, प्रभावले जरो नाश गर्ने तथा छालाका रोग, कृच्छ्र, लुतो र जरो नाश गर्ने एवं भ्रम गर्ने गुणको हुन्छ ।

संकलन : मोहन प्रसाद सापकोटा
कलिहारी, गुन्या मधुरा (लाङ्गली)

कलिकारी तु हलिनी विशल्या गर्भपातिनी ।

लाङ्गल्याऽग्निमुखी सीरी दीप्ता नत्तेन्दुपुष्पिका ॥९॥

लाङ्गली कटुरुष्णा च कफवातविनाशनी ।

तिक्ता सरा च श्वयथुगर्भशल्यव्रणापहा ॥१०॥

कलिकारी, हलिनी, विशल्या, गर्भपातिनी, लाङ्गली, अग्निमुखी, सीरी, दीप्ता र नत्तेन्दुपुष्पिका : यी कलिहारीका पर्यायवाची नाम हुन् । यो पिरो, उष्णवीर्यको, कफविकार र वातविकार नाश गर्ने, तितो, मलमूत्रलाई तलतिर सार्ने तथा सुजन, गर्भ र चिरफारको वा काँडाको घाउखटिरा नाश गर्ने गुणको हुन्छ ।

भृङ्गीराज (भृङ्गराज)

भृङ्गराजो भृङ्गरजो मार्कवो भृङ्ग एव च ।

भृङ्गारको भृङ्गरेणुभृङ्गारः केशरञ्जनः ॥११॥
भृङ्गराजः समाख्यातस्तिक्तोष्णो रूक्ष एव च ।
कफशोफामपाण्डुत्वग्घृद्रोगविषनाशनः ॥१२॥

भृङ्गराज, भृङ्गरज, मार्कव, भृङ्ग, भृङ्गारक, भृङ्गरेणु, भृङ्गार र केशरञ्जन : यी भृङ्गीराजका पर्यायवाची नाम हुन् । यो तितो, उष्णवीर्यको, रुखो तथा कफविकार, सुजन, आमविकार, पाण्डु, छालाका रोग, मुटुका रोग र विषविकार नाश गर्ने गुणको हुन्छ ।

रातो आँक (अर्क)

अर्कः सूर्याह्वयः पुष्पी विक्षीरोऽथ विकीरणः ।
जम्भलः क्षीरपर्णी स्यादास्फोटो भास्करो रविः ॥१३॥
अर्कस्तिक्तो भवेदुष्णः शोधनः परमः स्मृतः ।
कण्डूव्रणहरो हन्ति जन्तुसन्ततिमुद्धताम् ॥१४॥
(अर्कस्तु कटुरूष्णश्च वातहृदीपनः सरः ।
शोफव्रणहरः कण्डूकुष्ठप्लीहकृमीञ्जयेत् ॥)

अर्क, सूर्याह्वय, पुष्पी, विक्षीर, विकीरण, जम्भल, क्षीरपर्णी, आस्फोट, भास्कर र रवि : यी रातो आँकका पर्यायवाची नामहरू हुन् । यो आँक तीतो, उष्णवीर्यको, अत्यन्त शोधनी तथा लुतो, घाउखटिरा र कीरा नाशक हुन्छ । (यो पीरो, उष्णवीर्यको, वातविकार नाशक, दीपनी र मलमूत्रलाई तलतिर सार्ने गुणको हुन्छ । यसले सुजन र घाउखटिरा नाश गर्दछ तथा लुतो, कुष्ठ, फियोका रोग र कीरा माथि विजय हासिल गर्दछ ।) ।

सेतो आँक (राजार्क)

राजार्को वसुकोऽत्यर्को मन्दारो गणरूपकः ।
एकाष्ठीलः सदापुष्पी स चालर्कः प्रतापनः ॥१५॥
राजार्कः कटुतिक्तोष्णो वीर्यमिदोविषापहः ।
वातकुष्ठव्रणान्हन्ति शोफकण्डूविसर्पनुत् ॥१६॥

राजार्क, वसुक, अत्यर्क, मन्दार, गणरूपक, एकाष्टील, सदापुष्पी, अलर्क र प्रतापन : यी सेतो आँकका पर्यायवाची नामहरू हुन् । यो आँक पिरो, तीतो, उष्णवीर्यको तथा वीर्य, बोसो र विषविकार नाशक हुन्छ । यसले वातविकार, कुष्ठ, घाउखटिरा, सुजन, लुतो र विसर्प नाश गर्दछ ।

ढूलो मौलसिरी, गुम्पाती (बुक)

बुको वसुक इत्युक्तः शिवाहः शिवशेखरः ।
महापाशुपतश्चैव सुव्रतः शिवमल्लिका ॥१७॥
वसुकः कटुतिक्तोष्णः श्लेष्मोद्धूतकफापहः ।
व्रणान्समस्तान्हरति प्रलेपादिप्रयोजितः ॥१८॥

बुक, वसुक, शिवाह, शिवशेखर, महापाशुपत, सुव्रत र शिवमल्लिका : यी ढूलो मौलसिरीका पर्यायवाची नाम हुन् । यो पिरो, तितो, उष्णवीर्यको, कफविकार नाश गर्ने तथा लेप आदिमा प्रयोग गर्नाले सबै खालका खटिरा नाश गर्ने गुणको हुन्छ ।

कबई (काकमाची)
सङ्कलन : मोहन प्रसाद सापकोटा

काकमाची ध्वाङ्गमाची काकाहा चैव वायसी ।
कट्वी कटुफला चैव रसायनवरा स्मृता ॥१९॥
काकमाची त्रिदोषघ्नी सरा स्वर्या सतिक्तका ।
हन्ति दोषत्रयं कुष्ठं वृष्या सोष्णा रसायनी ॥२०॥

काकमाची, ध्वाङ्गमाची, काकाहा, वायसी, कट्वी, कटुफला र रसायनवरा : यी कबईका पर्यायवाची नाम हुन् । यो त्रिदोष नाश गर्ने, मलमूत्रलाई तलतिर सार्ने, स्वरका लागि हितकर, केही तितो, त्रिदोष नाश गर्ने (दोहोरो परेको), कुष्ठ नाश गर्ने, वीर्यवर्धक, उष्णवीर्यको र रसायनी हुन्छ ।

काकजङ्घा

काकजङ्घा ध्वाङ्गजङ्घा काकपादा तु लोमशा ।
पारावतपदी दासी नदीकान्ता प्रचीबला ॥२१॥
काकजङ्घा च तिक्तोष्णा रक्तपित्तज्वरापहा ।

कृमिदोषहरी वर्ण्या विषदोषहरा मता ॥२२॥

काकजङ्घा, ध्वाङ्गजङ्घा, काकपादा, लोमशा, पारावतपदी, दासी, नदीकान्ता र प्रचीबला : यी काजङ्घाका पर्यायवाची नाम हुन् । यो तितो, उष्णवीर्यको तथा रक्तपित्त, जरो र कीराका दोष नाश गर्ने गुणको हुन्छ । यसले वर्णका निखार लेराउँदछ र विषविकार नाश गर्दछ ।

कौवाठोरी (काकनासा)

काकनासा ध्वाङ्गनासा काकतुण्डफला च सा ।
सुरङ्गी तस्करस्त्रायुर्ध्वाङ्गतुण्डफला मता ॥२३॥
काकतुण्डी भवेत्तित्ता कटूष्णा व्रणशोधिनी ।
अतिविद्धं शोधयन्ती तैलपाके हितावहा ॥२४॥

काकनासा, ध्वाङ्गनासा, काकतुण्डफला, सुरङ्गी, तस्करस्त्रायु र ध्वाङ्गतुण्डफला : यी कौवाठोरीका पर्यायवाची नाम हुन् । यो तितो, पिरो, उष्ण वीर्यको, खटिरा सफा गर्ने, कडा दिसा खुकुल्याउने र तैलपाक गरेपछि हितकर हुने गुणको हुन्छ ।

सेतो रातीगेडी ? सानो काकचुच्चे ? (काकादनी)

काकादनी काकपीलुः काकणन्ती च रक्तिका ।
वक्त्रशल्या ध्वाङ्गनखी दुर्मोहा काकणन्तिका ॥२५॥
काकणन्ति च तिक्तोष्णा वातश्लेष्महरा मता ।
ग्रहदोषहरा केश्या वृष्या चोर्ध्वगदापहा ॥२६॥

काकादनी, काकपीलु, काकणन्ती, रक्तिका, वक्त्रशल्या, ध्वाङ्गनखी, दुर्मोहा र काकणन्तिका : यी सेतीगेडी (?) का पर्यायवाची नाम हुन् । यो तितो, उष्णवीर्यको, वातविकार र कफविकार नाश गर्ने, ग्रहदोष हटाउने, कपालका हितकर, वीर्यवर्धक र घाँटीभन्दा माथिका रोग नाश गर्ने गुणको हुन्छ ।

रातीगेडी (चूडामणि)

चूडामणिः शीतपाकी शिखण्डी कृष्णला मता ।

उच्चटा ताम्रिका गुञ्जा चटकी काकसाह्वया ॥२७॥
गुञ्जा रूक्षा तथा तिक्ता वीर्योष्णा च प्रकीर्तिता ।
विषवैषम्यजन्तुघ्नी रोगग्रामभयापहा ॥२८॥

चूडामणि, शीतपाकी, शिखण्डी, कृष्णला, उच्चटा, ताम्रिका, गुञ्जा, चटकी र काकसाह्वया : यी रातीगेडीका पर्यायवाची नाम हुन् । यो रुखो, तितो, उष्णवीर्यको तथा विषविकार, कीरा र रोगका समूहको डर नाश गर्ने गुणको हुन्छ ।

सेतीगेडी (श्वेतगुञ्जा)

अपरा श्वेतकाम्भोजी श्वेतगुञ्जा भिराटिका ।
काकादनी काकपीलुर्वक्त्रशल्या सितोच्चटा ॥२९॥
गुञ्जाद्वयं च तिक्तोष्णं बीजवान्तिकरं शिफा ।
शूलघ्नी विषहृत्पत्रं वश्ये श्वेता प्रशस्यते ॥३०॥

श्वेतकाम्भोजी, श्वेतगुञ्जा, भिराटिका, काकादनी, काकपीलु, वक्त्रशल्या र सितोच्चटा : यी सेतीगेडीका पर्यायवाची नाम हुन् । दुवै थरी गेडी तिता, उष्णवीर्यका, गेडाले बान्ता गराउने, जराले शूल नाश गर्ने र पातले विषविकार नाश गर्ने गुणका हुन्छन् । वशीकरणमा सेतीगेडी उपयोगी हुन्छ ।

मुला (मूलकम्)

मूलकं हरिपर्णं च मृत्तिकाक्षारमेव च ।
नीलकन्दं महाकन्दं रुचिष्यं हस्तिदन्तकम् ॥३१॥
मूलकं गुरु विष्टम्भि तीक्ष्णमामं त्रिदोषनुत् ।
तदेव स्विन्नं स्निग्धं च कटूष्णं कफवातनुत् ॥३२॥
त्रिदोषशमनं शुष्कं विषदोषहरं लघु ।

मूलक, हरिपर्ण, मृत्तिकाक्षार, नीलकन्द, महाकन्द, रुचिष्य र हस्तिदन्तक : यी मुलाका पर्यायवाची नाम हुन् । मुला पचाउन कठिन, कब्जियत गर्ने र तिक्खर स्वादको हुन्छ । जब यो चिल्लो हालेर पकाइन्छ तब यसले त्रिदोष नाश गर्दछ । मूलालाई उसिने पछि यो चिल्लो, पिरो, उष्णवीर्यको तथा

कफविकार र वातविकार नाश गर्ने गुणको हुन्छ । सुकेको मुला त्रिदोष शान्त पार्ने, विषविकार नाश गर्ने र पचाउन सहज हुने गुणको हुन्छ ।

हात्तीसुँडे मुला, प्युठाने मुला (चाणख्यमूलकम्)

चाणख्यमूलकं चान्यच्छालेयं मरुसम्भवम् ॥३३॥

शालामर्कटकं मिश्रं विष्णुगुप्तं मतं तथा ।

चाणख्यं मूलकं तिक्तं कटूष्णं रुच्यदीपनम् ॥३४॥

कफवातकृमीन्गुल्मं नाशयेद् ग्राहकं परम् ।

चाणख्यमूलक, शालेय, मरुसम्भव, शालामर्कटक, मिश्र र विष्णुगुप्त : यी प्युठाने मुलाका पर्यायवाची नाम हुन् । यो तितो, पिरो, उष्णवीर्यको, रुचिप्रद, दीपनी तथा कफविकार, वातविकार, कीरा र गुल्म नाश गर्ने एवं अति नै ग्राही गुणको हुन्छ ।

मूलाविशेष, ठूलो गान्टेमूला (गृञ्जन)

सङ्कलन : मोहन प्रसाद सापकोटा

तृतीयं मूलकं चान्यन्निर्दिष्टं तच्च गृञ्जनम् ॥३५॥

अटवीमूलकं पीतं तच्च नारदकन्दकम् ।

गृञ्जनं मधुरं तिक्तं विपाके कटुकं तथा ॥३६॥

पित्ताविरोधि कफहृद् गुरु स्याद्वातनाशनम् ।

गृञ्जन, अटवीमूलक, पीत र नारदकन्दक : यी ठूलो गान्टेमूलाका पर्यायवाची नामी हुन् । (कामत द्वयले यो प्युठाने मूलाको डल्ले जात हो भनेका छन्) । यो गुलियो, तितो, पचेपटि पिरो, पित्तविकार नगर्ने, कफविकार नाश गर्ने, पचाउन कठिन र वातविकार नाश गर्ने गुणको हुन्छ ।

सजिवन (शिगु)

शिगुर्हरितशाकश्च दीर्घको लघुपत्रकः ॥३७॥

अवदंशक्षमो दंशः प्रोक्तो मूलकपण्यपि ।

शोभाञ्जनस्तीक्ष्णगन्धो मुखभङ्गोऽथ शिगुकः ॥३८॥

श्वेतकः श्वेतमरिचो रक्तको मधुशिगूकः ।

शिग्रुस्तिक्तः कटुश्रोष्णः कफशोफसमीरजित् ॥३९॥
कृम्यामविषमेदोघ्नो विद्रधिप्लीहगुल्मनुत् ।

शिग्रु, हरितशाक, दीर्घक, लघुपत्रक, अवदंशक्षाम, दंश, मूलकपर्णी, शोभाञ्जन, तीक्ष्णगन्ध, मुखभङ्ग र शिग्रुक : यी सजिवनका पर्यायवाची नाम हुन् । सेतो सजिवनलाई श्वेतमरिच तथा रातो सजिवनलाई मधुशिग्रूक भनिन्छ । सजिवन तितो, पिरो, उष्णवीर्यको तथा कफविकार, सुजन र वातविकारलाई जित्ने गुणको हुन्छ । यसले कीरा, विषविकार, बोसोविकार, विद्रधि, फियोका रोग र गुल्म नाश गर्दछ ।

सर्सिउँ (सर्षप)

सर्षपः शुभ्रगौरस्तु सिद्धार्थो भूतनाशनः ॥४०॥
कटुस्नेहो ग्रहघ्नस्तु कटुको राजिकाफलः ।
गौरसर्षपकोऽत्युष्णो रक्षोघ्नः कफवातजित् ॥४१॥
कृम्यामकण्डूकुष्ठघ्नः श्रुतिशीर्षानिलार्तिजित् ।
तद्वद्रक्तस्तु सिद्धार्थस्तिक्तः स्निग्धोष्णकः कटुः ॥४२॥

सर्षप, शुभ्रगौर, सिद्धार्थ, भूतनाशन, कटुस्नेह, ग्रहघ्न, कटुक र राजिकाफल : यी सर्सिउँका पर्यायवाची नाम हुन् । सेतो सर्सिउँ अति उष्णवीर्यको, राक्षसबाधा हटाउने तथा कफविकार र वातविकारलाई जित्ने गुणको हुन्छ । यसले कीरा, आमविकार, लुतो र कुष्ठ नाश गर्दछ तथा कानका रोग, टाउकाका रोग र वातविकारलाई जित्दछ । यसैगरी रातो सर्सिउँ तितो, चिल्लो, उष्णवीर्यको र पिरो हुन्छ ।

रायो वा कालो रायो (राजिका)

राजक्षवक इत्युक्ता राजिका कृष्णसर्षपः ।
क्षुधाभिजनकश्चैव सा चोक्ता राजसर्षपः ॥४३॥
राजिका कटुतिक्तोष्णा कृमिश्लेष्महरा परा ।
रुचिष्या पित्तला प्रोक्ता दृष्टिबस्तिप्रदूषिणी ॥४४॥

राजक्षवक, राजिका, कृष्णसर्षप, क्षुधाभिजनक र राजसर्षप : यी कालो रायोका पर्यायवाची नाम हुन् । यो पिरो, तितो, उष्णवीर्यको, प्रभावकारी तरिकाले कीरा र कफविकार नाश गर्ने, रुचिप्रद, पित्तविकार गर्ने तथा दृष्टि र मूत्राशयलाई प्रदूषित पार्ने गुणको हुन्छ ।

रोहिष भार (भूतृण)

भूतृणो रोहिषो भूतिभूतिकोऽथ कुटुम्बकः ।
मालातृणः प्रलम्बश्च च्छत्रोऽतिच्छत्रकस्तथा ॥४५॥
भूतृणो लघुरुष्णश्च रूक्षः श्लेष्मामयापहः ।
अस्य प्रयोगः सहसा हन्ति जन्तून् समुद्धतान् ॥४६॥
(अन्यच्च- भूतृणः कटुतिक्तश्च वातसन्ताननाशनः ।
हन्ति भूतग्रहावेशान्विषदोषांश्च दारुणान् ॥) ।

भूतृण, रोहिष, भूति, भूतिक, कुटुम्बक, मालातृण, प्रलम्ब, छत्र र अतिच्छत्रक : यी रोहिष भारका पर्यायवाची नाम हुन् । यो पचाउन सहज, उष्णवीर्यको, रुखो र कफविकार नाशगर्ने गुणको हुन्छ । यसको प्रयोगले तत्काल दुष्ट कीरा मर्दछ । अन्यत्र भनिएको छ-यो पिरो, तितो, वातविकारका खलक नाश गर्ने तथा भूतबाधा, ग्रहबाधा र डरलाग्दो विषविकार समेत नाश गर्ने गुणको हुन्छ ।

तुलसी

सुरसा तुलसी ग्राम्या सुरभी बहुमञ्जरी ।
अपेतराक्षसी गौरी भूतघ्नी देवदुन्दुभिः ॥४७॥
तुलसी लघुरुष्णा च रूक्षा कफविनाशिनी ।
कृमिदोषं निहन्त्येषा रुचिकृद्बहिदीपनी ॥४८॥

सुरसा, तुलसी, ग्राम्या, सुरभी, बहुमञ्जरी, अपेतराक्षसी, गौरी, भूतघ्नी र देवदुन्दुभिः : यी तुलसीका पर्यायवाची नाम हुन् । यो पचाउन सहज उष्णवीर्यको, रुखो, कफविकार र कीराका दोष नाश गर्ने, रुचिप्रद र पाचकाशिलाई बाल्ने गुणको हुन्छ ।

मरुवा (जम्बीर)

जम्बीरः खरपत्रश्च फणी चोक्तः फणिज्जकः ।
मरुत्तको मरुबको मरुर्मरुबकस्तथा ॥४९॥
फणिज्जको हिमस्तिक्तो रूक्षः कफविनाशनः ।
रक्तहारी तथा हन्ति सुघोरं कृत्रिमं विषम् ॥५०॥
मरुबकः कफहरो रुच्यो मुखसुगन्धकृत् ।

जम्बीर, खरपत्र, फणी, फणिज्जक, मरुत्तक, मरुबक, मरु र मरुबक : यी मरुवाका पर्यायवाची नाम हुन् । यो शीतवीर्यको, तितो, रुखो तथा कफविकार, रक्तविकार र कडा खालको विषविकार नाश गर्ने गुणको हुन्छ । यसले कफविकार नाश गर्दछ, रुचि जगाउँदछ र मुखलाई सुगन्धित बनाउँदछ ।

तुलसीविशेष (अर्जक)

कुठेरकस्तु वैकुण्ठः क्षुद्रपर्णोऽर्जकस्तथा ॥५०॥
वटपत्रः कुठेरोऽन्यः पर्णासो बिल्वगन्धकः ।
अर्जकः शीतलस्तिक्तः श्लेष्मामयविनाशनः ॥५१॥
द्विविधं च विषं हन्याद् दुष्टरक्तविनाशनः ।

कुठेरक, वैकुण्ठ, क्षुद्रपर्ण र अर्जक : यी एक थरी तथा वटपत्र, पर्णास र बिल्वगन्धक : यी अर्को थरी तुलसीविशेषका पर्यायवाची नाम हुन् । अर्जक शीतवीर्यको, तितो तथा कफविकार, दुवैथरी विषविकार र रक्तविकार नाश गर्ने गुणको हुन्छ ।

वनतुलसी ? (शालुकः)

कुठेरकस्तृतीयोऽन्यः शालुकः कृष्णशालुकः ॥५२॥
कृष्णार्जकः कालमालः करालः कृष्णमल्लिका ।
त्रयोऽर्जकाः कटूष्णाः स्युः कफवातामयापहाः ॥५३॥
नेत्रामयहरा रुच्याः सुखप्रसवकारकाः ।
कृत्रिमं च विषं हन्यु रक्तदोषविनाशनाः ॥५४॥

कुठेरक, शालुक, कृष्णशालुक, कृष्णार्जक, कालमाल, कराल र कृष्णमल्लिका : यी तेश्रो थरी तुलसीविशेषका पर्यायवाची नाम हुन् । यी तीन थरी अर्जक पिरा, उष्णवीर्यका तथा कफविकार, वातविकार र आँखाका रोग नाश गर्ने गुणका हुन्छन् । यी रुचिप्रद, सुखपूर्वक सुत्केरी गराउने तथा कृत्रिम विषविकार र रक्तविकार नाश गर्ने गुणका पनि हुन्छन् ।

सेतो तुलसी ? बन बाबरी ? (सुमुखः)

सुमुखः सुप्रशस्तश्च गरघ्नः कटुपत्रकः ।
दोषोत्क्लेशी सुवक्त्रश्च स्वस्वः सुवदनो मतः ॥५५॥
पित्तकृत्पाश्वर्शूलघ्नः सुमुखः समुदाहृतः ।
कफानिलविषश्वासकासदौर्गन्ध्यनाशनः ॥५६॥

सुमुख, सुप्रशस्त, गरघ्न, कटुपत्रक, दोषोत्क्लेशी, सुवक्त्र, स्वस्व र सुवदना : यी बाबरीविशेषका पर्यायवाची नाम हुन् । यो पित्तविकार गर्ने तथा कोखाको शूल, कफविकार, वातविकार, विषविकार, दम, खोकी र दुर्गन्ध नाश गर्ने गुणको हुन्छ ।

सङ्कलन : मोहन प्रसाद सापकोटा
रायो (आसुरी)

आसुरी राजिका राजी कृष्णका रक्तसर्षपः ।
तीक्ष्णगन्धा चातितीक्ष्णा क्षुवकः क्षवकः क्षवः ॥५७॥
राजिका कटुतिक्तोष्णा कुष्ठघ्नी कफगुल्मजित् ।
निद्राकरी शोफहरी ग्रहक(हा?)री च सा स्मृता ॥५८॥

आसुरी, राजिका, राजी, कृष्णका, रक्तसर्षप, तीक्ष्णगन्धा, अतितीक्ष्णा, क्षुवक, क्षवक र क्षव : यी रायोका पर्यायवाची नाम हुन् । यो पित्त, तित्तो, उष्णवीर्यको, कुष्ठ नाशक, कफविकार र गुल्मलाई जित्ने, निद्रा लगाउने, सुजन नाश गर्ने तथा ग्रहबाधा गर्ने (हटाउने ?) गुणको हुन्छ ।

करेलो (काण्डीरः)

काण्डीरः काण्डकटुको नासासविदनः पटुः ।
उग्रकाण्डस्तोयवल्ली कारवल्ली सुकाण्डकः ॥५९॥

काण्डीरः कटुतिक्तोष्णः सरो दुष्टव्रणार्तिजित् ।
लूतागुल्मोदरप्लीहशूलमन्दाग्निनाशनः ॥६०॥

काण्डीर, काण्डकटुक, नासासंवेदन, पटु, उग्रकाण्ड, तोयवल्ली, कारवल्ली र सुकाण्डक : यी करेलोका पर्यायवाची नाम हुन् । यो पिरो, तितो, उष्णवीर्यको, मलमूत्रलाई तलतिर सार्ने, खराब खटिरालाई जित्ने तथा माकुराको विषविकार, गुल्म, पेटका रोग, फियोका रोग, शूल र कमजोर पाचन शक्तिको समस्या नाश गर्ने गुणको हुन्छ ।

जलपिप्ला (जलपिप्पली)

जलपिप्पल्यभिहिता शारदी तोयपिप्पली ।
मत्स्यादनी मत्स्यगन्धा लाङ्गली शकुलादनी ॥६१॥
जलपिप्पलिका तिक्ता कषाया कफपित्तजित् ।
श्वासास्रविषदाहार्तिभ्रममूर्च्छातृषापहा ॥६२॥

जलपिप्पली, शारदी, तोयपिप्पली, मत्स्यादनी, मत्स्यगन्धा, लाङ्गली र शकुलादनी : यी जलपिप्लाका पर्यायवाची नाम हुन् । यो तितो, टर्पो, कफविकारलाई जित्ने तथा दम, रक्तविकार, विषविकार, डाह, भ्रम, बेहोसीपन र तिर्खा नाश गर्ने गुणको हुन्छ ।

लसुन (रसोन)

रसोनो लशुनोऽरिष्टो म्लेच्छकन्दो महौषधम् ।
महाकन्दो रसोनोऽन्यो गृञ्जनो दीर्घपत्रकः ॥६३॥
रसोन उष्णः कटुपिच्छिलश्च स्निग्धो गुरुः स्वादुरसोऽतिबल्यः ।
वृष्यश्च मेधास्वरवर्णचक्षुर्भग्नास्थिसन्धानकरः सुतीक्ष्णः ॥६४॥
हृद्रोगजीर्णज्वरकुक्षिशूलविबन्धगुल्मारुचिकृच्छ्रशोफान् ।
दुर्नामकुष्ठानिलसादजन्तु कफामयान्हन्ति महारसोनः ॥६५॥

रसोन, लशुन, अरिष्ट, म्लेच्छकन्द र महौषध यी लसुनका तथा महाकन्द, गृञ्जन र दीर्घपत्रक : यी छयापीका पर्यायवाची नाम हुन् । लसुन उष्णवीर्यको, विरो, लेस्याइलो, चिल्लो, पचाउन किठन, गुलियो, अति बलदायक, वीर्यवर्धक, दिमागको ग्रहण गर्ने क्षमता बढाउने, स्वरका लागि हितकर,

शरीरको वर्णमा निखार लेराउने, आँखाका लागि हितकर, भौँचिएका हाड जोड्ने, तिक्खर तथा मुटुका रोग, अजीर्ण, जरो, कोखाको शूल, कब्जियत, गुल्म, अरुचि, कृच्छ्र, सुजन, हर्सा, कुष्ठ, वातविकार, कीरा र कफविकार नाशगर्ने गुणको हुन्छ ।

गाजर (गर्जरम्)

गर्जरं पिङ्गलं मूलं पीतकं मूलकं तथा ।
स्वादुमूलं सुपीतं च नागरं पीतमूलकम् ॥६६॥
गर्जरं मधुरं रुच्यं किञ्चित्कटु कफापहम् ।
आध्मानकृमिशूलघ्नं दाहपित्तज्वरापहम् ॥६७॥

गर्जर, पिङ्गलमूल, पीतकमूलक, स्वादुमूल, सुपीत, नागर र पीतमूलक : यी गाजरका पर्यायवाची नाम हुन् । यो गुलियो, रुचिप्रद, केही पित्त र कफविकार, आध्मान, कीरा, शूल, डाह र पित्तजन्य जरो नाश गर्ने गुणको हुन्छ ।

प्याज (पलाण्डु)

पलाण्डुर्यवनेष्टश्च सुकन्दो मुखदूषणः ।
हरितोऽन्यः पलाण्डुश्च लतार्को दुर्दुमः स्मृतः ॥६८॥
पलाण्डुस्तद्गुणैरन्यूनो विपाके मधुरस्तु सः ।
कफं करोति नो पित्तं केवलोऽनिलनाशनः ॥६९॥
ऊलिः पञ्जरसाऽपि स्यादुरूष्णा चाम्लवर्जिता ।
वायुशोफारुचिश्लेष्मकृमिहृद्रोगनाशिनी ॥७०॥
पलाण्डुः कटुको बल्यो गुरुर्वातास्रपित्तजित् ।
अन्यः क्षीरपलाण्डुश्च वृष्यो मधुरपिच्छलः ॥७१॥

पलाण्डु, यवनेष्ट, सुकन्द र मुखदूषण : यी प्याजका तथा हरित, पलाण्डु, लतार्क र दुर्दुम : यी प्याजविशेषका पर्यायवाची नाम हुन् । प्याज लसुन जस्तै भएपनि यसमा केही कम गुण हुन्छन् । यो पचेपछि गुलियो हुन्छ । यसले कफविकार गर्दछ, पित्तविकार गर्दैन केवल वातविकार मात्र नाश गर्दछ । ऊलि (प्याज) मा अमिलो बाहेकका पाँच रस हुन्छन् । यो पचाउन कठिन र उष्णवीर्यको हुन्छ । प्याजले वातविकार, सुजन, अरुचि, कफविकार (?), कीरा र मुटुका रोग नाश गर्दछ ।

प्याजविशेष पिरो, बलदायक, पचाउन कठिन, वातविकार, रक्तविकार र पित्तविकारलाई जित्ने गुणको हुन्छ । अर्को एक थरी क्षीरपलाण्डु नामक प्याज (सेतो प्याज) हुन्छ । यो वीर्यवर्धक, गुलियो र लेस्याइलो हुन्छ ।

केरा (कदली)

कदली सुकुमारा च रम्भा स्वादुफला मता ।
दीर्घपत्रा च निःसारा मोचा हस्तिविषाणिका ॥७२॥
कदली मधुरा शीता रम्या पित्तहरा मृदुः ।
कदल्यास्तु फलं स्वादु कषायं नातिशीतलम् ॥७३॥
रक्तपित्तहरं वृष्यं रुच्यं कफकरं गुरु ।
कन्दस्तु वातलो रूक्षः शीतोऽसृक्कृमिकुष्ठनुत् ॥७४॥

कदली, सुकुमारा, रम्भा, स्वादुफला, दीर्घपत्रा, निःसारा, मोचा र हस्तिविषाणिका : यी केराका पर्यायवाची नाम हुन् । यो गुलियो, शीतवीर्यको, राम्रो, पित्तविकार नाशक र कोमल हुन्छ । केराको फल गुलियो, टर््रो, धेरै शीतल पनि नगर्ने, रक्तपित्त नाशगर्ने, वीर्यवर्धक, रुचिप्रद, कफविकार गर्ने र पचाउन कठिन हुने गुणको हुन्छ । केराको गानो वातविकार गर्ने, रुखो, शीतवीर्यको तथा रक्तविकार, कीरा र कुष्ठ नाश गर्ने गुणको हुन्छ ।

काठेकेरा (काष्ठकदली)

द्वितीया काष्ठकदली श्वेताऽरण्यकदल्यपि ।
विषघ्नी कदली चापि पाषाणकदली तथा ॥७५॥
स्यात्काष्ठकदली रुच्या रक्तपित्तहरा हिमा ।
गुरुर्मन्दाग्निजननी दुर्जरा मधुरा परा ॥७६॥

काष्ठकदली, श्वेता, अरण्यकदली, विषघ्नी, कदली र पाषाणकदली : यी काठेकेराका पर्यायवाची नाम हुन् । यो रुचिप्रद, रक्तपित्त नाशक, शीतवीर्यको, पचाउन कठिन, पाचनशक्तिलाई कमजोर बनाउने, ढिलो पच्ने र अति नै गुलियो स्वादको हुन्छ ।

सेतो फुल्ने सिमाली (सिन्दुवार)

सिन्दुवारः श्वेतपुष्पः सिन्दुकः सिन्दुवारकः ।
नीलपुष्पः शीतसहो निर्गुण्डी नीलसिन्दुका ॥७७॥
निर्गुण्डी कटुतिक्तोष्णा कृमिकुष्ठरुजापहा ।
वातश्लेष्मप्रशमनी प्लीहगुल्मारुचीर्जयेत् ॥७८॥

सिन्दुवार, श्वेतपुष्प, सिन्दुक र सिन्दुवारक : यी सेतो सुतो फूल फुल्ने सिमालीका तथा नीलपुष्प, शीतसह, निर्गुण्डी र नीलसिन्दुका : यी नीलो फूल फुल्ने सिमालीका पर्यायवाची नाम हुन् । सिमाली पिरो, तितो, उष्णवीर्यको, कीरा र कुष्ठ नाश गर्ने, वातविकार र कफविकार शान्त पार्ने तथा फियोका रोग, गुल्म र अरुचीलाई जित्ने गुणको हुन्छ ।

फुस्रो फूल फुल्ने सिमाली (शेफालिका)

शेफालिकाऽन्या निर्गुण्डी वनजा नीलमञ्जरी ।
कृष्णसञ्ज्ञो विषघ्नश्च पवित्रो गिरिसिन्दुकः ॥७९॥
शुक्लाऽन्या श्वेतसुरसा भूतकेशी च कथ्यते ।

शेफालिका, निर्गुण्डी, वनजा, नीलमञ्जरी, कृष्णसञ्ज्ञ, विषघ्न, पवित्र र गिरिसिन्दुक : यी अर्को जातको सिमालीका तथा श्वेतसुरसा र भूतकेशी : यी अर्को थरी सेतो सिमालीका पर्यायवाची नाम हुन् ।

अपराजिता

अश्वक्षुरा श्वेतपुष्पी श्वेता च गिरिकर्णिका ॥८०॥
कटभी श्वेतानामा च श्वेतस्पन्दाऽपराजिता ।
नीलपुष्पी महाश्वेता गिरिकर्णी गवादनी ॥८१॥
वल्ली चात्युग्रगन्धा च नीलस्पन्दा प्रकीर्तिता ।
(गिरिकर्णी हिमा तिक्ता पित्तोपद्रवनाशिनी ।
विषनेत्रविकारांश्च हन्ति कुष्ठरुजापहा ॥)
गिरिकर्णीद्वयं तिक्तं पित्तोपद्रवनाशनम् ॥८२॥

चक्षुष्यं विषदोषघ्नं त्रिदोषशमनं च तत् ।

अश्वक्षुरा, श्वेतपुष्पी, श्वेता, गिरिकर्णिका, कटभी, श्वेतनामा, श्वेतस्पन्दा र अपराजिता : यी सेतो अपराजिताका तथा नीलपुष्पी, महाश्वेता, गिरिकर्णी, गवादनी, वल्ली, अत्युग्रगन्धा र नीलस्पन्दा : यी नीलो अपराजिताका पर्यायवाची नामहरू हुन् । (सेतो अपराजिता शीतवीर्यको, तीतो, पित्तविकार नाशक, विषविकार नाशक, आँखाका विकार नाशक र घाँटीका रोग नाशक हुन्छ ।) दुवै थरी अपराजिता तीता, पित्तविकार नाशक, आँखाका लागि लाभदायक, विषविकार नाशक र त्रिदोषलाई शान्तपार्ने गुणका हुन्छन् ।

चप्रा लाहा, माहुर ? (जन्तुकारी)

जन्तुकारी जन्तुकृष्णा जतुका रञ्जनी स्मृता ॥८३॥
जननी चैव संहर्षा जन्तुका चक्रवर्तिनी ।
जन्तुका शिशिरा तिक्ता रक्तदोषनिबर्हिणी ॥८४॥
पित्तोपशमनी हन्ति विषयोगं प्रयोगतः ।

सङ्कलन : मोहन प्रसाद सापकोटा

जन्तुकारी, जन्तुकृष्णा, जतुका, रञ्जनी, जननी, संहर्षा, जन्तुका र चक्रवर्तिनी : यी चप्रा लाहाका पर्यायवाची नाम हुन् । यो शीतवीर्यको तीतो, रक्तविकार नाशगर्ने, पित्तविकार शान्त पार्ने र विषविकार नाश गर्ने गुणको हुन्छ ।

स्थलकमल (पद्मचारिणी)

पद्मचारिण्यतिचरा पद्मा पद्मवतीति च ॥८५॥
चारटी गन्धमूला च लक्ष्मीः श्रेष्ठा सुपुष्करा ।
पद्मा सुगन्धा तिक्ता च मोहापस्मारनाशिनी ॥८६॥

पद्मचारिणी, अतिचरा, पद्मा, पद्मवती, चारटी, गन्धमूला, लक्ष्मी, श्रेष्ठा र सुपुष्करा : यी थलकमलका पर्यायवाची नाम हुन् । यो बास्नादार, तितो तथा मोह र क्षाररोग नाशगर्ने गुणको हुन्छ ।

रानीगीठो (गृष्टि)

गृष्टिर्विष्वक्सेनकान्ता वाराही गृष्टिका च सा ।
माधवी सौकरी कान्तिः कान्ता च वनमालिनी ॥८७॥
कान्ता सौकरिका तित्ता कुष्ठकृमिगरार्तिजित् ।
वाराह्याः कफहा कन्दः कटुको रसपाकतः ॥८८॥
हिमकुष्ठकृमिहरो हृद्यो बल्यो रसायनः ।

गृष्टि, विष्वक्सेनकान्ता, वाराही, गृष्टिका, माधवी, सौकरी, कान्ति, कान्ता र वनमालिनी : यी रानीगीठोका पर्यायवाची नाम हुन् । यो तितो, शुरुमा र पचेपछि पिरो, शीतवीर्यको, कीरा र कुष्ठ नाश गर्ने, मुटुका लागि हितकर, बलदायक र रसायनी गुणको हुन्छ ।

मांसरोहिणी

मांसरोहिण्यतिरुहा वृत्ता चर्मकषा च सा ॥८९॥
विकसा मांसरोहा च रुहा रक्ता प्रकीर्तिता ।
विकसा कटुका तित्ता तथोष्णा स्वरसादनुत् ॥९०॥
रसायनप्रयोगाश्च सर्वरोगहरा मता ।
कषाया ग्राहिणी वर्ण्या रक्तपित्तप्रसादनी ॥९१॥
रोहिणीयुगलं शीतं कषायं कृमिनाशनम् ।
कण्ठशुद्धिकरं रुच्यं वातदोषनिषूदनम् ॥९२॥

मांसरोहिणी, अतिरुहा, वृत्ता र चर्मकषा तथा विकसा, मांसरोहा, रुहा र रक्ता : यी दुई थरी मांसरोहिणीका पर्यायवाची नाम हुन् । विकसा पिरो, तितो, उष्णवीर्यको, स्वर बसेको ठिक गर्ने तथा रसायनमा प्रयोग गर्नाले अनेक थरी रोग नाश गर्ने गुणको हुन्छ । दोश्रो थरी टर्रो, ग्राही, शरीरको वर्णमा निखार लेराउने र रक्तपित्तलाई प्रशोधन गर्ने गुणको हुन्छ । दुवै थरी रोहिणी शीतवीर्यका, टर्रा, कीरा नाशक, घाँटी सफा गर्ने, रुचिप्रद र वातविकारलाई नाश गर्ने गुणका हुन्छन् ।

ऐजेरु (वन्दाक)

वन्दाका स्याद्वक्षरुहा शेखरी कामरूपका ।

वृक्षादनी तरुरुहा कामिनी पद्मरूपिणी ॥९३॥
वन्दाकः शीतलः पाके ग्राही स्याद्गुणरोपणः ।

वन्दाका, वृक्षरुहा, शेखरी, कामरूपका, वृक्षादनी, तरुरुहा, कामिनी र पद्मरूपिणी : यी ऐजेरुका पर्यायवाची नामहरू हुन् । यो शीतवीर्यको, पचेपछि ग्राहि र घाउखटिरा भर्ने गुणको हुन्छ ।

हुरहुरे (सुवर्चला)

सुवर्चलाऽऽदित्यकान्ता सूर्यभक्ता सुखोद्भवा ॥९४॥
मण्डूकपर्णी मण्डूकी वरदाऽऽदित्यवल्ल्यपि ।
आदित्यभक्ता कटुका तथोष्णा स्फोटकापहा ॥९५॥
सरस्वती सरा स्वर्या रसायनविधौ हिता ।

सुवर्चला, आदित्यकान्ता, सूर्यभक्ता, सुखोद्भवा, मण्डूकपर्णी, मण्डूकी, वरदा र आदित्यवल्ली : यी हुरहुरेका पर्यायवाची नाम हुन् । यो पिरो, उष्णवीर्यको, खटिरा नाश गर्ने, बोली र स्वरका लागि हितकर तथा रसायनका कार्यमा उपयोगी हुन्छ ।

ब्राह्मी

ब्राह्मी सौम्या विनिर्दिष्टा दिव्यतेजा महौषधी ॥९६॥
कपोतवेगा त्वष्टा च सैव ब्रह्मसुवर्चला ।
ब्राह्मी सौम्या रसे तित्ता शोफपाण्डुज्वरापहा ॥९७॥
दीपनी कुष्ठकण्डूघ्नी प्लीहवातबलासजित् ।

ब्राह्मी, सोमा, दिव्यतेजा, महौषधी, कपोतवेगा, त्वष्टा र ब्रह्मसुवर्चला : यी ब्राह्मीका पर्यायवाची नाम हुन् । यो तीतो तथा सुजन, पाण्डु र जरो नाशक हुन्छ एवं दीपनी हुन्छ । यसले कुष्ठ, लुतो, फियोका रोग, वातविकार र कफविकारलाई जित्दछ ।

फ्याक्सेकन्द वा नाकुली (नाकुली)

नाकुली सर्पगन्धा च सुगन्धा भोगिगन्धिका ॥९८॥

सैव सर्पसुगन्धा च तथा विरिज(चीरित)पत्रिका ।
नाकुली कटुरुष्णा स्यात्तित्ताऽपि परिकीर्तिता ॥९९॥
मूषकस्य विषं हन्ति कृमिदोषविनाशिनी ।

नाकुली, सर्पगन्धा, सुगन्धा, भोगिगन्धिका, सर्पसुगन्धा र विरिज(चीरित)पत्रिका : यी नाकुलीका पर्यायवाची नाम हुन् । यो पिरो, उष्णवीर्यको, तितो, मुसाको विषविकार नाश गर्ने र कीराका दोष नाश गर्ने गुणको हुन्छ ।

गन्धनाकुली (महासुगन्धा)

अन्या महासुगन्धा च सुवहा गन्धनाकुली ॥१००॥
सर्पाक्षी नकुलेष्टा च च्छत्राकी विषमर्दिनी ।
सर्पाक्षी कटुका तित्ता तथा च कृमिरोगजित् ॥१०१॥
वृश्चिकोद्भवसर्पादिविषघ्नी व्रणरोपणी ।

महासुगन्धा, सुवहा, गन्धनाकुली, सर्पाक्षी, नकुलेष्टा, छत्राकी र विषमर्दिनी : यी गन्धनाकुलीका पर्यायवाची नाम हुन् । यो पिरो, तितो, कीरालाई जित्ने, बिच्छी र सर्पको विषविकार नाशगर्ने तथा घाउ भर्ने गुणको हुन्छ ।

बाटुल्पातेविशेष (वृद्धदारुक)

वृद्धदारुक आवेगी जुङ्गको दीर्घवालुकः ॥१०२॥
वृद्धः कोटरपुष्पी स्यादजान्त्री छगलान्त्र्यपि ।
वृद्धदारुः कटुस्तिक्तस्तथोष्णः कपवातजित् ॥१०३॥
श्वयथुकृमिमेहासवातोदरहरः परः ।

वृद्धदारुक, आवेगी, जुङ्गको, दीर्घवालुक, वृद्ध, कोटरपुष्पी, अजान्त्री र छगलान्त्री : यी वृद्धदारुकका पर्यायवाची नाम हुन् । यो पिरो, तितो, उष्णवीर्यको, कफविकार र वातविकारलाई जित्ने तथा सुजन, कीरा, प्रमेह, रक्तविकार, वातविकार र पेटका रोग नाश गर्ने गुणको हुन्छ ।

लज्जावती (रक्तपादी)

रक्तपादी शमीपत्रा समझाञ्जलिकारिका ॥१०४॥
नमस्कारी गन्धकारी स्पर्शसङ्कोचपर्णिका ।
रक्तपादी कटुः शीता पित्तातीसारनाशिनी ॥१०५॥
शोफदाहश्रमश्वासव्रणकुष्ठकफास्रनुत् ।

रक्तपादी, शमीपत्रा, समझा, अञ्जलिकारिका, नमस्कारी, गन्धकारी र स्पर्शसङ्कोचपर्णिका : यी लज्जावतीका पर्यायवाची नाम हुन् । यो पिरो, शीतवीर्यको तथा पित्तविकार, अतिसार, सुजन, डाह, थकाई, दम, खटिरा, कुष्ठ, कफविकार र रक्तविकार नाशगर्ने गुणको हुन्छ ।

कानेसिन्को (विषग्रन्थि)

रक्तपाद्यपरा प्रोक्ता विषग्रन्थिस्त्रिपाद्यपि ॥१०६॥
हंसपादी हंसपदी घृतमण्डलिका च सा ।
रक्तप्रसादनी शीता दाहवीसर्पनाशिनी ॥१०७॥
व्रणप्ररोपणी हंसपदिका हंसपादिका ।

रक्तपादी, विषग्रन्थि, त्रिपादी, हंसपादी, हंसपदी र घृतमण्डलिका : यी कानेसिन्कोका पर्यायवाची नाम हुन् । यो रगत प्रशोधक, शीतवीर्यको, डाह र वीसर्प नाशक र घाउ भर्ने गुणको हुन्छ ।

शङ्खपुष्पी

शङ्खपुष्पी कम्बुपुष्पी शङ्खाह्वा कम्बुमालिनी ॥१०८॥
तिलकी शङ्खकुसुमा मेध्या वनविलासिनी ।
शङ्खिनी कटुतिक्तोष्णा कासपित्तबलासजित् ॥१०९॥
विषापस्मारभूतादीन्हन्ति मेध्या रसायनी ।

शङ्खपुष्पी, कम्बुपुष्पी, शङ्खाह्वा, कम्बुमालिनी, तिलकी, शङ्खकुसुमा, मेध्या र वनविलासिनी : यी शङ्खपुष्पीका पर्यायवाची नाम हुन् । यो पिरो, तीतो, उष्णवीर्यको तथा खोकी पित्तविकार र

कफविकारलाई जित्ने गुणको हुन्छ । यसले विषविकार, छारेरोग र भूतबाधा नाश गर्दछ । यसले दिमागको ग्रहण गर्ने क्षमता बढाउँदछ । यो रसायनी हुन्छ ।

नीलो शङ्खपुष्पी (विष्णुक्रान्ता)

विष्णुक्रान्ता नीलपुष्पी सतीनच्छर्दिका तथा ॥११०॥

शुक्लपुष्पा भूमिलग्रा ह्रस्वा सा शङ्खपुष्पिका ।

सूक्ष्मपत्रान्तरा ज्ञेया सर्पाक्षी रक्तपुष्पिका ॥१११॥

विष्णुक्रान्ता कटुस्तिक्ता कफवातामयापहा ।

विष्णुक्रान्ता, नीलपुष्पी र सतीनच्छर्दिका : यी नीलो शङ्खपुष्पिका, शुक्लपुष्पा, भूमिलग्रा र ह्रस्वा शङ्खपुष्पिका : यी अर्को थरी शङ्खपुष्पिका तथा सूक्ष्मपत्रा, सर्पाक्षी र रक्तपुष्पिका : यी अर्को थरी शङ्खपुष्पिका पर्यायवाची नाम हुन् । विष्णुक्रान्ता पिरो, तितो तथा कफविकार र वातविकार नाश गर्ने गुणको हुन्छ ।

लुँडे (तण्डुलीयक)

सङ्कलन : मोहनप्रसाद सापकोटा

तण्डुलीयस्तु उद्दिष्टस्तण्डुलस्तण्डुलीयकः ॥११२॥

भण्डीरस्तण्डुलीबीजो मेघनादो घनस्वनः ।

तण्डुलीयो विषघ्नश्च रूक्षः शीततर शुचिः ॥११३॥

मधुरो रसपाकाभ्यां रक्तपित्तापघातकः ।

तण्डुलीय, तण्डुल, तण्डुलीयक, भण्डीर, तण्डुलीबीज, मेघनाद र घनस्वन : यी लुँडेका पर्यायवाची नाम हुन् । यो विषविकार नाश गर्ने, रुखो, अती शीतवीर्यको, पवित्र, शुरुमा र पचेपछि गुलियो तथा रक्तपित्त नाश गर्ने गुणको हुन्छ ।

ठूलो ताप्रे (कासमर्द)

कासमर्दोऽरिमर्दश्च कासारिः कर्कशस्तथा ॥११४॥

कालः कण्टक इत्युक्तः स च स्यात्कासमर्दकः ।

कासमर्दः सुतिक्तः स्यान्मधुरः कफवातजित् ॥११५॥

विशेषतः पित्तहरः पाचनः कण्ठशोधनः ।

कासमर्द, अरिमर्द, कासारि, कर्कश, काल, कण्टक र कासमर्दक : यी ठूलो ताप्रेका पर्यायवाची नाम हुन् । यो अति तितो, गुलियो, कफविकार वातविकारलाई जित्ने, विशेषगरी पित्तविकार नाश गर्ने, पाचनी र घाँटीलाई प्रशोधन गर्ने गुणको हुन्छ ।

उखु (इक्षु)

इक्षुः कर्कोटको वंशः कान्तारो वेणुनिस्वनः ॥११६॥

इक्षुरन्यः पौण्ड्रकस्तु रसालः सुकुमारकः ।

इक्षुः सरो गुरुः स्निग्धो बृंहणः कफमूत्रकृत् ॥११७॥

वृष्यः शीतः पवनजिद्भुक्ते वातप्रकोपनः ।

अन्यः खरकशाली स्यादिक्षुयोनीक्षुबालिका ॥११८॥

तथाऽन्यश्चेक्षुगन्धः स्यादिक्षुरः कोकिलाक्षकः ।

अतीव मधुरो मूले मध्ये मधुर एव च ॥११९॥

अग्रे त्वचि च विज्ञेय इक्षूणां लवणो रसः ।

इक्षुयुग्मं रसे स्वादु पित्तघ्नं वृष्यशीतलम् ॥१२०॥

इक्षु, कर्कोटक, वंश, कान्तार र वेणुनिस्वन यी उखुका पर्यायवाची नाम हुन् । पौण्ड्रक, रसाल र सुकुमारक : यी अर्को थरी उखुका पर्यायवाची नाम हुन् । उखु मलमूत्रलाई तलतिर सार्ने, पचाउन कठिन, चिल्लो, पौष्टिक तथा कफविकार मूत्र गराउने गुणको हुन्छ । यो वीर्यवर्धक, शीतवीर्यको, वातविकारलाई जित्ने तथा खाना खानासाथ खाए वातविकार गर्ने गुणको हुन्छ । खरकशाली, इक्षुयोनी र इक्षुबालिका : यी अर्को जातको उखुका पर्यायवाची नाम हुन् । इक्षुगन्ध, इक्षुर र कोकिलाक्षक : यी अर्को थरी उखुका पर्यायवाची नाम हुन् । उखुको फेदमा अति गुलियो, बीचको भागमा गुलियो तथा टुप्पो र बोक्रा नुनिलो हुन्छ । दुवै थरी उखु गुलिया, पित्तविकार नाशक, वीर्यवर्धक र शीतवीर्यका हुन्छन् ।

सक्खर (गुड)

गुडः स्यादिक्षुसारश्च मधुरो रसपाकजः ।

गुडः समधुरः क्षारो गुरूष्णः कफवातनुत् ॥१२१॥

अहितः पित्तरक्ते च जीर्णश्चैव रसायनः ।

गुड, इक्षुसार, मधुर र रसपाकज : यी सक्खरका पर्यायवाची नाम हुन् । यो गुलियो, क्षारयुक्त, पचाउन किठन, उष्णवीर्यको, कफविकार र वातविकार नाश गर्ने तथा पित्तविकार र रक्तविकारमा हित नगर्ने गुणको हुन्छ । पुरानो सक्खर रसायनी हुन्छ ।

काँस भार (काश)

काशः काण्डेक्षुरुद्दिष्टः काकेक्षुर्वायसेक्षुकः ॥१२२॥
इक्ष्वारिकेक्षुकाण्डश्च स चैवेक्षुरकः स्मृतः ।
श्वेतचामरपुष्पश्च तथेक्षुकुसुमश्च सः ॥१२३॥
काशः स्वादुः रसे तिक्तो विपाके वीर्यतो हिमः ।
तर्पणो बलकृद्वृष्यः श्रमशोषक्षयापहः ॥१२४॥
काशद्वयं च पित्तास्रकृच्छ्रजिन्मधुरं हिमम् ।

काश, काण्डेक्षु, काकेक्षु, वायसेक्षु, इक्ष्वारिक, इक्षुकाण्ड, इक्षुरक, श्वेतचामरपुष्प र इक्षुकुसुम : यी दुई थरी काँसका पर्यायवाची नाम हुन् । यो गुलियो, पचेपछि तितो, शीतवीर्यको, तृप्तिदायक, बलदायक, वीर्यवर्धक तथा थकाई, सुकेनास र क्षयरोग नाश गर्ने गुणको हुन्छ । दुवै थरी काँस पित्तविकार, रक्तविकार र कृच्छ्रलाई जिल्ले तथा गुलिया र शीतवीर्यका हुन्छन् ।

मुज भार (मुञ्ज)

मुञ्जः क्षुरः स्थूलदर्भो बाणाहो ब्रह्ममेखलः ॥१२५॥
मुञ्जोऽनुष्णो विसर्पास्रमूत्रबस्त्यक्षिरोगनुत् ।
बाणाहो मधुरः शीतः पित्तदाहतृषापहः ॥१२६॥

मुञ्ज, क्षुर, स्थूलदर्भ, बाणाह र ब्रह्ममेखल : यी मुजका पर्यायवाची नाम हुन् । यो थोरै उष्णवीर्यको तथा विसर्प, रक्तविकार, रक्तविकार, पिसाकबा रोग, मूत्राशयका रोग र आँखाका रोग नाश गर्ने गुणको हुन्छ । बाण नामक मुज गुलियो, शीतवीर्यको तथा पित्तविकार, डाह र तिर्खा नाश गर्ने गुणको हुन्छ ।

कुश (मृदुदर्भ)

मृदुदर्भः कुशो बर्हिः शुचिचीरः सुवृत्तकः ।
खरोऽन्यः पृथुलः शीरी गुन्द्रा च नीरजः स्मृतः ॥१२७॥
दर्भयुग्मं पवित्रं स्यान्मूत्रकृच्छ्रघ्नशीतलम् ।
रक्तपित्तप्रशमनं केवलं पित्तनाशनम् ॥१२८॥

मृदुदर्भ, कुश, बर्हि, शुचिचीर र सुवृत्तक : यी कुशका तथा खर, पृथुल, शीरी, गुन्द्रा र नीरज : यी अर्को थरी कुशका पर्यायवाची नाम हुन् । दुवै थरी कुश पवित्र, मूत्रकृच्छ्र रोग नाश गर्ने, शीतवीर्यका, रक्तपित्तलाई शान्त पार्ने, र एकलैले पित्तविकार नाशगर्ने गुण भएका हुन्छन् ।

मुजविशेष (शर)

शरो बाण इषुः काण्ड उत्कटः सायकः क्षुरः ।
स्थूलोऽन्यः इक्षुको प्रोक्त इक्षुरश्चापि नामतः ॥१२९॥
शरद्वयं स्यान्मधुरं सतिक्तं कोष्णं कफभ्रान्तिमदापहारि ।
बलं च वीर्यं च करोति नित्यं निषेवितं वातकरं च किञ्चित् ॥१३०॥

शर, बाण, इषु, काण्ड, उत्कट, सायक र क्षुर : यी एकथरी तथा स्थूल(शर), इक्षुक र इक्षुर : यी ठूलो खालको मुजका पर्यायवाची नाम हुन् । दुवै मुज गुलिया, तिता, उष्णवीर्यका तथा कफविकार, भ्रम र नसा नाश गर्ने गुणका हुन्छन् । नित्य सेवन गर्दा यिनले बल दिन्छन्, वीर्य बढाउँदछन् तर केही मात्रामा वातविकार गर्दछन् ।

बाँस (वंश)

वंशो वेणुर्यवफलः कार्मुकस्तृणकेतुकः ।
त्वक्सारः शतपर्वा च मस्करः कीचकस्तथा ॥१३१॥
वंशस्त्वम्लः कषायश्च कटुस्तिक्तश्च शीतलः ।
मूत्रकृच्छ्रप्रमेहार्शः पित्तदाहासनाशनः ॥१३२॥
वंशो व्रणास्रसंहारो भेदनः सकषायकः ।
वंशश्च शूलकफकृद्विष्टम्भी श्लेष्मवातलः ॥१३३॥

वंश, वेणु, यवफल, कार्मुक, तृणकेतुक, त्वक्सार, शतपर्वा, मस्कर र कीचक : यी बाँसका पर्यायवाची नाम हुन् । यो अमिलो, टर्रो, पिरो, तितो, शीतवीर्यको तथा मूत्रकृच्छ्र, प्रमेह, हर्सा, पित्तविकार, डाह, रक्तविकार र खटिराजन्य रक्तविकार ना शर्गने गुणको हुन्छ । यो टर्रो हुनाले भेदनी, शूल र कफविकार गर्ने, कब्जियत बढाउने, कफ बढाउने र वातविकार गर्ने गुणको हुन्छ ।

बाँसको टुसा (वंशाग्रम्)

वंशाग्रं तु करीरः स्याद्वंशाङ्कुरपरुः स्मृतः ।
पित्तास्रदाहकृच्छ्रघ्नं रुचिकृत्पर्व निर्गुणम् ॥१३४॥

बाँसको टुसालाई वंशाग्र, करीर र वंशाङ्कुर तथा आँखलालाई परु वा पर्व भनिन्छ । यो पित्तविकार, रक्तविकार, डाह र कृच्छ्र नाश गर्ने तथा रुचिप्रद गुणको हुन्छ । आँखलाको भने कुनै गुण हुँदैन ।

नर्कट (नल)

नडो नटो नलश्चैव स च पोटगलः स्मृतः ।
धमनो नर्तको रन्ध्री शून्यमध्यो विभीषणः ॥१३५॥
नलः शीतः कषायश्च पित्तमूत्रविनाशनः ।

नड, नट, नल, पोटगल, धमन, नर्तक, रन्ध्री, शून्यमध्य र विभीषण : यी नर्कटका पर्यायवाची नाम हुन् । यो शीतवीर्यको, टर्रो तथा पित्तविकार र मूत्रविकार नाश गर्ने गुणको हुन्छ ।

द्यौनिगालो (महानल)

अन्यो महानलो वन्यो देवनालो नलोत्तमः ॥१३६॥
स्थूलनालः स्थूलदण्डः सुरनालः सुरद्रुमः ।
महानलोऽधिको वीर्ये शस्यते रसकर्मणि ॥१३७॥

महानल, वन्य, देवनाल, नलोत्तम, स्थूलनाल, स्थूलदण्ड, सुरनाल र सुरद्रुम : यी द्यौनिगालोका पर्यायवाची नाम हुन् । यो अधिक वीर्यशाली र पारो प्रशोधनमा उपयोगी हुन्छ ।

दुबो (दूर्वा)

नीलदूर्वा स्मृता शष्पं शाद्वलं हरितं तथा ।
शतपर्वा शतवीर्या शतवल्ल्यपि शीतला ॥१३८॥
श्वेतदूर्वा तु गोलोमी श्वेतदण्डा सिता लता ।
सहस्रवीर्याऽनन्ता च दुर्मरा भार्गवी रुहा ॥१३९॥
गण्डदूर्वा च गण्डाली तीव्रा मत्स्याक्षिकाऽपि च ।
बाह्वी नाडीकलापश्च वारुणी शकुलाक्षिका ॥१४०॥
दूर्वा शीता कषाया च रक्तपित्तकफापहा ।

नीलदूर्वा, शष्प र शाद्वल : यी नीलो दुबोका, शतपर्वा, शतवीर्या, शतवल्ल्य र शीतला : यी हरियो दुबोका, श्वेतदूर्वा, गोलोमी, श्वेतदण्डा, सिता, लता, सहस्रवीर्या, अनन्ता, दुर्मरा, भार्गवी र रुहा : यी सेतो दुबोका तथा गण्डदूर्वा, गण्डाली, तीव्रा, मत्स्याक्षिका, बाह्वी, नाडीकलाप, वारुणी र शकुलाक्षिका : यी घोडेदुबोका पर्यायवाची नाम हुन् । दुबो शीतवीर्यको, टर्रो तथा रक्तपित्त र कफविकार नाश गर्ने गुणको हुन्छ ।

सङ्कलन : मोहन प्रसाद सापकोटा
सेतो कमल (पुण्डरीक)

पुण्डरीकं श्वेतपद्मं सिताब्जं श्वेतवारिजम् ॥१४१॥
हरिनेत्रं शरत्पद्मं शारदं शम्भुवल्लभम् ।
पुण्डरीकं हिमं तिक्तं मधुरं पित्तनाशनम् ॥१४२॥
दाहघ्नमस्रशोषघ्नं पिपासाभ्रमनाशनम् ।

पुण्डरीक, श्वेतपद्म, सिताब्ज, श्वेतवारिज, हरिनेत्र, शरत्पद्म, शारद र शम्भुवल्लभ : यी सेतो कमलका पर्यायवाची नाम हुन् । यो शीतवीर्यको, तितो, गुलियो तथा पित्तविकार, डाह, रक्तविकार, सुकेनाश, तिर्खारोग र भ्रम नाश गर्ने गुणको हुन्छ ।

नीलो कमल (नीलपद्म)

सौगन्धिकं नीलपद्मं भद्रं कुवलयं कुजम् ॥१४३॥
इन्दीवरं तामरसं कुवलं कुड्मलं मतम् ।

नीलाब्जं शीतलं स्वादु सुगन्धि पित्तनाशनम् ॥१४४॥
रुच्यं रसायने श्रेष्ठं देहदाढ्यं च केशदम् ।

सौगन्धिक, नीलपद्म, भद्र, कुवलय, कुज, इन्दीवर, तामरस, कुवल र कुड्मल : यी नीलकमलका पर्यायवाची नाम हुन् । यो शीतवीर्यको, गुलियो, सुगन्धी, पित्तविकार नाश गर्ने, रुचिप्रद, श्रेष्ठ रसायनी, शरीरलाई बलियो बनाउने र कपाललाई फाइदा गर्ने गुणको हुन्छ ।

रातो कमल (रक्तपद्म)

रक्तपद्मं तु नलिनं पुष्करं कमलं नलम् ॥१४५॥
राजीवं स्यात्कोकनदं शतपत्रं सरोरुहम् ।
पाके रक्तोत्पलं शीतं तिक्तं च मधुरं रसे ॥१४६॥
भिनत्ति पित्तसन्तापौ ध्वंसयत्यस्रजां रुजम् ।

रक्तपद्म, नलिन, पुष्कर, कमल, नल, राजीव, कोकनद, शतपत्र र सरोरुह : यी रातो कमलका पर्यायवाची नाम हुन् । यो शीतवीर्यको, पचेपटि तितो, शुरुमा गुलियो, पित्तविकार नाश गर्ने र रक्तविकार निर्मूल पार्ने गुणको हुन्छ ।

सेतो चन्द्रकमल (कुमुद)

कुमुदं श्वेतजलजम् अम्भोजम् अम्बुजम् ॥१४७॥
पङ्कजं चारविन्दं च कल्हारं च कुशेशयम् ।
कुमुदं शीतलं स्वादु पाके तिक्तं कफापहम् ॥१४८॥
रक्तदोषहरं दाहश्रमपित्तप्रशान्तिकृत् ।

कुमुद, श्वेतजलज, अब्ज, अम्भोज, अम्बुज, पङ्कज, अरविन्द, कल्हार र कुशेशय : यी सेतो चन्द्रकमलका पर्यायवाची नाम हुन् । यो शीतवीर्यको, गुलियो, पचेपछि तितो, कफविकार र रक्तविकार नाश गर्ने तथा डाह, थकाई र पित्तविकारलाई शान्त पार्ने गुणको हुन्छ ।

साना जातका कमल (क्षुद्रोत्पल)

ईषच्छ्वेतं विदुः पद्ममीषन्नीलमथोत्पलम् ॥१४९॥
ईषद्रक्तं तु नलिनं क्षुद्रं तच्चोत्पलत्रयम् ।
उत्पलस्यं त्रयं स्वादु कषायं पित्तजिद्धिमम् ॥१५०॥

सानो जातका कमल तीन थरी हुन्छन् । हल्का सेतो कमललाई पद्म, हल्का नीलो कमललाई उत्पल र हल्का रातो कमललाई नलिन भनिन्छ । यी तीन थरी कमल (उत्पल) गुलिया, टर्पा, पित्तविकारलाई जित्ने र शीतवीर्यका हुन्छन् ।

फूल सहितको पूरा कमलको बोट (पद्मिनी)

पद्मिनी स्यात्पुटकिनी नलिनी च कुमुद्वती ।
पलाशिनी पद्मवती वनखण्डा सरोरुहा ॥१५१॥
पद्मिनी शिशिरा रूक्षा कफपित्तहरा स्मृता ।

सङ्कलन : मोहन प्रसाद सापकोटा

पद्मिनी, पुटकिनी, नलिनी, कुमुद्वती, पलाशिनी, पद्मवती, वनखण्डा र सरोरुहा : यी फूल सहितको पूरा कमलको बोटका पर्यायवाची नाम हुन् । यो शीतवीर्यको, रुखो तथा कफविकार र पित्तविकार नाश गर्ने गुणको हुन्छ ।

मखाना (पद्मबीज)

पद्मबीजं तु पद्माक्षं गालोड्यं पद्मकर्कटी ॥१५२॥
भेडः क्रौञ्चादनो क्रौञ्चो नामतश्चैव पद्मकम् ।
(भेडा क्रौञ्चादिनी क्रौञ्चो नापाकश्चैव कन्दली)
स्वादु तिक्तं पद्मबीजं गर्भस्थापनमुत्तमम् ॥१५३॥
रक्तपित्तप्रशमनं किञ्चिन्मारुतकृद्भवेत् ।

पद्मबीज, पद्माक्ष, गालोड्य, पद्मकर्कटी, भेड (डा), क्रौञ्चादन, क्रौञ्च, (नापाक) र पद्मक (कन्दली) : यी मखानाका पर्यायवाची नाम हुन् । यो गुलियो, तितो, गर्भ स्थापना गर्न उत्तम, रक्तपित्तलाई शान्त पार्ने तथा केही वातविकार गर्ने गुणको हुन्छ ।

कमलको डाँठ (मृणाल)

बिसं मृणालं बिसिनी मृणाली स्यान्मृणालिका ॥१५४॥
मृणालकं पद्मनालं तण्डुलं नलिनीरुहम् ।
अविदाहि बिसं प्रोक्तं रक्तपित्तप्रसादनम् ॥१५५॥
विष्टम्भि मधुरं रूक्षं दुर्जरं वातकोपनम् ।

बिस, मृणाल, बिसिनी, मृणाली, मृणालिका, मृणालक, पद्मनाल, तण्डुल र नलिनीरुह : यी कमलको डाँठका पर्यायवाची नाम हुन् । यो डाह नगर्ने, रक्तपित्तलाई प्रशोधन गर्ने, कब्जियत गर्ने, गुलियो, रुखो, ढिलो पच्ने र वातविकारलाई उत्तेजित पार्ने गुणको हुन्छ ।

कमलको गानो (पद्ममूल)

पद्ममूलं तु शालूकं सकलं करहाटकम् ॥१५६॥
शालीनं पद्मकन्दं च जलालुकं निगद्यते ।
पद्मकन्दः कषायः स्यात्तित्तः स्वादुर्विपाकतः ॥१५७॥
शीतवीर्योऽस्रपित्तोत्थं रोगभङ्गाय कल्पते ।

पद्ममूल, शालूक, सकल, करहाटक, शालीन, पद्मकन्द र जलालुक : यी कमलको गानोका पर्यायवाची नाम हुन् । यो टर्रो, तितो, पचेपछि गुलियो, शीतवीर्यको तथा रक्तपित्तजन्य रोग नाशगर्नका लागि उपयुक्त हुने गुणको हुन्छ ।

कमलको केशर (पद्मकेशर)

पद्मकेशरमापीतं किञ्जल्कं किञ्जमेव च ॥१५८॥
मकरन्दं तथा तुङ्गं गौरं काञ्चनकं च तत् ।
तृषाघ्नं शीतलं रूक्षं पित्तरक्तक्षयापहम् ॥
पद्मकेशरमेवोक्तं पित्तघ्नं च कषायकम् ॥१५९॥

पद्मकेशर, आपीत, किञ्जल्क, किञ्ज, मकरन्द, तुङ्ग, गौर र काञ्चनक : यी कमलको केशरका पर्यायवाची नाम हुन् । यो तिर्खा नाशक, शीतवीर्यको, रुखो तथा पित्तविकार, रक्तविकार र क्षयरोग नाश गर्ने गुणको हुन्छ । यसमा हुने टर्रोपनले पित्तविकार नाश गर्दछ ।

उपसंहार

करवीरादिको वर्गश्चतुर्थः समुदाहृतः ।
नानाव्याधिप्रशमनो नानाद्रव्यसमाश्रयः ॥

अनेक थरी पदार्थ र तिनले निको वा पार्ने अनेक थरी रोगका बारेमा बताइएको करवीरादि नामक चौथो वर्ग बताएर सकियो ।

वर्गेतराणि (अन्य प्रतिमा भएका केही थप श्लोकहरू)

जयन्ती (बलामोटा)

बलामोटा सूक्ष्ममूला हरिता च जयावहा ।
विजया च जयन्ती च तथा चैवापराजिता ॥
विषघ्नी तिक्तकटुका कफपित्तसमीरजित् ।
अपराजिता केशरुहा तथा चैव नियोजिता ॥
विनया नागदमनी निःशेषविषनाशनी ।
विषमोहप्रशमनी महायोगेश्वरीति च ॥

बलामोटा, सूक्ष्ममूला, हरिता, जयावहा, विजया, जयन्ती र अपराजिता : यी जयन्तीका पर्यायवाची नाम हुन् । यो विषविकार नाशक, तितो, पिरो तथा कफविकार, पित्तविकार र वातविकारलाई जित्ने गुणको हुन्छ । अपराजिता, केशरुहा, विनया, नागदमनी, निःशेषविषनाशनी, विषमोहप्रशमनी र महायोगेश्वरी : यी अर्को बलामोटाका पर्यायवाची नाम हुन् ।

सोमलता (सोमवल्ली)

सोमवल्ली यज्ञनेत्री सोमक्षीरी द्विजप्रिया ।

सोमवल्ली त्रिदोषघ्नी कटुस्तिक्ता रसायनी ॥

सोमवल्ली, यज्ञनेत्री, सोमक्षीरी र द्विजप्रिया : यी सोमवल्लीका पर्यायवाची नाम हुन् । यो त्रिदोष नाशक, पिरो, तितो र रसायनी हुन्छ ।

पवै (पोतकी, उपोदकी)

पोतकी पोतका प्रोक्ता मत्स्या काली सुरङ्गिका ।
पोतकी शीतला स्निग्धा श्लेष्मला वातपित्तजित् ॥

पोतकी, पोतका, मत्स्या, काली र सुरङ्गिका यी पोतकीका पर्यायवाची नाम हुन् । यो शीतवीर्यको, चिल्लो, कफविकार गर्ने तथा वातविकार र पित्तविकारलाई जित्ने गुणको हुन्छ ।

ओल (अशोघ्न)

अशोघ्नः सूरणः कन्दः कन्दार्हः कन्दवर्धनः ।
दुर्नामारिः सुवृत्तिश्च वातारिः कन्दसूरणः ॥
सूरणः कटुको रुच्यो दीपनः पाचनस्तथा ।
कृमिदोषहरो वातशूलगुल्मास्रदोषनुत् ॥
श्वासं कासं च च्छर्दि च निवारयति सेवितः ।

अशोघ्न, सूरण, कन्द, कन्दार्ह, कन्दवर्धन, दुर्नामारि, सुवृत्ति, वातारि र कन्दसूरण : यी ओलका पर्यायवाची नाम हुन् । यो पिरो, रुखो, दीपनी, पाचनी तथा कीराका विकार, वातविकार, शूल, गुल्म, रक्तविकार, दम, खोकी र वाकवाकी नाश गर्ने गुणको हुन्छ ।

पुष्पिका

इति रसवीर्यविपाकसहिते धन्वन्तरिनिघण्टौ करवीरादिश्वतुर्थो वर्गः ॥४॥

रस, वीर्य र विपाक सहितको धन्वन्तरि निघण्टुको करवीरादि नामक चौथो वर्ग समाप्त भयो ॥४॥

अथ आम्रादिः पञ्चमो वर्गः

आँप (आम्र)

आम्रश्चूतो रसालश्च कीर(रे)ष्टो मदिरासखः ।
कामाङ्गः सहकारश्च परपुष्टो मदोद्भ(त्स)वः ॥१॥

आम्र, चूत, रसाल, कीर(रे)ष्ट, मदिरासख, कामाङ्ग, सहकार, परपुष्ट र मदोद्भ(त्स)व : यी आँपका नाम हुन् ।

आम्रो रसालो माकन्दः कामाङ्गः पिकबान्धवः ।
वनपुष्पोत्सवश्चूतः परपुष्टो मदोद्भवः ॥२॥
मधुश्चू(चू)तो मधुफलः सुफलो मदिरासखः ।
वसन्तपादपोऽसौ तु सहकारोऽतिसौरभः ॥३॥

आम्र, रसाल, माकन्द, कामाङ्ग, पिकबान्धव, वनपुष्पोत्सव, चूत, परपुष्ट, मदोद्भव, मधुश्चू(चू)त, मधुफल, सुफल, मदिरासख, वसन्तपादप, सहकार र अतिसौरभ : यी पनि आँपका नाम हुन् ।

बालं कषायं कट्वम्लं रूक्षं वातास्रपित्तकृत् ।
सम्पूर्णमाम्रमम्लं च रक्तपित्तकफप्रदम् ॥४॥
हृद्यं वर्णकरं रुच्यं रक्तमांसबलप्रदम् ।
कषायानुरसं स्वादु वातघ्नं बृंहणं गुरु ॥५॥

आँपको चिचिलो टर्रो, पिरो, अमिलो, रुखो तथा वातविकार, रक्तविकार र पित्तविकार गर्ने गुणको हुन्छ । छिप्पिएको (तर नपाकेको) सबै खालको आँप अमिलो तथा रक्तपित्त र कफविकार गर्ने गुणको हुन्छ । यस्तो आँप मुटुका लागि हितकर, शरीरको वर्णमा निखार लेराउने, रुचिप्रद तथा रगत, मासु र कल बढाउने गुणको हुन्छ । यस्तो आँपको पछिल्लो स्वाद टर्रो र गुलियो हुन्छ । यसले वातविकार नाश गर्दछ । यो पौष्टिक र पचाउन कठिन हुन्छ ।

पित्तावरोधि सम्पक्वमाम्रं शुक्रविवर्धनम् ।

मधुरं बृंहणं बल्यं गुरु विष्टम्भ्यजीर्णकृत् ॥६॥

राम्ररी पाकेको आँप पित्तविकार नाशक, शुक्रवर्धक, गुलियो, पौष्टिक, बलदायक, पचाउन कठिन तथा कब्जियत र अजीर्ण गराउने गुणको हुन्छ ।

सहकाररसो हृद्यः सुरभिः स्निग्धरोचनः ।

सहकार आँपको रस मुटुका लागि हितकर, मनमोहक, चिल्लो र रुचिप्रद हुन्छ ।

त्वङ्मूलपल्लवं ग्राहि कषायं कफपित्तजित् ॥७॥

आँपको बोक्रा, जरा र पात वा पालुवा ग्राहि, टर्रो तथा कफविकार र पित्तविकारलाई जित्ने गुणको हुन्छ ।

आँपविशेष (क्षुद्राम्र)

सङ्कलन : मोहन प्रसाद सापकोटा

क्षुद्राम्रः स्यात्कृमितरुर्लाक्षावृक्षो जतुद्रुमः ।

सुकोशको घनस्कन्धः कोशाम्रश्च सुरक्तकः ॥८॥

कोशाम्रोऽम्लः कटुः पाके वीर्योष्णोऽथानिलापहः ।

कफपित्तकरो रुच्यः कुष्ठघ्नो रक्तशोधनः ॥९॥

क्षुद्राम्र, कृमितरु, लाक्षावृक्ष, जतुद्रुम, सुकोशक, घनस्कन्ध, कोशाम्र र सुरक्तक : यी बिज्जु आँपका नाम हुन् । यो आँप अमिलो, पचेपछि पिरो, उष्णवीर्यको र वातविकार नाशक हुन्छ । यसले कफविकार र पित्तविकार गर्दछ । यो रुचिप्रद, कुष्ठनाशक र रगतलाई प्रशोधन गर्ने गुणको हुन्छ ।

कलमी आँप (राजाम्र)

राजाम्र उक्त आम्रान्तो मन्मथोद्भवनस्तथा ।

टङ्को नीलकपित्थोऽन्यो राजपुत्रो नृपात्मजः ॥१०॥

राजाम्रयुगलं चाम्लमुष्णवीर्यं च पित्तलम् ।

राजाम्र, आम्रान्त, मन्मथोद्भवन, टङ्क र नीलकपित्थ तथा अर्को राजपुत्र र नृपात्मज : यी कलमी
आँपका नाम हुन् । यी दुवै थरी कलमी आँप अमिला, उष्णवीर्यका र पित्तविकार गराउने गुणका
हुन्छन् ।

अमारो (आम्रातक)

आम्रातकः पीतनकः कपिचूतोऽम्लवाटकः (अम्लपादलपः) ॥११॥

शृङ्गी कपी रसाढ्यश्च तनुक्षीरः कपिप्रियः ।

आम्रातकफलं वृष्यं पित्तास्रकफवह्निकृत् ॥१२॥

शीतं कषायं मधुरं किञ्चिन्मारुतकृद्गुरु ।

आम्रातक, पीतनक, कपिचूत, अम्लवाटक (अम्लपादप), शृङ्गी, कपी, रसाढ्य, तनुक्षीर र कपिप्रिय :
यी अमारोका पर्यायवाची नामहरू हुन् । अमारोको फल वीर्यवर्धक तथा पित्तविकार, रक्तविकार,
कफविकार र पाचनशक्ति बढाउने खालको हुन्छ । यो शीतवीर्यको, टर्रो, गुलियो, केही मात्रामा
वातविकार गर्ने र पचाउन कठिन हुने गुणको हुन्छ ।

संकलन : मोहन प्रसाद सापकोटा
ज्यामिर (जम्बीर)

जम्बीरो जम्भलो जम्भः प्रोक्तो दन्तशठस्तथा ॥१३॥

गम्भीरो वक्त्रशोधी च रोचनो दन्तहर्षणः ।

तृष्णाशूलकफोत्क्लेशच्छर्दिश्वासनिवारणः ॥१४॥

वातश्लेष्मविबन्धघ्नं जम्बीरं गुरु पित्तलम् ।

जम्बीर, जम्भल, जम्भ, दन्तशठ, गम्भीर, वक्त्रशोधी, रोचन र दन्तहर्षण : यी ज्यामिरका पर्यायवाची
नाम हुन् । यो तिर्खा, शूल, मुखबाट थुक वा कफ आइरहने विकार, वाकवाकी, दम, वातविकार,
कफविकार, र कब्जियत नाश गर्ने तथा पचाउन कठिन एवं पित्तविकार गर्ने गुणको हुन्छ ।

मोसम वा जुनार (मधुजम्बीर)

अन्यो मधुजम्बीरो मधुजम्बीरफलश्चान्यः ॥१५॥

शङ्खद्रावी शर्करकः पित्तद्रावी च षट्सञ्ज्ञः ।

मधुरो मधुजम्बीरो शिशिरः कफपित्तजित् ॥१६॥
शोषघ्नस्तर्पणो वृष्यः श्रमघ्नः पुष्टिकारकः ।

मधुजम्बीर, मधुजम्बीरफल, शङ्खद्रावी, शर्करक र पित्तद्रावी : यी मोसमका पर्यायवाची नाम हुन् । यो गुलियो, शीतवीर्यको, कफविकार र पित्तविकारलाई जित्ने, सुकेनाश नाश गर्ने, तृप्तिदायक, वीर्यवर्धक, थकाई नाश गर्ने र पुष्टि प्रदान गर्ने गुणको हुन्छ ।

सुन्तला (नारङ्ग)

नारङ्गस्त्वक्सुगन्धश्च नागरङ्गो मुखप्रियः ॥१७॥
स चैरावतिकः प्रोक्तो योगी वक्त्राधिवासनः ।
अम्लं समधुरं हृद्यं विशदं भक्तरोचनम् ॥१८॥
वातघ्नं दुर्जरं प्रोक्तं नारङ्गस्य फलं गुरु ।

नारङ्ग, त्वक्सुगन्ध, नागरङ्ग, मुखप्रिय, ऐरावतिक, योगी र वक्त्राधिवासन : यी सुन्तलाका पर्यायवाची नाम हुन् । यो अमिलो, गुलियो, मुटुका लागि हितकर, सुन्दर, खानामा (भात) रुची जगाउने, वातविकार नाश गर्ने, ढिला पच्ने र पचाउन कठिन हुने गुणको हुन्छ ।

बिमिरो (बीजपूर)

बीजपूर्णो बीजपूरः केशरः फलपूरकः ॥१९॥
पूरकः केशराम्लश्च मातुलुङ्गः सुपूरकः ।
वराम्लो बीजको लुङ्गो रुचको मध्यकेशरः ॥२०॥
कृमिघ्नो गन्धकुसुमः केशरी सिन्धुपादपः ।

बीजपूर्ण, बीजपूर, केशर, फलपूरक, पूरक, केशराम्ल, मातुलुङ्ग, सुपूरक, वराम्ल, बीजक, लुङ्ग, रुचक, मध्यकेशर, कृमिघ्न, गन्धकुसुम, केशरी र सिन्धुपादप : यी बिमिरोका पर्यायवाची नाम हुन् ।

श्वासकासारुचिहरं तृष्णाघ्नं कण्ठशोधनम् ॥२१॥
लघूष्णं दीपनं हृद्यं मातुलुङ्गमुदाहृतम् ।

यसले दम, खोकी, अरुची र तिखा नाश गर्दछ तथा घाँटी सफा गर्दछ । यो पचाउन सहज, उष्णवीर्यको, दीपनी र मुटुका लागि हितकर हुन्छ ।

त्वक्तित्ता दुर्जरा तस्य वातकृमिकफापहा ॥२२॥

बोक्रा (फलको ?) तितो, ढिलो पच्ने तथा वातविकार, कीरा र कफविकार नाश गर्ने गुणको हुन्छ ।

**स्वादु शीतं गुरु स्निग्धं मांसं मारुतपित्तजित् ।
मेध्यं शूलार्तिच्छर्दिघ्नं कफारोचकनाशनम् ॥२३॥**

बिमिरोको गुदी गुलियो, शीतवीर्यको, पचाउन कठिन, चिल्लो, वातविकार पित्तविकारलाई जित्ने, पवित्र तथा शूल, वाकवाकी, कफविकार र अरुची नाश गर्ने गुणको हुन्छ ।

**दीपनं लघु सङ्गाहि गुल्माशोघ्नं तु केशरम् ।
पित्तमारुतकृद्बल्यं पित्तलं बद्धकेसरम् ॥२४॥**

सङ्कलन : मोहन प्रसाद सापकोटा

बिमिरोको फल भित्रका रेसा दीपनी, पचाउन सहज, ग्राहि तथा गुल्म र हर्सा नाश गर्ने गुणको हुन्छ । छिप्पिएको बिमिरोको फल पित्तविकार र वातविकार गर्ने, बलदायक तथा पित्त बढाउने गुणको हुन्छ ।

**हृद्यं वर्णकरं रुच्यं रक्तमांसबलप्रदम् ।
शूलाजीर्णविबन्धेषु मन्दाग्नौ कफमारुते ॥२५॥
अपचीश्वासकासेषु रसस्तस्योपयुज्यते ।**

यो मुटुका लागि हितकर, वर्णमा निखार लेराउने, रुचिप्रद तथा रगत, मासु र बल बढाउने गुणको हुन्छ । शूल, अजीर्ण, कब्जियत, कमजोर पाचनशक्ति, कफविकार, वातविकार, अपची, दम र खोकीमा ओखतीका लागि बिमिरोको रस प्रयोग गरिन्छ ।

**रसोऽतिमधुरो हृद्यो वीर्य(शुक्र)पित्तानिलापहः ॥२६॥
कफकृद् दुर्जरा पाके मातुलुङ्गजटा कटुः ।
मूलं चैव कृमीन् हन्ति पुष्पं बीजं च गुल्मजित् ॥२७॥**

पाकेको बिमिरोको रस अति गुलियो, मुटुका लागि हितकर तथा वीर्य, पित्तविकार र वातविकार नाश गर्ने गुणको हुन्छ । बिमिरोको जरा (?) कफविकार गर्ने, ढिलो पच्ने, र पिरो हुन्छ । यसको जराले कीरा नाश गर्दछ । यसको फूल र बीजले गुल्मलाई जित्दछ ।

मधुबिमिरो (मधुकर्कटी)

बीजपूरोऽपरः प्रोक्तो मधुरो मधुकर्कटी ।
मधुवल्ली च विज्ञेया वर्धमाना महाफला ॥२८॥
मधुकर्कटिका स्वादुः शीता पित्तास्रजिद् गुरुः ।
एषा त्रिदोषजिद्वृष्या रुचिकृच्चैव दुर्जरा ॥२९॥

बीजपूर, मधुर, मधुकर्कटी, मधुवल्ली, वर्धमाना र महाफला : यी अर्को थरी मधुबिमिरोका पर्यायवाची नाम हुन् । यो गुलियो, शीतवीर्यको, पित्तविकार र रक्तविकारलाई जित्ने, पचाउन कठिन, त्रिदोषलाई जित्ने, वीर्यवर्धक, रुचिप्रद र ढिलो पच्ने गुणको हुन्छ ।

अमिली (अम्लिका)

सङ्कलन : मोहन प्रसाद सापकोटा

अम्लिका चुक्रिका चुक्रा साम्ला शुक्ताऽथ शुक्तिका ।
अम्लीका चिञ्चिका चिञ्चा तिन्तिडीका सुतित्तिडी ॥३०॥
अम्लिकायाः फलं चाम्लमत्यन्तं पित्तकृल्लघु ।
रक्तकृद्धातशमनं बस्तिशुद्धिकरं परम् ॥३१॥
पक्वं तु मधुराम्लं च भेदि विष्टम्भि वातजित् ।
त्वक्भस्म स्यात्कषायोष्णं कफघ्नं त्वनिलापहम् ॥३२॥

अम्लिका, चुक्रिका, चुक्रा, साम्ला, शुक्ता, शुक्तिका, अम्लीका, चिञ्चिका, चिञ्चा, तिन्तिडीका र सुतित्तिडी : यी अमिलीका पर्यायवाची नामहरू हुन् । अमिलीको फल अति अमिलो हुन्छ । यसले पित्तविकार गर्दछ । यो पचाउन हलुका हुन्छ । यसले रक्तविकार गर्दछ तर वातविकारलाई शान्त पार्दछ । अमिलीले प्रभावकारी ढङ्गले तल्लोपेट प्रशोधन गर्दछ । पाकेको अमिली गुलियो र अमिलो हुन्छ । यसमा भेदन, विष्टम्भी र वातविकारलाई जित्ने गुण हुन्छ । अमिलीको बोक्राको भस्म टरो, उष्णवीर्यको, कफविकार नाशक र वातविकार नाशक हुन्छ ।

चरीअमिलो (क्षुद्राम्लिका)

क्षुद्राम्लिका तु चाङ्गेरी लोणिका चाम्ललोणिका ।
लोला लोणा चतुष्पर्णी सैव दन्तशठा मता ॥३३॥
चाङ्गेरी कफवातघ्नी ग्राहिण्युष्णा च पित्तकृत् ।
अम्ला क्षुद्राम्लिका प्रोक्ता स्वादूष्णा सकषायका ॥३४॥
ग्रहण्यशौ विकारघ्नी आमवातकफे हिता ।

क्षुद्राम्लिका, चाङ्गेरी, लोणिका, अम्ललोणिका, लोला, लोणा, चतुष्पर्णी र दन्तशठा : यी चरीअमिलोका पर्यायवाची नाम हुन् । यो कफविकार र वातविकार नाश गर्ने, ग्राहि, उष्णवीर्यको, पित्तविकार गर्ने, अमिलो, गुलियो, (उष्णवीर्यको), टर्रो, ग्रहणी र हर्सा नाश गर्ने तथा आमजन्य वातविकार र कफविकारमा हित गर्ने गुणको हुन्छ ।

आरु (आरुकम्)

आरुकं वीरसेनं तु वीरं वीरारुकं तथा ॥३५॥
विद्याजातिविशेषेण तच्चतुर्विधमारुकम् ।
आरुकाणि च हृद्यानि मेहाशौनाशनानि च ॥३६॥

आरुक, वीरसेन, वीर र वीरारुक : यी आरुका पर्यायवाची नामहरू हुन् । जात अनुसार आरु चार प्रकारका हुन्छन् । आरु मुटुका लागि हितकर तथा प्रमेह र अल्काई नाशक हुन्छन् ।

रामफल (भव्यम्)

भवं भव्यं भविष्यञ्च भावनं वक्त्रशोधनम् ।
तथा पिच्छिलबीजं च तच्च रोमफलं मतम् ॥३७॥
भव्यमम्लं च वातघ्नं पिच्छिलं वक्त्रशोधनम् ।

भव, भव्य, भविष्य, भावन, वक्त्रशोधन, पिच्छिलबीज र रोमफल : यी रामफलका पर्यायवाची नाम हुन् । यो अमिलो, वातविकार नाश गर्ने, लेस्याइलो र मुख सफा गर्ने गुणको हुन्छ ।

तिंदू (तिन्दुक)

तिन्दुको नीलसारश्च कालस्कन्धोऽतिमुक्तकः ॥३८॥
स्फूर्जकः स्फूर्जनस्तुष्टः स्यन्दनो रामणो रवः ।
द्वितीयतिन्दुकः काकतिन्दुर्मर्कटतिन्दुकः ॥३९॥
काकेन्दुकश्च विख्यातः कपीलुः काकतिन्दुकः ।
आमं कषायं सङ्गाहि तिन्दुकं वातकोपनम् ॥४०॥
विपाके गुरु सम्पक्वं मधुरं कफपित्तजित् ।

तिन्दुक, नीलसार, कालस्कन्ध, अतिमुक्तक, स्फूर्जक, स्फूर्जन, तुष्ट, स्यन्दन, रामण र रवः : यी तिंदुका तथा काकतिन्दु, मर्कटतिन्दुक, काकेन्दुक, कपीलु र काकतिन्दुक : यी तिंदुविशेषका पर्यायवाची नाम हुन् । यसको काँचो फल टर्छ, ग्राहि र वातविकारलाई उत्तेजित पार्ने र पचेपछिको रस पचाउन कठिन हुने गुणको हुन्छ । पाकेको फल गुलियो तथा कफविकार र पित्तविकारलाई जित्ने गुणको हुन्छ ।

मयल (विकङ्कत)

सङ्कलन : मोहन प्रसाद सापकोटा
विकङ्कतो मृदुफलो ग्रन्थिलः स्वादुकण्टकः ॥४१॥
गोपकण्टः काकपादो व्याघ्रपादोऽथ किङ्किणी ।
गोपकण्टः रसे तिक्तः शीतलः शोफनाशनः ॥४२॥
हन्ति श्लेष्माणमत्युग्रमुद्रक्तं हन्ति योगतः ।

विकङ्कत, मृदुफल, ग्रन्थिल, स्वादुकण्टक, गोपकण्ट, काकपाद, व्याघ्रपाद र किङ्किणी : यी विकङ्कतका पर्यायवाची नाम हुन् । यो तीतो, शीतवीर्यको तथा सुजन, कफविकार र मिसाएर प्रयोग गरिए कडा खालको रक्तविकार नाश गर्ने गुणको हुन्छ ।

महुवा (मधूक)

मधूको मधुवृक्षस्तु मधुष्ठीलो मधुस्रवः ॥४३॥
गुडपुष्पो लोध्रपुष्पो वानप्रस्थोऽथ माधवः ।
मधूकं मधुरं शीतं पित्तदाहश्रमापहम् ॥४४॥
वातलं न तु दोषघ्नं वीर्यपुष्टिविवर्धनम् ।

**बृंहणीयमहृद्यं च मधूककुसुमं गुरु ॥४५॥
वातपित्तोपशमनं फलं तस्योपदिश्यते ।**

मधूक, मधुवृक्ष, मधुष्ठील, मधुस्रव, गुडपुष्प, लोध्रपुष्प, वानप्रस्थ र माधव : यी महुवाका पर्यायवाची नाम हुन् । यो गुलियो, शीतवीर्यको तथा पित्तविकार, डाह र थकाई नाश गर्ने गुणको हुन्छ । यसले वातविकार बढाउँदछ र दोष नाश गर्दैन । महुवाले वीर्य र पुष्टि बढाउँदछ । यसको फूल पौष्टिक, मुटुका लागि अहितकर र पचाउन कठिन हुन्छ । यसको फल वातविकार र पित्तविकारलाई शान्त पार्ने गुणको हुन्छ ।

पानी महुवा (जलमधूक)

**मधूकोऽन्यो द्वितीयस्तु जलदो दीर्घपत्रकः ॥४६॥
ह्रस्वपुष्पो फलस्वादुः गौडिकोऽथ मधूलिका ।
(अन्यो जलमधूकस्तु मधुपुष्पो जलारव्यकः ॥
रसपुष्पो दीर्घपत्रो गोरङ्को मधुपुष्पिकः ।)
ज्ञेयो जलमधूकस्तु मधुरो व्रणनाशनः ॥४७॥
वृष्यो वान्तिहरः शीतो बलकारी रसायनः ।**

जलमधूक, जलद, दीर्घपत्रक, ह्रस्वपुष्प, फलस्वादु, गौडिक र मधूलिका: यी पानी महुवाका पर्यायवाची नाम हुन् । (अन्य मतमा जलमधूक, मधुपुष्प, जलारव्यक, रसपुष्प, दीर्घपत्र, गोरङ्क र मधुपुष्पिक : यी पानी महुवाका पर्यायवाची नाम हुन्) । यो गुलियो, खटिरा नाश गर्ने, वीर्यवर्धक, वाकवाकी नाश गर्ने, शीतवीर्यको, बलदायक र रसायनी हुन्छ ।

दँति ओखर (पीलु)

**पीलुः शीतः सहस्रांशी धानी गुडफलोऽपि च ॥४८॥
विरेचनफलः शाखी श्यामः करभवल्लभः ।
रक्तपित्तहरः पीलुः फलं कटुविपाकि च ॥४९॥
अशौर्घ्नं वस्तिशमनं सस्नेहं कफवातजित् ।
(पीलुजं च रसे स्वादु गुल्माशौर्घ्नं तु तीक्ष्णकम् ।)**

पीलु, शीत, सहस्रांशी, धानी, गुडफल, विरेचनफल, शाखी, श्याम र करभवल्लभ : यी दँति ओखरका पर्यायवाची नाम हुन् । यसको फल रक्तपित्त नाशक, पचेपछि पिरो, हर्सा नाश गर्ने, मूत्राशयलाई शान्त पार्ने, चिल्लो तथा कफविकार र वातविकारलाई जित्ने गुणको हुन्छ । (यो गुलियो, गुल्म र हर्सा नाश गर्ने र तिक्खर गुणको हुन्छ) ।

खजूर (खर्जूरी)

खर्जूरी तु खरस्कन्धा कषाया मधुराग्रजा ॥५०॥
दुष्प्रधर्षा दुरारोहा निःश्रेणी स्वादुमस्तका ।
क्षतक्षयापहं हृद्यं शीतलं तर्पणं गुरु ॥५१॥
रसे पाके च मधुरं खर्जूरं रक्तपित्तजित् ।

खर्जूरी, खरस्कन्धा, कषाया, मधुराग्रजा, दुष्प्रधर्षा, दुरारोहा, निःश्रेणी र स्वादुमस्तका : यी खजूरका पर्यायवाची नाम हुन् । यो घाउ र क्षयरोग नाश गर्ने, मुटुका लागि हितकर, शीतवीर्यको, तृप्तिदायक, पचाउन कठिन, शुरुमा र पचेपछि गुलियो तथा रक्तपित्तलाई जित्ने गुणको हुन्छ ।

सङ्कलन : मोहन प्रसाद सापकोटा
खजूरीविशेष (पिण्डखर्जूरी)

दीप्या च पिण्डखर्जूरी स्थलपिण्डा मधुस्रवा ॥५२॥
फलपुष्पा स्वादुपिण्डा हयभक्षा रसाभिधा ।

दीप्या, पिण्डखर्जूरी, स्थलपिण्डा, मधुस्रवा, फलपुष्पा र हयभक्षा : यी छ नाम खजूरीविशेषका पर्यायवाची नाम हुन् ।

अङ्गूर (द्राक्षा)

द्राक्षा चारुफला कृष्णा प्रियाला तापसप्रिया ॥५३॥
काश्मीरिका विनिर्दिष्टा रसाला करमर्दिका ।
द्राक्षा हृद्यरसा स्वर्या मधुरा स्निग्धशीतला ॥५४॥
रक्तपित्तज्वरश्वासतृष्णादाहक्षयापहा ।

द्राक्षा, चारुफला, कृष्णा, प्रियाला, तापसप्रिया, काश्मीरिका, रसाला र करमर्दिका : यी दाखका नाम हुन् । यो मुटुका लागि हितकर, स्वरका लागि लाभदायक, गुलियो, चिल्लो, शीतवीर्यको तथा रक्तपित्त, जरो, दम, तिखा, डाह र क्षयरोग नाशगर्ने गुणको हुन्छ ।

मुनक्का (मृद्वीका)

उत्तरापथिका प्रोक्ता कपिला सा फलोत्तमा ॥५५॥
स्वादुपाका मधुरसा मृद्वीका गोस्तनी स्मृता ।
मृद्वीका मधुरा स्निग्धा शीता वृष्यानुलोमनी ॥५६॥
रक्तानिलश्वासकासभ्रमतृष्णाज्वरापहा ।

उत्तरापथिका, कपिला, फलोत्तमा, स्वादुपाका, मधुरसा, मृद्वीका र गोस्तनी : यी मुनक्काका नाम हुन् । यो गुलियो, चिल्लो, शीतवीर्यको, वीर्यवर्धक, अनुलोमनी तथा रक्तविकार, वातविकार, दम, खोकी, भ्रम, तिखा र जरो नाशगर्ने गुणको हुन्छ ।

सङ्कलन : ओखर (अक्षोड) सापकोटा

अक्षोडः पार्वतीयश्च फलस्नेहो गुडाश्रयः ॥५७॥
कीरेष्टः कर्परालश्च स्वादुमज्जा पृथुच्छदः ।
अक्षोडकः स्वादुरसो मधुरः पुष्टिकारकः ॥५८॥
पित्तश्लेष्महरो बल्यः स्निग्धोष्णो गुरुबृंहणः ।

अक्षोड(क), पार्वतीय, फलस्नेह, गुडाश्रय, कीरेष्ट, कर्पराल, स्वादुमज्जा र पृथुच्छद : यी ओखरका नाम हुन् । ओखर स्वादिलो, गुलियो, पुष्टिदायक, पित्तविकार र कफविकार नाशगर्ने, बलदायक, चिल्लो, उष्णवीर्यको, पचाउन कठिन र पौष्टिक गुणको हुन्छ ।

असारे, फाल्सा (परूषक)

परूषकं परु प्रोक्तं नीलवर्णं परावरम् ॥५९॥
परिमण्डलमल्पास्थि परुषं चापि नामतः ।
परूषकफलं चाम्लं वातघ्नं पित्तकृद्गुरु ॥६०॥

तदेव पक्वं मधुरं वातपित्तनिबर्हणम् ।

परूषक, परु, नीलवर्ण, परावर र परिमण्डलमल्पास्थि : यी असारेका पर्यायवाची नाम हुन् । यसको (काँचो) फल अमिलो, वातविकार नाश गर्ने, पित्तविकार गर्ने र पचाउन कठिन हुने गुणको हुन्छ । त्यसैको पाकेको फल गुलियो तथा वातविकार र पित्तविकार नाश गर्ने गुणको हुन्छ ।

किम्बु (तूद)

तूदं तूलं च यूपं च क्रमुकं ब्रह्मकाष्ठकम् ॥६१॥
ब्रह्मदारु ब्राह्मणेष्टं ब्रह्मण्यं ब्रह्मचारिणम् ।
तूदं तु मधुराम्लं स्याद्वातपित्तहरं परम् ॥६२॥
दाहप्रशमनं वृष्यं कषायं कफनाशनम् ।
(तूदस्य च फलं स्वादु बलवर्णाग्निवृद्धिकृत् ।)

तूद, तूल, यूप, क्रमुक, ब्रह्मकाष्ठक, ब्रह्मदारु, ब्राह्मणेष्ट, ब्रह्मण्य र ब्रह्मचारिण : यी किम्बुका पर्यायवाची नाम हुन् । यो गुलियो, अमिलो, प्रभावकारी तरिकाले वातविकार र पित्तविकार नाश गर्ने, डाहलाई शान्त पार्ने, वीर्यवर्धक, टर्रो र कफविकार नाश गर्ने गुणको हुन्छ । (किम्बुको फल गुलियो तथा बल, शरीरको वर्ण र पाचनशक्ति बढाउने गुणको हुन्छ) ।

हरिफल (पालेवतम्)

पालेवतं रैवतकं ज्ञेयमारेवतं तथा ॥६३॥
महापालेवतं चोक्तं रक्तपालेवतं तथा ।
पालेवतं सितं पुष्पैस्तिन्दुकाभफलं मतम् ॥६४॥
अन्यन्माणवकं ज्ञेयं महापालेवतं तथा ।
पालेवतं तु मधुरं स्निग्धं हृद्यं समीरजित् ॥६५॥

पालेवत, रैवतक, आरेवत, महापालेवत र रक्तपालेवत : यी पालेवतका पर्यायवाची नाम हुन् । सेतो फूल र तिन्दुका जस्ता फल फल्ने बोटलाई पालेवत भनिन्छ । माणवक र महापालेवत यसका जात हुन् । पालेवत गुलियो, चिल्लो, मुटुका लागि हितकर तथा वातविकारलाई जित्ने गुणको हुन्छ ।

ताड (ताल)

तालो ध्वजद्रुमः प्रांशुदीर्घस्कन्धो दुरारुहः ।
तृणराजो दीर्घतरुर्लेख्यपत्रो द्रुमेश्वरः ॥६६॥
फलं स्वादु रसे पाके तालजं गुरु पित्तजित् ।
तद्बीजं स्वादुपाकं तु मूलं स्याद्रक्तपित्तजित् ॥६७॥

ताल, ध्वजद्रुम, प्रांशु, दीर्घस्कन्ध, दुरारुह, तृणराज, दीर्घतरु, लेख्यपत्र र द्रुमेश्वर : यी ताडका पर्यायवाची नाम हुन् । यसको फल शुरुमा र पचेपछि गुलियो, पचाउन कठिन र पित्तविकारलाई जित्ने गुणको हुन्छ । त्यसको बीज पचेपछि गुलियो हुन्छ । यसको जराले रक्तपित्तलाई जित्दछ ।

ताडविशेष, जगर (माड)

माडो माडद्रुमो दीर्घो ध्वजवृक्षो वितानकः ।
मद्यद्रुमो मोहकारी मदद्रुः ऋजुरङ्कधा ॥६८॥
माडस्तु शिशिरो रुच्यः कषायः पित्तदाहनुत् ।
तृष्णापहो मरुत्कारी श्रमहृच्छ्लेष्मकारकः ॥६९॥

माड, माडद्रुम, दीर्घ, ध्वजवृक्ष, वितानक, । मद्यद्रुम, मोहकारी, मदद्रु र ऋजु : यी नौ नाम जगरका पर्यायवाची नाम हुन् । यो शीतवीर्यको, रुचिप्रद, टर्रो, पित्तविकार र डाह नाश गर्ने, तिर्खा नाश गर्ने, वातविकार बढाउने, थकाई नाश गर्ने तथा कफविकार गर्ने गुणको हुन्छ ।

चिरौजी (प्रियाल)

प्रियालोऽथ खरस्कन्धश्चारो बहुलवल्कलः ।
स्नेहबीजश्चापवटो ललनस्तापसप्रियः ॥७०॥
वातपित्तहरं वृष्यं प्रियालं गुरु शीतलम् ।
चारस्य तु फलं पक्वं स्वाद्वम्लं दुर्जरं प्रियम् ॥७१॥
चारमज्जा समधुरा वृष्या पित्तानिलापहा ।

प्रियाल, खरस्कन्ध, चार, बहुलवल्कल, स्नेहबीज, चापवट, ललन र तापसप्रिय : यी चिरौजीका पर्यायवाची नाम हुन् । यो वातविकार र पित्तविकार नाश गर्ने, वीर्यवर्धक, पचाउन कठिन र शीतवीर्यको हुन्छ । यसको पाकेको फल गुलियो, अमिलो, ढिलो पच्ने र प्रिय हुन्छ । बीजको गुदी गुलियो, वीर्यवर्धक तथा पित्तविकार र वातविकार नाश गर्ने गुणको हुन्छ ।

नरिवल (नारिकेल)

नारिकेलो रसफलः सुतुङ्गः कूर्चशेखरः ॥७२॥
तालवृक्षो दृढफलो लाङ्गली दाक्षिणात्यकः ।
नारिकेलं गुरु स्निग्धं पित्तलं स्वादु शीतलम् ॥७३॥
बलमांसप्रदं वृष्यं बृंहणं वस्तिशोधनम् ।

नारिकेल, रसफल, सुतुङ्ग, कूर्चशेखर, तालवृक्ष, दृढफल, लाङ्गली र दाक्षिणात्यक : यी नरिवलका पर्यायवाची नाम हुन् । यो पचाउन कठिन, चिल्लो, पित्तविकार गर्ने, गुलियो, शीतवीर्यको, बल र मासु बढाउने, वीर्यवर्धक, पौष्टिक र मूत्राशयलाई प्रशोधन गर्ने गुणको हुन्छ ।

सङ्कलन : मोहन प्रसाद सापकोटा
बर (वट)

वटो रक्तफलः शृङ्गी न्यग्रोधः स्कन्धजो ध्रुवः ॥७४॥
क्षीरी वैश्रवणावासो बहुपादो वनस्पतिः ।
वटः शीतः कषायश्च स्तम्भनो रूक्षणात्मकः ॥७५॥
तथा तृष्णा छर्दिमूर्च्छा रक्तपित्तविनाशनः ।

वट, रक्तफल, शृङ्गी, न्यग्रोध, स्कन्धज, ध्रुव, क्षीरी, वैश्रवणावास, बहुपाद र वनस्पति : यी बरका पर्यायवाची नाम हुन् । यो शीतवीर्यको, टर्रो, जकड्याउने, रुखो तथा तिर्खा, वाकवाकी, बेहोसी र रक्तपित्तलाई नाश गर्ने गुणको हुन्छ ।

पीपल (अश्वत्थ)

पिप्पलः केशवावासश्चलपत्रः पवित्रकः ॥७६॥
मङ्गल्यः श्यामलोऽश्वत्थो बोधिवृक्षो गजाशनः ।

श्रीमान्क्षीरद्रुमो विप्रः शुभदः श्यामलच्छदः ॥७७॥
पिप्पलो गुह्यपत्रस्तु सेव्यः सत्यः शुचिद्रुमः ।
चैत्यद्रुमो धर्मवृक्षः चन्द्रकरमिताह्वयः ॥७८॥
अश्वत्थोऽपि स्मृतस्तद्वद् रक्तपित्तकफापहः ।

पिप्पल, केशवावास, चलपत्र, पवित्रक, मङ्गल्य, श्यामल, अश्वत्थ, बोधिवृक्ष, गजाशन तथा श्रीमान्, क्षीरद्रुम, विप्र, शुभद, श्यामलच्छद, पिप्पल (?), गुह्यपत्र, सेव्य, सत्य, शुचिद्रुम, चैत्यद्रुम र धर्मवृक्ष : यी एक्काईस नाम पीपलका पर्यायवाची नाम हुन् । पीपल पनि त्यस्तै (बर जस्तै) रक्तपित्त र कफविकार नाशगर्ने गुणको हुन्छ ।

पारिसपिप्पल (प्लक्ष)

प्लक्षः कपीतनः शृङ्गी सुपार्श्वश्चारुदर्शनः ॥७९॥
प्लवको गर्दभाण्डश्च कमण्डलुर्वटप्लवः ।
प्लक्षः कटुकषायश्च शीतलो रक्तपित्तजित् ॥८०॥
मूर्च्छाश्रमप्रलापांश्च हरेत्प्लक्षो विशेषतः ।

प्लक्ष, कपीतन, शृङ्गी, सुपार्श्व, चारुदर्शन, प्लवक, गर्दभाण्ड, कमण्डलु र वटप्लव : यी पारिसपिप्पलका पर्यायवाची नाम हुन् । यो पिरो, टर्रो, शीतवीर्यको, रक्तपित्तलाई जित्ने तथा विशेषगरी बेहोसी, थकाई र बर्बराउने रोग नाश पार्ने गुणको हुन्छ ।

जामुनु वा फणिर (जम्बू)

जम्बूः सुरभिपत्रा च राजजम्बूर्महाफला ॥८१॥
सुरभी स्यान्महाजम्बूर्महास्कन्धा प्रकीर्तिता ।
वेतसी काकजम्बूश्च नादेयी शीतवल्लभा ॥८२॥
भ्रमरेष्टा नीलवर्णा द्वितीया जम्बूरुच्यते ।
जाम्बवं वातलं ग्राहि स्वाद्वम्लं कफपित्तजित् ॥८३॥
हृत्कण्ठघकर्षणं चान्यत्कषायं क्षुद्रजाम्बवम् ।

जम्बू, सुरभिपत्रा, राजजम्बू, महाफला, सुरभी, महाजम्बू र महास्कन्धा : यी पहिलो थरी जम्बू अर्थात् फणिरका तथा वेतसी, काकजम्बू, नादेयी, शीतवल्लभा, भ्रमरेष्टा र नीलवर्णा : यी दोश्रो थरी जम्बू अर्थात् जामुनुको पर्यायवाची नाम हुन् । फणिर वातविकार गर्ने, ग्राहि, अमिलो, कफविकार र पित्तविकारलाई जित्ने गुणको तथा जामुनु मुटु (पेट) र घाँटीलाई कस्ने वा बाँध्ने गुणको तथा टर्रो स्वादको हुन्छ ।

डुम्री (उदुम्बर)

उदुम्बरः क्षीरवृक्षो हेमदुग्धः सदाफलः ॥८४॥
अपुष्पफलसम्बन्धो यज्ञाङ्गः शीतवल्कलः ।
उदुम्बरं कषायं स्यात् पक्वं तु मधुरं हिमम् ॥८५॥
कृमिकृत्पित्तरक्तघ्नं मूर्च्छादाहतृषापहम् ।

उदुम्बर, क्षीरवृक्ष, हेमदुग्ध, सदाफल, अपुष्पफलसम्बन्ध, यज्ञाङ्ग र शीतवल्कल : यी डुम्रीका पर्यायवाची नाम हुन् । यो टर्रो र पाकेपछि गुलियो हुन्छ । डुम्री शीतवीर्यको, पेटमा कीरा पार्ने, तथा पित्तविकार, रक्तविकार, बेहोसी, डाह र तिर्खा नाशगर्ने गुणको हुन्छ ।

खसेतो (काकोदुम्बरिका)

काकोदुम्बरिका फल्गू राजिफल्गुः शिवाटिका ॥८६॥
फल्गुनी फलसम्भारी मलयूश्चित्रभेषजा ।
काकोदुम्बरिका श्वित्रकण्डूकुष्ठव्रणापहा ॥८७॥
रक्तपित्तहरा शोफपाण्डुश्लेष्महरा च सा ।

काकोदुम्बरिका, फल्गू, राजिफल्गु, शिवाटिका, फल्गुनी, फलसम्भारी, मलयू र चित्रभेषजा : यी खसेतोका पर्यायवाची नाम हुन् । यो सेतोकुष्ठ, लुतो, कुष्ठ, खटिरा, रक्तपित्त, सुजन, पाण्डु र कफविकार नाश गर्ने गुणको हुन्छ ।

खिर्नी (राजादन)

क्षीरी चोक्तस्तु राजन्यः स क्षीरशुक्लको नृपः ॥८८॥

राजादनो दृढस्कन्धः कपीष्टः प्रियदर्शनः ।
राजादनो रसे स्वादुः पाकेऽम्लः शीतलस्तथा ॥८७॥
रुचिकारी भवेद्वातनाशनश्च प्रकीर्तितः ।

क्षीरी, राजन्य, क्षीरशुक्लक, नृप, राजादन, दृढस्कन्धः, कपीष्ट र प्रियदर्शन : यी खिर्नीका पर्यायवाची नाम हुन् । यो गुलियो, पचेपछि अमिलो, शीतवीर्यको, रुचिप्रद र वातविकार नाश गर्ने गुणको हुन्छ ।

लप्सी (श्लेष्मातक)

श्लेष्मातकः कर्बुदारः पिच्छिलो लेखसार(ट)कः ॥८८॥
शेलुः शैलुः बहुवारः शापितो द्विजकुत्सितः ।
श्लेष्मातको हिमः स्वादुः स्याद्वृक्षः पिच्छिलः शुचिः ॥८९॥

श्लेष्मातक, कर्बुदार, पिच्छिल, लेखसार(ट)क, शेलु, शैलु, बहुवार, शापित र द्विजकुत्सित : यी लप्सीका पर्यायवाची नाम हुन् । यो शीतवीर्यको, गुलियो, रुखो, लेस्याइलो र पवित्र हुन्छ ।

सङ्कलन : मोहन प्रसाद सापकोटा
शमी

शमी शङ्खफला तुङ्गा केशहन्त्री शिवाफला ।
ईशानी शङ्करी लक्ष्मीर्मङ्गल्या पापनाशिनी ॥९०॥
शमीफलं गुरु स्वादु रूक्षोष्णं केशनाशनम् ।

शमी, शङ्खफला, तुङ्गा, केशहन्त्री, शिवाफला, ईशानी, शङ्करी, लक्ष्मी, मङ्गल्या र पापनाशिनी : यी शमीका पर्यायवाची नाम हुन् । यसको फल पचाउन कठिन, गुलियो, रुखो, उष्णवीर्यको र कपाललाई हानी गर्ने गुणको हुन्छ ।

बयर (बदर)

बदरं कोलकं कोलं सौवीरं फेनिलं कुहम् ॥९१॥
कर्कन्धुकं गुडफलं बालेष्ठं फलशैशिरः ।
कर्कन्धुकोलबदरमम्लं वातकफापहम् ॥९२॥

पक्वं पित्तानिलहरं स्निग्धं च मधुरं रसे ।
पुरातनं तृट्शमनमामघ्नं दीपनं लघु ॥९३॥
सौवीरबदरं स्निग्धं मधुरं वातपित्तजित् ।

बदर, कोलक, कोल, सौवीर, फेनिल, कुह, कर्कन्धुक, गुडफल, बालेष्ठ र फलशैशिर : यी बयरका पर्यायवाची नाम हुन् । कर्कन्धुक, कोल र बदर (जातका) बयर काँचोमा अमिला तथा वातविकार र कफविकार नाश गर्ने गुणका हुन्छन् । पाकेका बयर पित्तविकार र वातविकार नाश गर्ने, चिल्ला र गुलिया हुन्छन् । पुरानो (सुकेका) बयर तिर्खा शान्त पार्ने, आमविकार नाश गर्ने, दीपनी र पचाउन सहज हुने गुणको हुन्छ । सौवीर जातको बयर चिल्लो, गुलियो तथा वातविकार र पित्तविकारलाई जित्ने गुणको हुन्छ ।

करीर

करीरो गूढपत्रश्च शाकपुष्पो मृदुफलः ॥९४॥
ग्रन्थिलस्तीक्ष्णसारश्च चक्रकस्तीक्ष्णकण्टकः ।
वातश्लेष्महरं रुच्यं कटूष्णं गुदकीलजित् ॥९५॥
करीरमाध्मानकरं रुचिकृत्स्वादुतिक्तकम् ।

अन्यच्च-

करीराक्षक पीलूनि त्रीणि स्तन्यफलानि च ।
स्वादुतिक्तकटूष्णानि कफवातहराणि च ॥

करीर, गूढपत्र, शाकपुष्प, मृदुफल, ग्रन्थिल, तीक्ष्णसार, चक्रक र तीक्ष्णकण्टक : यी करीरका पर्यायवाची नाम हुन् । यो वातविकार र कफविकार नाश गर्ने, रुचिप्रद, पिरो, उष्णवीर्यको, हर्सा नाश गर्ने, आध्मान गर्ने, रुचि बढाउने, गुलियो र वातविकार नाश गर्ने गुणको हुन्छ । अन्यत्र भनिएको छ कि- करीर, आक्षक र पीलू : यी तीन दूध बढाउने (वा दुधिला) फल गुलिया, तिता, पिरा, उष्णवीर्यका तथा कफविकार र वातविकार नाश गर्ने गुणका हुन्छन् ।

करौंजी (करमर्दक)

करमर्दकमाविग्रं सुषेणं पाणिमर्दकम् ॥९६॥
कराम्लं करमर्दं च कृष्णपाकफलं मतम् ।

अम्लं तृष्णापहं रुच्यं पित्तकृत्करमर्दकम् ॥९७॥
पक्वं च मधुरं शीतं रक्तपित्तहरं मतम् ।

करमर्दक, आविग्न, सुषेण, पाणिमर्दक, कराम्ल, करमर्द र कृष्णापाकफल : यी करौंजीका पर्यायवाची नाम हुन् । यो काँचो भए तिर्खा नाश गर्ने, रुचिप्रद र पित्तविकार गर्ने गुणको तथा पाकेको भए गुलियो, शीतवीर्यको तथा रक्तपित्त नाश गर्ने गुणको हुन्छ ।

कदम (कदम्ब)

कदम्बो वृत्तपुष्पश्च नीपस्तु ललनाप्रियः ॥९८॥
कादम्बर्यः अङ्गवृक्षोऽन्यः सुवासः कर्णपूरकः ।
धाराकदम्बः प्रावृष्यः कादम्बर्यो हरिप्रियः ॥९९॥
नीपो धूलिकदम्बोऽन्यः सुवासो वृत्तपुष्पकः ।
कदम्बस्तु कषायः स्याद्रसे शीतो गुणोऽपि च ॥१००॥
व्रणसंरोहणश्चापि कासदाहविषापहः ।

सङ्कलन : मोहन प्रसाद सापकोटा

कदम्ब, वृत्तपुष्प, नीप, ललनाप्रिय, कादम्बर्य र अङ्गवृक्ष : यी पहिलो थरी कदमका; सुवास र कर्णपूरक : यी दोश्रो थरी कदमका; धाराकदम्ब, प्रावृष्य, कादम्बर्य, हरि(लि)प्रिय र नीप : यी तेस्रो थरी कदमका तथा धूलिकदम्ब, सुवास र वृत्तपुष्पक : यी चौथो थरी कदमका पर्यायवाची नाम हुन् । कदम टर्पो, शीतवीर्यको, घाउखटिरा भर्ने तथा खोकी, डाह र विषविकार नाश गर्ने गुणको हुन्छ ।

करञ्ज

करञ्जो नक्तमालश्च पूतिकाश्चिरबिल्वकः ॥१०१॥
घृतपूर्णः करञ्जोऽन्यः प्रकीर्यो गौर एव च ।
करञ्जश्चोष्ण तिक्तः स्यात्कफपित्तास्रदोषजित् ॥१०२॥
व्रणप्लीहकृमीन्हन्ति भूतघ्नो योनिरोगहा ।
चिरिबिल्वः करञ्जश्च तीव्रो वातकफापहः ॥१०३॥

करञ्ज, नक्तमाल, पूतिक र चिरबिल्वक : यी पहिलो थरी करञ्जका तथा घृतपूर्ण करञ्ज, प्रकीर्य र गौर : यी दोश्रो थरी करञ्जका पर्यायवाची नाम हुन् । यो उष्णवीर्यको, तितो तथा कफविकार, पित्तविकार र

रक्तविकारलाई जित्ने गुणको हुन्छ । यसले घाउखटिरा, फियोका रोग, कीरा तथा प्रभावकारी ढङ्गले वातविकार र कफविकार नाश गर्ने गुण बोकेको हुन्छ ।

करञ्जविशेष (उदकीर्य)

उदकीर्यस्तृतीयोऽन्यः षड्ग्रन्थो हस्तिचारिणी ।
मदहस्तिनिका रोही हस्तिरोहणकः प्रियः ॥१०४॥

उदकीर्य, षड्ग्रन्थ, हस्तिचारिणी, मदहस्तिनिका, रोही, हस्तिरोहणक र प्रिय : यी तेश्रो थरी करञ्जका पर्यायवाची नाम हुन् ।

करञ्जविशेष (अङ्गारवल्लिका)

अङ्गारवल्लिकाऽम्बष्ठा काकघ्नी काकभाण्डिका ।
वायव्या काल्मिकाभेदा काकवल्ल्यपि चोच्यते ॥१०५॥

सङ्कलन : मोहन प्रसाद सापकोटा

अङ्गारवल्लिका, अम्बष्ठा, काकघ्नी, काकभाण्डिका, वायव्या, काल्मिकाभेदा र काकवल्ली : यी (सम्भवतः) चौथो थरी करञ्जका नाम हुन् ।

शिरीष

शिरीषो मृदुपुष्पश्च भण्डिकः शङ्खिनीफलः ।
कपीतनः शुकतरुः श्यामवर्णः शुकप्रियः ॥१०६॥
तित्तोष्णो विषहा वर्ण्यस्त्रिदोषशमनो लघुः ।
शिरीषः कुष्ठकण्डूघ्नस्त्वग्दोषश्वासकासहा ॥१०७॥

शिरीष, मृदुपुष्प, भण्डिक, शङ्खिनीफल, कपीतन, शुकतरु, श्यामवर्ण र शुकप्रिय : यी शिरीषका पर्यायवाची नाम हुन् । यो तित्तो, उष्णवीर्यको, विषविकार नाश गर्ने, शरीरको वर्णमा निखार लेराउने, त्रिदोलाई शान्त पार्ने, पचाउन सहज तथा कुष्ठ, लुतो, छालाका अन्य विकार, दम र खोकी नाश गर्ने गुणको हुन्छ ।

काउलो वा खरी (अर्जुन)

अर्जुनः ककुभः पार्थश्चित्रयोधी धनञ्जयः ।
वीरान्तकः किरीटी च नदीसर्जोऽपि पाण्डवः ॥१०८॥
ककुभस्तु कषायोष्णः कफघ्नो व्रणनाशनः ।
पित्तश्रमतृषार्तिघ्नो मारुतामयकोपनः ॥१०९॥

अर्जुन, ककुभ, पार्थ, चित्रयोधी, धनञ्जय, वीरान्तक, किरीटी, नदीसर्ज र पाण्डव : यी अर्जुन वृक्षका पर्यायवाची नाम हुन् । यो टर्पो, उष्णवीर्यको तथा कफविकार, खटिरा, पित्तविकार, थकाई, तिखारोग, वातविकार र आमविकार नाश गर्ने गुणको हुन्छ ।

बेत (वेतस)

वेतसो निचुलः प्रोक्तो वञ्जुलो दीर्घपत्रकः ।
कलनो मञ्जरीनम्रः सुषेणो गन्धपुष्पकः ॥११०॥
नादेयी मेघपुष्पोऽन्यो जलकामो निकुञ्जकः ।
जलौकः संवृतश्चैव विदुलो जलवेतसः ॥१११॥
वेतसस्य द्वयं शीतं रक्षोघ्नं व्रणशोधनम् ।
रक्तपित्तहरं तिक्तं सकषायं कफापहम् ॥११२॥

वेतस, निचुल, वञ्जुल, दीर्घपत्रक, कलन, मञ्जरीनम्र, सुषेण र गन्धपुष्पक : यी बेतका तथा नादेयी, मेघपुष्प, जलकाम, निकुञ्जक, जलौक, संवृत, विदुल र जलवेतस : यी पानीबेतका पर्यायवाची नाम हुन् । दुवै बेत शीतवीर्यका, राक्षसबाधा नाशक, घाउ प्रशोधक, रक्तपित्त नाश गर्ने, तिता, केही टर्पो र कफविकार नाश गर्ने गुणका हुन्छन् ।

सिप्लिकान (वरुण)

वरुणः श्वेतपुष्पश्च तिक्तशाकः कुमारकः ।
श्वेतद्रुमो गन्धवृक्षस्तमालो मारुतापहः ॥११३॥
वरुणः शीतवातघ्नस्तिक्तो विद्रधिजन्तुजित् ।
तथा च कटुरूष्णश्च रक्तदोषहरः परः ॥११४॥

वरुण, श्वेतपुष्प, तिक्तशाक, कुमारक, श्वेतद्रुम, गन्धवृक्ष, तमाल र मारुतापह : यी सिप्लिकानका पर्यायवाची नाम हुन् । यो शीतवीर्यको, वातविकार नाश गर्ने, तितो, विद्रधि र कीरालाई जित्ने, पिरो, उष्णवीर्यको, तथा प्रभावकारी ढङ्गले रक्तविकार नाश गर्ने गुणको हुन्छ ।

सिसौ (शिंशपा)

शिंशपा तु महाश्यामा कृष्णसारा स्मृताऽगुरुः ।
कुशिंशपाऽन्या कपिला भस्मगर्भावसादनी ॥११५॥
शिंशपायुगुलं वर्ण्य हिक्काशोफौ विसर्जयेत् ।
पित्तदाहप्रशमनं बल्यं रुचिकरं परम् ॥११६॥
(कटूष्णं कण्डुदोषघ्नं बस्तिरोगविनाशनम् ।)

शिंशपा, महाश्यामा, कृष्णसारा र अगुरु : यी कालो सिसौका तथा कुशिंशपा, कपिला, भस्मगर्भा र वसादनी : यी कैलो सिसौका पर्यायवाची नाम हुन् । दुवै सिसौ वर्णमा निखार लेराउने, बाडुली र सुजन नाश गर्ने, पित्तविकार र डाह शान्त पार्ने, बलदायक र अति नै रुचिप्रद हुन्छन् । (अन्य मतमा यो पिरो, उष्णवीर्यको, लुतो र त्रिदोष तथा मूत्राशयका रोग नाश गर्ने गुणको हुन्छ ।) ।

साल (सर्जक)

सर्जको बस्तकर्णश्च कषायश्चिरपत्रकः ।
सस्यसंवरकः शूरः सर्जोऽन्यः शाल उच्यते ॥११७॥
कुष्ठकण्डूकृमिश्लेष्मवातपित्तरुजा जयेत् ।
सर्जयुग्मं कषायं स्याद्वर्ण्यं रूक्षं कफापहम् ॥११८॥

सर्जक, बस्तकर्ण, कषाय, चिरपत्रक, सस्यसंवरक र शूर : यी पहिलो थरी सालका तथा सर्ज र शाल : यी दोश्रो थरी सालका पर्यायवाची नाम हुन् । सालले कुष्ठ, लुतो, कीरा, कफविकार, वातविकार र पित्तविकारलाई जित्दछ । दुवै थरी साल टर्दा, शरीरको वर्णमा निखार लेराउने, रुखा र कफविकार नाश गर्ने गुणका हुन्छन् ।

विजयशाल (असन)

असनस्तु महासर्जः सौरिर्बन्धूकपुष्पकः ।
प्रियको बीजकः श्यामः सुनीलः प्रियशालकः ॥११९॥
बीजकः सकषायश्च कफपित्तास्रनाशनः ।

असन, महासर्ज, सौरि, बन्धूकपुष्पक, प्रियक, बीजक, श्याम, सुनील र प्रियशालक : यी विजयशालका पर्यायवाची नाम हुन् । यो केही टर्रो तथा कफविकार, पित्तविकार र रक्तविकार नाश गर्ने गुणको हुन्छ ।

सिमल (शाल्मली)

शाल्मली रक्तपुष्पा तु कुक्कुटी चिरजीविका ॥१२०॥
पिच्छिला चूलिनी मोचा कण्टकाढ्या सुपूरणी ।
शाल्मलीवैष्टकः पिच्छा निर्यासः स च शाल्मलः ॥१२१॥
मोचस्रावो मोचरसो मोचनिर्यासकस्तथा ।
शाल्मली शीतला स्निग्धा शुक्रश्लेष्मविवर्धनी ॥१२२॥
कषायस्तद्रसो ग्राही पुष्पं तद्वत्तथा फलम् ।
(शाल्मली पिच्छला वृष्या बल्या मधुरसा तथा ।
तद्रसस्तुद्रुणो ग्राही स च मोचरसस्तथा : ॥)

शाल्मली, रक्तपुष्पा, कुक्कुटी, चिरजीविका, पिच्छिला, चूलिनी, मोचा, कण्टकाढ्या र सुपूरणी : यी सिमलका तथा शाल्मलीवैष्टक, पिच्छा, निर्यास, शाल्मल, मोचस्राव, मोचरस र मोचनिर्यासक : यी सिमलको खोटोका पर्यायवाची नाम हुन् । सिमल शीतवीर्यको, चिल्लो, शुक्र र कफ बढाउने तथा टर्रो हुन्छ । यसको रस वा खोटो ग्राही हुन्छ । फूल र र फलमा पनि यिनै गुण हुन्छन् ।

बुढेत्रो (मुष्कक)

मुष्कको मोक्षको मुष्टिर्मूषको मुञ्चकस्तथा ॥१२३॥
क्षारश्रेष्ठो गोलकश्च द्विविधः श्वेतकृष्णकः ।
वातश्लेष्महरः क्षारश्रेष्ठो ग्राही च गुल्मनुत् ॥१२४॥

मुष्कक, मोक्षक, मुष्टि, मूषक, मुञ्चक, क्षारश्रेष्ठ र गोलक : यी बुढेत्रोका पर्यायवाची नाम हुन् । यो सेतो र कालो गरी दुई किसिमको हुन्छ । बुढेत्रो वातविकार र कफविकार नाश गर्ने, उत्तम क्षारयुक्त, ग्राही र गुल्म नाश गर्ने गुणको हुन्छ ।

शाल्मलीविशेष, कालो सिमल ? वा गुराँस ? (कूटशाल्मली)

रोहीतको रोहितको रोही दाडिमपुष्पकः ।

कुशाल्मलिः शाल्मलिको रोचनः कूटशाल्मलिः ॥१२५॥

रोहितको यकृत्प्लीहगुल्मोदरहरः सरः ।

श्वेतो रोहितकश्चान्य कटूष्णमुभयं स्मृतम् ॥१२६॥

कर्णरोगहरं चैव विषवेगविनाशनम् ।

रोहीतक, रोहितक, रोही, दाडिमपुष्पक, कुशाल्मलि, शाल्मलिक, रोचन र कूटशाल्मलि : यी गुराँसका पर्यायवाची नाम हुन् । रोहितक कलेजोका रोग, फियोका रोग, गुल्म र पेटका रोग नाश गर्ने तथा मलमूत्रलाई तलतिर सार्ने गुणको हुन्छ । अर्को थरी सेतो रोहितक हुन्छ । दुवै थरी रोहितक पिरा, उष्णवीर्यका तथा कानका रोग र विषको वेग नाश गर्ने गुणका हुन्छन् ।

गनाउने खयर (इरिमेद)

इरिमेदोऽरिमेदश्च गोधास्कन्धोऽरिमेदकः ॥१२७॥

अहिमेदोऽहिमारश्च पूतिमेदोऽहिमारकः ।

मुखरोगहरः शीतो रक्तामस्तम्भकारकः ॥१२८॥

इरिमेद, अरिमेद, गोधास्कन्ध, अरिमेदक, अहिमेद, अहिमार, पूतिमेद र अहिमारक : यी गनाउने खयरका पर्यायवाची नाम हुन् । यो मुखका रोग नाशगर्ने, शीतवीर्यको तथा रगत र आमलाई रोक्ने गुणको हुन्छ ।

लहरे बेली (मल्लिका)

मल्लिका शीतभीरुश्च मदयन्ती प्रमोदिनी ।

मदनीया गवाक्षी च भूपद्यष्टपदी तथा ॥१२९॥
मल्लिकोष्णा कटुः स्वादे दारयत्यास्यजाङ्गदान् ।
सन्त्रासयति नेत्रोत्थरुजः पित्तसमीरजित् ॥१३०॥

मल्लिका, शीतभीरु, मदयन्ती, प्रमोदिनी, मदनीया, गवाक्षी, भूपदी र इष्टपदी : यी लहरे बेलीका पर्यायवाची नाम हुन् । यो उष्णवीर्यको, पिरो, मुखका रोगलाई खुर्केर निकाल्ने, आँखाका रोगलाई त्राहिमाम बनाउने तथा पित्तविकार र वातविकारलाई जित्ने गुणको हुन्छ ।

बेली (वार्षिकी)

वार्षिकी त्रिपुटा त्र्यस्रा सुरूपा सुभगा प्रिया ।
श्रीमती षट्पदानन्दा सुवर्षा मुक्तबन्धना ॥१३१॥
वार्षिकी शिशिरा हृद्या सुगन्धा पित्तनाशिनी ।

वार्षिकी, त्रिपुटा, त्र्यस्रा, सुरूपा, सुभगा, प्रिया, श्रीमती, षट्पदानन्दा, सुवर्षा र मुक्तबन्धना : यी बेलीका पर्यायवाची नाम हुन् । यो शीतवीर्यको, मुटुका लागि हितकर, सुगन्धि र पित्तविकार नाश गर्ने गुणको हुन्छ ।

चमेली (जाती)

जाती मनोज्ञा सुमना राजपुत्री प्रियंवदा ॥१३२॥
मालती हृद्यगन्धा च चेतिका तैलभाविनी ।
मालती कफपित्तास्यरुक्पाकव्रणकुष्ठजित् ॥१३३॥
चक्षुष्यो मुकुलस्तस्यास्तत्पुष्पं कफपित्तजित् ।
सुगन्धि च मनोज्ञं च सर्वश्रेष्ठतमं मतम् ॥१३४॥

जाती, मनोज्ञा, सुमना, राजपुत्री, प्रियंवदा, मालती, हृद्यगन्धा, चेतिका र तैलभाविनी : यी चमेलीका पर्यायवाची नाम हुन् । चमेली कफविकार, पित्तविकार, मुखका रोग, मुख पाकेको, खटिरा र कुष्ठलाई जित्ने गुणको हुन्छ । त्यसको कोपिला आँखाका लागि हित गर्ने तथा त्यसको फूल कफविकार र पित्तविकारलाई जित्ने गुणको हुन्छ । यो सुगन्धि, मनमोहक र सर्वश्रेष्ठ हुन्छ ।

सानो नेवारी (वासन्ती)

वासन्ती प्रहसन्ती च सुवसन्ती वसन्तजा ।
शोभना शीतसंवासा सेव्या भ्रमरबान्धवा ॥१३५॥
वासन्ती शीतला हृद्या सुगन्धा स्वेदनाशिनी ।

वासन्ती, प्रहसन्ती, सुवसन्ती, वसन्तजा, शोभना, शीतसंवासा, सेव्या र भ्रमरबान्धवा : यी सानो नेवारी फूलका पर्यायवाची नाम हुन् । यो शीतवीर्यको, मुटुका लागि हितकर, सुगन्धि र पसिना नाश गर्ने गुणको हुन्छ ।

नेवारी (गैष्मी)

गैष्मी तु सुरभिः कान्ता सुगन्धा वनमालिनी ॥१३६॥
सुकुमारा शिखरिणी च नेपाली वनमालिका ।
नेपालिका रसे तिक्ता वीर्ये चोष्णा प्रकीर्तिता ॥१३७॥
वातपित्तरुजां नेत्ररोगाणां नाशिनी मता ।

गैष्मी, सुरभि, कान्ता, सुगन्धा, वनमालिनी, सुकुमारा, शिखरिणी, नेपाली र वनमालिका : यी नेवारी फूलका पर्यायवाची नाम हुन् । यो तितो, उष्णवीर्यको तथा वातविकार, पित्तविकार र आँखाका रोग नाश गर्ने गुणको हुन्छ ।

चाँप (चम्पक)

चम्पकः सुकुमारश्च सुरभिः शीतलश्च सः ॥१३८॥
चाम्पेयो हेमपुष्पश्च काञ्चनः षट्पदातिथिः ।
चम्पकः कथितः शीतो वीर्येऽतिकटुको रसे ॥१३९॥
हृद्यः सुगन्धिर्विषहा कफपित्तविनाशनः ।

चम्पक, सुकुमार, सुरभि, शीतल, चाम्पेय, हेमपुष्प, काञ्चन र षट्पदातिथि : यी चाँपको पर्यायवाची नाम हुन् । यो शीतवीर्यको, अति पिरो, मुटुका लागि हितकर, सुगन्धि तथा विषविकार, कफविकार र पित्तविकार नाश गर्ने गुणको हुन्छ ।

फूलविशेष (तरुणी)

तरुणी रामतरुणी कर्णिका चारुकेशरा ॥१४०॥
सहा कुमारी गन्धाढ्या द्विरेफगणसम्मता ।
तरुणी श्लेष्मपित्तघ्नी ग्राहिणी शीतलाऽग्निजित् ॥१४१॥

तरुणी, रामतरुणी, कर्णिका, चारुकेशरा, सहा, कुमारी, गन्धाढ्या र द्विरेफगणसम्मता : यी तरुणी फूलका पर्यायवाची नाम हुन् । यो कफविकार र पित्तविकार नाश गर्ने, ग्राहि, शीतवीर्यको तथा पाचक-अग्निलाई जित्ने गुणको हुन्छ ।

बाह्रमासे गुलाफ (कुब्जक)

कुब्जको भद्रतरुणी बृहत्पुष्पाऽतिकेशरा ।
महासहा कण्टकाढ्या नीलालिकुलसङ्कुला ॥१४२॥
कुब्जकः सुरभिः स्वादुः कषायस्तु रसायनः ।
त्रिदोषशमनो वृष्यः शीतः सङ्ग्रहणोपरः ॥१४३॥

कुब्जक, भद्रतरुणी, बृहत्पुष्पा, अतिकेशरा, महासहा, कण्टकाढ्या र नीलालिकुलसङ्कुला : यी कुब्जकका पर्यायवाची नाम हुन् । कुब्जक सुगन्धि, गुलियो, टर्रो, रसायनी, त्रिदोषलाई शान्त पार्ने, वीर्यवर्धक, शीतवीर्यको र अति ग्राही हुन्छ ।

जूही (यूथिका)

यूथिका बालपुष्पा तु बहुगन्धा गुणोज्ज्वला ।
गणिका चारुमोदा च शिखण्डी स्वर्णयूथिका ॥१४४॥
सुवर्णयूथा हरिणी पीतिका पीतयूथिका ।
प्रोक्ताऽन्या शङ्खधवला नामतः शङ्खयूथिका ॥१४५॥
यूथिकायुगलं स्वादु शर्कराघ्नं सुगन्धि च ।

यूथिका, बालपुष्पा, बहुगन्धा, गुणोज्ज्वला, गणिका, चारुमोदा र शिखण्डी; स्वर्णयूथिका, सुवर्णयूथा, हरिणी, पीतिका र पीतयूथिका : यी जूहीका तथा शङ्खधवला र शङ्खयूथिका : यी जूहीविशेषका पर्यायवाची नाम हुन् । दुवै थरी जूही गुलिया, बालुवादार पत्थरी नाश गर्ने र सुगन्धि हुन्छन् ।

फूलविशेष (कुन्द)

कुन्दः सुमकरन्दश्च सदापुष्पो मनोहरः ॥१४६॥
अट्टहासो भृङ्गसुहृच्छुक्लः शाल्योदनोपमः ।
कुन्दस्य कुसुमं हृद्यं स्वल्पगन्धि मनोहरम् ॥१४७॥

कुन्द, सुमकरन्द, सदापुष्प, मनोहर, अट्टहास, भृङ्गसुहृत्, (शुक्ल र शाल्योदनोपम) : यी कुन्दपुष्पका पर्यायवाची नाम हुन् । यसको फूल मुटुका लागि हितकर, कम बास्ना आउने र सुन्दर हुन्छ ।

गुलाफविशेष (शतपत्री)

शतपत्री तु सुमना सुशीता शिववल्लभा ।
सौम्यगन्धा शतदला सुवृत्ता शतपत्रिका ॥१४८॥
शतपत्रा हिमा तित्ता कषाया कुष्ठनाशिनी ।
मुखस्फोटहरा रुच्या सुरभिः पित्तदाहनुत् ॥१४९॥

शतपत्री, सुमना, सुशीता, शिववल्लभा, सौम्यगन्धा, शतदला, सुवृत्ता र शतपत्रिका : यी गुलाफविशेषका पर्यायवाची नाम हुन् । यो शीतवीर्यको, तितो, टर्रो, कुष्ठ र मुख फुटेको (मुखका खटिरा) नाश गर्ने, रुचिप्रद, सुगन्धि तथा पित्तविकार र डाह नाशगर्ने गुणको हुन्छ ।

माधवी लता (अतिमुक्तक)

अतिमुक्तः कार्मुकश्च मण्डनो भ्रमरोत्सवः ।
अविमुक्तो माधवी च सुवसन्तः पराश्रयः ॥१५०॥
अविमुक्तः सुगन्धि स्याद्धृद्यमुक्तं सुमण्डनम् ।

अतिमुक्त, कार्मुक, मण्डन, भ्रमरोत्सव, अविमुक्त, माधवी, सुवसन्त र पराश्रय : यी माधवी लताका पर्यायवाची नाम हुन् । यो सुगन्धि, मुटुका लागि हितकर तथा राम्ररी शोभित हुन्छ ।

मौलसिरी (बकुल)

बकुलः सीधुगन्धश्च मद्यगन्धो विशारदः ॥१५१॥
(मधुगन्धो गूढपुष्पः शीर्षकेसरकस्तथा ।)
मधुरं च कषायं च स्निग्धं सङ्गाहि बाकुलम् ।
स्थिरीकरं च दन्तानां विशदं तत्फलं गुरु ॥१५२॥

बकुल, सीधुगन्ध, मद्यगन्ध, विशारद, मधुगन्ध, गूढपुष्प र शीर्षकेसरक : यी मौलसिरीका पर्यायवाची नाम हुन् । यो गुलियो, टर्रो, चिल्लो, ग्राहि, दाँतलाई स्थिर राख्ने र सुन्दर देखिने गुणको हुन्छ । यसको फल पचाउन कठिन हुन्छ ।

किङ्किरात (?)

किङ्किरातः किङ्किराटः पीतकः पीतभद्रकः ।
हेमगौरो विप्रलम्भी षट्पदानन्दवर्धनः ॥१५३॥
किङ्किरातोद्भवं पुष्पं सुगन्धि हर्षपुष्टिदम् ।
(सुरङ्गी च भवेदुष्णा तिक्ता कफविनाशिनी ।
अर्शासां निचयं हन्ति शोफसङ्घातनाशिनी ॥)

किङ्किरात, किङ्किराट, पीतक, पीतभद्रक, हेमगौर, विप्रलम्भी र षट्पदानन्दवर्धन : यी किङ्किरातका पर्यायवाची नाम हुन् । यसको फूल सुगन्धि तथा हर्ष र पुष्टि दायक हुन्छ । यसको केशर उष्णवीर्यको, तितो तथा कफविकार, हर्साको थुप्रो र सुजनको मार नाश गर्ने गुणको हुन्छ ।

तिल्को (तिलक)

तिलकः पूर्णकः श्रीमान्क्षुरकश्छत्रपुष्पकः ॥१५४॥
मुखमण्डनको रेची पुण्ड्रश्चित्रो विशेषकः ।
तिलकत्वक्कषायोष्णा पुंस्त्वघ्नी दन्तरोगजित् ॥१५५॥

तिलक, पूर्णक, श्रीमान्, क्षुरक, छत्रपुष्पक, मुखमण्डनक, रेची, पुण्ड्र, चित्र र विशेषक : यी तिल्कोका पर्यायवाची नाम हुन् । यसको बोक्रो टर्रो, उष्णवीर्यको, पुरुषत्व नाशक तथा दाँतका रोगलाई जित्ने गुणको हुन्छ ।

अशोक

अशोकः शोकनाशश्च विचित्रः कर्णपूरकः ।
विशोको रक्तको रागी चित्रः षट्पदमञ्जरी ॥१५६॥
अशोकः शीतलश्चार्शः कृमीन् हन्ति प्रयोजितः ।
अपचीं नाशयत्येव सर्वव्रणविनाशनः ॥१५७॥
अशोको मधुरो हृद्यः सन्धानीयः सुगन्धिकः ।

अशोक, शोकनाश, विचित्र, कर्णपूरक, विशोक, रक्तक, रागी, चित्र र षट्पदमञ्जरी : यी अशोकका पर्यायवाची नामहरू हुन् । अशोक शीतवीर्यको हुन्छ । यसको मिश्रण गरी तयार पारिएका ओखतीले अल्काई र कीरा नाश गर्दछ । यसले अपची त नाश गर्दछ नै सबै खालका घाउखटिरा पनि नाश गर्दछ । अशोक गुलियो, मुटुका लागि हितकर, अमिल्ल्याउन वा दुई वस्तु मिलाउन उपयुक्त र (फूल) अत्तर बनाउन उपयोगी हुन्छ ।

पल्लस (किंशुक)

किंशुको वातपोथश्च रक्तपुष्पोऽथ याज्ञिकः ॥१५८॥
त्रिपर्णो रक्तपुष्पश्च पूतद्रुर्ब्रह्मवृक्षकः ।
क्षारश्रेष्ठः पलाशश्च बीजस्नेहः समिद्धरः ॥१५९॥
(त्रिवृन्तास्यो ब्रह्मवृक्षः खरपर्णः त्रिपर्णकः ।)
क्षारश्रेष्ठः कृमिघ्नश्च सङ्गाही दीपनः सरः ।
प्लीहगुल्मग्रहण्यर्शोवातश्लेष्मविनाशनः ॥१६०॥
किंशुकस्यापि कुसुमं सुगन्धि मधुरं च यत् ।
बीजं तु कटुकं स्निग्धमुष्णं कृमिबलासजित् ॥१६१॥

किंशुक, वातपोथ, रक्तपुष्प, याज्ञिक, त्रिपर्ण, रक्तपुष्प, पूतदु, ब्रह्मवृक्षक, क्षारश्रेष्ठ, पलाश, बीजस्नेह, समिद्धर, (त्रिवृन्तास्य, ब्रह्मवृक्ष, खरपर्ण र त्रिपर्णक) : यी पल्लौसका पर्यायवाची नाम हुन् । यो उत्तम क्षारयुक्त, कीरा नाशक, ग्राही, दीपनी, मलमूत्रलाई तलतिर सार्ने तथा फियोका रोग, गुल्म, ग्रहणी, हर्सा, वातविकार र कफविकार नाश गर्ने गुणको हुन्छ । यसको फूल सुगन्धि र गुलियो हुन्छ । यसको बीज पिरो, चिल्लोयुक्त, उष्णवीर्यको तथा कीरा र कफविकारलाई जित्ने गुणको हुन्छ ।

उपसंहार

आम्रादिरयमुद्दिष्ठो वर्गश्रेष्ठस्तु पञ्चमः ।
हर्षणो गन्धसौरभ्य फलत्वक्पुष्पसंश्रयः ॥

सुखदायक गन्ध, सुगन्ध, फल, बोक्रा र फूल समेतका बारेमा बताइएको पाँचौं श्रेष्ठ आम्रादि वर्गका बारेमा बताइयो ।

सङ्कलन : मोहन प्रसाद सापकोटा

वर्गेतराणि
क्यात्तुके (केतकीद्वयम्)

केतकी सूचिकापुष्पो जम्बूकः क्रकचच्छदः ।
सुवर्णकेतकी चान्या लघुपुष्पा सुगन्धिनी ॥
केतकी कटुका पाके लघु तिक्ता कफाहरा ।

केतकी, सूचिकापुष्प, जम्बूक र क्रकचच्छद : यी केतकीका तथा सुवर्णकेतकी, लघुपुष्पा र सुगन्धिनी : यी सुवर्णकेतकीका पर्यायवाची नाम हुन् । केतकी पचेपछि पिरो, पचाउन सहज, तितो र कफविकार नाश गर्ने गुणको हुन्छ ।

सयपत्री (गणेरुका)

गणेरुका कर्णिकारः कर्णिश्च गणिकारिका ।
गणेरुः शोधनी शोफश्लेष्मास्रवणकुष्ठजित् ॥

गणेरुक, कर्णिकार, कर्ण र गणिकारिका : यी सयपत्रीका पर्यायवाची नामहरू हुन् । यो प्रशोधक तथा सुजन, कफविकार, रक्तविकार, घाउखटिरा र कुष्ठ नाशक हुन्छ ।

टीक (साग)

सागः करच्छदो भूमिसहो दीर्घच्छदो मतः ।
सागः श्लेष्मानिलस्रघ्नो गर्भसन्धानदो हिमः ॥

साग, करच्छद, भूमिसह र दीर्घच्छद : यी टिकका पर्यायवाची नाम हुन् । यो कफविकार, वातविकार र रक्तविकार नाश गर्ने; गर्भ बसाउने र शीतवीर्य गुणको हुन्छ ।

धर्यैरोविशेष (धव)

धवः नन्दितरुगौरी शकटाक्षो धुरन्धुरी ।
धवः शीतः प्रमेहार्शः पाण्डुपित्तकफापहः ॥

धव, नन्दितरु, गौरी, शकटाक्ष र धुरन्धुरी : यी धयैरोविशेषका पर्यायवाची नाम हुन् । यो शीतवीर्यको तथा प्रमेह, हर्सा, पाण्डु, पित्तविकार र कफविकार नाश गर्ने गुणको हुन्छ ।

पुष्पिका

इति रसवीर्यविपाकसहिते धन्वन्तरिनिघण्टौ
आम्रादिः पञ्चमो वर्गः ॥५॥

रस, वीर्य, विपाक सहित बताइएको धन्वन्तरि निघण्टुको पाँचौँ आम्रादि वर्ग समाप्त भयो ।

सङ्कलन : मोहन प्रसाद सापकोटा

अथ सुवर्णादिः षष्ठो वर्गः
सुन (सुवर्ण)

सुवर्णं कनकं रुक्मं शातकुम्भं च काञ्चनम् ।
जाम्बूनदं जातरूपं हिरण्यं हेम हाटकम् ॥१॥
चामीकरं चारुरत्नं तपनीयं च पीतकम् ।
श्रीकेतनं भूषणार्हं चारुरूपं च तत्स्मृतम् ॥२॥
वीर्यं विधत्ते हरते रोगान्करोति सौख्यं प्रबलेन्द्रियत्वम् ।
शुक्रस्य शुद्धिं बलवर्णवीर्यमोजश्च पुष्टिं प्रददाति हेम ॥३॥
बलं च वीर्यं हरते नराणां रोगव्रजान्पोषयतीह काये ।
असौख्यदं तच्च सदैवमेवं रुक्मं सदोषं मरणं करोति ॥४॥

सुवर्ण, कनक, रुक्म, शातकुम्भ, काञ्चन, जाम्बूनद, जातरूप, हिरण्य, हेम, हाटक, चामीकर, चारुरत्न, तपनीय, पीतक, श्रीकेतन, भूषणार्ह र चारुरूप : यी सुनका पर्यायवाची नाम हुन् । प्रशोधित सुन वीर्यवर्धक, रोग नाश गर्ने, सुख प्रदान गर्ने, इन्द्रियलाई बलियो बनाउने, शुक्रलाई शुद्ध बनाउने तथा बल, शरीरको वर्ण, वीर्य, ओज र पुष्टि प्रदान गर्ने गुणको हुन्छ । अशुद्ध सुन बल र वीर्य नाश गर्ने, शरीरमा अनेक थरी रोगलाई पोषण गर्ने, सुखदायी नहुने र मृत्युसम्म गराउने गुणको हुन्छ ।

चाँदी (रौप्य)

रौप्यं सौधं सितं तारं रजतं तप्तरूपकम् ।
शुभ्रं कुप्यं वसुश्रेष्ठं रुचिरं श्वेतकं मतम् ॥५॥
चन्द्रहासं चन्द्रवपुश्चन्द्रभूति महावसु ।
वाक्यलं श्रेष्ठमिच्छन्ति रश्मिजालं तथाऽपरम् ॥६॥
तारं च तारयति रोगसमुद्रपारं देहस्य सौख्यकरणं पलितं बलिं च ।
वर्ण्यं विषघ्नममलं हरति प्रसह्य वृष्यं पुनर्नवकरं कुरुते चिरायुः ॥७॥
अपक्वतारं प्रकरोति तापं विड्बन्धनं यच्छति शुक्रनाशम् ।
अपाटवं वीर्यबलप्रहानिदं महागदान्पोषयति प्रसिद्धम् ॥८॥

रौप्य, सौध, सित, तार, रजत, तप्तरूपक, शुभ्र, कुप्य, वसुश्रेष्ठ, रुचिर, श्वेतक, चन्द्रहास, चन्द्रवपु, चन्द्रभूति, महावसु, वाक्यल र रश्मिजाल : यी चाँदीका पर्यायवाची नाम हुन् । शुद्ध चाँदी रोगको

समुद्रबाट पार लगाउने, शरीरलाई सुख दिने, उमेर नपुगी कपाल फुल्ने र छाला चाउरी पर्ने समस्या हटाउने, वर्णमा निखार लेराउने, विषविकार नाश गर्ने, पाप वा मयल नाश गर्ने, वीर्य बढाउने, रसायनी र आयु बढाउने गुणको हुन्छ । अशुद्ध चाँदी डाहकारी, कब्जियत गर्ने, शुक्र नाश गर्ने, शरीरमा आलस्य प्रदान गर्ने, वीर्य र बल नाश गर्ने तथा कडा खालका रोगलाई पोषण गर्ने गुणको हुन्छ ।

तामा (ताम्र)

ताम्रं म्लेच्छमुखं शुल्बं रक्तकं रक्तधातुकम् ।
उदुम्बरं त्र्यम्बकं च विद्यात्त्वाष्ट्रं च नामतः ॥१॥
गुल्मं च कुष्ठं च गुदामयं च शूलानि शोफोदरपाण्डुरोगान् ।
उत्क्लेशभेदभ्रममोहदाहान्निहन्ति सम्यङ्मृतमेव शुल्बम् ॥१०॥
शुल्बं तनौ नयति शेषमशेषधातुं रोगान्करोति विविधांश्च निहन्ति कान्तिम् ।
कुष्ठं रुजं च विषमं कुरुते विशेषात्पाकेन हीनमिह वान्तिविरेचकारि ॥११॥
हन्त्यायुरुच्चैः कुरुतेऽतितापं मूर्च्छां विधत्ते हरते च शुक्रम् ।
नानागदानां च सहायकर्ताऽशुद्धश्च शुल्बोऽत्र च जीवहर्ता ॥१२॥

सङ्कलन : मोहन प्रसाद सापकोटा

ताम्र, म्लेच्छमुख, शुल्ब, रक्तक, रक्तधातुक, उदुम्बर, त्र्यम्बक र त्वाष्ट्र : यी तामाका पर्यायवाची नाम हुन् । शुद्ध तामा गुल्म, कुष्ठ, गुदद्वारका रोग, शूल, सुजन, पेटका रोग, पाण्डु, उत्क्लेश, भेद, भ्रम, मोह र डाह नाश गर्ने गुणको हुन्छ । अशुद्ध तामा शरीरलाई सुकाउने, धातु नाश गर्ने, रोग निकाल्ने, कान्ति नाश गर्ने, कुष्ठरोग गर्ने, बान्ता गराउने, दिसा लगाउने, आयु नाश गर्ने, अति डाहकारी, बेहोस पार्ने, शुक्र नाश गर्ने, अनेक थरी रोग निकाल्न सहयोग गर्ने र अन्तमा ज्यान समेत लिने गुणको हुन्छ ।

राङ्ग (वङ्ग)

त्रपु त्रपुकमानीलं रङ्गं वङ्गं च पिच्चटम् ।
गुरुश्रेष्ठं सलवणं सुरटी नीलिका घनम् ॥१३॥

त्रपु, त्रपुक, आनील, रङ्ग, वङ्ग र पिच्चटम् । गुरुश्रेष्ठ, सलवण, सुरटी, नीलिका र घन : यी राङ्गका पर्यायवाची नाम हुन् ।

त्रपुसं तित्तमुष्णं च रूक्षं श्लेष्मविघातकृत् ।
पित्तप्रकोपशमनं विकारं कृमिजं जयेत् ॥१४॥
सतित्तं लवणं भेदि पाण्डुत्वकृमिवातजित् ।
लेखं च पित्तलं किञ्चित्त्रपु सीसं च तद्गुणम् ॥१५॥

त्रपुस तितो, उष्णवीर्यको, रुखो तथा कफविकार, पित्तविकार र कीरा नाश गर्ने गुणको हुन्छ । यो केही तितो, नुनिलो, भेदनी तथा पाण्डु, कीरा र वातविकारलाई जित्ने गुणको हुन्छ । यो लेखनी र केही पित्तविकार गर्ने गुणको हुन्छ । सीसामा पनि यिनै गुण हुन्छन् ।

पाकेन हीनौ खलु नागवङ्गौ दुष्टानि गुल्मानि तथा विकुष्ठम् ।
पाण्डुप्रमेहापचिवातशोफभगन्दरश्चित्रकिलासकुष्ठम् ॥१६॥
मेहाश्मरीविद्रधिमुख्यरोगानतीव नित्यं कुरुतो बलादौ ।
विषोपमौ रक्तविकारवृन्दं क्षयं च कृच्छ्राणि कफज्वरं च ॥१७॥

अशुद्ध राङ र सिसा (वङ्ग र नाग) को भष्मले गुल्म, कुष्ठ, पाण्डु, प्रमेह, अपचि, वातविकार, सुजन, भगन्दर, सेतोकुष्ठ, कलासकुष्ठ, मेहजन्य पत्थरी, विद्रधि आदि रोग निकाल्दछ । दुवैले बल नाश गर्दछन् । विष समान हुन्छन् । यस्तो भष्मले रक्तविकार, क्षयरोग, कृच्छ्र र कफजन्य जरो समेत निकाल्दछ ।

पित्तल

रीतिका काकतुण्डी च द्विविधं पित्तलं भवेत् ।
रीतिस्तु लोहकः पिङ्गः कपिलोऽहं सुवर्णकम् ॥१८॥
आरं सैहलकश्चैव निष्ठुरो दारुकण्टकः ।
राजरीतिः स्मृता राज्ञी राजपुत्री महेश्वरी ॥१९॥
ब्रह्माणी ब्रह्मरीतिश्च कपिला पिङ्गलाऽपि च ।
रीतिद्वयं पाण्डुसमीरणघ्नं रूक्षं सरं कृमिहरं लवणं विषघ्नम् ।
वृष्यं वलीपलितनाशनमुग्रमायुर्वृद्धिं करोति सहसा च रसायनाग्रम् ॥२०॥

रीतिका (आगोमा तताएर अमिलोमा डुबाउँदा हल्का तामा रङ मिसिएको पहेँलो हुने) र काकतुण्डी (आगोमा तताउँदा कालो भाव धेरै भएर पहेँलो देखिने पित्तल) गरी पित्तल दुई प्रकारको हुन्छ । रीति,

लोहक, पिङ्ग, कपिलोह, सुवर्णक, आर, सैहलक, निष्ठुर, दारुकण्टक, : यी पित्तलका तथा राजरीति, राज्ञी, राजपुत्री, महेश्वरी, ब्रह्माणी, ब्रह्मरीति, कपिला र पिङ्गला : यी पित्तलविशेषका पर्यायवाची नाम हुन् । दुवै थरी पित्तल पाण्डु र वातविकार नाश गर्ने, रुखा, मलमूत्रलाई तलतिर सार्ने, कीरा नाश गर्ने, नुनिला, विषविकार नाश गर्ने, वीर्यवर्धक, उमेर नपुगी कपाल फुल्ने र छाला चाउरी पर्ने रोग नाश गर्ने, आयु बढाउने र रसायनी हुन्छन् ।

सिसा (नाग)

सीसकं नागमुरगं कृष्णोरगभुजङ्गमाः ।
यवनेष्टं विशिष्टं च योगीष्टं चीरपिष्टकम् ॥२१॥
नागो हि नागसममेव बलं ददाति व्याधीन्विनाशयति चाऽऽयुरलं करोति ।
प्रधानधातोरपि वर्धनश्च भुजङ्गराजो हरते च मृत्युम् ॥२२॥

सीसक, नाग, उरग, कृष्णोरग, भुजङ्गम, यवनेष्ट, विशिष्ट, योगीष्ट र चीरपिष्टक : सिसाका पर्यायवाची नाम हुन् । सिसाभस्म हात्ती जस्तै बलियो बनाउने, रोग नाश गर्ने, आयु बढाउने, वीर्य बढाउने र मृत्युलाई भगाउने गुणको हुन्छ ।

संकलन : मोहन प्रसाद सापकोटा

काँस धातु (कांस्य)

कांस्यं लोहं निजं घोषं प्रकाशं कांस्यकं बलम् ।
घोषपुष्पं च पठितं शब्दैः पर्यायवाचकैः ॥२३॥
कांस्यं तिक्तोष्णरूक्षं च लघु लेखि प्रकीर्तितम् ।
अञ्जनादिप्रयुक्तं च दिव्यदृष्टिप्रदायकम् ॥२४॥

अन्यच्च-

निःसंशयं हन्ति समस्तरोगान्घोषं नृणां स्याद्दृढदेहकर्तु ।
कामस्य वृद्धिं कुरुते बलासं यकृन्निहन्त्याशु बलं करोति ॥२५॥

कांस्य, लोह, निज, घोष, प्रकाश, कांस्यक, बल र घोषपुष्प : यी काँसका पर्यायवाची नाम हुन् । काँस तितो, उष्णवीर्यको, रुखो, पचाउन सहज, लेखनी, गाजल आदिमा प्रयोग गर्दा दृष्टि क्षमता बढाउने, सबै रोग अवश्य नाश गर्ने, मानिसको शरीरलाई बलियो बनाउने, यौन क्षमता बढाउने, कफविकार र कलेजोका रोग नाश गर्ने तथा तुरुन्त बल दिने गुणको हुन्छ ।

फलाम (लोह)

लोहं शस्त्रं घनं पिण्डं तीक्ष्णं पारशवं मतम् (शिवम्) ।

अयः कृष्णायसं वीरं भ्रमरं कृष्णलोहकम् ॥२६॥

लोह, शस्त्र, घन, पिण्ड, तीक्ष्ण, पारशव, (शिव), अय, कृष्णायस, वीर, भ्रमर र कृष्णलोहक : यी फलामका पर्यायवाची नाम हुन् ।

मुण्डं तीक्ष्णं च कान्तं च त्रिप्रकारमयः स्मृतम् ।

मुण्ड, तीक्ष्ण र कान्त गरी तीन प्रकारको फलाम हुन्छ ।

मृदु कण्टं कडारं च त्रिविधं मुण्डमुच्यते ॥२७॥

मृदु, कण्ट र कडार गरी तीन प्रकारको मुण्ड फलाम हुन्छ ।

सङ्कलन : मोहन प्रसाद सापकोटा

खरसारं च हर्तालं तालं वल्लं च वज्ररम्
काललोहाभिधानं च षड्विधं तीक्ष्णमुच्यते ॥२८॥

खरसार, हर्ताल, ताल, वल्ल, वज्रर र काललोह गरी छ प्रकारको तीक्ष्ण फलाम हुन्छ ।

भ्रामरं चुम्बकं चैव रञ्जकालोचके तथा ।

एवं चतुर्विधं कान्तं रोमकान्तं च पञ्चमम् ॥२९॥

भ्रामर, चुम्बक, रञ्जक, आलोचक र रोमकान्त गरी पाँच प्रकारको कान्त फलाम हुन्छ ।

कषायं शोफशूलार्शःकुष्ठपाण्डुप्रमेहजित् ।

लोहं तिक्तोष्णरूक्षं स्यात्पाण्डुरोगहरं परम् ॥

कफपित्तापहं पुंसां रसायनमनुत्तमम् ॥३०॥

फलाम टर्रो; सुजन, शूल, हर्सा, कुष्ठ, पाण्डु र प्रमेहलाई जित्ने; तितो, उष्णवीर्यको, रुखो; पाण्डु, कफविकार र पित्तविकार नाश गर्ने तथा रसायनी गुणको हुन्छ ।

अन्यच्च-

आयुःप्रदाता बलवीर्यकर्ता रोगापहर्ता मदनस्य कर्ता ।
अयः समानो न हि कश्चिदन्यो रसायनं श्रेष्ठतमं वदन्ति ॥३१॥
दोषकारि गदकारि चाऽऽयसं चेदशुद्धमतिं ध्रुवम् ।
पाटवं न तनुते शरीरके दारुणां हृदि रुजं करोति ॥३२॥

फलाम आयु बढाउने, बल र वीर्य दिने, रोग नाश गर्ने र मैथुन क्षमता बढाउने गुणको हुन्छ । फलामसमान श्रेष्ठ अर्को कुनै रसायनी छैन । अशुद्ध वा अतिशुद्ध लोहभस्म दोष गर्ने, रोग निकाल्ने, शरीर पातलो पार्ने तथा मुटुका कडा रोग निकाल्ने गुणको हुन्छ ।

फलामविशेष (वर्तलोह)

वर्तलोहं वट्टलोहं वर्तकं लोहमेव च ।
वर्तुलोहं च विख्यातं पञ्चलोहं च नीलिका ॥३३॥
वर्तलोहं हिमं विद्यादम्लं कटुकमेव च ।
रूक्षं कफविकारघ्नं हन्यात्पित्तोद्भवा रुजः ॥३४॥

वर्तलोह, वट्टलोह, वर्तकलोह, वर्तुलोह, पञ्चलोह र नीलिका : यी वर्तलोहका पर्यायवाची नाम हुन् । यो शीतवीर्यको, अमिलो, पिरो, रुखो तथा कफविकार र पित्तजन्य रोग नाश गर्ने गुणको हुन्छ ।

कीट (मण्डूर)

लोहोच्छिष्टं च मण्डूरं किट्टं चैव मलोद्भवम् ।
लोहोत्थं लोहनिर्यासमयः शिष्टं च कीर्तितम् ॥३५॥
आमवातहरणं च शोभनं पाण्डुमेहगदनाशनाग्रजम् ।
दुष्टकुष्ठपवनास्रवातजित्स्याज्जराकृतवलीविनाशनम् ॥३६॥

लोहोच्छिष्ट, मण्डूर, किट्ट, मलोद्भव, लोहोत्थ, लोहनिर्वास र अयःशिष्ट : यी कीटका पर्यायवाची नाम हुन् । यो आमवात नाश गर्ने; पाण्डु र प्रमेह नाश गर्ने; खराब कुष्ठ, वातविकार र रक्तवातलाई जित्ने तथा बुढ्यौलीले गर्दा छाला चाउरी पर्ने (एवं कपाल फुल्ने) समस्या नाश गर्ने गुणको हुन्छ ।

पारो (पारद)

पारदो रुद्रेतश्च रसलोहं महारसम् ।
रसेन्द्रं चपलं सूतं पारदीयं रसोत्तमम् ॥३७॥
पारदः कृमिकुष्ठघ्नं आयुष्यो दृष्टिदः परः ।
सुबल्यः सकषायश्च मूर्च्छितोऽसौ गदापहः ॥३८॥
संस्कारहीनं खलु सूतराजं सेवेत यस्तस्य करोति बाधाम् ।
देहस्य नाशं विदधाति नूनं कुष्ठादिदोषाञ्जनयेन्नराणाम् ॥३९॥

पारद, रुद्रेत, रसलोह, महारस, रसेन्द्र, चपल, सूत, पारदीय र रसोत्तम : यी पारोका पर्यायवाची नाम हुन् । प्रशोधित पारो कीरा र कुष्ठ नाश गर्ने, आयु प्रदायक, दृष्टिक्षमता बढाउने, बलदायक, टर्रो र अनेक थरी रोग नाश गर्ने गुणको हुन्छ । अप्रशोधित वा राम्ररी प्रशोधन नगरिएको पारो मानिसलाई अनेक थरी बाधा गराउने, शरीरको नाश गर्ने र कुष्ठ आदि रोग निकाल्ने गुणको हुन्छ ।

हिङ्गुल

हिङ्गुलं दरदं म्लेच्छं हिङ्गुलं चूर्णपारदम् ।
मणिरागकरं चान्यन्नाम्ना चर्मानुरञ्जनम् ॥४०॥
हिङ्गुलं कटुकं पाके वीर्ये चोष्णं प्रकीर्तितम् ।
विषकुष्ठविसर्पादित्वग्दोषदलनं स्मृतम् ॥४१॥
हिङ्गुलं मधुरं तिक्तमुष्णं वातकफापहम् ।
त्रिदोषद्वन्द्वदोषोत्थं ज्वरं हरति सेवितम् ॥४२॥

ग्रन्थान्तरे-

हिङ्गुलः सर्वदोषघ्नो दीपनोऽतिरसायनः ।
सर्वरोगहरो वृष्यो जारणे लोहमारणे ॥४३॥

हिङ्गुल, दरद, म्लेच्छ, हिङ्गुल, चूर्णपारद र मणिरागकर : यी हिङ्गुलका पर्यायवाची नाम हुन् । अर्कोथरी हिङ्गुललाई चर्मानुरञ्जन भनिन्छ । हिङ्गुल पचेपछि पिरो, उष्णवीर्यको; विषविकार, कुष्ठ, विसर्प आदि छालाका रोग नाश गर्ने; गुलियो, तितो, उष्णवीर्यको, वातविकार र कफविकार नाश गर्ने तथा त्रिदोष वा दुई दोषले हुने जरो नाश गर्ने गुणको हुन्छ । अन्यत्र भनिएको छ कि-हिङ्गुलले सबै दोष नाश गर्दछ । यो दीपनी, अति रसायनी, सबै रोग नाश गर्ने, वीर्यवर्धक, पारो प्रशोधन गर्ने तथा फलाम प्रशोधन गर्न उपयुक्त हुने गुणको हुन्छ ।

बिल्लौर (वैक्रान्त)

वैक्रान्तं क्रान्तसञ्ज्ञं स्याद्वज्रो भूमिरजस्तथा ।
गोनसं क्षुद्रकुलिशं जीर्णवज्रं तु वज्रकम् ॥४४॥

वैक्रान्त, क्रान्त वाची शब्द, वज्र, भूमिरज, गोनस, क्षुद्रकुलिश, जीर्णवज्र र वज्रक : यी बिल्लौरका पर्यायवाची नाम हुन् ।

तत्तु सप्तविधं प्रोक्तमनेककर्मकारकम् ।
षट्कोणं तीक्ष्णधारं च स्वच्छमिन्द्रधनुश्छवि ॥४५॥
तदुत्तमं तु वैक्रान्तं हितं प्रोक्तं रसायने ।

अनेक थरी कर्म गर्ने बिल्लौर सात किसिमको हुन्छ । छ कुना परेको, तिखो धान भएको, स्वच्छ र इन्द्रधनुषको जस्तो आभा आउने बिल्लौर उत्तम हुन्छ र यो रसायनकर्ममा प्रयोग हुन्छ ।

मेहखाण्ड्यांशर्वाधक्यक्षयग्रहणिकासजित् ।
वृष्यो रसायनो बल्यो वैक्रान्तो वह्निदीपनः ॥४६॥
आयुष्प्रदश्च बलवर्णकरोऽतिवृष्यः प्रज्ञाप्रदः सकलदोषगणापहारी ।
दीप्ताग्निकृत्पविसमानगुणस्तरस्वी वैक्रान्तकः खलु वपुर्बललोहकारी ॥४७॥

यो प्रमेह, नपुंसकता, बुद्ध्यौली, क्षयरोग, ग्रहणि र खोकीलाई जित्ने गुणको हुन्छ । बिल्लौर वीर्यवर्धक, रसायनी, बलदायक, पाचक-अग्निलाई बाल्ने, आयवर्धक, बलदायक (दोहोरो परेको), वर्णमा निखार लेराउने, अति वीर्यवर्धक (दोहारो परेको) , बुद्धिवर्धक, सबै रोगका समूह नाश गर्ने, अग्निलाई बाल्ने, हिरासमान, वायुकारक, बलदायक र शरीरलाई फलाम जस्तै बलियो बनाउने गुणको हुन्छ ।

अशुद्धवज्रं गुरु पाण्डुतापहृत्पार्श्वपीडाऽरुचिकुष्ठकारि ।
शुद्धं मृतं सौख्यबलप्रदं च वैक्रान्तभस्मापि रसायनं च ॥४८॥

अप्रशोधित बिल्लौर पचाउन कठिन तथा पाण्डु, डाह, मुटुका रोग, कोखा दुख्ने रोग, अरुची र कुष्ठरोग निकाल्ने गुणको हुन्छ । शुद्ध बिल्लौर सुखदायक र बलदायक हुन्छ । यसको भस्म पनि रसायनी हुन्छ ।

पन्ना (गारुत्मत)

गारुत्मतं मरकतं रौहिणेयं हरिन्मणिः ।
सौपर्णं गरुडोद्गीर्णं बुधरत्नाश्मगर्भजम् ॥४९॥
गरलारिर्वायवालं गारुडं रुद्रसम्मितम् ।
रौहिणेयं विषघ्नं च शीतलं मधुरं रसे ॥
अम्लपित्तहरं वृष्यं पुष्टिदं भूतनाशनम् ॥५०॥

सङ्कलन : मोहन प्रसाद सापकोटा

गारुत्मत, मरकत, रौहिणेय, हरिन्मणि, सौपर्ण, गरुडोद्गीर्ण, बुधरत्न, अश्मगर्भज, गरलारि, वायवाल, गारुड र रुद्रसम्मित : यी पन्नाका पर्यायवाची नाम हुन् । यो विषविकार नाश गर्ने, शीतवीर्यको, गुलियो, अम्लपित्त नाशक, वीर्यवर्धक, पुष्टिदायक र भूतबाधा नाश गर्ने गुणको हुन्छ ।

ग्रन्थान्तरे-

ज्वरच्छर्दिर्विषश्वासकासशूलान्निमान्द्यजित् ।
दुर्नामशोफपाण्डुघ्नं तार्क्ष्यमोजोविवर्धनम् ॥५१॥
श्वेतोऽरुणः पीतसुनीलवर्णौ द्विजादयः सिद्धिकरो हि विप्रः ।
क्षोणीपतिर्मृत्युहरोऽर्थकारी वैश्यश्च शूद्रो गदराजिभङ्गी ॥५२॥

अन्य ग्रन्थमा भनिएको छ कि-

पन्नाले जरो, वाकवाकी, विषविकार, दम, खोकी, शूल र कमजोर पाचनशक्तिलाई जित्दछ । यसले हर्सा, सुजन र पाण्डुरोग नाश गर्दछ तथा ओजलाई बढाउँदछ । यो सेतो, अरुण रङ्को, पहेँलो र नीलो गरी क्रमशः ब्राह्मणादि चार वर्णको हुन्छ र सोही अनुसार ब्राह्मण जातको सिद्धि दिने, क्षत्रिय जातको मृत्यु नाश गर्ने, वैश्य जातको धन दिने तथा शूद्र जातको पन्ना रोग नाश गर्ने गुणको हुन्छ ।

हीरा (वज्र)

हीरकं भिदुरं वज्रं सद्रत्नमशनिः पविः ।
सूचिवक्त्रं वराहं च कुलिशं भार्गवं स्मृतम् ॥५५॥
अभेद्यमशिरं रत्नं दृढं भार्गवकं स्मृतम् ।
षट्कोणं बहुधारं च शतकोट्यब्धिभूमिजम् ॥५६॥
रुजां समूहं हरते नराणां बलं सुरूपं विदधाति युक्त्या ।
देहस्य सौख्यं च सदा करोति चिरं तथाऽऽयुः पलितं च हन्ति ॥५७॥

अन्यच्च-

आयुष्प्रदं भटिति सद्गुणदं च वृष्यं दोषत्रयप्रशमनं सकलामयघ्नम् ।
सूतेन्द्रबन्धबधसद्गुणकृत्प्रदीपं मृत्युञ्जयं तदमृतोपममेव वज्रम् ॥५८॥
पीडां विधत्ते विविधां नराणां कुष्ठं क्षयं पाण्डुगदं च दुष्टम् ।
हृत्पार्श्वपीडां कुरुतेऽतिदुःसहामशुद्धवज्रं गुरुतापदं भवेत् ॥५९॥

हीरक, भिदुर, वज्र, सद्रत्न, अशनि, पवि, सूचिवक्त्र, वराह, कुलिश, भार्गव, अभेद्य, अशिर, रत्न, दृढ, भार्गवक, षट्कोण, बहुधार, शतकोटी र अब्धिभूमिज : यी हीराका पर्यायवाची नाम हुन् । हीरा जुक्ति लगाएर प्रयोग गर्दा मानिसको अनेक थरी रोग नाश गर्ने, बलदायक, सुन्दर रूप दिने, सधैं शरीरलाई सुख दिने, आयु बढाउने र कपाल फुल्न रोक्ने गुणको हुन्छ ।

अन्यत्र बताइएको छ कि- प्रशोधित हीरा भस्म आयु प्रदायक, असल गुण दिने, वीर्यवर्धक, त्रिदोलाई शान्त पार्ने, सक्कै खालका रोग नाश गर्ने, पारो प्रशोधनमा उपयोगी, असल गुणको, तेजिलो र अमृतसमान मृत्युलाई जित्ने गुणको हुन्छ । यसले मानिसको अनेक थरी पीडा, कुष्ठ, क्षयरोग र कडा खालको पाण्डुरोग नाश गर्दछ । अप्रशोधित हीरा भस्म मुटु र कोखो अति नै दुखाउने तथा पचाउन कठिन र (अनेक रोग निकाली) डाह गराउने गुणको हुन्छ ।

रूँ (राजावर्त)

राजावर्तश्च राजा च नीलाश्मा तु नृपोपलः ।
सुवर्णधातू राजाद्री राजप्रस्तर एव च ॥६०॥
राजावर्तः कटुः स्निग्धः शिशिरः पित्तनाशनः ।
सौभाग्यं कुरुते नृणां भूषणेषु प्रयोजितः ॥६१॥

राजावर्त, राजा, नीलाश्मा, नृपोपल, सुवर्णधातू, राजाद्री र राजप्रस्तर : यी यँका पर्यायवाची नाम हुन् । यो पिरो, चिल्लो, शीतवीर्यको र पित्तविकार नाश गर्ने गुणको हुन्छ । यसलाई आभूषणमा प्रयोग गरिए मानिसलाई सौभाग्य प्रदान गर्दछ ।

मोति (मौक्तिक)

मौक्तिकं शुक्तिजं (कं) स्फोटशुक्तिजं शुक्तिसम्भवम् ।
भूषणार्हतमं श्रेष्ठं तौतिकं शौक्तिजं (शौक्तिकं भौतिकं) तथा ॥६२॥
मौक्तिकं मधुरं शीतं सरं दृष्टिभवं गदम् ।
उन्मूलयति पित्तं च हारालिङ्गेन दाहहृत् ॥६३॥

मौक्तिक, शुक्तिज (क), स्फोटशुक्तिज, शुक्तिसम्भव, भूषणार्हतम, श्रेष्ठ, तौतिक, शौक्तिज, (शौक्तिक र भौतिक) : यी मोतिका पर्यायवाची नाम हुन् । यो गुलियो, शीतवीर्यको, मलमूत्रलाई तलतिर सार्ने, आँखाका रोग नाश गर्ने, पित्तविकार नाश गर्ने तथा लगाउनाले शरीरको डाह नाश गर्ने गुणको हुन्छ ।

सङ्कलन : मोहन प्रसाद सापकोटा

मुगा (प्रवाल)

प्रवालं विद्रुमं रक्तं भूषणार्हं सुवल्लिजम् ।
समुद्रजं महारक्तं वल्लीपाषाणसम्भवम् ॥६४॥

प्रवाल, विद्रुम, रक्त, भूषणार्ह, सुवल्लिज, समुद्रज, महारक्त र वल्लीपाषाणसम्भव : यी मुगाका पर्यायवाची नाम हुन् ।

पक्वबिम्बीफलच्छायं वृत्तायनमवक्रकम् ।
स्निग्धमव्रणकं स्थूलं प्रवालं सप्तधा शुभम् ॥६५॥

पाकेको गोलकाँक्रीको जस्तो रङ, गोलो, लामो, नबान्निएको, चिल्लो, कुनै दाग नलागेको वा नचर्केको र मोटो वा बाक्लो : यी सात लक्षण असल मुगामा हुने लक्षणहरू हुन् ।

पाण्डुरं धूसरं रूक्षं सत्रणं कण्डरान्वितम् ।
निर्भारं शुभ्रवर्णं च नेष्यते सप्तधा त्विदम् ॥६६॥

फिक्का रङ, खैरो, रुखो, दाग भएको वा चिरिएको, धर्का भएको, हलुका र सेतो : यी कमसल मुगामा हुने सात लक्षणहरू हुन् ।

प्रवालकं सरं शीतं कफपित्तादिदोषनुत् ।
दृष्टिदोषविघाताय विषनाशाय चेष्यते ॥६७॥
क्षयपित्तास्रकासघ्नं दीपनं पाचनं लघु(घू) ।
विषभूतादिशमनं विद्रुमं नेत्ररोगनुत् ॥६८॥

मुगा मलमूत्रलाई तलतिर सार्ने, शीतवीर्यको; कफविकार र पित्तविकार आदि विकार नाश गर्ने; आँखाका रोग र विषविकार नाश गर्ने; क्षयरोग, रक्तपित्त र खोकी नाश गर्ने; दीपनी, पाचनी र पचाउन सहज तथा विषविकार, भूतबाधा आदि शान्त पार्ने गुणको हुन्छ ।

सङ्कलन : मोहनप्रसाद सापकोटा
मार्सिधान (शालि)

रक्तशालिर्महाशालिः सुगन्धप्रसवस्तथा ।
वृन्दारको मुष्टिकश्च शालीना प्रवरास्ताथा ॥६९॥

रक्तशालि, महाशालि, सुगन्धप्रसव, वृन्दारक र मुष्टिक : यी मार्सीधानका जात हुन् ।

शाबरः कृष्णशालिश्च हासो वृन्तक एव च ।
कृष्णशालिश्च गौरश्च ब्रीहयो विविधाः स्मृताः ॥७०॥

शाबर, कृष्णशालि, हास, वृन्तक, कृष्णशालि (?) र गौर आदि ब्रीही धान्यका जात हुन् ।

श्वेतशालिर्महाशालिः स चोक्तो वर्णपूरकः ।
खरशूकश्च काकश्च स च सूकरबालकः ॥७१॥

श्वेतशालि, महाशालि, वर्णपूरक, खरशूक, काक र सूकरबालक : यी सेतोमार्सीका पर्यायवाची नाम हुन् ।

अरण्यधान्यनामा च जलजः सप्रसादकः ।

अरण्यधान्य, जलज र प्रसादक : यी खेती नगरिने धान हुन् ।

सठिया धान (षष्टिक)

षष्टिकस्तु महाव्रीहिः कृष्णव्रीहिस्ततोऽनु च ।

यवकश्चैव पाक्यश्च रक्तसारमुखस्तथा ॥७२॥

षष्टिक, महाव्रीहि, कृष्णव्रीहि, यवक, पाक्य र रक्तसारमुख : यी क्रमशः कम गुनिला सठिया धान हुन् ।

मार्सीधान र व्रीहिको गुण (शालिव्रीहiguणा)

शीतो गुरुस्त्रिदोषघ्नो मधुरो गौरषष्टिकः ।

किञ्चिद्धितो गुरुस्तस्मादपरो रसपाकतः ॥७३॥

महाशालिः परो वृष्यः कलमः श्लेष्मपित्तहा ।

मधुरश्चाम्लपाकश्च व्रीहिः पित्तकरो गुरुः ॥७४॥

अत्युष्णो बहुनिष्यन्दी पाटलस्तु त्रिदोषकृत् ।

बहूष्मा बहुविण्मूत्रो व्रीहिराशुत्रिदोषलः ॥७५॥

गौरषष्टिक धान शीतवीर्यको, पचाउन कठिन, त्रिदोष नाश गर्ने र गुलियो हुन्छ । यसको अर्को जात शुरुमा र पचेपछि केही बढी फाइदाजनक र पचाउन कठिन हुन्छ । महाशाली वीर्यवर्धक हुन्छ । कलमीले कफविकार पित्तविकार नाश गर्दछ । व्रीहि शुरुमा गुलियो तर पचेपछि अमिलो हुन्छ । यो पित्तविकार गर्ने र पचाउन कठिन हुने गुणको हुन्छ । पाटल अती उष्णवीर्यको, अति अभिष्यन्दी र त्रिदोष गराउने गुणको हुन्छ । आशुव्रीहि धेरै गर्मी गर्ने, धेरै दिसापिसाब निकाल्ने र त्रिदोष गराउने गुणको हुन्छ ।

ग्रन्थान्तरे:

शालयोः मधुराः स्निग्धा बल्या बद्धाल्पवर्चसः ।
पित्तघ्नाल्पा वृष्यकफामूत्रला लघवो हिमाः ॥७६॥
रक्तशालिस्त्रिदोषघ्नश्चक्षुष्यो लघुमूत्रलः ।
तृष्णाघ्नो बलकृत्स्वर्यो हृद्वस्तिशमनः परः ॥७७॥

अन्य ग्रन्थमा भनिएको छ कि-शालि धानहरू गुलिया, चिल्ला, बलदायक, कम दिसा गराउने, पित्तविकार नाशक, थोरै वीर्यवर्धक, कफ विकार पिसाब बढाउने, पचाउन सहज र शीतवीर्यका हुन्छन् । रातामार्सी त्रिदोष नाश गर्ने, आँखाका लागि हितकर, पचाउन सहज, पिसाब बढाउने, तिर्खा नाशक, बलदायक, स्वरका लागि उपयोगी तथा मुटु र मूत्राशयका शान्त पार्न अति उपयोगी हुन्छ ।

जौ (यव)

अक्षतास्तीक्ष्णशूकाश्च यवाश्चैव तु नामतः ।
रूक्षः शीतो गुरुः स्वादुः सरो विड्वातकृद्यवः ॥७८॥
वृष्यः स्थैर्यकरो मूत्रमेदःपित्तकफाञ्जयेत् ।
पीनसश्वासकासोरुस्तम्भकण्ठत्वगामयान् ॥७९॥

अक्षता, तीक्ष्णशूका र यवा : यी जौका पर्यायवाची नाम हुन् । जौ रूखो, शीतवीर्यको, पचाउन कठिन, स्वादिलो, मलमूत्रलाई तलतिर सार्ने, दिसा बढाउने, वातविकार गर्ने, वीर्यवर्धक, आयु स्थिर राख्ने; पिसाब, बोसो, पित्त र कफका रोगलाई तथा पिनास, दम, खोकी, उरुस्तम्भ, घाँटी र छालाका रोगलाई जित्ने गुणको हुन्छ ।

मुगी (मुद्ग)

वासन्ताः कृष्णमुद्गाश्च शारदा हरितास्तथा ।
मुद्गानां नामतश्चोक्ताः सूपश्रेष्ठाः रसोत्तमाः ॥८०॥
मुद्गः किलाटो माङ्गल्यो हरितः शारदोऽपि च ।
पित्तप्रसेको वसुको माधवः प्रवरोऽसितः ॥८१॥
मुद्गो रूक्षो लघुर्गाही कफपित्तहरो हिमः ।

स्वादुरल्पानिलो नेत्र्यो वन्योऽप्येतद्गुणः स्मृतः ॥८२॥

हरितः प्रवरस्तेषां तच्छाकं तिक्तमुत्तमम् ।

कृष्णमुद्गस्तु वरको राजमुद्गस्तु खण्डकः ॥८३॥

कालो मुगीलाई वासन्तमुगी र हरियो मुगीलाई शारदमुगी भनिन्छ । स्वादिलो (र गुनिलो) दालको लागि मुगी श्रेष्ठ हुन्छ । अन्यका मतमा-मुद्ग, किलाट, माङ्गल्य, हरित र शारद : यी मुगीका पर्यायवाची नाम हुन् । कृष्णमुद्ग, पित्तप्रसेक, वसुक र माधव : यी कालोमुगीका पर्यायवाची नाम हुन् । यसबाहेक राजमुगी दालका लागि उत्तम हुन्छ ।

राज्मा वा बोडी (राजमाष)

माषो बीजवरो धारीश्ववलो राजमाषकः ।

राजमाषो नीलमाषो नृपमाषो नृपोचितः ॥८४॥

कफपित्तहरो रुच्यो वातकृद्बलदायकः ।

राजमाषः सरो वृष्यः कफपित्तास्रशुक्रनुत् ॥८५॥

सुस्वादुः शीतलो रूक्षः कषायो विशदो गुरुः ।

माष, बीजवर, धारी, चवल, राजमाषक, राजमाष, नीलमाष, नृपमाष र नृपोचित : यी राजमा वा बोडीका पर्यायवाची नाम हुन् । यो कफविकार र पित्तविकार नाश गर्ने, रुचिप्रद, बातविकार गर्ने र बल दिन गुणको हुन्छ । राजमाष मलमूत्रलाई तलतिर सार्ने, वीर्यवर्धक, कफविकार, पित्तविकार, रक्तविकार र शुक्र नाश गर्ने (?); स्वादिलो, शीतवीर्यको, रुखो, टर्रो, सुन्दर र पचाउन कठिन हुने गुणको हुन्छ ।

कोदो (कोद्रव)

कोद्रवः कोरदूषः स्यादुद्दालो वनकोद्रवः ॥८६॥

कोद्रवः शीतलो ग्राही विषपित्तकफाञ्जयेत् ।

कोद्रव र कोरदूष : यी कोदोका तथा उद्दाल र वनकोद्रव : यी वनकोदोका पर्यायवाची नाम हुन् । कोदो शीतवीर्यको, ग्राही तथा विषविकार, पित्तविकार र कफविकारलाई जित्ने गुणको हुन्छ ।

नावो धान (नीवार)

नीवारस्तापसश्चैव मुनिभक्तप्रसादकः ॥८७॥
अरण्यधान्यनामा च रसिकश्च प्रकीर्तितः ।
नीवारो मधुरः स्निग्धः पवित्रः पथ्यदो लघुः ॥८८॥

नीवार, तापस, मुनिभक्त, प्रसादक, अरण्यधान्य र यसका पर्याय र रसिक : यी नावो धानका पर्यायवाची नाम हुन् । यो गुलियो, चिल्लो, पवित्र, पथ्य र पचाउन सहज हुन्छ ।

सामाधान (श्यामाक)

श्यामाकस्तृणबीजश्च मुनिभक्ष्यो गवांप्रियः ।
सुकुमारो राजधान्यं तृणबीजोत्तमश्च सः ॥८९॥
श्यामाको मधुरः स्निग्धः कषायो लघुशीतलः ।
वातकृत्कफपित्तघ्नः सङ्गाही विषदोषनुत् ॥९०॥

सङ्कलन : मोहन प्रसाद सापकोटा

श्यामाक, तृणबीज, मुनिभक्ष्य, गवांप्रिय, सुकुमार, राजधान्य र तृणबीजोत्तम : यी सामाधानका पर्यायवाची नाम हुन् । यो गुलियो, चिल्लो, टर्रो, पचाउन सहज, शीतवीर्यको, वातविकार गर्ने, कफविकार र पित्तविकार नाश गर्ने, ग्राही र विषविकार नाश गर्ने गुणको हुन्छ ।

कागुनू (प्रियङ्गु)

प्रियङ्गुः कङ्गुकश्चैव चीनकः पीततण्डुलः ।
अस्थिसम्बन्धनश्चैव कङ्गुनी षट् च कथ्यते ॥९१॥
प्रियङ्गुर्मधुरो रुच्यः कषायः स्वादुशीतलः ।
वातकृत्पित्तदाहघ्नो रूक्षो भग्नास्थिबन्धकृत् ॥९२॥

प्रियङ्गु, कङ्गुक, चीनक, पीततण्डुल, अस्थिसम्बन्धन र कङ्गुनी : यी छ नामले कागुनुलाई बुझाउँदछ । यो गुलियो, रुचिप्रद, टर्रो, गुलियो, शीतवीर्यको, वातविकार गर्ने, पित्तविकार र डाह नाश गर्ने, रुखो र भौँचिएका हाडलाई जोड्ने गुणको हुन्छ ।

वनमुगी (मकुष्ठ)

मकुष्ठका निरूढा च वनमुद्रः कृमीलकः ।
मकुष्ठो वातलो ग्राही कफपित्तहरो लघु ॥९३॥

मकुष्ठक, निरूढ, वनमुद्र र कृमीलक : यी वनमुगीका पर्यायवाची नाम हुन् । यो वातविकार गर्ने, ग्राही, कफविकार र पित्तविकार नाश गर्ने तथा पचाउन सहज हुने गुणको हुन्छ ।

रहर (आढकी)

आढकी तुवरी तुल्या करवीरभुजा तथा ।
वृत्तबीजा पीतपुष्पा श्वेता रक्ताऽसिता त्रिधा ॥९४॥
आढकी कफपित्तघ्नी किञ्चिन्मारुतकोपनी ।
कषाया स्वादुसङ्गाही कटुपाका हिमा लघुः ॥९५॥
मेदःश्लेष्मास्रपित्तेषु हिता लेपोपसेकयोः ।

सङ्कलन : मोहन प्रसाद सापकोटा

आढकी, तुवरी, तुल्या, करवीरभुजा, वृत्तबीजा र पीतपुष्पा : यी रहरका पर्यायवाची नाम हुन् । यो सेतो, रातो र कालो वा नीलो गरी तीन प्रकारको हुन्छ । रहरले कफविकार र पित्तविकार नाश गर्दछ तथा थोरै वातविकारलाई उत्तेजित पार्दछ । यो टर्रो, गुलियो, कब्जियत गर्ने, पचेपछि पिरो, शीतवीर्यको, पचाउन सहज, तथा बोसोविकार, कफविकार र पित्तविकारमा लेप दल्न वा भिजाउनका लागि उपयोगी हुन्छ ।

मुसुरो (मसूर)

मसूरा मधुरा सूप्या पृथ्वः पित्तभेषजम् ॥९६॥
(हरेणवः सतीनाश्च चणकाश्चाकरालकाः ।)
मसूरो मधुरः शीतः सङ्गाही कफपित्तहा ॥९७॥
वातामयकरश्चैव मूत्रकृच्छ्रहरो लघुः ।

मसूर, मधुर, सूप्य, पृथु र पित्तभेषज : मुसुरोका पर्यायवाची नाम हुन् । (हरेणु, सतीन, चणक अकरालका : यो मिल्दो श्लोक देखिन्न तर कुनै पुस्तकमा पाइन्छ) । मुसुरो गुलियो, शीतवीर्यको, ग्राही,

कफविकार पित्तविकार नाश गर्ने, वातविकार गर्ने तथा मूत्रकृच्छ्र नाश गर्ने र पचाउन सहज हुने गुणको हुन्छ ।

गहुँ (गोधूम)

गोधूमो यवकश्चैव हुडुम्बो म्लेच्छभोजनः ॥९८॥
गिरिजा सतिनामा च रसिकश्च प्रकीर्तितः ।
वृष्यः शीतो गुरुः स्निग्धो जीवनो वातपित्तहा ॥९९॥
सन्धानो बृंहणो बल्यो गोधूमः स्थैर्यकृत्सरः ।

गोधूम, यवक, हुडुम्ब, म्लेच्छभोजन, गिरिजा, सतिनामा र रसिक : यी गहुँका पर्यायवाची नाम हुन् । यो वीर्यवर्धक, शीतवीर्यको, पचाउन कठिन, चिल्लो, जीवनी, वातविकार र पित्तविकार नाश गर्ने, खमिरा बनाउन उपयोगी, पौष्टिक, बलदायक, शरीरलाई स्थिर राख्ने तथा मलमूत्रलाई तलतिर सार्ने गुणको हुन्छ ।

मास (धान्यमाष)

सङ्कलन : मोहन प्रसाद सापकोटा

धान्यमाषस्तु विज्ञेयः कुरुविन्दो वृषाकरः ॥१००॥
मांसलश्च बलाढ्यश्च पित्र्यश्च पितृजोत्तमः ।
स्निग्धोष्णो मधुरो वृष्यो मेदोमांसबलप्रदः ॥१०१॥
वातनुद् बृंहणो बल्यो माषो बहुमलो गुरुः ।

धान्यमाष, कुरुविन्द, वृषाकर, मांसल, बलाढ्य, पित्र्य र पितृजोत्तम : यी मासका पर्यायवाची नाम हुन् । यो चिल्लो, उष्णवीर्यको, गुलियो, वीर्यवर्धक, मासु वर्धक, बलदायक, वातविकार नाश गर्ने, पौष्टिक, बलदायक, दिसा बढाउने र पचाउन कठिन हुने गुणको हुन्छ ।

चना (चणक)

हरिमन्थाः सुगन्धाश्च चणकाः कृष्णकञ्जुकाः ॥१०२॥
कफास्रपित्तपुंस्त्वघ्नाश्चणका वातला हिमाः ।
लघवो भृष्टचणका आमक्लमहराः पराः ॥१०३॥

छर्दिघ्ना रोचनाः शुष्कास्तेजोवीर्यबलप्रदाः ।

हरिमन्था, सुगन्धा, चणका र कृष्णकञ्चुका : यी चनाका पर्यायवाची नाम हुन् । यो कफविकार, रक्तविकार, पित्तविकार र पौरुषत्व नाश गर्ने; वातविकार गर्ने तथा शीतवीर्य गुणको हुन्छ । भुटेको चना पचाउन सहज; आमविकार, परिश्रम बिनाको थकाइ र वाकवाकी नाश गर्ने तथा रुचिप्रद हुन्छ । सुकेको चनाले तेज, वीर्य र बल बढाउँदछ ।

केराउ (कलाय)

कलायो मुण्डचणको हरेणुश्च सतीनकः ॥१०४॥

त्रासनो नलकः कण्ठी हरेणुर्वर्तुलः स्मृतः ॥

वर्तुलः शीतलो ग्राही कफपित्तहरो लघुः ॥१०५॥

विपाके मधुरो रूक्षो वातलो भक्षणप्रियः ।

कलाय, मुण्डचणक, हरेणु, सतीनक, त्रासन, नलक, कण्ठी, हरेणु (दोहोरो परेको?) र वर्तुल : यी केराउका पर्यायवाची नाम हुन् । यो शीतवीर्यको, ग्राही, कफविकार र पित्तविकार नाश गर्ने, पचाउन सहज, पचेपछि गुलियो, रूखो, वातविकार गर्ने तथा स्वादिलो हुन्छ ।

गहत (कुलत्थ)

कुलत्थास्ताम्रवर्णाश्च कलावृत्तानिलापहाः ॥१०६॥

कर्षणाः पीतमुद्राश्च अलिस्कन्धाः सुराष्ट्रकाः ।

उष्णः कुलत्थो रसतः कषायः कटुर्विपाके कफमारुतघ्नः ।

शुक्राश्मरीगुल्मनिषूदनश्च सङ्गाहकः पीनसकासहन्ता ॥१०७॥

आनाहमेदोऽरुचिकीलहिक्काश्वासापहः शोणितपित्तकृच्च ।

बलासहन्ता नयनामयघ्नो विशेषतो वन्यकुलित्थ उक्तः ॥१०८॥

कुलत्थ, ताम्रवर्णा, कलावृत्त, अनिलापह, कर्षण, पीतमुद्र, अलिस्कन्ध र सुराष्ट्रक : यी गहतका पर्यायवाची नाम हुन् । गहत उष्णवीर्यको, टर्रो, पचेपछि पिरो; कफविकार, वातविकार, शुक्राश्मरी र गुल्म नाशगर्ने, ग्राही; पिनास, खोकी, आनाह, बोसोविकार, अरुची, मूढगर्भ, बाडुली, दम, रक्तविकार

र पित्तविकार नाश गर्ने गुणको हुन्छ । बनगहतले विशेषगरी कफविकार र आँखाका रोग नाश गर्दछ ।

जुनेलो (जूणा)

जूणाह्वा योनलाः प्रोक्ता यावनाला युगन्धराः ।
कफपित्तहरा वृष्या मृदवो गुरवो हिमाः ॥१०९॥
रूक्षा विष्टम्भिनश्चैव न पथ्या गुदरोगिणाम् ।

जूणाह्वा, योनल, यावनाल र युगन्धर : यी जुनेलोका पर्यायवाची नामहरू हुन् । यो कफविकार र पित्तविकार नाश गर्ने, वीर्यवर्धक, कोमल, पचाउन कठिन, शीतवीर्यको, रुखो, कब्जियत गर्ने तथा मलद्वारका रोगमा हितकर नहुने गुणको हुन्छ ।

खेसरी (करट)

करटाश्च करालाश्च त्रिपुटा खण्डिका मताः ॥११०॥
करालः कफपित्तघ्नो ग्राही शीतोऽतिवातलः ।
त्रिपुटोऽपि गुणैरेवं तच्छाकं कफपित्तजित् ॥१११॥

करट, कराल, त्रिपुट र खण्डिक : यी खेसरीका पर्यायवाची नामहरू हुन् । यो कफविकार र पित्तविकार नाश गर्ने, ग्राही, शीतवीर्यको र अति नै वातविकार गर्ने गुणको हुन्छ । त्रिपुटम पनि यिनै गुण हुन्छन् । यसको सागले कफविकार र पित्तविकारलाई जित्दछ ।

सिमी (निष्पाव)

निष्पावाः श्वेतशिम्बाश्च पालकाख्या मुखप्रियाः ।
निष्पावोऽनिलपित्तास्रमूत्रस्तन्यकरः सरः ॥११२॥
विदाह्युष्णो गुरुः शोषशोफकृच्छ्रक्रनाशनः ।

निष्पाव, श्वेतशिम्ब, पालकाख्य र मुखप्रिय : यी सिमीका पर्यायवाची नामहरू हुन् । सिमीले वातविकार, पित्तविकार, रक्तविकार, पिसाब र दूध बढाउँदछ । यो मलमूत्रलाई तलतिर सार्ने, डाह

गराउने, उष्णवीर्यको, पचाउन कठिन, सुकेनास र सुजन गराउने तथा वीर्य नाश गर्ने गुणको हुन्छ ।

मेथी (मेथिका)

मेथिका दीपनी चोग्रा कुञ्जिका बहुपत्रिका ॥११३॥
मल्लिका शीतवीर्या च ज्योतिष्का वल्लरी शिखी ।
मेथिका कटुरुष्णा च रक्तपित्तप्रकोपनी ॥११४॥
अरोचहरा दीप्तिकरी वातप्रणाशिनी ।

मेथिका, दीपनी, उग्रा, कुञ्जिका, बहुपत्रिका, मल्लिका, शीतवीर्या, ज्योतिष्का, वल्लरी र शिखी : यी मेथीका पर्यायवाची नामहरू हुन् । यो पिरो, उष्णवीर्यको, रक्तपित्त रोगलाई बढाउने, अरुची नाश गर्ने, पाचनशक्ति बढाउने र वातविकार नाश गर्ने गुणको हुन्छ ।

वनमेथी (वनमेथिका)

मेथिका वास्तिका सेलुः हिस्पित्थो वनमेथिका ॥११५॥
हिस्पित्थोऽल्पगुणस्तस्या वाजिनां स तु पूजितः ।

मेथिका, वास्तिका, सेलु, हिस्पित्था र वनमेथिका : यी वनमेथीका पर्यायवाची नामहरू हुन् । यो मेथीभन्दा कम गुनिलो हुन्छ र घोडाहरूका लागि लाभदायक हुन्छ ।

आलस (अतसी)

प्रतरीर्कतमा प्रोक्ता रुद्रपत्नी सुवल्कला ॥११६॥
उमा सुनीलपुष्पा च वसुतर्का क्षुमाऽपि च ।
शीता तैलफला चैव पालिका पूतिपूरकः ॥११७॥
रुद्रपत्नी तु मधुरा स्निग्धा च बलकारिका ।
कफवातकरी चेषत्पित्तहृत्कुष्ठवातजित् ॥११८॥

(अन्यच्च)

अतसी नीलपुष्पी च पार्वती स्यादुमा क्षमा ।

प्रतरीकृतमा, रुद्रपत्नी, सुवल्कला, उमा, सुनीलपुष्पा, वसुतर्का, क्षुमा, शीता, तैलफला, पालिका र पूतिपूरक : यी आलसका पर्यायवाची नामहरू हुन् । यो गुलियो, चिल्लो, बलदायक, कफविकार र वातविकार गर्ने, अलिअलि पित्तविकार नाशगर्ने तथा कुष्ठ र वातविकार (?) जित्ने गुणको हुन्छ । अन्यत्र भनिएको छ कि- अतसी, नीलपुष्पी, पार्वती, उमा र क्षुमा आलसका पर्यायवाची नाम हुन् ।

कुसुम (कुसुम्भ)

कुसुम्भं पावकं पीतमलक्तं वस्त्ररञ्जनम् ॥११९॥
कौसुम्भं स्याद्वह्निशिखं वस्त्ररञ्जकसञ्ज्ञितम् ।
तद्बीजं कीलता लट्वा शुद्धा पद्मोत्तरा तथा ॥१२०॥
कुसुम्भं वातलं रूक्षं रक्तपित्तकफापहम् ।

कुसुम्भ, पावक, पीत, अलक्त, वस्त्ररञ्जन, कौसुम्भ, वह्निशिख र वस्त्ररञ्जक : यी कुसुमका पर्यायवाची नाम हुन् । यसको बीजलाई कीलता, लट्वा, शुद्धा वा पद्मोत्तरा भनिन्छ । यो वातविकार गर्ने, रुखो तथा रक्तपित्त र कफविकारलाई नाश गर्ने गुणको हुन्छ ।

अफिम (खसतिल)

खस्तिलस्तिलभेदस्तु शुभ्रपुष्पो लसत्फलः ॥१२१॥
वृष्यो बल्यश्च खस्तिलः श्लेष्मघ्नो वातजिद् गुरुः ।
वल्कलस्तत्फलो ज्ञेयो रूक्षो ग्राही विशेषणः ॥१२२॥

खस्तिल, तिलभेद, शुभ्रपुष्प र लसत्फल : यी खसखसका पर्यायवाची नामहरू हुन् । यो वीर्यवर्धक, बलदायक, कफविकार नाशक, वातविकारलाई जित्ने र पचाउन कठिन हुने गुणको हुन्छ । यसको फलको बोक्रा रुखो, ग्राहि र सोस्ने गुणको हुन्छ ।

अफिमको चोप (अफूक)

अफूकं तद्वीभूतमहिफेनमफेनकम् ।
अफूकं शोषणं ग्राहि श्लेष्मघ्नं वातपित्तलम् ॥१२३॥

खसखसको चोपलाई अफूक, अहिफेन र अफेनक भनिन्छ । यसमा सोस्ने, ग्राहि, कफविकार नाश गर्ने तथा वातविकार र पित्तविकार गर्ने गुण हुन्छ ।

तिल

तिलस्तु होमधान्यं स्यात्पवित्रः पितृतर्पणः ।
पापघ्नः पूतधान्यश्च जर्तिलस्तु वनोद्भवः ॥१२४॥
तिलो रसे कटुस्तिक्तो मधुरस्तुवरो गुरुः ।
विपाके कटुकः स्वादुः स्निग्धोष्णः कफपित्तनुत् ॥१२५॥
बल्यः केश्यो हिमस्पर्शस्त्वच्यः स्तन्यो व्रणे हितः ।
दन्त्योऽल्पमूत्रकृद्ग्राही वातघ्नोऽग्निमृतिप्रदः ॥१२६॥

तिल, होमधान्य, पवित्र, पितृतर्पणी, पापघ्न र पूतधान्य : यी तिलका पर्यायवाची नामहरू हुन् । जङ्गली तिललाई जर्तिल भनिन्छ । तिल पिरो, तितो, गुलियो, टर्पो, पचाउन कठिन, पचेपछि पिरो र गुलियो, चिल्लो, उष्णवीर्यको, कफविकार र पित्तविकार नाश गर्ने, बलदायक, कपालका लागि हितकर, छुँदा शीतल, छालाका लागि हितकर, दूध बढाउने, खटिरामा लाभदायक, दाँतलाई फाइदा गर्ने, थोरै पिसाब बढाउने, ग्राही, वातविकार नाशक र पाचनशक्ति घटाउने गुणको हुन्छ ।

तेल (तैल)

तैलं स्नेहोत्तमं प्रोक्तं तिलजं तिलसम्भवम् ।
अभ्यञ्जनं म्रक्षणञ्च तच्च मर्दनकं स्मृतम् ॥१२७॥
सकषायं च रसे स्वादु सूक्ष्ममुष्णं व्यवायि च ।
पित्तलं बद्धविण्मूत्रं न च श्लेष्मविवर्धनम् ॥१२८॥

तैल, स्नेहोत्तम, तिलज, तिलसम्भव, अभ्यञ्जन, म्रक्षण र मर्दनक : यी तेलका पर्यायवाची नाम हुन् । तेल केही टर्पो, गुलियो, सूक्ष्म, उष्णवीर्यको, व्यवायी, पित्तविकार गर्ने, दिसा र पिसाब रोक्ने तथा कफविकार नबढाउने गुणको हुन्छ ।

तिलको तेल (तिलतैल)

स्नानाभ्यङ्गावगाहेषु तिलतैलं विशिष्यते ।
तद्वद्वस्तिषु पानेषु नस्यकर्णाक्षिपूरणे ॥१२९॥
अन्नपानविधौ वाऽपि प्रयोज्यं वातशान्तये ।
छिन्नभिन्नयुतोत्पिष्टमथितक्षतपातिते ॥१३०॥
भग्ने स्फुटितविद्वाग्निदग्धविशिष्टदारिते ।
भयाभिहितनिर्भुग्ने मृगव्यालादिभक्षिते ॥१३१॥
तैलयोगश्च संस्कारात्सर्वरोगापहो मतः ।

नुहाउन, मालिस गर्न र चोपलिन तिलको तेल उत्तम हुन्छ । त्यसैगरी मूत्राशय सफा गर्न, पिउन, नस हाल्न, कानमा हाल्न, आँखामा हाल्न र अनाज आदि खानेपिउने कुरामा हाल्न पनि यसको प्रयोग गर्नु । वातविकार शान्त पार्न; छिनिएका, उछिट्टिएका, पिसिएका, माडिएका, चोटपटक लागेका, खसेका, भाँचिएका, फुटेका, घोचिएका, आगोले पोलेका, च्यातिएका, खुकुलो भएका, डराएका (कामेका), बाझिएका तथा जङ्गली जनावरले टोकेर फाटेका स्थानमा यसको प्रयोग गर्नु । विविध प्रकारले विविध ओखती हालेर तयार पारिएको तिलको तेल अनेक थरी रोगको ओखती हुन्छ ।

आलसको तेल (अतसीतैल)

वातघ्नं मधुरं तेषु क्षौमं तैलं बलासकृत् ॥१३२॥

आलसको तेल गुलियो हुन्छ । यसले वातविकार नाश गर्दछ तर कफविकार गर्दछ ।

सर्सिउँको तेल (सर्षपतैल)

कटुपाकमचक्षुष्यं स्निग्धोष्णं कफनाशनम् ।
कृमिघ्नं सार्षपं तैलं कण्डूकुष्ठापहं लघु ॥१३३॥

सर्सिउँको तेल पचेपछि पिरो, आँखालाई हित नगर्ने, चिल्लो, उष्णवीर्यको, कफविकार, कीरा, चिलाउने रोग र कुष्ठ नाशगर्ने तथा पचाउन सहज हुने गुणको हुन्छ ।

अँडिरको तेल (एरण्डतैल)

तैलमैरण्डजं बल्यं गुरूष्णं मधुरं सरम् ।
कफमेदोनिलहरं लेखनं कटु दीपनम् ॥१३४॥
हृद्वस्तिपार्श्वजानूरुत्रिकपृष्ठास्थिशूलिनाम् ।
आमदोषेषु वातासृक्प्लीहोदावर्तशोफिनाम् ॥१३५॥
हितं वातामयस्याग्रं ग्रन्थिबन्धविकारिणाम् ।
तिक्तोष्णं पित्तलं विसं रक्तैरण्डोद्भवं भृशम् ॥१३६॥

अँडिरको तेल बलदायक, पचाउन कठिन, उष्णवीर्यको, मलमूत्रलाई तलतिर सार्ने; कफविकार, भित्री बोसोबिकार र वातविकार नाशक; लेखनी, पिरो र दीपनी हुन्छ । मुटु, तल्लोपेट वा मूत्राशय, कोखो, घुँडा, तिघ्रा, खँगाल्नु, ढाड र हाड दुख्नेका लागि; आमविकार, रक्तवात, फियोका रोग, उदावर्त, सुजन, वातजन्य रोग र गाँठाका विकार हुनेलाई यो हितकर हुन्छ । अँडिरको तेल तीतो, उष्णवीर्यको, पित्तविकार बढाउने, काँचो मासु गनाएजसरी गनाउने हुन्छ । रातो अँडिरको तेलमा यी गुण बढी हुन्छन् ।

सङ्कलन : मोहन प्रसाद सापकोटा
कुसुमको तेल (कुसुम्भतैल)

कुसुम्भतैलमुष्णं च विपाके कटुकं गुरु ।
विदाहि च विशेषेण तच्चरोगप्रकोपनम् ॥१३७॥

कुसुमको तेल उष्णवीर्यको, पचेपछि पिरो, पचाउन कठिन, डाह गर्ने र विशेषतः रोगलाई उत्तेजित पार्ने गुणको हुन्छ ।

आँपको तेलविशेष (कोशाम्रतैल)

सरं कोशाम्रजं तैलं कृमिकुष्ठविषापहम् ।

बिज्जु आँपको तेलले कीरा, कुष्ठ र विषविकार नाश गर्दछ ।

काउसोको तेल (कपिकच्छू तैल)

गुरूष्णं स्निग्धमधुरं कषायं चाऽऽत्मगुप्तजम् ॥१३८॥
तैलं बल्यं च वृष्यं च बृंहणं वातजित्परम् ।

काउसोको तेल पचाउन कठिन, चिल्लो, गुलियो, टर्रो, बलदायक, वीर्यवर्धक, पौष्टिक र अति नै वातविकार नाश गर्ने गुणको हुन्छ ।

नीमको तेल (निम्बतैल)

नात्युष्णं निम्बजं तैलं कृमिकुष्ठकफापहम् ॥१३९॥
वातरक्तप्रशमनं मदालक्ष्मी ज्वरापहम् ।

नीमको तेल कम उष्णवीर्यको; कीरा, कुष्ठ र कफविकार नाश गर्ने; वातरक्त शान्त पार्ने तथा मदात्यय, अलक्ष्मी र जरो नाश गर्ने गुणको हुन्छ ।

सङ्कलन : मोहन प्रसाद सापकोटा
बरोको तेल (अक्षतैल)

आक्षं स्वादु हिमं केश्यं गुरु पित्तानिलापहम् ॥१४०॥

बरोको तेल गुलियो, शीतवीर्यको, कपालका लागि हितकर, पचाउन कठिन तथा पित्तविकार र वातविकार नाश गर्ने गुणको हुन्छ ।

विभिन्न तेल (तैलविशेष)

दन्तीमूलकरक्षोघ्नकरञ्जारिष्टशिगुजम् ।
सुवर्चलेङ्गुदीपीलुशङ्खिनीनीपसम्भवम् ॥१४१॥
सरलागरुदेवाह्वशिंशपासारजन्म च ।
तुम्बाराष्करोत्थं च तीक्ष्णं कट्वस्रपित्तकृत् ॥१४२॥
अर्शःशुक्रकृमिश्लेष्मकुष्ठमेदनिलापहम् ।
करञ्जारिष्टके तिक्ते नात्युष्णे तत्र निर्दिशेत् ॥१४३॥

कषायं तिक्तकटुकं सारलं व्रणशोधनम् ।
भृशोष्णे तिक्तकटुके तुवरारुष्करोद्भवे ॥१४४॥
विशेषात्कृमिकुष्ठघ्ने तथोर्ध्वाधोविरेचने ।
अक्षातिमुक्तकाक्षोडनारिकेलमधूकजम् ॥१४५॥
त्रपुस्योर्वारुकूष्माण्डश्लेष्मातकप्रियालजम् ।
वातपित्तहरं केश्यं श्लेष्मलं गुरु शीतलम् ॥१४६॥
सतिक्तं सहकारस्य तैलं सुरभि रोचनम् ।
यवतिक्तोद्भवं तैलं सतिक्तं रेचनं तथा ॥१४७॥

अजयपाल, मूला, सर्सिउँ, करञ्ज, नीम, सजिवन, आलस वा हुहुरे, चिउली, ओखर, ऐरेलु, कदम वा अशोक वा दोपहरिया फूल, सल्लो, धूपी, देवदार, सिसौ, रहर र भलायोको तेल तिक्खर, पिरो, रक्तपित्त गराउने; हर्सा, वीर्य, कीरा, कफविकार, कुष्ठ, बोसोविकार र वातविकार नाश गर्ने गुणको हुन्छ । करञ्ज र लसुन वा नीम वा गुर्जो (अरिष्ट) को तेल तितो र कम उष्णवीर्यको हुन्छ । सल्लोको तेल टर्पो, तितो, पिरो र खटिरा सफा गर्ने गुणको हुन्छ । रहरको र भलायोको तेल अति उष्णवीर्यको, तितो र पिरो हुन्छ । यी तेल विशेषगरी कीरा नाश गर्न, कुष्ठ नाश गर्न र बान्ता गराउन उपयोगी हुन्छन् । बर्रो, राजबेली, ओखर, नरिवल, महुवा, काँक्रो, खरबुजो, कुभिण्डो, लौसी र चिरौजीको तेल वातविकार र पित्तविकार नाश गर्ने, कपालका लागि हितकर, कफविकार गर्ने, पचाउन कठिन र शीतवीर्यका हुन्छन् । आँपको तेल केही तितो, सुन्दर र राम्रो हुन्छ । ऐरेलुविशेषको तेल केही तितो र दिसा लगाउने गुणको हुन्छ ।

घिउ (घृत)

घृतमाज्यं हविः सर्पिः पवित्रं नवनीतजम् ।
अमृतं चाभिधारश्च जीवनीयं प्रकीर्तितम् ॥१४८॥

घृत, आज्य, हवि, सर्पि, पवित्र, नवनीतज, अमृत, अभिधार र जीवनीय : यी घिउका पर्यायवाची नाम हुन् ।

गाईको घिउ (गोघृत)

शस्तं धीस्मृतिमेधाग्निबलायुःशुक्रचक्षुषाम् ।

बालवृद्धप्रजाकान्तिसौकुमार्यस्थिरार्थिनाम् ॥१४९॥
क्षतक्षीणपरीसर्पशस्त्राग्निग्लपितात्मनाम्
विपाके मधुरं शीतं वातपित्तविषापहम् ॥१५०॥
चक्षुष्यं बल्यमग्रञ्च गव्यं सर्पिर्गुणोत्तरम् ।

गाईको घिउ बुद्धि, सम्भनाशक्ति, पाचनशक्ति, बल, वीर्य र आँखाका लागि हितकर हुन्छ । यो बलक, वृद्ध तथा सन्तान, कान्ति, सुकोमलता (जवानी) र शरीरको स्थिरता चाहनेका लागि लाभदायक हुन्छ । चोटपटक, क्षयरोग, कुष्ठविशेष, हतियारले काटेको, आगोले डढेको र पित्तविकार नाश गर्ने गुणको हुन्छ । यो पचेपछि गुलियो, शीतवीर्यको; वातविकार, पित्तविकार र विषविकार नाश गर्ने; आँखाका लागि हितकर, बलदायक र घिउमध्येमा श्रेष्ठ हुन्छ ।

भैसीको घिउ (महिषीघृत)

मधुरं रक्तपित्तघ्नं गुरु पाके कफापहम् ॥१५१॥
वातपित्तप्रशमनं सुशीतं माहिषं घृतम् ।

सङ्कलन : मोहन प्रसाद सापकोटा

भैसीको घिउ गुलियो, रक्तपित्त नाश गर्ने, पचेपछि पचाउन कठिन, कफविकार नाश गर्ने, वातविकार र पित्तविकार शान्त पार्ने, शीतवीर्यको हुन्छ ।

बाख्रीको घिउ (अजाघृत)

आजं घृतं दीपनीयं चक्षुष्यं बलवर्धनम् ॥१५२॥
कासे श्वासे क्षये चापि पथ्यं पाके च तल्लघु ।

बाख्रीको घिउ पाचनशक्ति बढाउने, आँखालाई फाइदा गर्ने, बल बढाउने; खोकी, दम र क्षयरोगमा पनि पथ्य हुने तथा पचेपछि पचाउन सहज हुने गुणको हुन्छ ।

भेडीको घिउ (आविकघृत)

पाके लघ्वाविकं सर्पिर्नच पित्तप्रकोपणम् ॥१५३॥
कफेऽनिले योनिदोषे शोफे कम्पे च तद्धितम् ।

भेडीको घिउ पचेपछि हलुका, पित्तविकार नगर्ने तथा कफविकार, वातविकार, स्त्री-जननेन्द्रियका रोग, सुजन र काम्ने रोगमा हितकर हुन्छ ।

उँटको घिउ (औष्ट्रीघृत)

औष्ट्रं कटुरसं पाके शोफकृमिविषापहम् ॥१५४॥
दीपनं कफवातघ्नं कुष्ठगुल्मोदरापहम् ।
मूर्च्छामिहोन्मादगरज्वरापस्मारनाशनम् ॥१५५॥

उँटको घिउ पचेपछि पिरो तथा सुजन, कीरा र विषविकार नाश गर्ने गुणको हुन्छ । यो दीपनी तथा कफविकार, वातविकार, कुष्ठ, गुल्म, पेटका रोग, बेहोसी, प्रमेह, पागलपन, विषविकार, जरो र छारेरोग नाश गर्ने गुणको हुन्छ ।

घोडीको घिउ (अश्वाघृत)

सङ्कलन : मोहन प्रसाद सापकोटा
अश्वासर्पिस्तु कटुकं मधुरं च कषायकम् ।
ईषदीपनदं मूर्च्छाहारि वाताल्पदं गुरु ॥१५६॥

घोडीको घिउ पिरो, गुलियो, टर्रो, केही दीपनी, बेहोसी नाशक, थोरै वातविकार गर्ने र पचाउन कठिन हुन्छ ।

गधाको घिउ (गर्दभीघृत)

घृतं गार्दभिकं बल्यं दीपनं मूत्रदोषनुत् ।
पाके लघूष्णवीर्यं च कषायं कफनाशनम् ॥१५७॥

गधाको घिउ बलदायक, दीपनी, पिसाबका रोग नाश गर्ने, पचाउन सहज, उष्णवीर्यको, टर्रो तथा कफविकार नाश गर्ने गुणको हुन्छ ।

ढोईको घिउ (हस्तिनीघृत)

कषायं बद्धविण्मूत्रं तिक्तमग्निकरं लघु ।
हन्ति कारेणवं सर्पिः कफकुष्ठविषक्रिमीन् ॥१५८॥

ढोईको घिउ दिसापिसाब बन्द गराउने, तितो, पाचनशक्ति बढाउने, पचाउन सहज तथा कफविकार, कुष्ठ, विषविकार र कीरा नाश गर्ने गुणको हुन्छ ।

स्त्रीको घिउ (स्त्रीघृत)

चक्षुष्यमग्रं स्त्रीणां तु सर्पिः स्यादमृतोपमम् ।
वृद्धिं करोति देहाग्र्योर्लघु पाके विषापहम् ॥१५९॥

स्त्रीको घिउ आँखालाई उत्तम तरिकाले फाइदा गर्ने, अमृतसमान, शरीरको अग्नि बढाउने, पचेपछि पचाउन सहज र विषविकार नाश गर्ने गुणको हुन्छ ।

सङ्कलन : मोहन प्रसाद सापकोटा पुरानो घिउ (पुराणघृत)

सर्पिः पुराणं तिमिर श्वासपीनसकासनुत् ।
मूर्च्छाकुष्ठविषोन्मादग्रहापस्मारनाशनम् ॥१६०॥
योनिकर्णाक्षिशिरसां शूलघ्नं शोफजित्परम् ।
हन्ति दोषत्रयं भेदि व्रणशोधनरोपणम् ॥१६१॥
उग्रगन्धि पुराणं स्याद्विश्ववर्षोषितं घृतम् ।
लाक्षारसनिभं शीतं तद्वत्सर्वग्रहापहम् ॥१६२॥
तद्वच्च घृतमण्डोऽपि रूक्षस्तिक्तस्तनुश्च सः ।

पुरानो घिउ तिमिर, दम, पिनास, खोकी, बेहोसी, कुष्ठ, विषविकार, पागलपन, ग्रहबाधा र छारेरोग नाश गर्ने; स्त्री जननेन्द्रिय, कान, आँखा र टाउकाको शूल नाश गर्ने; सुजनलाई जित्ने, त्रिदोष नाश गर्ने, भेदनी तथा खटिरा सफा गर्ने र भर्ने गुणको हुन्छ । पुरानो घिउ अत्यधिक गन्ध आउने हुन्छ । दश वर्ष पुरानो घिउ लाहाको रस जस्तो रङ्गको हुन्छ । यसले पनि सबै खालका ग्रहदोष नाश गर्दछ । बिलाउनीमा पनि यिनै गुण हुन्छन् । यो रुखो, तितो र कोमल हुन्छ ।

दूध (दुग्ध)

दुग्धं क्षीरं पयः स्वादु रसायनसमाश्रयम् ॥१६३॥
सौम्यं प्रस्रवणं स्तन्यं बालसात्म्यं च जीवितम् ।

दुग्ध, क्षीर, पय, स्वादु, रसायनसमाश्रय, सौम्य, प्रस्रवण, स्तन्य, बालसात्म्य र जीवित : यी दूधका पर्यायवाची नामहरू हुन् ।

गव्यमाज्यं तथौरभ्रं माहिषं कारभं च यत् ॥१६४॥
अश्वयाश्चैव नार्याश्च हस्तिनीनां च यत्पयः ।

गाई, बाख्री, भेडी, भैसी, पोथी उँट, घोडी, स्त्री र ढोई : यी दूधका स्रोत हुन् ।

तदनेकौषधिरसं प्राणिनां प्राणदं गुरु ॥१६५॥
मधुरं पिच्छिलं स्निग्धं शीतं सूक्ष्मं सरं गुरु ।

सङ्कलन : मोहन प्रसाद सापकोटा

यी जीवले खाने विविध प्रकारका ओखती (जडीबूटी)बाट आउने दूधमा जीवलाई जीवन दिने, पचाउन कठिन हुने, गुलियो, लेस्याइलो, चिल्लो, शीतवीर्यको, सूक्ष्म र मलमूत्रलाई तलतिर सार्ने गुण हुन्छ ।

गाईको दूध (गोदुग्ध)

पथ्यं रसायनं बल्यं हृद्यं मेध्यं गवां पयः ॥१६६॥
आयुष्यं पुंस्त्वकृद्वातरक्तपित्तविकारनुत् ।
गवां सितानां वातघ्नं कृष्णानां पित्तनाशनम् ॥१६७॥
कफघ्नं रक्तवर्णानां गोदुग्धं च त्रिधा स्मृतम् ।
गोक्षीरमनभिष्यन्दि स्निग्धं गुरु रसायनम् ॥१६८॥
रक्तपित्तहरं शीतं मधुरं रसपाकयोः ।
जीवनीयं तथा वातपित्तघ्नं परमं स्मृतम् ॥१६९॥

गाईको दूध रसायनी, बलदायक, मुटुका लागि हितकर, होम हाल्न योग्य, आयु बढाउने, पुरुषत्व प्रदान गर्ने तथा वातविकार रक्तविकार र पित्तविकार नाश गर्ने गुणको हुन्छ । सेतो गाईको दूधले वातविकार,

कालो गाईको दूधले पित्तविकार तथा रातो गाईको दूधले कफविकार नाश गर्दछ । यसरी गाईको दूध तीन किसिमको हुन्छ । गाईको दूध अनभिष्यन्दि, चिल्लो, पचाउन कठिन, रसायनी, रक्तपित्त नाश गर्ने, शीतवीर्यको, शुरुमा र पचेपछि गुलियो, जीवनी र प्रभावकारी ढङ्गले वातविकार र पित्तविकार नाश गर्ने गुणको हुन्छ ।

बाख्रीको दूध (अजापय)

छागं कषायं मधुरं शीतं ग्राहितरं लघु ।
रक्तपित्तातिसारघ्नं क्षयकासज्वरापहम् ॥१७०॥
अजानां लघुकायत्वान्नानाद्रव्यनिषेवणात् ।
अत्यम्बुपानाद्व्यायामात्सर्वव्याधिहरं परम् ॥१७१॥

बाख्रीको दूध टर्रो, गुलियो, शीतवीर्यको, ग्राहि, पचाउन सहज तथा रक्तपित्त, अतिसार, क्षयरोग, खोकी र जरो नाश गर्ने गुणको हुन्छ । सानो शरीर, अनेक थरी पदार्थ खाने, धेरै पानी पिउने र व्यायाम गर्ने हुनाले बाख्रीको दूध प्रभावकारी ढङ्गले सबै रोगलाई नाश गर्ने गुणको हुन्छ ।

सङ्कलन : मोहन प्रसाद सापकोटा
भेडीको दूध (औरभ्रपय)

औरभ्रं मधुरं स्निग्धमुष्णं तिक्तं कफापहम् ।
गुरु शुद्धानिले पथ्यं शोफे चानिलशोणिते ॥१७२॥

भेडीको दूध गुलियो, चिल्लो, उष्णवीर्यको, तितो, कफविकार नाश गर्ने, पचाउन कठिन, वातविकारलाई शुद्ध बनाउने तथा सुजन र वातरक्तमा पथ्य हुन्छ ।

भैसीको दूध (महिषीपय)

महाभिष्यन्दि मधुरं माहिषं वह्निसादनम् ।
निद्राकरं शीतकरं गव्यात्स्निग्धतरं गुरु ॥१७३॥

भैसीको दूध अति अभिष्यन्दि, गुलियो, पाचनशक्ति बढाउने, निद्रा दिने, शीतवीर्यको, गाईको दूधभन्दा चिल्लो र पचाउन कठिन हुने गुणको हुन्छ ।

उँटको दूध (औष्ट्रीपय)

रूक्षोष्णं क्षीरमुष्ट्रीणामीषत्सलवणं लघु ।
शस्तं वातकफानाहकृमिशोफोदरार्शसाम् ॥१७४॥

उँटको दूध रुखो, उष्णवीर्यको, केही नुनिलो, पचाउन सहज, मङ्गल वा प्रसन्न दायक तथा वातविकार, कफविकार, आनाह, कीरा, सुजन, पेटका रोग र अल्काई नाशगर्ने गुणको हुन्छ ।

घोडीको दूध (अश्वापय)

अश्वाक्षीरं स्मृतं साम्लं लवणं दीपनं लघु ।
देहस्थैर्यकरं बल्यं गौरवकान्तिकृत् सरम् ॥१७५॥
श्वासवातहरं साम्लं लवणं रुचिदीप्तिकृत् ।

घोडीको दूध केही अमिलो, नुनिलो, दीपनी, पचाउन सहज, शरीरलाई स्थिर बनाइराख्ने, बलदायक, भारी, चमक दिने, मलमूत्रलाई तलतिर सार्ने, दम र वातविकार नाशक, हल्का अमिलो, नुनिलो, रुचिप्रद र तेजदायक गुणको हुन्छ ।

गधाको दूध (गर्दभीपय)

कासश्वासहरं क्षीरं गार्दभं बालरोगनुत् ॥१७६॥
मधुराम्लरसं रूक्षं लवणानुरसं गुरु ।

गधाको दूध खोकी र दम नाश गर्ने, बालरोग ठिक गर्ने, गुलियो, अमिलो, रुखो, पछिल्लो स्वाद नुनिलो तथा पचाउन कठिन हुने गुणको हुन्छ ।

स्त्रीको दूध (मानुषीपय)

स्निग्धं स्थैर्यकरं चापि चक्षुष्यं बलवर्धनम् ॥१७७॥
जीवनं बृंहणं सात्म्यं स्नेहनं मानुषीपयः ।

नाशनं रक्तपित्ते च तर्पणं चाक्षिशूलनुत् ॥१७८॥

स्त्रीको दूध चिल्लो, उमेरलाई स्थिर राख्ने, आँखाका लागि हितकर, बल बढाउने, जीवनदायक, पौष्टिक, शरीरले सहने, शरीरलाई चिल्लो बनाउने, रक्तपित्त नाश गर्ने, तृप्तिदायक र आँखाको दुखाइ नाश गर्ने गुणको हुन्छ ।

ढोईको दूध (हस्तिनीपय)

हस्तिन्या मधुरं वृष्यं कषायानुरसं गुरु ।
स्निग्धं शीतकरं चापि चक्षुष्यं बलवर्धनम् ॥१७९॥

ढोईको दूध गुलियो, वीर्यवर्धक, पछिल्लो रस टर्ने, पचाउन कठिन, चिल्लो, शीतवीर्यको, आँखाका लागि हितकर र बल बढाउने गुणको हुन्छ ।

दूधका गुण, अवगुण आदि (सामान्यदुग्ध गुण)

सङ्कलन : मोहन प्रसाद सापकोटा
विवत्साबालवत्सानां पयो दोषलमीरितम् ।
पिण्याकाम्लाशिनीनां च गुर्वभिष्यन्दि तद्भृशम् ॥१८०॥

हतुवा र सन्तान सानै हुने जनावरको दूध दोषकारक हुन्छ । पिना र अमिला कुरा खाने जनावरको दूध अति नै पचाउन कठिन र अभिष्यन्दि हुन्छ ।

जाङ्गलानूपदेशेषु चरन्तीनां यथोत्तरम् ।
पयो गुरुतरं स्नेहो यथा चैषां विवर्धते ॥१८१॥

जाङ्गल देशमा चर्नेभन्दा आनूप देशमा चर्ने जनावरको दूध बढी चिल्लो हुने कारणले बढी पचाउन कठिन हुन्छ ।

कृष्णायाः कृष्णवत्सायाः शुक्लायाश्च परं पयः ।
सुखोष्णं कफवातघ्नं श्रुतशीतं च पित्तजित् ॥१८२॥

काली गाई जसको बाच्छा वा बाच्छी पनि कालो नै छ र सेती गाईको दूध उत्तम हुन्छ । तातो दूधले कफविकार र वातविकार नाश गर्दछ । तताएर सेलाएको दूधले पित्तविकारलाई जित्दछ ।

आमवातकरं चापि धारोष्णममृतं पयः ।
सुशृतं च पयः पीतं पीयूषादपि तद्गुरु ॥१८३॥

दुहुँदादुहुँदैको तातो दूध अमृतसमान हुने भएपनि यसले आमवात गर्दछ । तताएर धेरै सेलाएको दूध बिगौते दूधभन्दा पनि बढी पचाउन कठिन हुन्छ ।

कूर्चिकाश्च किलाटाश्च गुरवः श्लेष्मवर्धनाः ।
तर्पणाः प्रीणना बल्या बृंहणा मारुतापहाः ॥१८४॥
दीप्ताग्नीनामनिद्राणां व्यवाये चापि पूजिताः ।
अनिष्टगन्धमम्लं च विवर्णं विरसं च तत् ॥१८५॥

दूध फटाएर बनाइने छेना तथा कुरौनी पचाउन कठिन र कफविकार बढाउने गुणको हुन्छ । यी तृप्तिदायक, मनमोहक वा प्राणदायक, बलदायक, पौष्टिक र वातविकार नाश गर्ने गुणका हुन्छन् । यी खानेकुरा पाचनशक्ति बलियो हुनेलाई, कम निद्रापर्ने वा कम सुत्नेलाई र (धेरै) ग्राम्यधर्ममा संलग्न हुनेलाई हितकर हुन्छन् ।

वर्ज्यं सलवणं क्षीरं यच्च विग्रथितं भवेत् ।
धारोष्णममृतं पथ्यं धाराशीतं त्रिदोषलम् ॥१८६॥
शृतशीतं त्रिदोषघ्नं शृतोष्णं कफवातजित् ।

नुनसँग दूध खान र फाटेको दूध खान हुँदैन । दुहुँदादुहुँदैको तातो दूध अमृतसमान पथ्य हुन्छ । दोहेर सेलाएपछिको दूधले त्रिदोष गर्दछ । उमालेर सेलाएको दूधले त्रिदोष नाश गर्दछ । तातो दूधले कफविकार र वातविकारलाई जित्दछ ।

जीर्णज्वरे किन्तु कफे विलीने स्याद्गुग्धपानं हि सुधासमानम् ।
तदेव पीतं तरुणज्वरे च निहन्ति हालाहलवन्मनुष्यान् ॥१८७॥

थाङ्गे जरो आएका बेलामा जब कफविकार कम भएको हुन्छ त्यतिखेर दूध पिउनु अमृतसमान

हुन्छ । तर यही दूध यदि भर्खर जरो आउन लागेका बेलामा पिइयो भने यसले मानिसहरूलाई हलाहल विषसमान भएर नाश गर्दछ ।

नवज्वरे च मन्दाग्रौ ह्यामदोषेषु कुष्ठिनाम् ।
शूलिनां कफदोषेषु कासिनामतिसारिणाम् ॥१८८॥
पयःपानं न कुर्वीत विशेषात्कृमिदोषतः ।
मुहूर्तपञ्चकादूर्ध्वं क्षीरं भवति विकृतम् ॥१८९॥
तदेव द्विगुणं काले विषवद्भन्ति मानवम् ।

कीराको दोष हुने हुँदा : भर्खर भर्खर जरो आउन शुरु गर्दा, पाचनशक्ति कमजोर हुँदा, आमविकार हुँदा (आउँ पर्दा), कुष्ठरोग हुँदा, शूलरोग हुँदा, कफविकार हुँदा, खोकी लागेका बेलामा र छेरपटी लागिरहेका बेलामा दूध नपिउनु । उमालेको पाँच मुहूर्त (करिब चार घण्टा) बितेपछि दूध विकृत हुन्छ । यसैको दोब्बर समय अर्थात् उमालेको करिब आठ घण्टा भएपछि दूध विषसमान भएर मानिसलाई नाश गर्दछ ।

सङ्कलन : मोहनप्रसाद सापकोटा

तक्रजन्म पयोहेतुर्नवनीतोद्भवं दधि ॥१९०॥
अम्लं स्वादुरसं ग्राहि गुरूष्णं दधि वातजित् ।
मेदःशुक्रबलश्लेष्मरक्तपित्ताग्निशोफकृत् ॥१९१॥

तक्रजन्म, पयोहेतु, नवनीतोद्भव र दधि : यी दहीका पर्यायवाची नामहरू हुन् । दही अमिलो, गुलियो, ग्राही, पचाउन कठिन, उष्णवीर्यको, वातविकारलाई जित्ने तथा बोसोविकार, शुक्र, बल, कफविकार, रक्तपित्त, पाचनशक्ति र सुजन बढाउने वा गराउने गुणको हुन्छ ।

मथिएको दही (मथितदधि)

मथितं गोरसं घोलं द्रवमम्लं विलोडितम् ।
श्वेतं दण्डाहतं सान्द्रं दध्यम्लं नामतः स्मृतम् ॥१९२॥
वातदोषहरं ह्लादि मथितं कफपित्तनुत् ।

मथित, गोरस, घोल, द्रवमम्ल, विलोडित, श्वेत, दण्डाहत, सान्द्र र दध्यम्ल : यी मथिएको दहीका पर्यायवाची नामहरू हुन् । यो वातविकार नाश गर्ने, मनमोहक तथा कफविकार र पित्तविकार नाश गर्ने गुणको हुन्छ ।

गाईको दही (गोदधि)

स्निग्धं विपाके मधुरं दीपनं बलवर्धनम् ॥१९३॥
वातापहं पवित्रं च दधि गव्यं रुचिप्रदम् ।

गाईको दही चिल्लो, पचेपछि गुलियो, दीपनी, बल बढाउने, वातविकार नाश गर्ने, पवित्र र रुचिप्रद गुणको हुन्छ ।

बाख्रीको दही (अजादधि)

दध्याजं कफवातघ्नं लघु पाके क्षयापहम् ॥१९४॥
दुर्नामश्वासकासेषु हितमग्नैश्च दीपनम् ।
रसे पाके च मधुरं कषायं कफवातजित् ॥१९५॥

बाख्रीको दही कफविकार र वातविकार नाश गर्ने, पचेपछि पचाउन सहज, क्षयरोग नाश गर्ने; हर्सा, दम र खोकीमा हितकर, पाचनशक्ति बढाउने, शुरुमा र पचेपछि गुलियो र टर्रो तथा कफविकार र वातविकारलाई जित्ने गुणको हुन्छ ।

भेडीको दही (औरभ्रदधि)

कोपनं कफवातानां दुर्नाम्नां चाऽऽविकं दधि ।
विपाके मधुरं वृष्यं रक्तपित्तप्रसादनम् ॥१९६॥

भेडीको दहीले कफविकार, वातविकार र हर्सालाई बढाउँदछ । यो पचेपछि गुलियो, वीर्यवर्धक र रक्तपित्तलाई प्रशोधन गर्ने गुणको हुन्छ ।

भैसीको दही (महिषीदधि)

बलासवर्धनं स्निग्धं विशेषान्माहिषं दधि ।
महाभिष्यन्दि मधुरं बलमेदोविवर्धनम् ॥१९७॥

भैसीको दही विशेषतः कफविकार बढाउने, चिल्लो, अति नै अभिष्यन्दि, गुलियो तथा बल र बोसो बढाउने गुणको हुन्छ ।

उँटको दही (उष्ट्रीदधि)

विपाके कटु सक्षारमम्लं स्यादौष्ट्रकं दधि ।
वातमर्शासि कुष्ठानि कृमिन्हृत्युदराणि च ॥१९८॥

उँटको दही पिरो, केही क्षारिलो, अमिलो तथा वातविकार, अल्काई, कुष्ठ, (पेटका) कीरा र पेटका रोग नाशगर्ने गुणको हुन्छ ।

सङ्कलन : मोहन प्रसाद सापकोटा
घोडीको दही (अश्वादधि)

दीपनीयमचक्षुष्यं वातलं दधि वाडवम् ।
रूक्षमुष्णं कषायं च कफमूत्रापहं च तत् ॥१९९॥

घोडीको दही आँखाका लागि अहितकर, वातविकार गर्ने, रुखो, उष्णवीर्यको, टर्रो तथा कफविकार र मूत्रविकार नाशगर्ने गुणको हुन्छ ।

पोथी गधाको दही (गर्दभीदधि)

गर्दभीदधि रूक्षोष्णं लघु दीपनपाचनम् ।
मधुराम्लरसं रुच्यं वातदोषविनाशनम् ॥२००॥

गधाको दही रुखो, उष्णवीर्यको, पचाउन सहज, दीपनी, पाचक, गुलियो, अमिलो, रुचिप्रद तथा वातविकार नाश गर्ने गुणको हुन्छ ।

ढोईको दही (हस्तिनीदधि)

लघु पाके बलासघ्नं वीर्योष्णं पक्तिनाशनम् ।
कषायानुरसं नाग्या दधि वर्चोविवर्धनम् ॥२०१॥

ढोईको दही पचाउन सहज, कफविकार नाश गर्ने, उष्णवीर्यको, पक्तिशूल नाश गर्ने, पटिल्लो रस टर्रो र दिसा बढाउने गुणको हुन्छ ।

स्त्रीको दही (स्त्रीदधि)

स्निग्धं च मधुरं बल्यमुष्णं सन्तर्पणं गुरु ।
चक्षुष्यमग्रं दोषघ्नं दधि नार्या गुणोत्तरम् ॥२०२॥

स्त्रीको दही चिल्लो, गुलियो, बलदायक, उष्णवीर्यको, तृप्तिदायक, पचाउन कठिन, आँखाका लागि हितकर र त्रिदोष नाश गर्ने गुणको हुन्छ ।

सङ्कलन : मोहन प्रसाद सापकोटा
दहीका सामान्य गुण र दोष (सामान्यदधिगुण)

कफपित्तकृदम्लं स्यादत्यम्लं रक्तदूषकम् ।
विदाहि सृष्टविण्मूत्रं मधुदधि त्रिदोषनुत् ॥२०३॥
दध्नस्तु यदधस्तोयं तन्मस्तुनि परिशृतम् ।
शृतात्क्षीराच्च यज्जातं गुणवद्धधि तत्स्मृतम् ॥२०४॥
वातपित्तहरं रुच्यं धात्वग्निबलवर्धनम् ।
दध्यसारं च रूक्षं च ग्राहि विष्टम्भि वातलम् ॥२०५॥
सरं स्निग्धं गुरु वृष्यं कफमेदोविवर्धनम् ।
बृंहणं मारुतघ्नं च बलासचयकृत्परम् ॥२०६॥
कफवातहरं भेदि मस्तु स्रोतोविशोधनम् ।
पीनसे चातिसारे च शीतके विषमज्वरे ॥२०७॥
अरुचौ मूत्रकृच्छ्रे च काश्ये च दधि शस्यते ।

अमिलो दहीले कफविकार र पित्तविकार गर्दछ । अति अमिलो दहीले रगतलाई दूषित बनाउँदछ, डाह

गर्दछ र दिसापिसाब बढाउँदछ । गुलियो दहीले त्रिदोष नाश गर्दछ । दहीमा हुने पानीलाई मस्तु भनिन्छ । तताएको दूधबाट जमाइने दही उत्तम गुणको हुन्छ । यसले वातविकार र पित्तविकार नाश गर्दछ, रुचि बढाउँदछ तथा शरीरका धातु, अग्नि र बल पनि बढाउँदछ । चिल्लो भाग निकालिएको दही रुखो, ग्राही तथा कब्जियत र वातविकार गर्ने गुणको हुन्छ । दहीको चिल्लो भाग चिल्लो, पचाउन कठिन, वीर्यवर्धक, कफविकार र बोसो बढाउने, पौष्टिक, वातविकार नाश गर्ने र शरीरमा अति नै कफ थुपार्ने गुणको हुन्छ । मस्तुले कफविकार र वातविकार नाश गर्दछ । यो भेदनी र स्रोतग्रन्थीलाई प्रशोधन गर्ने गुणको हुन्छ । पिनास, छेरपटी, चिसो लाग्दा, विषमज्वर, अरुची, मूत्रकृच्छ्र र शुब्लोपनमा दही हितकर हुन्छ ।

ऋतु अनुसार दहीको गुण (ऋतुविशेषणदधिगुण)

शरदग्रीष्मवसन्तेषु प्रायशो दधि गर्हितम् ॥२०८॥
हेमन्ते शिशिरे चैव वर्षासु दधि शस्यते ।

शरद, ग्रीष्म र वसन्त ऋतुमा दही नखानू । हेमन्त, शिशिर र वर्षा ऋतुमा दही खानु हितकर हुन्छ ।

सङ्कलन : मोहन प्रसाद सापकोटा
रक्तपित्तकफोत्थेषु विकारेषु हितं न तत् ॥२०९॥

रगतविकार, पित्तविकार र कफविकार हुँदा दही खानु हितकर हुँदैन ।

गाईको दहीको श्रेष्ठता

विज्ञेयमेषु सर्वेषु गव्यमेव गुणोत्तरम् ।
वातघ्नं कफकृत्स्निग्धं बृंहणं न च पित्तकृत् ॥२१०॥

सबै दहीमध्येमा गाईको दही उत्तम गुणको हुन्छ । यसले वातविकार नाश गर्दछ, कफविकार गर्दछ, चिल्लो र पौष्टिक हुन्छ तथा पित्तविकार पनि गर्दैन ।

दही खाने नियम

न नक्तं दधि भुञ्जीत न चाप्यघृतशर्करम् ।

नामुद्रसूपं नाक्षौद्रं नोष्णं नाऽऽमलकैर्विना ॥२११॥

रातमा दही नखानू । घिउ, चिनी, मुगीको रस, मह वा अमला नमिसाई दही नखानू । दही तताएर नखानू ।

ज्वरासृक्पित्तवीसर्पकुष्ठपाण्ड्वामयभ्रमान् ।
प्राप्नुयात्कामलां चोग्रां विधिं हित्वा दधिप्रियः ॥२१२॥

नियम नमानी जथाभावी दही खाने गरिए यसले जरो, रक्तपित्त, वीसर्प, कुष्ठ, पाण्डु, रिंगटा र कडा खालको कमलपित्त रोग हुन सक्दछ ।

मोही (तक्र)

तक्रं श्वेतपयः सात्म्यं छच्छिका चैव कीर्तितम् ।

तक्र, श्वेतपय, सात्म्य र छच्छिका : यी तक्रका पर्यायवाची नामहरू हुन् ।

मोहीका प्रकार (तक्रभेदा)

द्विगुणाम्बु श्वेतपेयस्त्वर्धोदकमुदश्वितम् ॥२१३॥

तक्रं त्रिभागभिन्नं तु केवलं मथितं स्मृतम् ।

तक्रस्योपरि यत्तोयं तदुदश्वितप्रकीर्तितम् ॥२१४॥

दहीमा दोब्बर पानी हालेर घोलेपछिको तक्रलाई श्वेतपेय भनिन्छ । दहीको आधा पानी हालेर घोलिएको तक्रलाई उदश्वित भनिन्छ । दहीमा दहीको तीन भागको एक भाग पानी हालेर घोलिएपछि त्यो तक्र हुन्छ । दहीमा पानी नहाली मथिए त्यो मथित हुन्छ । तक्रको माथितिर हुने पानीलाई पनि उदश्वित भनिन्छ ।

मोहीको सामान्य गुण (तक्रसामान्यगुणाः)

तक्रं लघु कषायोष्णं दीपनं कफवातजित् ।

शोफोदराशोग्रहणीदोषमूत्रग्रहारुचीः ॥२१५॥
गुल्मप्लीहघृतव्याधिगरपाण्ड्वामयाञ्जयेत् ।

तक्र पचाउन सहज, टर्रो, उष्णवीयको, दीपनी तथा कफविकार, वातविकार, सुजन, पटका रोग, हर्सा, ग्रहणी, मूत्रग्रह, अरुची, गुल्म, फियोका रोग, घिउले गर्ने अमन, कृत्रिम विषविकार र पाण्डुरोगलाई जित्ने गुणको हुन्छ ।

समुद्धृतघृतं तक्रमर्धोद्धृतघृतं च यत् ॥२१६॥
अनुद्धृतघृतञ्च तक्रमित्येव त्रिविधं मतम् ।
पूर्वं लघु च पथ्यं च गुरु वृष्यतरं परम् ॥२१७॥
अतः परं वृष्यतमं यथाक्रममुदीरितम् ।

घिउ भिकिए अनुसार घिउ पूरै भिकिएको, आधा भिकिएको र नभिकिएको गरी तक्र तीन किसिमको हुन्छ । यी तक्र क्रमशः पहिलो तक्र पचाउन सहज र पथ्य, दोश्रो पचाउन कठिन र बढी वीर्यवर्धक र तेस्रो अति नै वीर्यवर्धक हुन्छ ।

सङ्कलन : मोहन प्रसाद सापकोटा
अम्लं चात्यम्लमेवान्यत्कषायं स्वादु चापरम् ॥२१८॥
तनुसारं सारतरं गुरु विद्याद्यथोत्तरम् ।

(यी) अमिलो, अति अमिलो र टर्रो एवं गुलियो स्वादका तक्र क्रमशः पातलो, बाक्लो र अति बाक्लो हुन्छ ।

तत्र यदुद्धृतस्नेहं साम्लं च मधुरं च यत् ॥२१९॥
कषायानुरसं स्वादु नातिसान्द्रं प्रशस्यते ।

घिउ निकालिएको, अमिलो, गुलियो, पछिल्लो स्वाद टर्रो हुने, स्वादिलो र धेरै बाक्लो नभएको तक्र उत्तम हुन्छ ।

गरोदराशोग्रहणीपाण्डुरोगे ज्वरेऽरुचौ ॥२२०॥
वर्चोमूत्रग्रहप्लीहस्नेहव्यापदि मेहिषु ।

कृत्रिम विषविकार, पेटका रोग, हर्सा, ग्रहणी, पाण्डु, जरो, अरुची, कडा खालको छेरपटी, मूत्रग्रह, फियोका रोग, चिल्लोले अमन हुँदा र प्रमेहका रोगमा तक्र लाभदायक हुन्छ ।

कषायाशीतमधुरैस्तदुत्कृष्टतमं स्मृतम् ॥२२१॥
तर्पणं प्रीणनं बल्यं हृद्यं पित्ताविरोधि च ।

टर्पो, शीतल र गुलियो तक्र सबभन्दा उत्तम हुन्छ । यो तृप्तिदायक, मनमोहक, बलदायक, मुटुका लागि हितकर र पित्तको अविरोधी हुन्छ ।

तक्रं केवलमम्लं च श्लेष्मानिलहरं लघु ॥२२२॥
लेखनं दीपनीयं च रक्तपित्तप्रकोपनम् ।

अमिलो मात्र स्वादको तक्रले कफविकार र वातविकार नाश गर्दछ । यो पचाउन सहज, लेखनी, दीपनी र रक्तपित्तलाई विकृत पार्ने गुणको हुन्छ ।

सङ्कलन : मोहन प्रसाद सापकोटा
राम्ररी जमेको र नजमेको दहीको मोही (पक्वापक्वतक्रगुण)

तक्रमामं कफं कोष्ठे हन्ति कण्ठे करोति च ॥२२३॥
पीनसश्वासकासादौ सिद्धमेव तदिष्यते ।

राम्ररी नजमेको दहीको तक्रले शरीर भित्र कफविकार बढाउँदछ र घाँटीलाई खराब गर्दछ । यसले पिनास, दम र खोकी समेत निकाल्दछ । त्यसैले राम्ररी तयार पारिएको तक्र मात्र प्रयोग गर्नु ।

मोही खान नहुने अवस्था (तक्रसेवननिषेध)

तक्रं नैव क्षये दध्यान्नोष्णकाले न दुर्बले ॥२२४॥
न मूर्च्छाभ्रमदाहेषु न रोगे रक्तपैत्तिके ।

क्षयरोग हुँदा, गर्मी महिनामा, दुर्बल हुँदा, बेहोस हुने रोगमा, रिंगटा लाग्दा, डाह हुँदा र रक्तपित्त हुँदा तक्र पिउन नदिनु ।

मोही सेवन गर्न सकिने अवस्था (तक्रसेवन)

शीतकालेऽग्निमान्द्ये च कफोत्थेष्वामयेषु च ॥२२५॥
मार्गावरोधे दुष्टे च वायौ तक्रं प्रशस्यते ।

जाडो याममा, पाचनशक्ति कमजोर हुँदा, कफविकारजन्य रोगमा, हिँडेर थाकेका बेलामा र शरीरको वायु विकृत भएका बेलामा तक्र पिउनु हितकर हुन्छ ।

रोग अनुसार मोहीको गुण (दोषविशेषण तक्रगुण)

वातेऽम्लं सैन्धवोपेतं स्वादु पित्ते सशर्करम् ॥२२६॥
पिबेत्तक्रं कफे चापि व्योषक्षारसमायुतम् ।

वातविकार हुँदा अमिलो तक्रमा सिँधेनुन हालेर खानू । पित्तविकार हुँदा गुलियो तक्रमा चिनी हालेर खानू । कफविकार हुँदा पनि त्रिकटु र यवाखार मिसाएर तक्र खानू ।

सङ्कलन : मोहन प्रसाद सापकोटा
मोहीको परिकार विशेष (तक्रकूर्चिका)

ग्राहिणी वातला रूक्षा दुर्जरा तक्रकूर्चिका ॥२२७॥

तक्रकूर्चिका वातविकार गर्ने, रुखो र ढिलो पच्ने गुणको हुन्छ ।

मण्ड

तक्राल्लघुतरो मण्डः पुंस्त्यनिद्राप्रदः स्मृतः ।

तक्रमण्ड तक्रभन्दा पचाउन सहज, पुंस्त्व बढाउने र निद्रा लगाउने गुणको हुन्छ ।

मोरट

मधुरौ बृंहणौ वृष्यौ तद्वत्पीयूषमोरटौ ॥२२८॥

पीयूष र मोरट गुलियो, पौष्टिक र वीर्यवर्धक हुन्छ ।

नौनी (नवनीत)

नवनीतं दधिभवं घृतहेतुः शिशुप्रियम् ।
दधिमण्डोद्भवं चैव मन्थनोद्भवमेव च ॥२२९॥

नवनीत, दधिभव, घृतहेतु, शिशुप्रिय, दधिमण्डोद्भव र मन्थनोद्भव : यी नौनीका पर्यायवाची नामहरू हुन् ।

नवनीतं नवं हृद्यं ग्राहि रोचनदीपनम् ।
क्षयारुच्यर्दितप्लीहग्रहण्यशोविकारनुत् ॥२३०॥
चक्षुष्यं शिशिरं स्निग्धं वृष्यं जीवनबृंहणम् ।

ताजा नौनी मुटुका लागि हितकर, ग्राही, रुचिप्रद, दीपनी तथा क्षयरोग, अरुची, अर्दित (?), फियोका रोग, ग्रहणी, र हर्सा नाशगर्ने गुणको हुन्छ । यो आँखाका लागि हितकर, शीतल, चिल्लो, वीर्यवर्धक, प्राणदाय र पौष्टिक हुन्छ ।

क्षीरोद्भवं हिमं ग्राहि रक्तपित्ताक्षिरोगनुत् ॥२३१॥
स्मृतिक्षुधाग्निशुक्रौजःकफमेदोविवर्धनम् ।
वातपित्तविषोन्मादशोफालक्ष्मीजरापहम् ॥२३२॥
सर्वस्नेहोत्तमं शीतं मधुरं रसपाकयोः ।

दूधबाट निकालिएको नौनी शीतल, ग्राही, रक्तपित्त र आँखाका रोग नाश गर्ने, दिमागको सम्भना शक्ति, भोक, शरीरको अग्नि, शुक्र, ओज, कफ र बोसो बढाउने गुणको हुन्छ । वातविकार, पित्तविकार, विषविकार, उन्माद, सुजन, अलक्ष्मी र रोग नाशगर्ने नौनी शीतल, सबै चिल्लोमा उत्तम तथा शुरुमा र पचेपछि गुलियो हुने गुणको हुन्छ ।

मह (मधु)

मधु क्षौद्रं तु माक्षीकं माक्षिकं कुसुमासवम् ॥२३३॥
पुष्पासवं सारघं च तच्च पुष्परसं स्मृतम् ।

मधु, क्षौद्र, माक्षीक, माक्षिक, कुसुमासव, पुष्पासव, सारघ र पुष्परस : यी महका पर्यायवाची नाम हुन् ।

माक्षिकं भ्रामरं क्षौद्रं पौत्तिकं छात्रकं तथा ॥२३४॥
आर्घ्यमौद्दालकं दालमित्यष्टौ मधुजातयः ।

माक्षिक, भ्रामर, क्षौद्र, पौत्तिक, छात्रक, आर्घ्य, औद्दालक र दाल : यी आठ थरी महका नाम हुन् ।

माक्षिकं तैलवर्णं स्यात्क्षौद्रं तु कपिलं भवेत् ॥२३५॥
पौत्तिकं घृतवर्णं तु श्वेतं भ्रामरमुच्यते ॥
आपीतवर्णं छात्राख्यं पिङ्गलं चार्घ्यनामकम् ॥२३६॥
औद्दालं स्वर्णसदृशं दालं च पाटलं स्मृतम् ।

माक्षिक तेल रङ्को, क्षौद्र कैलो वा खैरो, पौत्तिक घिउ रङ्को, भ्रामर सेतो, छात्रक पहेँलो, आर्घ्य हल्का पहेँलो वा कैलो, औद्दाल सुनजस्तै पहेँलो र दाल गुलाफी रङ्को हुन्छ ।

महका सामान्य गुण (सामान्यमधुगुण)

कषायानुरसं रूक्षं शीतलं मधुरं मधु ॥२३७॥
दीपनं लेखनं बल्यं व्रणरोपणमुत्तमम् ।
सन्धानं लघु चक्षुष्यं स्वर्यं हृद्यं त्रिदोषनुत् ॥२३८॥
छर्दिहिक्काविषश्वासकासशोषातिसारजित् ।
रक्तपित्तहरं ग्राहि कृमितृणमोहहृत्परम् ॥२३९॥

महको पछिल्लो स्वाद टर्रो हुन्छ । यो रुखो, शीतवीर्यको, गुलियो, दीपनी, लेखनी, बलदायक र घाउ भर्न उत्तम गुणको हुन्छ । मह खमिर बनाउने, पचाउन सहज, आँखाका लागि हितकर, स्वरका लागि

हितकर, मुटुका लागि हितकर र त्रिदोष नाशगर्ने गुणको हुन्छ । यसले वाकवाकी, बाडुली, विषविकार, दम, खोकी, सुकेनास र अतिसारलाई जित्दछ । महले रक्तपित्त नाश गर्दछ । यो ग्राहि र प्रभावकारी ढङ्गले कीरा, तिर्खा र मोह नाशगर्ने गुणको हुन्छ ।

भ्रामरमधु

पैच्छिल्यात्स्वादुरूपत्वाद्भ्रामरं गुरु सञ्ज्ञितम् ।
भ्रामरं कुरुते जाड्यमत्यन्तं मधुरं च तत् ॥२४०॥

लेस्याइलोपन, गुलियोपन र पचाउन कठिन हुने कारणले भ्रामर-महले शरीरलाई लाटो बनाउँदछ । यो अति गुलियो पनि हुन्छ ।

क्षौद्रमधु

क्षौद्रं विशेषतो ज्ञेयं शीतलं लघु लेखनम् ।

सङ्कलन : मोहन प्रसाद सापकोटा
क्षौद्र-मह विशेषगरी शीतवीर्यको, पचाउन सहज र लेखनी हुन्छ ।

माक्षिकमधु

तस्माल्लघुतरं रूक्षं माक्षिकं प्रवरं स्मृतम् ॥२४१॥

माक्षिक-मह क्षौद्र-महभन्दा पनि पचाउन सहज हुन्छ । यो रुखो हुन्छ । यो महमध्येमा उत्तम मह हो ।

महका गुण र दोष

उष्णैर्विरुध्यते सर्वं विषान्वयतया मधु ।
उष्णार्तरुक्षरुष्णौर्वा तन्निहन्ति तथा विषम् ॥२४२॥

विषसँग संसर्गमा रहने हुनाले सबै खालको मह सबै खालको तातोपनको विरोधी हुन्छ । यसलाई तातो

पारेर वा शरीरलाई तातो बनाउने कुरासँगै वा उष्णवीर्यका मानिसले मह खाने गर्दा यसले विषले जसरी नै मानिसको ज्यान लिन सक्दछ ।

तत्सौकुमार्याच्च तथैव सेव्यं वनौषधीनां रससम्भवाच्च ।
उष्णैर्विरुध्येत विशेषतस्तु तथाऽऽन्तरिक्षेण जलेन वाऽपि ॥२४३॥

सुकोमल स्वभाव हुने हुनाले तथा अनेक थरी जङ्गली फूलको रसबाट बन्ने हुनाले महलाई तताउन अथवा तातो कुरासँग मिसाएर सेवन गर्न हुँदैन । परेको पानीसँग पनि मह खान हुँदैन ।

महको चिनी (माध्वी सिता)

माध्वी सिता मधूत्पन्ना मधुजा मधुशर्करा ।
माक्षीकशर्करा चैषा क्षौद्रजा क्षौद्रशर्करा ॥२४४॥
यद्गुणं यन्मधु प्रोक्तं तद्गुणास्तस्य शर्कराः ।
विशेषाद्बल्यवृष्याश्च तर्पण्यः क्षीणदेहिनाम् ॥२४५॥

सङ्कलन : मोहन प्रसाद सापकोटा

माध्वी-सिता, मधुत्पन्ना, मधुजा, मधुशर्करा, माक्षीकशर्करा, क्षौद्रजा र क्षौद्रशर्करा : यी महबाट बनाइने चिनीका पर्यायवाची नाम हुन् । जे जस्ता गुण जुन जातको महमा हुन्छ त्यही गुण त्यसबाट बनाइने चिनीमा हुन्छ । यो चिनी विशेषगरी कमजोर मानिसका लागि वीर्यवर्धक र तृप्तिदायक हुन्छ ।

अर्कविशेष (शुक्त)

शुक्तं सहस्रवेधं च रसाम्लं चुक्रमेव च ।
मुक्तसारं तथा चोक्तं दहनं नीलकारकम् ॥२४६॥

शुक्त, सहस्रवेध, रसाम्ल, चुक्र, मुक्तसार, दहन र नीलकारक : यी शुक्तका पर्यायवाची नामहरू हुन् ।

रक्तपित्तकरं शुक्तं सद्योभुक्तविपाचनम् ।
जरणं भेदनं पाण्डुकृमिरोगहरं लघु ॥२४७॥
तीक्ष्णोष्णं मूत्रलं हृद्यं कफघ्नं कटुपाकि च ।

शुक्तले रक्तपित्त गर्दछ । खाएको कुरा तुरुन्त पचाउँदछ । यो पाचक, भेदनी, पाण्डे र कीरा नाश गर्ने, पचाउन सहज, तिक्खर, उष्णवीर्यको, पिसाब बढाउने, मुटुका लागि हितकर, कफविकार नाश गर्ने र पचेपछि पिरो हुने गुणको हुन्छ ।

मद्यविशेष (आसुत)

तद्वत्तदासुतं सर्वं रोचनं तु विशेषतः ॥२४८॥

आसुतमा पनि यिनै (शुक्तका जस्तै) गुण हुन्छन् । विशेषगरी यो रुचिप्रद हुन्छ । (कन्दमूल र फलफूल समेत हालिएको काँजीलाई 'आसुत' भनिन्छ ।) ।

काँजी (काञ्जिक)

काञ्जिकं चैव सौवीरं कुल्माषाभिषुतं तथा ।
अवन्तिसोमं धान्याम्लमारनालं महारसम् ॥२४९॥
दाहज्वरापहं स्पर्शात्पानात् वातकफापहम् ।
विबन्धघ्नमवस्रंसि दीपनं चाम्लकाञ्जिकम् ॥२५०॥

काञ्जिक, सौवीर, कुल्माषाभिभव, अवन्तिसोम, धान्याम्ल, आरनाल र महारस : यी काञ्जिकका पर्यायवाची नाम हुन् । यो दलनाले डाह र जरो नाश हुन्छ । अमिलो काञ्जिकलाई पिउनाले वातविकार, कफविकार र कब्जियत नाश गर्दछ । या रेचनी र दीपनी हुन्छ । (काञ्जिक : दूध-दहीको पानी फटाई त्यसमा नुन, मसला हाली साँधेको पेय पदार्थ; माडको अचार; काँजी ।)

मद्यविशेष (सौवीरक, तुषोदक)

सौवीरकं सुवीराम्लं यवगोधूमसम्भवम् ।
यवाग्रजं यवोत्थं च तुषोदं च तुषोदकम् ॥२५१॥

सौवीरक, सुवीराम्ल, यवगोधूमसम्भव, यवाग्रज र यवोत्थ यी सौवीरकका तथा तुषोद र तुषोदक : यी तुषोदकका पर्यायवाची नामहरू हुन् । (बोक्रा निकालिएको जौ वा गहुँको अर्कलाई "सौवीर" भनिन्छ । तर जौको तुलनामा गहुँको सौवीर कम नशालु हुन्छ । काँचो जौलाई बोक्रा सहित नै पिँधेर

अर्क निकाल्दा “तुषोदक” नामक मद्य हुन्छ ।) ।

जरणीयं च हृत्पाण्डुकृमिरोगविदाहनुत् ।
ग्रहण्यशोहितं भेदि सौवीरं च तुषोदकम् ॥२५२॥

सौवीर र तुषोदक पचाउने तथा मुटुको रोग, पाण्डु, कीरा र डाह नाश गर्ने गुणका हुन्छन् । ग्रहणी र हर्षामा फाइदा गर्दछन् तथा भेदनी हुन्छन् ।

मदिराविशेष (गौड, रसशुक्त, मधुशुक्त)

गौडानि रसशुक्तानि मधुशुक्तानि यानि च ।
यथापूर्वं गुरुतराण्यभिष्यन्दकराणि च ॥२५३॥

सखरको शुक्त, उखुको रसको शुक्त र महको शुक्त क्रमशः कम पचाउन कठिन र अभिष्यन्दि हुन्छन् ।

संकलन : मोहनप्रसाद सापकोटा
मदिराविशेष (चुक्र)

यन्मस्त्वादि शुचौ भाण्डे सगुडक्षौद्रकाञ्जिकम् ।
धान्यराशौ त्रिरात्रस्थं शुक्तं चुक्रं तदुच्यते ॥२५४॥

शुद्ध भाँडामा मस्तु, सखर, मह र काँजी हाली तीन रातसम्म धान भित्र पुरेर बनाइने शुक्तलाई चुक्र भनिन्छ ।

सुराका जात (सुराजातय)

सुरा मद्यं प्रसन्ना स्यान्मदिरा वारुणी रसा ।
वरा मण्डा मदकरी माधवी वरुत्मजा ॥२५५॥
इरा कादम्बरी हाला जगलो मेदको मता ।

सुरा, मद्य, प्रसन्ना, मदिरा, वारुणी, रसा, वरा, मण्डा, मदकरी, माधवी, वरुत्मजा, इरा, कादम्बरी, हाला, जगल र मेदक : यी सुराका प्रकारहरू हुन् ।

सौर्यी मधुमैर्यी सुरा सुरभवा स्मृता ॥२५६॥
महासुरा च विज्ञेया त्रिविधाऽपि सुरा मता ।
सर्वं मद्यं सुसज्जातं मधूलकमिति स्मृतम् ॥२५७॥

मधुमैर्यी, सुरा र महासुरा पनि सुराका प्रकारहरू हुन् । सौर्यी, मधुमैर्यी र सुरभवा : यी पनि सुराका पर्यायवाची नाम हुन् । राम्ररी तयार पारिएको सबै खालका मद्यलाई मधूलक भनिन्छ ।

मद्यका सामान्य गुण (मद्यसामान्यगुणाः)

दीपनं रोचनं मद्यं तीक्ष्णोष्णं तुष्टिपुष्टिदम् ।
सुस्वादु तिक्तकटुकम्लपाकरसं सरम् ॥२५८॥
सकषायं स्वरारोग्यप्रतिभावर्णकृल्लघु ।
नष्टनिद्रातिनिद्रेभ्यो हितं पित्तास्रदूषणम् ॥२५९॥
कृच्छ्रशूलहितं रूक्षं सूक्ष्मं मूत्रविशोधनम् ।
वातश्लेष्महरं युक्त्या पीतं विषवदन्यथा ॥२६०॥

मद्य दीपनी, रुचिप्रद, तिक्खर, उष्णवीर्यको, तृप्तिदायक, पुष्टिदायक, स्वादिलो, तितो, पिरो, पचेपछि अमिलो, मलमूत्रलाई तलतिर सार्ने, टर्ो, स्वरका लागि हितकर, आरोग्यदायक, प्रतिभा बढाउने, शरीरको वर्णका लागि हितकर, पचाउन सहज, निद्रा नपर्ने वा धेरै पर्ने अवस्थामा हितकर, पित्त र रगतलाई दूषित पार्ने, मूत्रकृच्छ्र र शूलमा फाइदा गर्ने, रुखो, सूक्ष्म, पिसाबलाई प्रशोधन गर्ने तथा वातविकार र कफविकार नाश गर्ने गुणको हुन्छ । यो विधिपूर्वक पिएँ फाइदाजनक हुन्छ अन्यथा विषसमान हुन्छ ।

सुरा

कासाशोर्ग्रहणीश्वासप्रतिश्यायविनाशनी ।
स्वेदमूत्रकफस्तन्यरक्तमांसकरी सुरा ॥२६१॥
कासाशोर्ग्रहणीदोषमूत्राघातानिलापहा ।
स्तन्यरक्तक्षयहिता सुरा बृंहणदीपनी ॥२६२॥

सुरा खोकी, हर्सा, ग्रहणी, दम र पिनास नाश गर्ने गुणको हुन्छ । यसले पसिना, पिसाब, कफविकार, दूध र मासु बढाउँदछ । सुराले खोकी, हर्सा, ग्रहणी, मूत्राघात र वातविकार नाश गर्दछ । यो दूध बढाउनमा र रगत क्षय हुँदा हितकर तथा पौष्टिक र दीपनी हुन्छ ।

मदिराविशेष (प्रसन्ना)

छर्द्यरोचकहृत्कुक्षितोदशूलप्रमर्दिनी ।
प्रसन्ना गुल्मवातार्शोविबन्धानाह्वाशिनी ॥२६३॥

प्रसन्नले वाकवाकी, अरुची, कोखाको दुखाई, शूल, गुल्म, वातविकार, हर्सा, कब्जियत र आनाह नाश गर्दछ । (सुराको मण्ड (माँड) लाई प्रसन्ना भनिन्छ ।)

जौको मदिराविशेष (यवसुरा)

पित्तलाऽल्पकफा रूक्षा यवैर्वातप्रकोपनी ।
विष्टम्भिनी सुरा ...।

सङ्कलन : मोहन प्रसाद सापकोटा

जौको सुरा पित्तविकार गर्ने, थोरै कफविकार गर्ने र वातविकारलाई विकृत एवं उत्तेजित बनाउने र कब्जियत गर्ने गुणको हुन्छ ।

मद्यविशेष (मधूलिका)

...गुर्वी श्लेष्मला तु मधूलिका ॥२६४॥

मधूलिका कफविकार गर्ने र पचाउन कठिन हुने गुणको हुन्छ । (सबै रसले बनाइएका मदिरालाई वैद्यजन मधुलक भन्दछन् ।)

मदिराविशेष (आक्षिकी सुरा)

रूक्षा नातिकफा वृष्या पाचनी चाक्षुषी स्मृता ।

आक्षिकी धेरै कफविकार नगर्ने, वीर्यवर्धक, पाचनी र आँखाका लागि फाइदा गर्ने गुणको हुन्छ ।

(बरोको बोक्रा र मासी (शालि) चामल मिसाएर बनाइने मदिरा । कसैकसैले तिनिशको मदिरालाई पनि आक्षिकी नाम दिएका छन् ।)

सीधु नामक मद्यका प्रकार (सीधुभेदा)

सीधुरामण्डवासः स्याच्छीतपक्वरसस्तथा ॥२६५॥

आमण्डवास, शीतरस र पक्वरस : यी सीधुका प्रकारहरू हुन् । (उखुको पकाएको रसबाट निकालिने अर्कलाई “सीधु” भनिन्छ) ।

मद्यविशेष (मधुकसीधु)

सीधुर्मधूकपुष्पोत्थो विदाह्यग्निबलप्रदः ।

रूक्षः कषायः कफहा वातपित्तप्रकोपणः ॥२६६॥

महुवाको फूलको सिधु डाह गर्ने, पाचनशक्ति बढाउने, बलदायक, रुखो, टर्रो, कफविकार नाश गर्ने तथा वातविकार र पित्तविकार बढाउने गुणको हुन्छ ।

मदिराविशेष (रसासव)

बल्यः पित्तहरो वर्ण्यो मृद्वीप्लेक्षुरसासवः ।

अङ्गुर र उखुको रसले बनाइएको रसासव बलदायक, पित्तविकार नाश गर्ने र वर्णमा निखार लेराउने गुणको हुन्छ ।

मद्यविशेष (कोहल)

त्रिदोषो भेद्यवृष्यश्च कोहलो वदनप्रियः ॥२६७॥

कोहल त्रिदोष बढाउने, भेदनी, वीर्यवर्धक र मुखलाई मनपर्ने गुणको हुन्छ ।

मदिराविशेष (जगल)

ग्राह्युष्णो जगलः पक्ता रूक्षस्तृट्कफशोफकृत् ।
हृद्यः प्रवाहिकाटोपदुर्मानिलशोषजित् ॥२६८॥

जगल ग्राही, उष्णवीर्यको, पाचक, रुखो तथा तिर्खा, कफविकार र सुजन गर्ने गुणको हुन्छ । यो मुटुका लागि हितकर तथा प्रवाहिका, आटोप, हर्सा, वातविकार र सुकेनासलाई जित्ने गुणको हुन्छ । (तल्लोस्तरको मदिरालाई जङ्ग(ग)ल (रक्सी) भनिन्छ ।)

मदिराविशेष (बक्कस)

वक्कसोद्भवसारत्वाद्विष्टम्भी कफकोपनः ।

सारबाट बनाइने हुँदा वक्कस (?) कब्जियत गर्ने र कफविकार बढाउने गुणको हुन्छ । जङ्ग(ग)लको साररूपलाई पक्कश (बक्कश ?) भनिन्छ ।

सङ्कलन : मोहन प्रसाद सापकोटा
मदिराविशेष (माद्रीकम्)

मधु मद्योत्तमं हृद्यं माद्रीकं कथितं तथा ॥२६९॥
सरमभिषवक्रान्तं कामिकान्तं मदोत्कटम् ।
माद्रीकं लेखनं हृद्यं नात्युष्णं मधुरं सरम् ॥२७०॥
अल्पपित्तानिलं पाण्डु मेहार्शः कृमिनाशनम् ।

मधु, मद्योत्तम, हृद्य, माद्रीक, सर, अभिषवक्रान्त, कामिकान्त र मदोत्कट : यी माद्रीकका पर्यायवाची नामहरू हुन् । यो लेखनी, मुटुका लागि हितकर, थोरै उष्णवीर्यको, गुलियो, मलमूत्रलाई तलतिर सार्ने, धेरै पित्तविकार र वातविकार गर्ने तथा पाण्डु, प्रमेह, हर्सा र कीरा नाश गर्ने गुणको हुन्छ । (फूलको रस आदि हालेर बनाइने मदिरालाई माध्वी (?) भनिन्छ ।)

मदिराविशेष (खार्जूर)

तस्मादल्पान्तरगुणं खार्जूरं वातलं गुरु ॥२७१॥

दीपनं सृष्टविण्मूत्रं विशदोल्पमदे गुरुः ।

खार्जूर माद्वीकभन्दा अलि कम गुणस्तरको हुन्छ । यो वातविकार गर्ने, पचाउन कठिन, दीपनी, दिसापिसाब बढाउने, सुन्दर, कम नसालु र पचाउन कठिन हुन्छ ।

मदिराविशेष (गौडसीधु, शार्करासीधु)

कषायो मधुरः सीधुर्गौडः पाचनदीपनः ॥२७२॥

गौड-सीधु टर्रो, गुलियो, पाचनी र दीपनी हुन्छ ।

मदिरासविशेष (शार्करसिधु)

शार्करो मधुरो रुच्यो दीपनो वस्तिशोधनः ।

वातघ्नो मधुरः पाके हृद्य इन्द्रियबोधनः ॥२७३॥

शार्करसिधु गुलियो, रुचिप्रद, दीपनी, मूत्राशय प्रशोधक, वातविकार नाशक, पचेपछि गुलियो, मुटुका लागि हितकर र इन्द्रियलाई जागरुक पार्ने गुणको हुन्छ ।

मदिराविशेष (शीतरसिक)

कर्षणः शीतरसकः श्वयथूदरनाशनः ।

वर्णकृञ्जरणः स्वर्यो विबन्धघ्नोऽर्शसां हितः ॥२७४॥

शीतरसक (नपकाएर बनाएको उखुको रसको रक्सी) कर्षक, सुजन र पेटका रोग नाश गर्ने, वर्णमा निखार लेराउने, पाचक, स्वरका लागि लाभदायक, कब्जियत नाश गर्ने तथा हर्षामा हितगर्ने गुणको हुन्छ ।

मध्वासव

छेदी मध्वासवस्तीक्ष्णो मेदःपीनसकासजित् ।

मध्वासव छेदनी, तिक्खर तथा बोसोविकार, पिनास र खोकी नाश गर्ने गुणको हुन्छ ।

मदिराविशेष (शर्करासव)

शार्करः सुरभिः सौम्यो माधवो रूक्षणात्मकः ॥२७५॥
आसवो मुखवासश्च सुकुमारः सुयोजितः ।

शर्करासव सुन्दर र कोमल हुन्छ भने माधव रुखो हुन्छ । राम्ररी तयार पारिएका यी दुवै (मध्वासव र शर्करासव) आसव मुखलाई प्रिय र कोमल हुन्छन् ।

मदिराविशेष (सुरासव)

सुरासवस्तीक्ष्णमदः स्वादुस्तृष्णानिलापहः ॥२७६॥

सुरासव तिक्खर नसा दिने, स्वादिलो तथा तिर्खा र वातविकार नाश गर्ने गुणको हुन्छ ।

सङ्कलन : मदिराविशेष (मैरेय) सापकोटा

तीक्ष्णः कषायो मदकृद्दुर्नामकफगुल्महृत् ।
कृमिमेदनिलहरो मैरेयो मधुरो गुरुः ॥२७७॥

मैरेय टर्रो, नसा दिने तथा हर्सा, कफविकार, गुल्म, कीरा, बोसोविकार र वातविकार नाश गर्ने एवं गुलियो र पचाउन कठिन हुने गुणको हुन्छ ।

मदिराविशेष (आक्षिकसीधु)

आक्षिकः पाण्डुरोगघ्नो व्रण्यः सङ्गाहको लघुः ।
कषायो मधुरः सीधुः पित्तघ्नोऽसृक्प्रसादनः ॥२७८॥

आक्षिक सिधु पाण्डु नाश गर्ने, खटिरामा अहितकर, ग्राही, पचाउन सहज, टर्रो, गुलियो, पित्तविकार नाश गर्ने तथा रगतलाई प्रशोधन गर्ने गुणको हुन्छ ।

मदिराविशेष (जाम्बवसीधु)

जाम्बवो बद्धनिष्यन्दस्तुवरो वातकोपनः ।
निर्दिशेद्रसतश्चान्यान्कन्दमूलफलासवान् ॥२७९॥

जाम्बव सिधु बद्धनिष्यन्द (ग्रन्थी खुकुल्याउने ?), टर्रो र वातविकार गर्ने गुणको हुन्छ । अन्य कन्दमूल, फल आदिका आसवको रस हेरी गुण थाहा पाउनु ।

मदिराविशेष (अरिष्ट)

अरिष्टो द्रव्यसंयोगात्संस्कारादधिको गुणैः ।
बहुदोषहरश्चैव दोषाणां शमनश्च सः ॥२८०॥
दीपनः कफवातघ्नः सरः पित्तविरोधनः ।
शूलाध्मानोदारप्लीहज्वराजीर्णांशं हितः ॥२८१॥
पिप्पल्यादिकृतो गुल्मकफरोगहरः स्मृतः ।
चिकित्सितेषु वक्ष्यन्तेऽरिष्टा रोगहराः स्मृताः ॥२८२॥
अरिष्टासर्वसीधूनां गुणान्कर्माणि चाऽऽदिशेत् ।
बुद्ध्या यथास्वं संस्कारमवेक्ष्य कुशलो भिषक् ॥२८३॥

ओखतीहरूको सम्मिश्रण र यसलाई बनाउने विधिले गर्दा अरिष्टमा बढी गुण हुन्छ । यसले धेरै किसिमका दोषहरू नाश गर्दछ अथवा शान्त पार्दछ । यो दीपनी, कफविकार र वातविकार नाशक, मलमूत्रलाई तलतिर सार्ने तथा पित्तको अविरोधी हुन्छ । यो शूल, आध्मान, पेटका रोग, फियोका रोग, जरो, अजीर्ण र अल्काईमा हितकारी हुन्छ । पिप्पला आदि हालेर बनाइएको अरिष्टले गुल्म र कफविकार नाश गर्दछ भनिएको छ । अरिष्टका थप कुरा चिकित्साखण्डमा बताइने छ । हालिने ओखतीका गुण अनुसार अरिष्टको गुण हुन्छ भन्ने बारेमा कुशल वैद्यले थाहा पाउनु पर्दछ ।

नयाँ र पुरानो मद्यको गुण (नव, जीर्णमद्यगुण)

नवं मद्यमभिष्यन्दि गुरु वातादिकोपनम् ।
अनिष्टगन्धं विरसमहृद्यमविदाहि च ॥२८४॥
सुगन्धि दीपनं हृद्यं रुचिष्णु कृमिनाशनम् ।

स्फुटस्रोतस्करं जीर्णं लघु वातकफापहम् ॥२८५॥

नयाँ मद्य अभिष्यन्दि, पचाउन कठिन र वात आदि विकार निकाल्ने गुणको हुन्छ । यो दुर्गन्ध आउने, नमिठो स्वादको, मुटुका लागि अहितकर र डाह नगर्ने गुणको हुन्छ । पुरानो मद्य सुगन्धि, दीपनी, मुटुका लागि हितकर, रुचिप्रद, उष्णवीर्यको, कीरा नाश गर्ने, शरीरका स्रोतलाई खुलाउने, पचाउन सहज तथा वातविकार र कफविकार नाश गर्ने गुणको हुन्छ ।

खान नहुने मद्य (वर्ज्यमद्य)

सान्द्रं विदाहि दुर्गन्धं विरसं कृमिलं गुरु ।
अहृद्यं तरुणं तीक्ष्णमुष्णं दुर्भाजनस्थितम् ॥२८६॥
अल्पौषधं पर्युषितमत्यच्छं पिच्छिलं च यत् ।
तद्वर्ज्यं सर्वदा मद्यं किञ्चिच्छेषं तु यद्भवेत् ॥२८७॥

बाक्लो (वा लेस्याइलो), डाह गर्ने, गनाउने, स्वादहीन, कीरापरेको, पचाउन कठिन, मुटुलाई हानी गर्ने, भर्खर बनाएको, तिक्खर स्वादको, उष्णवीर्यको, खराब भाँडामा राखिएको, थोरै ओखती हालेर बनाइएको, धेरै बासी, धेरै सफा, लस्सादार र केही भाग मात्र बाँकी मद्य कहिल्यै नपिउनु ।

तत्र यत्स्तोकसम्भारस्तरुणं पिच्छिलं गुरु ।
कफप्रकोपि तन्मद्यं दुर्जरं च विशेषतः ॥२८८॥
पित्तप्रकोपि बहलं तीक्ष्णमुष्णं विदाहि च ।
अहृद्यं फेनिलं पूति कृमिलं विरसं गुरु ॥२८९॥
तथा पर्युषितं चापि विद्यादनिलकोपनम् ।
सर्वे दोषैरुपेतं तु सर्वदोषप्रकोपनम् ॥२९०॥

कम पदार्थ मिसाएर बनाइएको, भर्खर बनाइएको, लेस्याइलो, पचाउन कठिन र विशेषगरी ढिलो पच्ने मद्यले कफविकार गर्दछ । अति धेरै बनाइएको, तिक्खर, तातो र डाह गर्ने मद्यले पित्तविकार गर्दछ । मननपर्ने वा मुटुका लागि अहितकर, फिँज आउने, गनाउने, कीरा परेको, स्वाद नभएको, पचाउन कठिन हुने र धेरै बासी मद्यले वातविकार गर्दछ । सबै दोष भएको मद्यले सबै खालका विकार गर्दछ ।

मदिरा र नसा

तस्यानेकप्रकारस्य मद्यस्य रसवीर्यतः ।
सौक्ष्म्यादौष्ण्याच्च तैक्ष्ण्याच्च विकासित्वाच्च वह्निना ॥२९१॥
समेत्य हृदयं प्राप्य धमनीरूर्ध्वमागतम् ।
विक्षोभ्येन्द्रियचेतांसि वीर्यं मदयतेऽचिरात् ॥२९२॥

अनेक थरी मदिरा यसमा हुने रस, वीर्य, सूक्ष्मता, उष्णवीर्य, तिक्खरता, विकासी र अग्निगुण समेत लिई मुटुमा पुगेर त्यसपछि धमनी हुँदै शरीरमा फैलन्छ अनि यसको आफ्नो गुणले इन्द्रियलाई चञ्चल बनाएर लामो समयसम्म नसा दिने गर्दछ ।

मानिसको प्रकृति अनुसार मद्यले दिने नसा

चिरेण श्लैष्मिके पुंसि पानतो जायते मदः ।
अचिराद्वातिके दृष्टः पैत्तिके शीघ्रमेव तु ॥२९३॥

सङ्कलन : मोहन प्रसाद सापकोटा
कफप्रकृतिका मानिसलाई पिएको मद्यको नसा ढिला लाग्दछ । वातप्रकृतिका मानिसलाई ठिकै समयमा र पित्तप्रकृतिका मानिसलाई पिउनासाथ नसा लाग्दछ ।

सात्विके शौचदाक्षिण्यहर्षमण्डनलालसः ।
गीताध्ययनसौभाग्यसुरतोत्साहकृन्मदः ॥२९४॥

मद्यले सात्विक स्वभावका मानिसलाई शौच, प्रतिभा, खुसी, सजावट, गायन, अध्ययन, वस्त्र र आभूषणतिर सौखिन बनाउँदै नसा लगाउँदछ ।

राजसे दुःखशीलत्वमात्मत्यागं ससाहसम् ।
कलहं सानुबन्धं तु करोति पुरुषे मदः ॥२९५॥

मद्यले राजसी स्वभावका मानिसलाई दुखी, आत्महत्यातिर उन्मुख, साहसिला कार्य गर्न हौस्याउने र झगडालु बनाउँदै नसा लगाउँदछ ।

अशौचनिद्रामात्सर्यागम्यगमनलोलुपाः ।
असत्यभाषणं चापि कुर्याद्धि तामसं मदः ॥२९६॥

मद्यले तामसी स्वभावका मानिसलाई शौचहीन, निद्रालु, ईर्ष्यालु, गमन गर्न नहुनेलाई गमन गर्ने चाहना र असत्य बोली बोल्न उक्साउँदै नसा लगाउने गर्दछ ।

सिखनी (मर्जिका)

मर्जिका शिखरिण्युक्ता रसाला सुरभिस्तथा ।
उल्वणी खाण्डवरसा चातुर्जातकसङ्गता ॥
मर्जिकाया गुणा ज्ञेया बीजद्रव्यगुणैः समा ॥२९७॥

मर्जिका, शिखरिणी, रसाला, सुरभि, उल्वणी, खाण्डवरसा र चातुर्जातकसङ्गता : यी सिखनीका पर्यायवाची नामहरू हुन् । केकुरा पदार्थ हालेर सिखनी बनाइन्छ सोही अनुसार सिखनीको गुण हुने गर्दछ ।

सङ्कलन : मोहन प्रसाद सापकोटा
पानी (जल)

पानीका पर्यायवाची नामहरू

पानीयमापः कीलालं नीरं कं सलिलं जलम् ।
अमृतं वारुणं तोयं वार्यम्भोऽम्बूदकं पयः ॥२९८॥

पानीय, आप, कीलाल, नीर, कं, सलिल, जल, अमृत, वारुण, तोय, वारि, अम्भ, अम्बु, उदक र पय : यी पानीका पर्यायवाची नामहरू हुन् ।

पानीका सामान्य गुणहरू

साधारणं जलं रुच्यं दीपनं पाचनं लघु ।
श्रमतृष्णापहं वातकफमेदोघ्नपुष्टिदम् ॥२९९॥
पानीयं मधुरं हिमं च रुचिदं तृष्णास्यशोषापहम् ।
मोहभ्रान्तिमपाकरोति कुरुते भुक्तान्नपक्तिं पराम् ॥३००॥

**निद्रालस्यनिरासनं विषहरं भ्रान्तार्तसन्तर्पणम् ।
नृणां धीबलवीर्यवृद्धिजननं नष्टाङ्गपुष्टिप्रदम् ॥३०१॥**

पानी सामान्यतः रुचिप्रद, दीपनी, पाचक, पचाउन सहज; थकाई, तिर्खा, वातविकार, कफविकार र बोसोविकार नाश गर्ने; पुष्टिदायक, गुलियो, शीतवीर्यको, रुचिदायक, तिर्खा र मुख सुकेको नाश गर्ने, मोह र रिंगटा नाश गर्ने, खाएको अन्न अति नै पचाउने; निद्रा र आलस्य नाश गर्ने, विषविकार नाश गर्ने, रिंगटा र बेहोसी हुन खोज्दा तृप्ति दिने; मानिसको बुद्धि, बल र वीर्य बढाउने तथा नष्ट भएका अङ्गलाई पुष्ट पार्ने गुणको हुन्छ ।

आकाशबाट परेको पानी

**गगनाम्बु त्रिदोषघ्नं गृहीतं यत्सुभाजने ।
बल्यं रसायनं मेध्यं पात्रापेक्षि ततः परम् ॥३०२॥**

शुद्ध र सफा उचित भाँडामा थापिएको आकाशबाट परेको पानीले त्रिदोष नाश गर्दछ । यो बलदायक, रसायनी र दिमागको ग्रहण गर्ने क्षमता बढाउने गुणको हुन्छ । यसपछि यो कस्तो भाँडामा राखिन्छ त्यस अनुसार गुनिलो वा दोषयुक्त हुने गर्दछ ।

बेमौसममा परेको पानी

**अनार्तवं विमुञ्चन्ति वारि वारिधरास्तु यत् ।
तत्त्रिदोषाय सर्वेषां देहिनां परिकीर्तितम् ॥३०३॥**

बेमौसममा आकाशबाट परेको पानीले शरीरधारी जीवलाई त्रिदोष गर्दछ भनिएको छ ।

**दिव्यवाय्वग्निसंयोगात्संहताः खात्पतन्ति याः ।
शिलाप्रकरबद्धास्ताः करका अमृतोपमाः ॥३०४॥**

आकाश, वायु र अग्निको संयोगबाट टाँसिएर (जमेर) पत्थरको समूह जस्तो बाँधिएको असिना पानी अमृततुल्य हुन्छ ।

अपि नद्याः समुद्रान्ते बहिरापस्तदुद्भवाः ।
धूमावयवनिर्मुक्तास्तुषाराख्यास्तु ताः स्मृताः ॥३०५॥
प्राक्समुद्राम्बुसम्पर्कसमीरणसमन्विताः ।

समुद्रमा पुगेका नदीहरुको पानीबाट उठी सतहमा जाने बाफ धुवाँ जस्तै भई त्यसबाट जमिनको सतहमा पर्ने पानीलाई तुषारो भनिन्छ । यो पूर्वीय समुद्र र पूर्वीय वायुबाट उत्पन्न हुने गर्दछ ।

हंसोदक नामक पानी

दिवा सूर्यशुसन्तप्तं निशि चन्द्रांशुशीतलम् ॥३०६॥
कालेन पक्वं निर्दोषमगस्त्युदय निर्विषम् ।
हंसोदकमिति ख्यातं शारदं शीतलं शुचि ॥३०७॥
स्नानपानावगाहेषु शस्यते तु यथाऽमृतम् ।

दिउस घामले तातेको र राती चन्द्रमाको किरणले चिसिएको, समयले पकाएर दोषहीन बनाएको एवं अगस्ति तारा उदाएर विषहीन बनाएको शरद ऋतुको सफा र शीतल पानीलाई “हंसोदक” भनिन्छ । यो पानी नुहाउन, पिउन र पौडी खेल्न अमृतसमान योग्य हुन्छ ।

चन्द्रकान्त जल

चन्द्रकान्तोद्भवं वारि पित्तघ्नं विमलं स्मृतम् ॥३०८॥

चन्द्रकान्त जल पित्तविकार नाश गर्ने तथा कञ्चन हुन्छ ।

नदीको पानी (नादेय)

नादेयं वातलं रूक्षं दीपनं लघु लेखनम् ।
तदभिष्यन्दि मधुरं सान्द्रं गुरु कफापहम् ॥३०९॥

नदीको पानी वातविकार गर्ने, रुखो, दीपनी, पचाउन सहज, लेखनी, अभिष्यन्दि, गुलियो, लेस्याइलो, भारी र कफविकार नाश गर्ने गुणको हुन्छ ।

प्राकृतिक तलाउको पानी (सारस)

तृष्णाघ्नं सारसं बल्यं कषायं मधुरं लघु ।

प्राकृतिक तलाउको पानी तिखा नाश गर्ने, बलदायक, टर्रो, गुलियो र पचाउन सहज हुने गुणको हुन्छ ।

पोखरीको पानी (ताडाग)

ताडागं वातलं स्वादु कषायं कटुपाकि ॥३१०॥

पोखरीको पानी वातविकार गर्ने, गुलियो, टर्रो र पचेपछि पिरो हुन्छ ।

वापीको पानी

वातश्लेष्महरं वाप्यं सक्षारं कटुपित्तनुत् ।

सङ्कलन : मोहन प्रसाद सापकोटा

वापीको पानी वातविकार कफविकार नाश गर्ने, केही क्षारयुक्त, पिरो र पित्तविकार नाश गर्ने गुणको हुन्छ ।

चौण्ड्य पानी

चौण्ड्यमग्निकरं रूक्षं मधुरं कफकृन्न च ॥३११॥

चौण्ड्य जल पाचनशक्ति बढाउने, रुखो, गुलियो र कफविकार नगर्ने गुणको हुन्छ ।

भर्नाको पानी (प्रस्रवण)

कफघ्नं दीपनं हृद्यं लघु प्रस्रवणोद्भवम् ।

भर्नाको पानी दीपनी, मुटुका लागि हितकर र पचाउन सहज हुने गुणको हुन्छ ।

कुवाको पानी (कौप)

सक्षारं पित्तलं कौपं श्लेष्मघ्नं लघु दीपनम् ॥३१२॥

कुवाको पानी क्षारयुक्त, पित्तविकार गर्ने, कफविकार नाश गर्ने, पचाउन सहज र दीपनी गुणको हुन्छ ।

औद्धिद पानी

मधुरं पित्तशमनमविदाह्यौद्धिदं स्मृतम् ।

औद्धिद जल गुलियो, पित्तविकार शान्त पार्ने र डाह नगराउने गुणको हुन्छ ।

खेतको पानी (कैदार)

कैदारं मधुरं पाके गुर्वभिष्यन्दि दोषलम् ॥३१३॥

सङ्कलन : मोहन प्रसाद सापकोटा

खेतको पानी पचेपछि गुलियो, पचाउन कठिन, अभिष्यन्दि र दोषकारक हुन्छ ।

साना खोपिल्टाको पानी (पाल्वल)

तद्वत्पाल्वलमुद्दिष्टं विशेषादोषलं तु तत् ।

साना खोपिल्टाको पानीको गुण कैदार जलको जस्तै हुन्छ । यो विशेषतः दोष निकाल्ने गुणको हुन्छ ।

समुद्रको पानी (सामुद्र)

सामुद्रमुदकं विसं लवणं सर्वदोषकृत् ॥३१४॥

समुद्रको पानी नुनिलो र सबै खालको दोष निकाल्ने गुणको हुन्छ ।

नदीको पानी विशेष

नद्यः पाषाणविच्छिन्न विक्षुन्याभिहतोदकाः ।
हिमवत्प्रभवाः पथ्याः पुण्या देवर्षिसेविताः ॥३१५॥

हिमालयबाट निस्केर ढुङ्गामा हिराउँदै, धक्का खाँदै आएको र सन्तहरूले सेवा गरिएको नदीको पानी पथ्य र पुण्यदायक हुन्छ ।

पारियात्रभवा याश्च विन्ध्यसह्यभवाश्च याः ।
शिरोहृद्गोगकुष्ठादिहेतुस्ताः श्लीपदस्य च ॥३१६॥

पारियात्र र विन्ध्य पर्वतबाट निस्केको नदीको पानीले टाउकाका रोग, मुटुका रोग, कुष्ठ, हात्तीपाइले रोग आदि रोग निकाल्दछ ।

पानी विशेष

सङ्कलन : मोहन प्रसाद सापकोटा
चन्द्रार्ककरसंस्पृष्टं वायुनाऽऽस्फालितं बहु ।
पर्वतोपरि यद्वारि समं पौरन्दरेण तु ॥३१७॥

पर्वततिरको त्यस्तो पानी जुन सूर्यको र चन्द्रमाको किरणपरेको हुन्छ र तिव्र हावाको वेगले हानेको हुन्छ त्यो आकाशबाट परेको पानी सरह हुन्छ ।

तस्यानुगुणमुद्दिष्टं शैल्यप्रस्रवणोद्भवम् ।
लेखनं दीपनं रूक्षं किञ्चिद्वातप्रकोपनम् ॥३१८॥

यसैबाट पहाडतिरका झर्नाको पानीका गुण पनि थाहा पाउनू । यो लेखनी, दीपनी, रुखो, र केही मात्रामा वातविकार गर्ने गुणको हुन्छ ।

आनूपजलको गुण (आनूपदेशजलगुण)

आनूपदेशजं वारि तत्सान्द्रं गुरु पिच्छिलम् ।

प्रमेहःश्लीपदच्छर्दिगलगण्डास्यशोषकृत् ॥३१९॥

आनूप जल चिल्लो, पचाउन कठिन, लेस्याइलो तथा प्रमेह, हात्तीपाइले रोग, वाकवाकी र गलगण्ड निकाल्ने एवं मुख सुकाउने गुणको हुन्छ ।

जाङ्गल र साधारण स्थानको पानी (जाङ्गल, साधारणदेशजलगुण)

विपर्ययं जाङ्गलं च समं साधारणं स्मृतम् ।

जाङ्गलको पानी आनूपदेशको भन्दा उल्टो गुणको हुन्छ । साधारण देशको पानी सामान्य गुणको हुन्छ ।

गुनिलो पानी

अगन्धमस्पष्टरसं सुशीतं तृड्विनाशनम् ॥३२०॥

अच्छं लघु च हृद्यं च तोयं गुणवदुच्यते ।

सङ्कलन : मोहन प्रसाद सापकोटा

नगनाउने, कुनै निश्चित स्वाद नभएको, शीतल, तिर्खा नाश गर्ने गुण भएको, सफा एवं पवित्र, पचाउन हलुका र मुटुका लागि हितकर वा मनमोहक पानीलाई गुनिलो पानी भनिन्छ ।

अहितकर पानी

पिच्छिलं कृमिलं क्लिन्नं पर्णशैवालकर्दमैः ॥३२१॥

विवर्णं विरसं सान्द्रं दुर्गन्धं न हितं जलम् ।

लेस्याइलो, कीरा परेको, पात-लेउ र हिलो भिजेको, रङ्ग बिग्रेको, स्वादहीन, बाक्लो र गनाउने पानी मानिसका लागि हितकर हुँदैन ।

हितकर पानी

दिवाऽर्ककिरणैर्जुष्टं निशायामिन्दुरश्मिभिः ॥३२२॥

अरूक्षमनभिष्यन्दि तत्तुल्यं गगनाम्बुना ।

दिउस घामले तातेको, रातमा चन्द्रमाको करिणले चिसो भएको, रुखोपन नभएको र अनभिष्यन्दि पानी आकाशको पानी समान हुन्छ ।

तताइएको पानी

कफमेदोऽनिलामघ्नं दीपनं वस्तिशोधनम् ॥३२३॥
कासश्वासज्वरहरं पथ्यमुष्णोदकं सदा ।

तताइएको पानीमा कफविकार, बोसोविकार, वातविकार र आमविकार नाश गर्ने; दीपनी, मूत्राशयलाई प्रशोधन गर्ने; खोकी, दम र जरो नाशगर्ने तथा जहिले पनि पथ्य हुने गुण हुन्छ ।

रातमा पिइने पानी

भिनत्ति श्लेष्मसङ्घातं मारुतं चापकर्षति ॥३२४॥
अजीर्णं जरयत्याशु पीतमुष्णोदकं निशि ।
संकलन : मोहन प्रसाद सापकोटा

रातमा पिइने तातोपानीमा कफ फुकाल्ने, वायुलाई तानेर यथास्थानमा राख्ने तथा नपचेका कुरा पचाउने गुण हुन्छ ।

तताएर सेलाएको पानी

मद्यपानसमुद्भूते रोगे पित्तोद्भवे तथा ॥३२५॥
सन्निपातसमुत्थे च शृतशीतं प्रशस्यते ।

मदिरा पिउनाका कारण हुने रोगमा, पित्तविकार हुने रोगमा र सन्निपातजन्य रोगमा तताएर सेलाएको पानी पिउनु हितकर हुन्छ ।

उमालेको पानी (क्वथितजलगुण)

सार्धं वाऽप्यर्धपादोनं पादहीनं तु हैमने ॥३२६॥
शिशिरे च वसन्ते च ग्रीष्मे चार्धावशेषितम् ।

हेमन्त ऋतुमा उमालेर आधा वा एक चौथाई घटेको तथा शिशिर, वसन्त र ग्रीष्म ऋतुमा उमालेर आधा भएको पानी पिउनु हितकर हुन्छ ।

विपरीतामृतं दृष्टा पादांशं चाष्टभागिकम् ॥३२७॥

यदि कुनै बेला ऋतुहरूको जस्तो लक्षण देखिनु पर्दथ्यो त्यस्तो लक्षण देखिएन भने त्यस बेलामा उमालेर एक चौथाई बाँकी भएको अथवा आठ भागको एक भाग बाँकी रहने गरी उमालिएको पानी पिउनु हितकर हुन्छ ।

**यत्क्वाथ्यमानं निर्वेदं निष्फेनं निर्मलं भवेत् ।
चतुर्भागावशेषन्तु तत्तोयं गुणवत् स्मृतम् ॥३२८॥**

पानी उमाल्दा फोका वा फिँज आउनु हुँदैन, सफा हुनुपर्दछ । यस्तो पानी उमालेर एक चौथाई बाँकी भएपछि पिउनु उत्तम हुन्छ भनिएको छ ।

**सङ्कलन : मोहन प्रसाद सापकोटा
तत्पादहीनं वातघ्नमर्धहीनं च पित्तजित् ।
कफघ्नं पादशेषं तु पानीयं लघु दीपनम् ॥३२९॥**

उमालेर एक चौथाई घटेको पानीले वातविकार, आधा घटेको पानीले पित्तविकार र तीन थौंथाई घटेको पानीले कफविकार नाश गर्दछ । यस्तो पानी पचाउन सहज र दीपनी हुन्छ ।

**धारापातेन विष्टम्भि दुर्जरं पवनाहतम् ।
शृतशीतं त्रिदोषघ्नं बाष्पान्तर्भावशीतलम् ॥३३०॥**

उमालेको पानी केहीमा धारा लाएर खन्याउँदै सेलाउने गरिए त्यसले कब्जियत गर्दछ । हावा हम्केर सेलाइए त्यो पचाउन कठिन हुन्छ । आफैं बाफ उडेर सेलाउन दिइएको पानीले त्रिदोष नाश गर्दछ ।

**दिवा शृतं तु यत्तोयं रात्रौ तद्गुरुतां ब्रजेत् ।
रात्रौ शृतं दिवा चैव गुरुत्वमधिगच्छति ॥३३१॥**

दिउस तताएको पानी रात परेपछि र राती तताएको पानी दिउस पचाउन कठिन हुने बन्दछ ।

चिसो पानी पिउन हुने अवस्था

मूर्च्छापित्तोष्णादाहेषु विषे रक्ते मदात्यये ।
भ्रमक्लमपरीतेषु तमके वमथौ तथा ॥३३२॥
हृद्रोगे रक्तपित्ते च शीतमम्भः प्रशस्यते ।

बेहोसी, पित्तविकार, गर्मी, डाह, विषविकार, रक्तविकार, मदात्यय, रिंगटा, बिना परिश्रमको थकाइ, तमक, वाकवाकी, मुटुका रोग र रक्तपित्त हुँदा चिसो पानी पिउनु हितकर हुन्छ ।

चिसो पानी पिउन नहुने अवस्था

पार्श्वशूले प्रतिश्याये वातरोगे गलग्रहे ॥३३३॥
आध्माने स्तिमिते कोष्ठे सद्यः शुद्धे नवज्वरे ।
हिक्कायां स्नेहपीते च शीतमम्बु परिवर्जयेत् ॥३३४॥

कोखाको शूल हुँदा, पिनासमा, वातका रोगमा, गलग्रहमा, आध्मानमा, स्तिमितमा, कोष्ठ रोगमा, ओखती खाएर भर्खर शरीर शुद्ध भएका बेलामा, नयाँ जरोमा, बाडुली लाग्दा र चिल्लो खाएका बेलामा चिसो पानी नपिउनु ।

पानी पिउने मात्रा

अरोचके प्रतिश्याये प्रसेके श्वयथौ क्षये ।
मन्दाग्नावुदरे कुष्ठे ज्वरे नेत्रामये तथा ॥३३५॥
व्रणे च मधुमेहे च पानीयं मन्दमाचरेत् ।

अरुची हुँदा, पिनास हुँदा, मुखबाट पानी र नाकबाट सिङ्गा बगिरहने रोग हुँदा, शरीर सुन्निएका बेलामा, क्षयरोग हुँदा, पाचनशक्ति कमजोर भएका बेलामा, पेटका रोग हुँदा, कुष्ठरोग हुँदा, जरा आइरहेका बेलामा, आँखाका रोग हुँदा, खटिरा आएको बेलामा र मधुमेहको रोग हुँदा अलि अलि गरेर पानी पिउनु (एकेपटक धेरै पानी नपिउनु) ।

पचाउन सहज र असहज पानी

नद्यः शीघ्रवहा लघ्व्यः प्रोक्ता याश्चामलोदकाः ॥३३६॥

गुर्व्यः शैवालसञ्छन्नाः कलुषा मन्दगाश्च याः ।

प्रायेण नद्यो मरुषु सतिक्ता लवणान्विताः ॥३३७॥

ईषत्कषायमधुरा लघुपाका बले हिताः ।

तिव्र वेग भएका र सफा पानी भएका नदीको पानी पचाउन सहज हुन्छ । लेउले ढाकेका र डिलो बहने नदीको पानी पचाउन कठिन हुन्छ । मरुभूमि हुँदै बहने नदीको पानी प्रायः तितो, नुनिलो, केही टर्रो, गुलियो, पचेपछि पचाउन सहज र बलदायक हुन्छ ।

पिउन नहुने पानी (वर्ज्यजल)

तृणपर्णोत्करयुक्तं कलुषं विषसंयुतम् ॥३३८॥

योऽवगाहेत वर्षासु पिबेद्वाऽपि नवं जलम् ।

स बाह्याभ्यान्तरान् रोगान् प्राप्नुयात्क्षिप्रमेव हि ॥३३९॥

जसले घाँसपात परिरहेको, यस्ता कुरा कुहिएर फोहोर भएको र विषाक्त भएको पानीमा पौडी खेलदछ वा त्यस्तो पानी पिउँदछ उसलाई तुरुन्त नै बाहिरी र भित्री रोगले समाउँदछ ।

पानी पिउने नियम

अजीर्णं भेषजं वारि जीर्णं वारि बलप्रदम् ।

अमृतं भोजने वारि भुक्तस्योपरि तद्विषम् ॥३४०॥

अजीर्णको रोगमा पानी पिउनु ओखती समान हुन्छ । खाना पचेको अवस्थामा पानी पिउनु बलदायक हुन्छ । खाना खाँदै गर्दा बीचबीचमा पानी पिउनु अमृत समान हुन्छ । तर खाना खाएपछि तुरुन्त पानी पिउनु विष पिउनु समान हुन्छ ।

पानी पिउने र खाना खाने नियम

तृषितो नैव भुञ्जीत क्षुधितो न जलं पिबेत् ।

तृषितस्य भवेद्दुल्मः क्षुधितस्य भगन्दरः ॥३४१॥

तिर्खाले हत्तु भएका बेलामा खाना नखानू । भोकले सताएका बेलामा पानी नपिउनु । यसरी पानी पिउनेलाई गानुगोला र खाना खानेलाई भगन्दर रोग लाग्न सक्दछ ।

खाना खाँदा पानी पिउने नियम

भुक्तस्याऽऽदौ जलं पीतमग्निसादं कृशाङ्गताम् ।
अन्ते करोति स्थूलत्वमूर्ध्वमामाशये कफम् ॥३४२॥
मध्ये मध्याङ्गतां सम्यग्धातूनां जरणं सुखम् ।

खाना खाने बेलामा शुरुमा पानी पिउनाले पेट भित्र रहेको पाचनशक्तिलाई कमजोर पार्दछ र शरीरलाई दुब्लो बनाउँदछ । खाना खाएपछि तुरुन्त पानी पिउँदा आमाशयमा कफ बढाउँदछ र मानिसलाई मोटो बनाउँदछ । खाना खाँदा बीचमा पिइने पानीले शरीरलाई मध्यम अवस्थामा राखिरहन्छ तथा शरीरका सबै धातुलाई सुखपूर्वक पचाउँदछ ।

पाँच किसिमका जमिनमा हुने पानी (पञ्चविध भौमजलगुण)

भूमिः पञ्चविधा ज्ञेया कृष्णा रक्ता सिता तथा ॥३४३॥
पीता नीला भवेच्चान्या गुणास्तासां प्रकीर्तिताः ।

कालो, रातो, सेतो, पहेँलो र नीलो गरी माटो पाँच किसिमको हुन्छ । यी माटोको स्वाद निम्न अनुसार हुन्छ :-

कृष्णा च मधुरा क्षारा कषाया पीतवर्णिनी ॥३४४॥
रक्ता सा च भवेत्तिक्ता मधुराम्ल्हा सिता तथा ।
नीला सकटुका ज्ञेया भूमिर्भागाज्जलं विदुः ॥३४५॥

कालो माटो गुलियो र क्षारयुक्त, पहेँलो टर्रो, रातो माटो तितो, सेतो माटो गुलियो र अमिलो तथा नीलो माटो पिरो हुन्छ । माटो स्वाद अनुसार त्यस्तो माटोमा हुने पानीको पनि स्वाद हुन्छ भनी जान्नु ।

सघनं मधुरं नीरं कृष्णभूमिप्रतिष्ठितम् ।
पीताश्रितं कषायं स्यात् रक्तायाः पित्तलं स्मृतम् ॥३४६॥
सिताया मधुराम्लं स्यान्नीलायाः कटुकं स्मृतम् ।
जलं पञ्चविधमेतद्भूमिभागेन लक्षयेत् ॥३४७॥

कालो जमिनमा हुने पानी बाक्लो र गुलियो हुन्छ । पहेँलो जमिनमा हुने पानी टर्रो हुन्छ । रातो जमिनमा हुने पानीले पित्तविकार गर्दछ । सेतो जमिनमा हुने पानी गुलियो र अमिलो हुन्छ । नीलो जमिनमा हुने पानी पिरो हुन्छ । जमिनमा हुने यी पाँच थरी पानीका बारेमा जान्नु ।

नरिवल-पानीको गुण (नारिकेलोदकगुण)

वृष्यं पिपासादाहघ्नं नारिकेलोदकं लघु ।
तदेव जीर्णं विष्टम्भि गुरु पित्तकरं स्मृतम् ॥३४८॥

नरिवलको पानी वीर्यवर्धक, तिर्खा र डाह नाश गर्ने तथा पचाउन सहज हुने गुणको हुन्छ । तर छिप्पिएको नरिवलको पानी कब्जियत गर्ने, पचाउन कठिन र पित्तविकार गर्ने गुणको हुन्छ ।

मानुष (मानिस)

मानुषः पुरुषो वाऽथ शतायुर्नर एव च ।
कान्तो मर्त्यः पुमान्वक्ता दीर्घपेशी च मानवः ॥३४९॥

मानुष, पुरुष, शतायु, नर, कान्त, मर्त्य, पुमान्, वक्ता, दीर्घपेशी र मानव : यी मानिसका पर्यायवाची नामहरू हुन् ।

मानिसको मासु र पिसाब

नरमांसमखाद्यं स्यान्मूत्रमालेपनं मतम् ।
नेत्ररोगहरं वृष्यं पाण्डुशोफविनाशनम् ॥३५०॥

मानिसको मासु खान योग्य हुँदैन । मानिसको पिसाब शरीरको बाहिरी भागमा दलन काम लाग्दछ ।
यो आँखाका रोग नाश गर्ने, वीर्यवर्धक तथा पाण्डु र सुजन नाश गर्ने गुणको हुन्छ ।

स्त्री

स्त्री योषिद्वनिता योषा वासिता वामलोचना ।
प्रतीपदर्शिनी श्यामा कान्ता नार्यङ्गनाऽबला ॥३५१॥
रामा च कामिनी भीरुः सुन्दरी कामुका तथा ।
महिला ललना गौरी प्रोक्ता सीमन्तिनीति च ॥३५२॥
प्रमदा युवती चैव सैकवासा प्रकीर्तिता ।

स्त्री, योषिद्, वनिता, योषा, वासिता, वामलोचना, प्रतीपदर्शिनी, श्यामा, कान्ता, नारी, अङ्गना, अबला,
रामा, कामिनी, भीरु, सुन्दरी, कामुका, महिला, ललना, गौरी, सीमन्तिनी, प्रमदा, युवती र एकवासा :
यी महिलाका पर्यायवाची नामहरू हुन् ।

शरीर

सङ्कलन : मोहन प्रसाद सापकोटा

शरीरं शकटं देहं पुरं कायं कलेवरम् ॥३५३॥
वपुश्चावयवस्थानमात्मा दशरथस्तथा ।

शरीर, शकट, देह, पुर, काय, कलेवर, वपु, अवयवस्थान, आत्मा र दशरथ : यी शरीरका पर्यायवाची
नाम हुन् ।

बचन वा बोली (वाचा)

वाचा सरस्वती वाणी वाग्गौरी वचनी तथा ॥३५४॥
गिरा च भारती चैव ब्राह्मी भाषा च गीरसा ।

वाचा, सरस्वती, वाणी, वाक्, गौरी, वचनी, गिरा, भारती, ब्राह्मी, भाषा, गी र रसा : यी बोलीका
पर्यायवाची नामहरू हुन् ।

हावा (वायु)

वायुः प्रभञ्जनः कर्ता मारुतः श्वसनोऽनिलः ॥३५५॥
समीरणो मातरिश्वा पवनश्च सदागतिः ।

वायु, प्रभञ्जन, कर्ता, मारुत, श्वसन, अनिल, समीरण, मातरिश्वा, पवन र सदागति : यी हावाका पर्यायवाची नामहरू हुन् ।

शरीरमा रहने वायु

प्राणोऽपान उदानश्च समानो व्यान एव च ॥३५६॥
कृकरो देवदत्तश्च नागः कूर्मो धनञ्जयः ।
तत्र रूक्षो लघुः शीतः खरः सूक्ष्मश्चलोऽनिलः ॥३५७॥

प्राण, अपान, उदान, समान, व्यान, कृकर, देवदत्त, नाग, कूर्म र धनञ्जय : यी शरीर भित्र हुने वायुका प्रकारहरू हुन् । रुखो, हलुका, चिसो, खस्रो, वा तिक्खर, सूक्ष्म र चल : यी वायुका गुणहरू हुन् ।

पित्त (पित्तम्)

पित्तं तेजोमयं तिक्तं शिखी वैश्वानरोऽनलः ।
ज्वरपक्ता तृषाकर्ता शोषं चैव प्रकीर्तितम् ॥३५८॥
पित्तं सस्नेहतीक्ष्णोष्णं लघु विस्रं सरं द्रवम् ।
आग्नेयमुष्णं विशदं सतीक्ष्णं सरं द्रवं विस्रतरं विदाहि ।
विनीलमम्लं कटुकं च पित्तं पक्वाशयामाशयमध्यवर्ति ॥३५९॥

पित्त, तेजोमय, तिक्त, शिखी, वैश्वानर, अनल, ज्वर, पक्ता, तृषाकर्ता र शोष : यी पित्तका पर्यायवाची नामहरू हुन् । पित्त केही चिल्लो, तिक्खर, उष्णवीर्यको, पचाउन सहज, मासुजस्तो गनाउने, मलमूत्रलाई तलतिर सार्ने र तरल पदार्थ हो । यो अग्निको गुण भएको, तातो, सफा, तिक्खर, मलमूत्रलाई तलतिर सार्ने, तरल, मासुजस्तो गनाउने, डाह गर्ने, हरियो, अमिलो र पिरो गुणको हुन्छ तथा पक्वाशय र आमाशयका बीचमा रहने गर्दछ ।

कफ (श्लेष्मा)

श्लेष्मा बलासः सततो बलवान्समकृतथा ।
सोमयोनिरनिर्वाणो सुनिद्राजनकः कफः ॥३६०॥
स्निग्धः शीतो गुरुर्मन्दः श्लक्ष्णो मृत्स्तः स्थिरः कफः ।
स्निग्धो मृदुर्मधुरपिच्छिलशीतसान्द्रः श्वेतो गुरुश्च लवणानुरसो विदाहात् ।
श्लेष्मा वसत्युरसि मूर्धनि सर्वसन्धिष्वामाशये वसति तत्र परं विशेषात् ॥३६१॥

श्लेष्मा, बलास, सतत, बलवान्, समकृत, सोमयोनि, अनिर्वाण, सुनिद्राजनक र कफ : यी कफका पर्यायवाची नामहरू हुन् । यो चिल्लो, चिसो वा शीतवीर्यको, पचाउन कठिन, मन्द, लेस्याइलो, नुनिलो र स्थिर गुणको हुन्छ । कफ चिल्लो, कोमल, गुलियो, लेस्याइलो, चिसो वा शीतवीर्यको, बाक्लो, सेतो, पचाउन कठिन र आंशिकरूमा पचेपछि पछिल्लो स्वाद नुनिलो हुने गुणको हुन्छ । शरीर भित्र छाती, टाउको, सबै जोर्नी र आमाशयमा विशेषरूपले बस्ने गर्दछ ।

मोह

त्रिदोषसम्भवो मोहः सङ्करो मिश्र एव च ।
सन्निपातो मतिभ्रंशः सन्न्यासो नष्टसञ्ज्ञकः ॥३६२॥

त्रिदोषसम्भव, मोह, सङ्कर, मिश्र, सन्निपात, मतिभ्रंश, सन्न्यास र नष्टसञ्ज्ञक : यी मोहका पर्यायवाची नामहरू हुन् ।

शरीरको प्रकृति (देहप्रकृति)

कृशो रूक्षोऽल्पकेशश्च चलचित्तोऽनवस्थितः ।
बहुवाग्व्योमगः स्वप्ने वातप्रकृतिकोऽधमः ॥३६३॥

दुब्लो, रुखो, कपाल कम हुने, चञ्चल मन हुने, स्थिर भएर बस्न नसक्ने, धेरै बोल्ने र सपनामा आकाशमा उडिरहेको देख्ने मानिसलाई वातप्रकृतिको अधम मानिस भनिन्छ ।

अकालपलितो गौरः प्रस्वेदी कोपनो बुधः ।

स्वप्ने च दीप्तिमत्प्रेक्षी पित्तलो मध्यमो नरः ॥३६४॥

उमेर नपुगदै कपाल फुल्ने, गोरो वर्णको, पसिना धेरै निस्कने, रिसाउने, बुद्धिमान् र सपनामा प्रकाशलाई बढी देख्ने खालको मानिसलाई पित्तप्रकृतिको मध्यम मानिस भनिन्छ ।

स्थिरचित्तः सुपुष्टाङ्ग सुप्रजः स्निग्धमूर्धजः ।
स्वप्ने जलाशयालोकी श्लेष्मप्रकृतिरुत्तमः ॥३६५॥

मन स्थिर हुने, शरीरका अङ्ग पुष्ट भएको, धेरै वा उत्तम सन्तान हुने, टाउको चिल्लो हुने र सपनामा जलाशय बढी देख्ने मानिसलाई कफप्रकृतिको उत्तम मानिस भनिन्छ ।

हाड (अस्थि)

अस्थि हृड्ढं बलकरं सन्धानं देहधारणम् ।
सकलं मांसलिप्तं च सर्वमेदःसमुद्भवम् ॥३६६॥

सङ्कलन : मोहन प्रसाद सापकोटा

अस्थि, हड्ढ, बलकर, सन्धान, देहधारण, सकल-मांसलिप्त र सर्वमेद-समुद्भव : यी हाडका पर्याय हुन् । (कतिपय टीकाकारले भने यो श्लोकको शाब्दिक अर्थ लगाएर हाडको काम र गुण बताएको पाइन्छ) ।

मासु (मांस)

आमिषं लोमनं मांसं रस्यं शोणितसम्भवम् ।
अङ्गजं पिशितं कीरं क्रव्यं राक्षसभोजनम् ॥३६७॥

आमिष, लोमन, मांस, रस्य, शोणितसम्भव, अङ्गज, पिशित, कीर, क्रव्य र राक्षसभोजन : यी मासुका पर्यायवाची नामहरू हुन् ।

बोसोका पर्यायवाची नाम (वसा)

वसा वसा पीतधरा मेदोमांससमुद्भवा ।
सर्वस्नेहप्रधाना च वसाऽस्थिजननी तथा ॥३६८॥

वसा, वसा, पीतधरा, मेद, मांससमुद्भवा, सर्वस्नेहप्रधाना, वसा र अस्थिजननी : यी बोसोका पर्यायवाची नामहरू हुन् ।

रगत (रक्त)

रक्तं तु शोणितं विस्रमसृग्लोहितमेव च ।
आग्नेयमामिषकरं प्राणदं रससम्भवम् ॥३६९॥
अशुद्धं रुधिरं चैव रक्तनाम प्रकीर्तितम् ।

रक्त, शोणित, विस्र, असृक्, लोहित, आग्नेय, आमिषकर, प्राणद, रससम्भव, अशुद्ध र रुधिर : यी रगतका पर्यायवाची नामहरू हुन् ।

वीर्य (शुक्र)

शुक्रं तेजो बलं पुंस्त्वं पौरुषं हर्षसम्भवम् ॥३७०॥
रेतो वीर्यं वृद्धिकरं शिरःस्थं सप्तधातुजम् ।

शुक्र, तेज, बल, पुंस्त्व, पौरुष, हर्षसम्भव, रेत, वीर्य, वृद्धिकर, शिरःस्थ र सप्तधातुज : यी वीर्यका पर्यायवाची नामहरू हुन् ।

मासी (मज्जा)

अस्थिसारस्तथा मज्जा बीजं तेजोऽस्थिसम्भवम् ॥३७१॥

अस्थिसार, मज्जा, बीज, तेज र अस्थिसम्भव : यी मासीका पर्यायवाची नामहरू हुन् ।

रस

रसः प्राणप्रदः पथ्य षड्रसो ह्यन्नसम्भवः ।
रक्तस्य धातुकर्ता च स च रक्तपिता स्मृतः ॥३७२॥

रस, प्राणप्रद, पथ्य, षड्रस, अन्नसम्भव, रक्तधातुकर्ता र रक्तपिता : यी रसका पर्यायवाची नामहरू हुन् ।

शरीरमा सात धातुको निर्माण (सप्तधातु)

रसाद्रक्तं ततो मांसं मांसान्मेदोऽस्थि मेदसः ।
अस्थ्नो मज्जा ततः शुक्रमिति तेषां जनिक्रमः ॥३७३॥

रसबाट रगत, रगतबाट मासु, मासुबाट बोसो, बोसोबाट हाड, हाडबाट मासी र मासीबाट शुक्र क्रमैले बन्दछ ।

जीववर्ग (प्राणीवर्ग)
हात्तीका पर्याय र मासुको गुण (हस्तिनामगुण)

हस्ती द्विपो गजो नाग इभोऽथ द्विरदः करी ।
वारणः कुञ्जरो दन्ती मातङ्गः षष्टिहायनः ॥३७४॥
कुम्भी स्तम्बेरमः पद्मी सिन्धुरश्च मतङ्गजः ।
करेणुः करिणी प्रोक्ता कलभः करिशावकः ॥३७५॥
हस्तिनी धेनुका ज्ञेया गजस्त्री गजगामिनी ।
हस्ती कफानिलौ हन्यादुष्णः पित्तास्रकोपनः ॥३७६॥

हस्ती, द्विप, गज, नाग, इभ, द्विरद, करी, वारण, कुञ्जर, दन्ती, मातङ्ग, षष्टिहायन, कुम्भी, स्तम्बेरम, पद्मी, सिन्धुर, मतङ्गज, करेणु र करिणी : यी हात्तीका; कलभ र करिशावक : यी छावाका तथा हस्तिनी, धेनुका, गजस्त्री र गजगामिनी : यी ढोईका पर्यायवाची नाम हुन् ।

घोडाका पर्याय र मासुको गुण (अश्वनामगुण)

घोटोऽश्वस्तुरगो वाजी हरिर्हसस्तुरङ्गमः ।
शालिहोत्रो जवी सप्तिस्तुरङ्गश्च ययुर्हयः ॥३७७॥
घोटिका वडवा वामी प्रसूकाऽश्वा च वाजिनी ।
आश्वं सलवणं स्निग्धं बल्यं च गुरु बृंहणम् ॥३७८॥

घोटकस्तु कटुः पाके दीपनः कफपित्तकृत् ।
वातहृदबृंहणो बल्यश्चक्षुष्यो मधुरो लघुः ॥३७९॥

घोट, अश्व, तुरग, वाजी, हरि, हंस, तुरङ्गम, शालिहोत्र, जवी, सप्ति, तुरङ्ग, ययु र घोटहय : यी घोडाका तथा घोटिका, वडवा, वामी, प्रसूका, अश्वा र वाजिनी : यी घोडीका पर्यायवाची नाम हुन् । घोडाको मासु नुनिलो, चिल्लो, बलदायक, पचाउन कठिन र पौष्टिक हुन्छ । घोडाको मासु पचेपछि पिरो, दीपनी, कफविकार र पित्तविकार गर्ने, वातविकार नाश गर्ने, पुष्टिदायक, बलदायक, आँखाका लागि हितकर, गुलियो र पचाउन सहज हुन्छ ।

उँटका पर्याय र मासुको गुण (उष्ट्रनामगुण)

उष्ट्रः क्रमेलको धूम्रः करभो दीर्घमार्गः ।
ग्रीवाङ्कुशः कुनासश्च दीर्घग्रीवोऽथ धूसरः ॥३८०॥
वक्रग्रीवो दीर्घजङ्घो धूम्रो दासेरको मयः ।
उष्ट्रमांसं लघु स्वादु चक्षुष्यमनिलापहम् ॥३८१॥
उष्णमर्शः प्रशमनं मेदः पित्तकफावहम् ।

उष्ट्र, क्रमेलक, धूम्र, करभ, दीर्घमार्ग, ग्रीवाङ्कुश, कुनास, दीर्घग्रीव, धूसर, वक्रग्रीव, दीर्घजङ्घ, धूम्र, दासेरक र मय : यी उँटका पर्यायवाची नाम हुन् । उँटको मासु पचाउन सहज, स्वादिलो, आँखाका लागि हितकर, वातविकार नाशक, उष्णवीर्यको, अल्काईलाई शान्त पार्ने तथा बोसो, पित्तविकार कफविकार नाशगर्ने गुणको हुन्छ ।

गधाको पर्याय र मासुको गुण (गर्दभ)

गर्दभः शङ्कुकर्णश्च बालेयो रासभः खरः ॥३८२॥
भारवाहो भूरिगमो धूसरो रेणुभूषितः ।
गार्दभं पित्तलं बल्यं बृंहणं कफपित्तकृत् ॥३८३॥
कटु पाके लघु श्रेष्ठं तस्माद्वन्यखरोद्भवम् ।

गर्दभ, शङ्कुकर्ण, बालेय, रासभ, खर, भारवाह, भूरिगम, धूसर र रेणुभूषित : यी गधाका पर्यायवाची नाम हुन् । गधाको मासु पित्तविकार गर्ने, बलदायक, पौष्टिक, कफविकार र पित्तविकार गर्ने, पचेपछि पिरो र पचाउन सहज हुन्छ । ग्रामीणभन्दा वनगधाको मासु श्रेष्ठ हुन्छ ।

खच्चडको पर्याय र मासुको गुण (अश्वतर)

तज्जो द्योगाम्यश्वतरः शीघ्रगो वेगपूजितः ॥३८४॥
बल्यमाश्वतरं मासं बृंहणं कफपित्तलम् ।

ती दुई (गधा र घोडी) को समागमबाट जन्मने जनावरलाई खच्चड भनिन्छ । अश्वतर, शीघ्रग र वेगपूजित : यी खच्चडका पर्यायवाची नाम हुन् । यसको मासु बलदायक, पौष्टिक तथा कफविकार र पित्तविकार गर्ने गुणको हुन्छ ।

बोकाको पर्याय र मासुको गुण (छाग)

छगलो बर्करश्छागस्तथा बस्तः पयस्वलः ॥३८५॥
अजो बूकडको मेध्यो लम्बकर्णः पशुस्तथा ।
बृंहणो रसवीर्यं च वातघ्नः कफपित्तलः ॥३८६॥
कषायो दीपनीयश्च योग्यः श्लेष्मन्तुशीतलः ।
छागमासं गुरु स्निग्धं लघु पक्वं त्रिदोषनुत् ॥३८७॥
अदाहि रुचिदं नातिशीतं पीनसनाशनम् ।
देहधातुसमानत्वादनभिष्यन्दि दीपनम् ॥३८८॥

छगल, बर्कर, छाग, बस्त, पयस्वल, अज, बूकडक, मेध्य, लम्बकर्ण र पशु : यी बोका-खसीका पर्यायवाची नाम हुन् । यिनको (बाखाको) मासु रस र वीर्य दुवैमा पौष्टिक, वातविकार नाशक, कफविकार र पित्तविकार गर्ने, टर्रो, दीपनी, कफमा हितकर र शीतवीर्यको हुन्छ । बोकाको मासु पचाउन कठिन, चिल्लो, पचेपछिको रस पचाउन सहज, डाह नगर्ने, रुचिप्रद, कम शीतवीर्यको, पिनास नाश गर्ने, शरीरका धातुलाई समन अवस्थामा राख्ने हुनाले अनभिष्यन्दि र दीपनी गुणको हुन्छ ।

भेडाको पर्यायवाची नाम र मासुको गुण (मेष)

भेडो मेषो हुडो मेण्ड्र उरभ्र उरणोऽविकः ।
अविः पशुस्तथैवेड एडकः पृष्ठशृङ्गकः ॥३८९॥
ऊर्णायू रोमशो वृष्णिर्मेदपुच्छस्तु बर्बुकः ।

भेड, मेष, हुड, मेण्ड, उरभ्र, उरण, अविक, अवि, पशु, एड, एडक, पृष्ठशृङ्गक, ऊर्णायू, रोमश, वृष्णि, मेदपुच्छ र बर्बुक : यी भेडाका पर्यायवाची नामहरू हुन् ।

भेडाको जात विशेष

औरभ्रं बृंहणं मांसं सर्वदोषकरं गुरु ॥३९०॥
मेषमांसं गुरु स्निग्धं बल्यं पित्तकफप्रदम् ।
मेषपुच्छामिषं वृष्यं कफपित्तकरं गुरु ॥३९१॥

औरभ्र भेडाको मासु पौष्टिक, सबै दोष गर्ने र पचाउन कठिन हुने गुणको हुन्छ । भेडाको मासे पचाउन कठिन, चिल्लो, बलदायक तथा पित्तविकार र कफविकार गर्ने गुणको हुन्छ । एडक जातका भेडाको पुच्छरतिरको मासु वीर्यवर्धक, कफविकार र पित्तविकार गर्ने तथा पचाउन कठिन हुने गुणको हुन्छ ।

ब्वौसो (वृक)

ईहामृगस्तु कोकः स्याद्वृको वत्सादनोऽविभुक् ।
सङ्कलन : मोहन प्रसाद सापकोटा

ईहामृग, कोक, वृक, वत्सादन र अविभुक् : यी ब्वौसोको पर्यायवाची नामहरू हुन् ।

बाघ (व्याघ्र)

व्याघ्रः पञ्चनखो द्वीपी शार्दूलोऽथ गुहाशयः ॥३९२॥
पुण्डरीकस्तीक्ष्णदंष्ट्रस्तपस्वी घोरदर्शनः ।

व्याघ्र, पञ्चनख, द्वीपी, शार्दूल, गुहाशय, पुण्डरीक, तीक्ष्णदंष्ट्र, तपस्वी र घोरदर्शन : यी बाघका पर्यायवाची नामहरू हुन् ।

द्वीपी स्निग्धो भवेच्चोष्णो मधुरो लघुदीपनः ॥३९३॥
वातघ्नः पित्तशमनो बल्यो वृष्यो रुचिप्रदः ।

बाघको मासु चिल्लो, उष्णवीर्यको, गुलियो, पचाउन सहज, दीपनी, वातविकार नाश गर्ने, पित्तविकार शान्त पार्ने, बलदायक, वीर्यवर्धक र रुचिप्रद गुणको हुन्छ ।

चितुवा (शरभ)

शरभश्चित्रकायः स्यादुपव्याघ्रो मृगान्तकः ॥३९४॥
शूरश्च क्षुद्रशार्दूलश्चित्रव्याघ्र इतीरितः ।

शरभ, चित्रकाय, उपव्याघ्र, मृगान्तक, शूर, क्षुद्रशार्दूल र चित्रव्याघ्र : यी चितुवाका पर्यायवाची नामहरू हुन् ।

सिंह

सिंहः पञ्चमुखो दृप्तः क्रव्यात्पञ्चाननो हरिः ॥३९५॥
केसरी मृगराजश्च विक्रान्तः श्वेतपिङ्गलः ।

सिंह, पञ्चमुख, दृप्त, क्रव्यात्, पञ्चानन, हरि, केसरी, मृगराज, विक्रान्त र श्वेतपिङ्गल : यी सिंहका पर्यायवाची नामहरू हुन् ।

सङ्कलन : मोहन प्रसाद सापकोटा

बनेल, सुँगुर (वराह)

सूकरो वज्रदंष्ट्रश्च वराहो रोमशः किरिः ॥३९६॥
दंष्ट्री दन्तायुधः क्रोडः पीनस्कन्धो बहुप्रजः ।

सूकर, वज्रदंष्ट्र, वराह, रोमश, किरि, दंष्ट्री, दन्तायुध, क्रोड, पीनस्कन्ध र बहुप्रज : यी बनेल वा सुँगुरका पर्यायवाची नाम हुन् ।

स्नेहनं बृंहणं वृष्यमामघ्नमनिलापहम् ॥३९७॥
वाराहं स्वेदनं बल्यं रोचनं श्रमनुद्गुरु ।

बनेलको मासु चिल्लो, पौष्टिक, वीर्यवर्धक तथा आमविकार र वातविकार नाश गर्ने गुणको हुन्छ । यो मासु पसिना निकाल्ने, बलदायक, रुचिप्रद, थकाई नाश गर्ने र पचाउन कठिन हुने गुणको हुन्छ ।

ग्रामसूकरजं विस्रं पित्तलं बलकृद्गुरु ॥३९८॥

सुँगुरको मासु गनाउने, पित्तविकार गर्ने, बलदायक र पचाउन कठिन हुने गुणको हुन्छ ।

मृग

मृगोऽथ हरिणो न्यङ्कुः सारङ्गः पृषतो रुरुः ।
एणः श्यामलपृष्ठश्च कुरङ्गश्चारुलोचनः ॥३९९॥
एणमांसं हिमं रुच्यं ग्राहि दोषत्रयापहम् ।
षड्रसं बलदं पथ्यं लघु हृद्यं कफास्रजित् ॥४००॥

हरिण, न्यङ्कु, सारङ्ग, पृषत र रुरु : यी मृगका जात हुन् । एण मृगको ढाड कालो हुन्छ । कुरङ्गमृगका आँखा सुन्दर हुन्छन् । एण मृगको मासु शीतवीर्यको, रुचिप्रद, ग्राहि, त्रिदोष नाशक, छ रसले युक्त, बलदायक, पथ्य, पचाउन सहज, मुटुका लागि हितकर तथा कफविकार र रक्तविकारलाई जित्ने गुणको हुन्छ ।

राँगो (महिष)

सङ्कलन : मोहन प्रसाद सापकोटा

महिषः कासरः शृङ्गी श्यामः कृष्णो लुलायकः ।
विषाणी कलुषो दंशी पीनस्कन्धो रजस्वलः ॥४०१॥

महिष, कासर, शृङ्गी, श्याम, कृष्ण, लुलायक, विषाणी, कलुष, दंशी, पीनस्कन्ध र रजस्वल : यी राँगोका पर्यायवाची नामहरू हुन् ।

भैसी (महिषी)

महिषी मन्दगमना महाक्षीरा पयस्विनी ।
लुलायकान्ता कलुषा तुरङ्गद्वेषिणी च सा ॥४०२॥

महिषी, मन्दगमना, महाक्षीरा, पयस्विनी, लुलायकान्ता, कलुषा र तुरङ्गद्वेषिणी : यी भैसीका पर्यायवाची नामहरू हुन् ।

रौंगाभैसीको मासु

स्निग्धोष्णो महिषस्तिक्तो निद्राशुक्रबलप्रदः ।
मधुरस्तर्पणो वृष्यो गुरुर्मांसस्य दाढ्यकृत् ॥४०३॥

रौंगाभैसीको मासु चिल्लो, उष्णवीर्यको, तितो; निद्रा लगाउने, शुक्र बढाउने, बलदायक, गुलियो, तृप्तिदायक, वीर्यवर्धक, पचाउन कठिन र शरीरको मासुलाई बलियो बनाउने गुणको हुन्छ ।

अर्ना

तद्वदरण्यजो ज्ञेयो विशेषाच्छोणिते हितः ।

जङ्गली रौंगाभैसी (अर्ना) को मासुमा पनि यिनै गुण हुन्छन् । विशेषगरी रक्तविकारमा यो मासु हितकर हुन्छ ।

साँढे (बलीवर्द)

सङ्कलन : मोहन प्रसाद सापकोटा

बलीवर्दो दान्त उग्रो गोरक्षो धूर्वहः स्थिरः ॥४०४॥
अनड्वान्वृषभो दम्यः ककुद्भान्वृषभो वृषः ।

बलीवर्द, दान्त, उग्र, गोरक्षा, धूर्वह, स्थिर, अनड्वान्, वृषभ, दम्यः ककुद्भान्, वृषभ र वृष : यी साँढेका पर्यायवाची नामहरू हुन् ।

गौ (गाईका पर्याय र मासुको गुण)

गौः शृङ्गिणी सौरभेयी दोग्ध्री धेनुः पयस्विनी ॥४०५॥
गोमांसं तु गुरु स्निग्धं पित्तश्लेष्मविवर्धनम् ।
बृंहणं वातहृद्बल्यमपथ्यं पीनसप्रणुत् ॥४०६॥
काश्याल्पाग्निसमुच्छेदि गव्यं गुरु च वातनुत् ।
कीर्तितं नात्यभिष्यन्दि मांसं प्रायुस्तु जाङ्गलम् ॥४०७॥

गौ, शृङ्गिणी, सौरभेयी, दोग्ध्री, धेनु र पयस्विनी : यी गाईका पर्यायवाची नाम हुन् ।

गोमांस पचाउन कठिन, चिल्लो, पित्तविकार र कफविकार बढाउने, पौष्टिक, वातविकार नाश गर्ने, बलदायक, अपथ्य, पिनास नाश गर्ने तथा दुब्लोपन र कमजोर पाचन शक्तिलाई छेदन गर्ने गुणको हुन्छ । यो पचाउन कठिन र वातविकार नाशक हुन्छ । जङ्गली गाईको मासु प्रायः कम अभिष्यन्दि हुन्छ ।

माछा (मत्स्य)

मत्स्यो मीनोऽथ शकुनी कण्ठी माङ्गल्यदर्शनः ।
रोहितः कण्ठकालश्च पाठीनः शकुलस्तथा ॥४०८॥

मत्स्य, मीन, शकुनी, कण्ठी, माङ्गल्यदर्शन, रोहित, कण्ठकाल, पाठीन र शकुल : यी माछाका पर्यायवाची नामहरू हुन् ।

कफपित्तकरा मत्स्या बल्याः शक्तिविवर्धनाः ।
व्यायामिनां च दीप्ताग्नेर्व्यवायिनां च पूजिताः ॥४०९॥
कषायानुरसाः स्वादुवातघ्नाः नाति पित्तदाः ।

माछाको मासु कफविकार र पित्तविकार गर्ने, बलदायक, शक्ति बढाउने, कसरत गर्ने र पाचनशक्ति बलियो तथा सहवासप्रिय मानिसका लागि हितकर, पछिल्लो रस टर्ने हुने, गुलियो, वातविकार नाश गर्ने र धेरै पित्तविकार पनि नगर्ने गुण हुन्छ ।

रोहितः सर्वमत्स्यानां वरो वृष्योऽर्धवातजित् ॥४१०॥
कषायो मधुरो रूक्षो विशदो रोचनो लघुः ।

रोहित माछा सबै माछामा उत्तम हुन्छ । यो वीर्यवर्धक, अर्धवातलाई जित्ने, टर्ने, गुलियो, रुखो, सुन्दर, रुचिप्रद र पचाउन सहज हुने गुणको हुन्छ ।

ग्राही तु नन्दिकावर्तस्तस्यानु शकलः स्मृतः ॥४११॥
रणजित् शतशङ्खश्च गोमत्स्योऽलिस्त्रिकण्टकः ।
कण्टकैः स तु विज्ञेयो मृक्ष्यमाणः सुनिर्विषः ॥४१२॥

नन्दिकावर्त माछाको मासुले कब्जियत गर्दछ । शकल, रणजित, शतशङ्ख, गोमत्स्य, अलि र त्रिकण्टक माछाको काँडा हुन्छ र पटकपटक पखाल्नाले विषहीन हुन्छ ।

शृङ्गी तु वातशमनी तथा श्लेष्मप्रकोपणी ।
विपाके मधुरो वृष्यो मुद्गरो वातहा गुरुः ॥४१३॥

सिङ्गे माछाले वातविकार शान्त पार्दछ तथा कफविकार बढाउँदछ । मुद्गर माछा पचेपछि गुलियो, वीर्यवर्धक, वातविकार नाश गर्ने र पचाउन कठिन हुने गुणको हुन्छ ।

अलिमत्स्यो गुरुः स्निग्धः कषायो रूक्ष एव च ।

अलिमत्स्य पचाउन कठिन, चिल्लो, टर्रो र रुखो हुन्छ ।

मुखमत्स्यो गुरुः स्निग्धः श्लेष्मलो वातनाशनः ॥४१४॥

मुखमत्स्य पचाउन कठिन, चिल्लो, कफविकार गर्ने र वातविकार नाश गर्ने गुणको हुन्छ ।

इरसो मधुरः स्निग्धः पित्तश्लेष्मातिकोपनः ।

इरस माछा गुलियो, चिल्लो तथा पित्तविकार र कफविकार अति बढाउने गुणको हुन्छ ।

पुलङ्गः स्निग्धमधुरो गुरुर्विष्टम्भिशीतलः ॥४१५॥

पुलङ्ग माछा चिल्लो, गुलियो, पचाउन कठिन, कब्जियत गर्ने र शीतवीर्यको हुन्छ ।

लघवः क्षुद्रमत्स्यातु ग्राहिणो ग्रहणीहिताः ।

साना जातका माछाको मासु पचाउन सहज, ग्राही र ग्रहणी रोगमा हितकर हुन्छ ।

माछाका जात (मत्स्यभेद)

राजीवः शकुली शृङ्गी वागूरः शल्यचुल्लकौ ॥४१६॥
पाठीनः कुलिशश्चैव नद्यावर्तश्च रोहितः ।
मुद्गरस्तिमिराद्या तु ज्ञेयास्तद्भेदजातयः ॥४१७॥
तद्भेदो मकराख्योऽन्यो मातङ्गमकरोऽपरः ।
चिरलुश्च तिमिंश्चैव तथाऽन्यश्च तिमिङ्गिलः ॥४१८॥
तिमिङ्गिलगिलश्चेति महामत्स्या अमी मताः ।

राजीव, शकुली, शृङ्गी, वागूर, शल्य। चुल्लक, पाठीन, कुलिश, नद्यावर्त, रोहित, मुद्गर र तिमिर : यी माछाका जातहरू हुन् । अर्को जातको तिमिरलाई मकर, अर्कोलाई मातङ्गमकर, चिरलु र तिमि भनिन्छ । तिमिङ्गिल, तिमिङ्गिलगिल र महामत्स्या : यी अन्य माछाका जातहरू हुन् ।

रहुमाछा (रोहितमत्स्य)

रक्तोऽपरो रक्तमुखो रोहिषो मत्स्यपुङ्गवः ॥४१९॥

रातो मुख हुने रोहित माछा माछामध्येमा उत्तम माछा हो ।

पाठीन माछा

सहस्रदंष्ट्रः पाठीनः कृष्णवर्णो महाशिराः ।

हजारौं दाँत हुने, कालो रङ्को र ठूलो टाउको हुने माछालाई पाठीन भनिन्छ ।

शफरी माछा

शफरी क्षुद्रमत्स्यः स्यात् प्रोष्ठी तु क्षुद्रमत्सिका ॥४२०॥
जलमीनश्चिलिचिमो मीनः ख्यातः समुद्रजः ।

सफरी माछा सानो हुन्छ । प्रोष्ठी माछा धेरै सानो हुन्छ । समुद्रमा हुने जलमीन वा चिलिचिम माछा (धेरै सानो) हुन्छ ।

माछाका सामान्य गुण र कर्म

मत्स्या बलप्रदा वृष्या गुरवः कफपित्तलाः ॥४२१॥
उष्णाभिष्यन्दिनः स्निग्धा बृंहणाः पवनापहाः ।

माछाको मासु बलदायक, वीर्यवर्धक, पचाउन कठिन, कफविकार र पित्तविकार गर्ने, उष्णवीर्यको, अभिष्यन्दि, चिल्लो, पौष्टिक र वातविकार नाश गर्ने गुणको हुन्छ ।

नदी आदिका माछा (नादेयमत्स्या)

नादेया बृंहणा मत्स्या गुरवोऽनिलनाशनाः ॥४२२॥
कौपा वृष्या कफाष्ठीलामूत्रकृच्छ्रविबन्धदाः ।
ताडागा गुरवो वृष्याः शीतला बलमूत्रलाः ॥४२३॥
ताडागवन्निर्भरजा बलायुर्मतिदृक्कराः ।
सरोजा मधुराः स्निग्धा बल्या वातनिबर्हणाः ॥४२४॥
सामुद्रा गुरवो नातिपित्तला पवनापहाः ।
तत्रापि लवणाम्भोजाः ग्राहिणो दृष्टिनाशनाः ॥४२५॥
हृदोद्भवा बलकरा ये तु स्वच्छजलोद्भवाः ।

नदीमा हुने माछा पौष्टिक, पचाउन कठिन र वातविकार नाश गर्ने गुणको हुन्छ । इनार वा कुवाको माछा वीर्यवर्धक, कफविकार गर्ने, अण्डकोश बढाउने, मूत्रकृच्छ्र र कब्जियत गर्ने गुणको हुन्छ । ठूलो तलाउको माछा पचाउन कठिन, वीर्यवर्धक, शीतवीर्यको तथा बल र पिसाब बढाउने गुणको हुन्छ । भर्नाका माछामा तलाउको माछाकै गुण हुन्छ । यसले बल, आयु, बुद्धि र दृष्टिक्षमता बढाउँदछ । साना तलाउका माछा गुलियो, चिल्लो, बल बढाउने र वातविकार नाश गर्ने गुणको हुन्छ । समुद्रको माछा पचाउन कठिन, थोरै पित्तविकार गर्ने र वातविकार नाश गर्ने गुणको हुन्छ । समुद्रमा पनि नुनिलो पानीमा हुने माछा ग्राही र दृष्टि क्षमता नाश गर्ने गुणको हुन्छ । तालको सफा पानीमा हुने माछा बलदायक हुन्छ ।

गोही आदि

शिशुमारादृते तुल्यो मकरस्तु त्रिदंष्ट्रकः ॥४२६॥

शिशुमारो गुरुवृष्यः कफकृद्वातनाशनः ।
बृंहणो बलदः स्निग्धस्तद्वन्मकरमादिशेत् ॥४२७॥

शिशुमार, मकर र त्रिदंष्ट्रको गुण समान हुन्छ । शिशुमारको मासु पचाउन कठिन, वीर्यवर्धक, कफविकार गर्ने र वातविकार नाश गर्ने गुणको हुन्छ । यो मासु पौष्टिक, बलदायक र चिल्लो हुन्छ । मकरको मासुमा पनि यिनै गुण हुन्छन् ।

कछुवाका पर्याय र मासुको गुण (कच्छप)

कच्छपः कमठः कूर्मो गूढाङ्गो धरणीधरः ।
कच्छेष्टः पल्वलावासो वृत्तः कठिनपृष्ठकः ॥४२८॥
कच्छपोऽन्यो महामत्स्यः कूर्मराजः प्रतिष्ठितः ।
गुप्ताङ्गश्चित्रपृष्ठश्च धरणीधरणक्षमः ॥४२९॥
कच्छपो बलदः स्निग्धो वातघ्नः पुंस्त्वकारकः ।

कच्छप, कमठ, कूर्म, गूढाङ्ग, धरणीधर, कच्छेष्ट, पल्वलावास, वृत्त र कठिनपृष्ठक : यी कछुवाका तथा कच्छप, महामत्स्य, कूर्मराज, गुप्ताङ्ग, चित्रपृष्ठ र धरणीधरणक्षम : यी कछुवाविशेषका पर्यायवाची नाम हुन् । कछुवाको मासु बलदायक, चिल्लो, वातविकार नाश गर्ने तथा पुरुषत्व बढाउने गुणको हुन्छ ।

सानो मुसा (दीर्घतुण्डी, आमूषिका)

दीर्घतुण्डी नखी ज्ञेयाऽऽमूषिकाऽन्या छुछुन्दरी ॥४३०॥

दीर्घतुण्डी र नखी यी सानो मुसाविशेषका नाम हुन् । अर्को जातको सानो मुसालाई छुछुन्दरी भनिन्छ ।

मुसा (मूषक)

मूषकः खनकः पिङ्ग आखुरुन्दुरको नखी ।
मूषको मधुरः स्निग्धो व्यवायी शुक्रवर्धनः ॥४३१॥

मूषक, खनक, पिङ्ग, आखु, उन्दुरक र नखी : यी मुसाका पर्यायवाची नामहरू हुन् । मुसाको मासु चिल्लो, व्यवायी र वीर्यवर्धक हुन्छ ।

ठूलो मुसा (महामूषक, दीर्घतुण्डीविशेष)

अन्यो महामूषकः स्यान्मोषी विघ्नेशवाहनः ।
महाङ्गः सस्यमारी च भूफलो भित्तिपातनः ॥४३२॥

अभ ठूलो मुसा (महामूषक, मोषी, विघ्नेशवाहन) महाङ्ग, सस्यमारी, भूफल र भित्तिपातन : यी ठूलो जातको मुसाका पर्यायवाची नामहरू हुन् ।

बिरालो (बिडाल)

बिडालो मूषकद्वेषी वृषदंशो बिडालकः ।
शालावृकश्च मार्जारो मायावी दीप्तलोचनः ॥४३३॥

सङ्कलन : मोहन प्रसाद सापकोटा
बिडाल, मूषकद्वेषी, वृषदंश, बिडालक, शालावृक, मार्जार, मायावी र दीप्तलोचन : यी बिरालोका पर्यायवाची नामहरू हुन् ।

बिरालोविशेष (गन्धमार्जार)

लोमशोऽन्यो बिडालश्च पूतिकः पूतिकेशरः ।
सुगन्धिमूत्रपतनो गन्धमार्जारसञ्ज्ञकः ॥४३४॥
तृतीयः पिङ्गलश्चान्य उग्र उग्रबिडालकः ।
सुगन्धिमूत्रवृषणः कस्तूरीति निगद्यते ॥४३५॥

लोमश, बिडाल, पूतिक, पूतिकेशर, सुगन्धिमूत्रपतन र गन्धमार्जार : यी गन्धमार्जारका पर्यायवाची नाम हुन् । तेश्रो यस्तै कैलै बिरालो पनि हुन्छ । जसलाई पिङ्गल, उग्र, उग्रबिडालक, सुगन्धिमूत्रवृषण र कस्तूरी भनिन्छ ।

स्याल (शृगाल)

शृगालो जम्बुकः फेरूगोमायुः क्रोष्टुकः शिवः ।
भल्लूको मृगधूर्तश्च शालावृकश्च फेरवः ॥४३६॥

शृगाल, जम्बुक, फेरू, गोमायु, क्रोष्टुक, शिव, भल्लूक, मृगधूर्त, शालावृक र फेरव : यी स्यालका पर्यायवाची नामहरू हुन् ।

हुँडार (तरक्षु)

तरक्षुर्मृगभक्षश्च तरस्वी घोरदर्शनः ।

तरक्षु, मृगभक्ष, तरस्वी र घोरदर्शन : यी हुँडारका नाम हुन् ।

कुकुरका पर्याय (कुक्कुर)

कुक्कुरः सारमेयश्च भषकः श्वानकः शुनः ॥४३७॥
भूस्तरो वक्रलाङ्गुलो भल्लूको रात्रिजागरः ।

कुक्कुर, सारमेय, भषक, श्वानक, शुन, भूस्तर, वक्रलाङ्गुल, भल्लूक र रात्रिजागर : यी कुकुरका पर्यायवाची नाम हुन् ।

वानरका पर्याय र मासुको गुण (वानर)

मर्कटो वानरः कीशो हरिः शाखामृगः कपिः ॥४३८॥
प्लवङ्गमो वनौकाश्च प्लवङ्गः प्लवगः प्लवः ।
सन्तर्पणो वृष्यतमः श्लेष्मलो बलवर्धनः ॥४३९॥
कषायो बद्धविण्मूत्र आमवातकफापहः ।
वानरः पवनश्वासमेदः पाण्डुकृमीञ्जयेत् ॥४४०॥

मर्कट, वानर, कीश, हरि, शाखामृग, कपि, प्लवङ्गम, वनौका, प्लवङ्ग, प्लवग र प्लव : यी बाँदरका पर्यायवाची नाम हुन् । यसको मासु तृप्तिदायक, अती वीर्यवर्धक, कफविकार गर्ने, बल बढाउने, टर्पो, दिसापिसाब कस्ने तथा आमविकार, वातविकार र कफविकार नाश गर्ने गुणको हुन्छ । यसले वातविकार, दम, बोसोविकार, पाण्डु र कीरलाई समेत जित्दछ ।

मयूर

मयूरो नर्तको बर्ही नीलकण्ठः शिखी ध्वजी ।
मेघारावः कलापी च शिखण्डी चित्रपिच्छकः ॥४४१॥
मयूरमांसं सुस्निग्धं वातघ्नं शुक्रवर्धनम् ।
बल्यं मेधाकरं प्रोक्तं चक्षुरोगविनाशनम् ॥४४२॥

मयूर, नर्तक, बर्ही, नीलकण्ठ, शिखी, ध्वजी, मेघाराव, कलापी, शिखण्डी र चित्रपिच्छक : यी मयुरका पर्यायवाची नामहरू हुन् । यसको मासु अति चिल्लो, वातविकार नाश गर्ने, शुक्र बढाउने, बलदायक, दिमागको सम्भना शक्ति बढाउने र आँखाका रोग नाश गर्ने गुणको हुन्छ ।

सङ्कलन : मोहनप्रसाद सापकोटा भमरा (भ्रमर)

भ्रमरः षट्पदो भृङ्गो भृङ्गराजः शिलीमुखः ।
द्विरेफोऽलिर्मधुकरो मधुपो मधुलिट् स्मृतः ॥४४३॥
स च षट्चरणः प्रोक्तो भङ्गारी पुष्पलोलुपः ।
नीलो घुमुघुमारावो मधुकृन्मधुरस्वरः ॥४४४॥
अपरः क्षुद्रभृङ्गारः पूतिभृङ्गः कुभृङ्गकः ।
भ्रमरो रूक्ष उष्णश्च तैलयोगेक्षणापहः ॥४४५॥
कर्णरोगाशिरोव्याधीन्मुखरोगान्निहन्ति च ।

भ्रमर, षट्पद, भृङ्ग, भृङ्गराज, शिलीमुख, द्विरेफ, अलि, मधुकर, मधुप, मधुलिट्, षट्चरण, भङ्गारी, पुष्पलोलुप, नील, घुमुघुमाराव, मधुकृत् र मधुरस्वर : यी भमराका पर्यायवाची नामहरू हुन् । क्षुद्रभृङ्गार, पूतिभृङ्ग र कुभृङ्गक : यी अर्कोथरी सानो जातको भमराका पर्यायवाची नामहरू हुन् । भ्रमरा रूखो, उष्णवीर्यको, तेलविशेषमा उपयोगी, दृष्टि नाश गर्ने तथा कानका रोग, टाउकाका रोग र मुखका रोग नाश गर्ने गुणको हुन्छ ।

सुँगा (शुक)

शुकः कीरो रक्तमुखो मेधावी प्रियदर्शनः ॥४४६॥
अन्यो महान् राजशुकः शतपत्रो निगद्यते ।
शुको बल्योऽतिवृष्यश्च वीर्यवृद्धिकरः परः ॥४४७॥
वातलो बृंहणो ज्ञेयस्तथा राजशुकः स्मृतः ।

शुक, कीर, रक्तमुख, मेधावी र प्रियदर्शन : यी सुँगाका तथा राजशुक र शतपत्र : यी ठूलो जातको सुँगाका पर्यायवाची नामहरू हुन् । सुँगाको मासु बलदायक, अति यौन क्षमता बर्धक, अति वीर्यवर्धक, वातविकार गर्ने र पौष्टिक हुन्छ । ठूलो जातको सुँगाको मासुमा पनि यिनै गुणहरू हुन्छन् ।

मैना (सारिका)

गोराटिका गोकिरीटी गौरका कलहाकुला ॥४४८॥
मेधाविनी सारिकाऽन्या दूतिका प्रियवादिनी ।
सारिका च भवेत्स्निग्धा वातला बृंहणी स्मृता ॥४४९॥
वीर्यसञ्जननी वृष्या मेध्या चैव रसायनी ।

गोराटिका, गोकिरीटी, गौरका, कलहाकुला, मेधाविनी र सारिका : यी मैनाका तथा दूतिका र प्रियवादिनी : यी मैनाविशेषका पर्यायवाची नामहरू हुन् । यसको मासु चिल्लो, वातविकार गर्ने, पौष्टिक, वीर्य उत्पादक, वीर्यवर्धक, दिमागको ग्रहण गर्ने क्षमता बढाउने र रसायनी हुन्छ ।

चखेवाका पर्याय र मासुको गुण (चक्रवाक)

चक्रवाकस्तु चक्राहश्चक्री चक्ररथो रथी ॥४५०॥
रथाङ्गनामा रथिकः कामी चक्रोऽथ चक्रवाक् ।
चक्रवाको महास्निग्धः शुक्रलो गुरुरेव च ॥४५१॥
बल्योऽथ रूचिकृद्वातहरो दोषविनाशनः ।

चक्रवाक, चक्रका पर्याय, चक्री, चक्ररथ, रथी, रथाङ्गनामा, रथिक, कामी, चक्र र चक्रवाक् : यी चखेवाका पर्यायवाची नाम हुन् । चखेवा (मासु) अति चिल्लो, शुक्रवर्धक, पचाउन कठिन, बलदायक,

रुचिप्रद तथा वात र त्रिदोष नाश गर्ने गुणको हुन्छ ।

हाँस (हंस)

हंसः श्वेतो धार्तराष्ट्रो राजहंसो मनोरमः ॥४५२॥

कलहंसोऽपरः प्रोक्तो जलपादोऽथ बन्धुरः ।

हंसः स्निग्धो गुरुर्वृष्यो वीर्योष्णः स्वरवर्णकृत् ॥४५३॥

वातास्रपित्तशमनो बृंहणो बलवर्धनः ।

हंस, श्वेत, धार्तराष्ट्र, राजहंस र मनोरम : यी हाँसका तथा कलहंस, जलपाद र बन्धुर : यी हाँसविशेषका पर्यायवाची नामहरू हुन् । हाँसको मासु चिल्लो, पचाउन कठिन, वीर्यवर्धक, उष्णवीर्यको, स्वर र शरीरको वर्णका लागि हितकर, वातरक्त र पित्तविकार शान्त पार्ने, पौष्टिक र बल बढाउने गुणको हुन्छ ।

कुखुराका पर्याय र मासुको गुण (कुक्कुट)

कुक्कुटस्ताम्रचूडश्च दक्षः शौण्डोऽथ विष्किरः ॥४५४॥

कालज्ञः कृकवाकुश्च नियोद्धा चरणायुधः ।

कुक्कुटः स्निग्धोष्णः स्वराग्नीन्द्रियदाढ्यकृत् ॥४५५॥

बृंहणो वातहा वृष्यो लघुर्बलकरः स्मृतः ।

अन्यस्तद्वद्गुणो ग्राम्यो विशेषेण गुरुस्तथा ॥४५६॥

कुक्कुट, ताम्रचूड, दक्ष, शौण्ड, विष्किर, कालज्ञ, कृकवाकु, नियोद्धा र चरणायुध : यी कुखुराका पर्यायवाची नाम हुन् । यसको मासु चिल्लो, उष्णवीर्यको; स्वर, पाचक-अग्नि र इन्द्रियलाई बलियो बलाउने; पौष्टिक, वातविकार नाश गर्ने, वीर्यवर्धक, पचाउन सहज र बलदायक हुन्छ । अन्य कुखुराको मासुमा पनि यिनै गुण हुन्छन् । घर कुखुराको मासु विशेषगरी पचाउन कठिन हुन्छ ।

लाभे (लाव)

लावस्तु लावको ज्ञेयश्चित्रदेहश्चतुर्विधः ॥४५७॥

पांसुलो गौरकोऽन्यश्च पौण्ड्रको दर्भरस्तथा ।

लावो हृद्यो हिमः स्निग्धो ग्राही वह्निप्रदीपनः ॥४५८॥

गुरुष्णो मधुरः किञ्चित्सर्वदोषहरो मतः ।
पांसुलः श्लेष्मलस्तेषां वीर्योष्णोऽनिलनाशनः ॥४५९॥
गौरको कफवातघ्नो रूक्षो वह्निप्रदीपनः ।
पौण्ड्रकः पित्तकृत्किञ्चिल्लघुः श्लेष्मानिलापहः ॥४६०॥
दर्भरो रक्तपित्तघ्नो हृदामयहरो हिमः ।

लाव, लावक र चित्रदेह : यी लाभे चराका पर्यायवाची नामहरू हुने । यो पांसुल, गौरक, पौण्ड्रक र दर्भर गरी चार जातको हुन्छ । लाभेको मासु मुटुका लागि हितकर, शीतवीर्यको, चिल्लो, ग्राही, पाचनशक्ति बढाउने, पचाउन कठिन, तातो, केही गुलियो र सबै दोष गर्ने गुणको हुन्छ भनिएको छ । पांसुलको मासु कफविकार गर्ने, उष्णवीर्यको र वातविकार नाश गर्ने गुणको हुन्छ । गौरकको मासु कफविकार र वातविकार नाश गर्ने, रुखो र पाचनशक्ति बढाउने गुणको हुन्छ । पौण्ड्रकको मासु पित्तविकार गर्ने, केही मात्रामा पचाउन सहज तथा कफविकार र वातविकार नाश गर्ने गुणको हुन्छ । दर्भरको मासु रक्तपित्त र मुटुका रोग नाशगर्ने तथा शीतवीर्यको हुन्छ ।

कोइलीका पर्याय र मासुको गुण (कोकिल)

कोकिलः परपुष्टश्च कृष्णः परभृतोऽसितः ॥४६१॥
वसन्तदूतस्ताम्राक्षो गन्धर्वो वनभूषणः ।
कोकिला परपुष्टा च धूर्ता परभृताऽसिता ॥४६२॥
कोकिलः परपुष्टश्च काकः परभृतः कपिः ।
वसन्तदूतस्ताम्राक्षो गन्धर्वो मधुगायनः ॥४६३॥
कुहूरवः कलकण्ठः कामान्धः काकलीरवः ।
कोकिलो बृंहणः प्रोक्तो मधुरो बलवर्धनः ॥४६४॥
कफघ्नो मधुरो ग्राही चक्षुष्यः कफकासजित् ।

कोकिल, परपुष्ट, कृष्ण, परभृत, असित, वसन्तदूत, ताम्राक्ष, गन्धर्व र वनभूषण : यी कोइलीका कोकिला, परपुष्टा, धूर्ता, परभृता र असिता : यी पोथी कोइलीका तथा कोकिल, परपुष्ट, काक, परभृत, कपि, वसन्तदूत, ताम्राक्ष, गन्धर्व, मधुगायन, कुहूरव, कलकण्ठ, कामान्ध र काकलीरव : यी ग्रन्थमा बताइएका कोइलीका पर्यायवाची नाम हुन् । कोइलीको मासु पौष्टिक, गुलियो, बल बढाउने, कफविकार नाश गर्ने, ग्राही, आँखाका लागि हितकर तथा कफजन्य खोकीलाई जित्ने गुणको हुन्छ ।

कागका पर्याय र मासुको गुण (काक)

काकोऽथ वायसो ध्वाङ्गः काणोऽरिष्ट उलूकजित् ॥४६५॥
बलिभुक्चिरजीवी च धूलिजङ्घो निमित्तकृत् ।

काक, वायस, ध्वाङ्ग, काण, अरिष्ट, उलूकजित्, बलिभुक्, चिरजीवी, धूलिजङ्घ र निमित्तकृत् : यी कागका पर्यायवाची नाम हुन् ।

काकद्रोणो द्रोणकाकः स्यात्काणोऽपि च वायसः ॥४६६॥

काकद्रोण, द्रोणकाक र काणवायस : यी डुमकागका पर्यायवाची नाम हुन् ।

रूक्षो भल्लो भल्लको भल्लशल्यो दुर्घोषः स्याद्भल्लकः पृष्ठदृष्टिः ।
द्रागीश्वासौ दीर्घकेशश्चिरायुर्ज्ञेयः सोऽयं दुःस्वरो दीर्घदर्शी ॥४६७॥

रूक्ष, भल्ल, भल्लक, भल्लशल्य, दुर्घोष, पृष्ठदृष्टि, द्रागी, दीर्घकेश, चिरायु, दुःस्वर र दीर्घदर्शी : यी कागविशेषका पर्यायवाची नाम हुन् ।

कागविशेष (भास)

भासः शिवोऽनुभासेत गृध्राकारो रजःप्रभः ।

गिद्ध आकारको धूलो जस्तो वर्णको एक कागविशेषलाई भास र शिव भनिन्छ ।

पानीकाग (जलकाक)

जलकाकस्तु दात्यूहः स च स्यात्कालकण्टकः ॥४६८॥

जलकाक, दात्यूह र कालकण्टक : यी पानीकागका पर्यायवाची नाम हुन् ।

कागको मासु

सर्वकाकभवं मांसं चक्षुष्यं दीपनं लघु ।
आयुष्यं बृहणं बल्यं क्षतदोषक्षयापहम् ॥४६९॥

सबै खालका कागको मासु आँखाका लागि हितकर, दीपनी, पचाउन सहज, आयुवर्धक, पौष्टिक, बलदायक तथा घाउजन्य विकार र क्षयरोग नाश गर्ने गुणको हुन्छ ।

लाटोकोसेरो (उलूक)

उलूको नक्तचारी च दिवान्धः कौशिकस्तथा ।
कौशी घर्घरको भीरुः काकशत्रुर्निशाचरः ॥४७०॥

उलूक, नक्तचारी, दिवान्ध, कौशिक, कौशी, घर्घरक, भीरु, काकशत्रु र निशाचर : यी लाटोकोसेरोका पर्यायवाची नाम हुन् ।

सङ्कलन : मोहनप्रसाद सापकोटा
सानो जातको लाटोकोसेरो (क्षुद्रोलूक)

क्षुद्रोलूकः शाकुनेयः पिङ्गलो डुडुलश्च सः ।
वृक्षाश्रयी बृहद्रावः पिङ्गलाक्षो भयङ्करः ॥४७१॥

क्षुद्रोलूक, शाकुनेय, पिङ्गल, डुडुल, वृक्षाश्रयी, बृहद्राव, पिङ्गलाक्ष र भयङ्कर : यी सानो जातको लाटोकोसेरोका पर्यायवाची नाम हुन् ।

लाटोकोसेरोको मासु

औलूकं पित्तलं भ्रान्तिकरं वातप्रकोपणम् ।

लाटोकोसेरोको मासु पित्तविकार गर्ने, भ्रम गराउने र वातविकारलाई उत्तेजित पार्ने गुणको हुन्छ ।

सर्प

सर्पो दंष्ट्री भुजङ्गोऽहिर्भुजगोऽथ सरीसृपः ॥४७२॥
उरगः कञ्चुकी व्यालो द्विजिह्वोऽथ भुजङ्गमः ।
स च नागो विषधरः कुण्डली पन्नगः फणी ॥४७३॥
चक्षुःश्रवा दन्दशूको भोगी चाऽऽशीविषः स्मृतः ।

सर्प, दंष्ट्री, भुजङ्ग, अहि, भुजग, सरीसृप, उरग, कञ्चुकी, व्याल, द्विजिह्व, भुजङ्गम, नाग, विषधर, कुण्डली, पन्नग, फणी, चक्षुःश्रवा, दन्दशूक, भोगी र आशीविष : यी सर्पका पर्यायवाची नाम हुन् ।

सर्पविशेष

राजिलो जलसर्पस्तु विरुलः स प्रकीर्तितः ॥४७४॥
श्वेतो नागोऽरुणः सर्पो व्यन्तरश्चित्रवर्णकः ।
गोनसो मण्डली पातः कुलङ्गः कृष्णडुण्डुभः ॥४७५॥

सङ्कलन : मोहन प्रसाद सापकोटा

पानीमा हुने सर्पलाई राजिल, जलसर्प र विरुल भनिन्छ । सेतो सर्पलाई नाग भनिन्छ । अरुण रङको सर्पलाई सर्प भनिन्छ । रङ्गीबिरङ्गी सर्पलाई व्यन्तर भनिन्छ । गोनस, मण्डलीपात, कुलङ्ग र कृष्णडुण्डुभ : यी सर्पका केही जात हुन् ।

विविधाग्निकृतः सर्पा वातघ्नाः स्वादुपाकिनः ।
दर्वीकरा मण्डलिनास्तेषूक्ताः कटुपाकिनः ॥४७६॥
स्वादवश्चातिचक्षुष्याः सृष्टविण्मूत्रमारुताः ।
राजीमदादयः स्वादे रसे पाके कफावहाः ॥४७७॥
स्निग्धाः शीताः स्तब्धवर्चः सशुक्रबलवर्धनाः ।
कृष्णसर्पादयस्तेषां बल्याश्चोष्णानिलापहाः ॥४७८॥
शुक्रसन्धानकृच्छ्रेष्ठ स्निग्धाः स्वापमलापहाः ।

विविध किसिमका सर्पको मासु वातविकार नाश गर्ने र पचेपछि गुलियो हुने गुणको हुन्छ । तिमध्येमा पनि दर्वीकरा र मण्डलि जातका सर्पको मासु शुरुमा गुलियो र पचेपछि पिरो हुन्छ । यो मासु आँखाका लागि अति हितकर तथा मल, मूत्र र वातविकार निकाल्ने गुणको हुन्छ । राजीमद जातका सर्पको मासु

शुरुमा र पचेपछि गुलियो, कफविकार नाश गर्ने, चिल्लो, शीतवीर्यको, दिसा रोक्ने तथा वीर्य र बल बढाउने गुणको हुन्छ । कृष्णसर्प आदि सर्पको मासु बलदायक, उष्णवीर्यको, वातविकार नाश गर्ने, उत्तम तरिकाले वीर्यवर्धक, यौन क्षमता बढाउने, चिल्लो तथा निद्रा र वातविकार नाश गर्ने गुणको हुन्छ ।

भ्यागुतो (मण्डूक)

मण्डूको दर्दुरो मण्डो हरिर्भेकः कसूचकः ॥४७९॥

महावित्तस्तु मण्डव्यो राजमण्डूक उच्यते ।

मण्डूकः श्लेष्मलो नातिपित्तलो बलकारकः ॥४८०॥

मण्डूक, दर्दुर, मण्ड, हरि, भेक र कसूचक : यी भ्यागुताका तथा महावित्त, मण्डव्य र राजमण्डूक : यी ठलो जातको भ्यागुताका पर्यायवाची नामहरू हुन् । भ्यागुताको मासु कफविकार गर्ने, थोरै पित्तविकार गर्ने र बलदायक हुन्छ ।

गँगटो (कर्कट)

सङ्कलन : मोहन प्रसाद सापकोटा

कर्कटः स्यात्कर्कटकः कुलीरश्च कुलीरकः ।

सन्दंशकः पङ्कवासस्तिर्यग्गामी स चोर्ध्वदृक् ॥४८१॥

कर्कटो बृंहणो वृष्यः शीतलोऽसृग्गदापहः ।

कर्कट, कर्कटक, कुलीर, कुलीरक, सन्दंशक, पङ्कवास, तिर्यग्गामी र चोर्ध्वदृक् : यी गँगटोका पर्यायवाची नाम हुन् । यसको मासु पौष्टिक, वीर्यवर्धक, शीतवीर्यको र रक्तविकार नाश गर्ने गुणको हुन्छ ।

दिसा (मल)

मलं विष्ठा पुरीषं च विट् किट्टं पूतिकं च तत् ॥४८२॥

मल, विष्ठा, पुरीष, विट्, किट्ट र पूतिक : यी दिसाका पर्यायवाची नामहरू हुन् ।

गाईको गोबर (गोमय)

गोमयं गोपुरीषं स्याद्गोविष्ठा गोमलं च तत् ।

गोमय, गोपुरीष, गोविष्ठा र गोमल : यी गाईको गोबरका पर्यायवाची नाम हुन् ।

पिसाब (मूत्र)

मूत्रं तु गुह्यनिष्यन्दः प्रस्रावः स्रवणः स्रवः ॥४८३॥

मूत्र, गुह्यनिष्यन्द, प्रस्राव, स्रवण र स्रव : यी पिसाबका पर्यायवाची नामहरू हुन् ।

गहुँत (गोमूत्र)

गोमूत्रं गोजलं गोम्भो गोपानीयं च गोस्रवः ।
गवापो गोजीलालं च गोनीरं सुरभीजलम् ॥४८४॥
गोमूत्रं कटुतिक्तोष्णं सक्षारं लेखनं सरम् ।
लघ्वग्निदीपनं मेध्यं पित्तलं कफवातजित् ॥४८५॥
मूत्रप्रयोगसाध्येषु गव्यं मूत्रं प्रयोजयेत् ।

गोमूत्र, गोजल, गोम्भ, गोपानीय, गोस्रव, गवाप, गोजीलाल, गोनीर र सुरभीजल : यी गहुँतका पर्यायवाची नाम हुन् । गहुँत पिरो, तितो, उष्णवीर्यको, क्षारयुक्त, लेखनी, मलमूत्रलाई तलतिर सार्ने, पचाउन सहज, पाचक-अग्निलाई बाल्ने, पवित्र, पित्तविकार गर्ने तथा कफविकार र वातविकारलाई जित्ने गुणको हुन्छ । नतोकी मूत्र प्रयोग गर्ने मात्र भनिएको अवस्थामा गहुँत नै प्रयोग गर्नु ।

बाख्रीको मूत्र (अजामूत्र)

कासश्वासापहं शोफकामलापाण्डुरोगनुत् ॥४८६॥
कटुतिक्तान्वितं छागमीषन्मारुतकोपनम् ।

बाख्रीको मूत्र खोकी, दम, सुजन, कमलपित्त र पाण्डुरोग नाशगर्ने; पिरो, तितो र केही मात्रामा वातविकार गर्ने गुणको हुन्छ ।

भेडीको मूत्र (मेषीमूत्र)

कासप्लीहोदरश्वासशोषवर्चोग्रहे हितम् ॥४८७॥
सक्षारं कटुकं तिक्तमुष्णं वातघ्नमाविकम् ।

भेडीको मूत्र फियोका रोग, पेटका रोग, दम, सुकेनास र कब्जियतमा हितकारी; क्षारयुक्त, पिरो, तितो, उष्णवीर्यको र वातविकार नाश गर्ने गुणको हुन्छ ।

भैसीको मूत्र (महिषीमूत्र)

दुर्नामोदरशूलेषु कुष्ठमेहादिशुद्धिषु ॥४८८॥
आनाहशोफगुल्मेषु पाण्डुरोगे च माहिषम् ।

भैसीको मूत्र हर्सा, पेटका रोग, शूल, कुष्ठ र प्रमेह शोधन गर्न तथा आनाह, सुजन, गुल्म र पाण्डुरोगमा हितकर हुन्छ ।

सङ्कलन : मोहनप्रसाद सापकोटा हात्तीको मूत्र (गजमूत्र)

सतिक्तं लवणं भेदि वातघ्नं पित्तकोपनम् ॥४८९॥
तीक्ष्णं क्षारं किलासे च नागमूत्रं प्रयोजयेत् ।

हात्तीको मूत्र केही तितो, नुनिलो, भेदनी, वातविकार नाश गर्ने, पित्तविकार गर्ने, तिक्खर र क्षारयुक्त हुन्छ । किलास रोगको हात्तीको मूत्र प्रयोग गर्नु ।

घोडाको मूत्र (अश्वमूत्र)

दीपनं कटुतिक्तोष्णं वातचेतोविकारनुत् ॥४९०॥
आश्वं कफहरं मूत्रं कृमिदद्दुषु शस्यते ।

घोडाको मूत्र दीपनी, पिरो, तितो, उष्णवीर्यको तथा वातविकार, चेतना गुमाउने रोग, कफविकार, कीरा र दादमा हितकर हुन्छ ।

उँटको मूत्र (उष्ट्रमूत्र)

शोफकुष्ठोदरोन्मादमारुतकृमिनाशनम् ॥४९१॥
अशोर्ध्नं कारभं मूत्रं विजानीयाच्चिकित्सकः ।

उँटको मूत्रले सुजन, कुष्ठ, पेटका रोग, पागलपन, वातविकार, (पेटका) कीरा र अल्काई नाश गर्दछ भनी चिकित्सकले थाहा पाउनु ।

गधाको मूत्र (गर्दभमूत्र)

गरचेतोविकारघ्नं तीक्ष्णं ग्रहणिरोगनुत् ॥४९२॥
दीपनं गार्दभं मूत्रं कृमिवातकफापहम् ।

गधाको मूत्र गरविष र अपस्मार नाश गर्ने, तिक्खर, ग्रहणी रोग नाश गर्ने, दीपनी तथा कीरा, वातविकार र कफविकार नाश गर्ने गुणको हुन्छ ।

सङ्कलन मानिसको मूत्र (मानुषमूत्र)

पित्तरक्तकृमिहरं रोचनं कफवातजित् ॥४९३॥
तित्तं मोहहरं मूत्रं मानुषं तु विषापहम् ।

मानिसको पिसाब पित्तरक्त र कीरा नाश गर्ने; कफविकार र वातविकारलाई जित्ने; तित्तो, मोह नाशक र विषविकार नाश गर्ने गुणको हुन्छ ।

बोसो (मेद)

मेदस्तु मांससारः स्याच्छुभ्रं मांसजमीरितम् ॥४९४॥

मेद, मांससार, शुभ्र र मांसज : यी बोसोका पर्यायवाची नामहरू हुन् ।

छाला (त्वक्)

त्वक्चर्मासृग्धरा कृत्तिरजिनं देहचर्म च ।
रक्ताधारो रोमभूमिः शरीरावरणं तथा ॥४९५॥

त्वक्, चर्म, असृग्धरा, कृत्ति, अजिन, देहचर्म, रक्ताधार, रोमभूमि र शरीरावरण : यी छालाका पर्यायवाची नामहरू हुन् ।

रौ (रोम)

रोम लोम च त्वग्जं च चर्मजं च तनूरुहम् ।
तच्च नेत्रस्थितं पक्ष्म मुखजं श्मश्रु कथ्यते ॥४९६॥

रोम, लोम, त्वग्ज, चर्मज र तनूरुह : यी रौका पर्यायवाची नामहरू हुन् । आँखाका रौलाई पक्ष्म र अनुहारका रौलाई दाही भनिन्छ ।

सङ्कलन : मोहनप्रसाद सापकोटा
उपसंहार

काञ्चनादिस्तु मत्स्यान्तो वर्गः षष्ठ उदाहृतः ।
धातुद्रव्यद्रवद्रव्यमांसद्रव्यसमाश्रयः ॥४९७॥

धातु पदार्थ, तरल पदार्थ, मासु र सुनदेखि माछासम्मका कुरा बताइएको छैटौं वर्ग समाप्त भयो ।

पुष्पिका

इति रसवीर्यविपाकसहिते धन्वन्तरिनिघण्टौ सुवर्णादिः षष्ठो वर्गः ॥६॥

धन्वन्तरि निघण्टुमा रस, वीर्य र विपाक सहितको छैटौं सुवर्णादि वर्ग समाप्त भयो ।

अथ मिश्रकादिः सप्तमो वर्गः
त्रिफला

हरीतकी चाऽऽमलकं बिभीतकमिति त्रयम् ।
त्रिफला च वरा श्रेष्ठतमं ज्ञेयं फलत्रिकम् ॥१॥
त्रिफला च त्रिदोषघ्नी दीपनी स्याद्रसायनी ।
वृष्या मेहहरा दीप्या नेत्ररोगहरा मता ॥२॥

हरो, अमला र बरो : यी तीन फलको मिश्रणलाई सर्वश्रेष्ठ र उत्तम त्रिफला भनिन्छ । त्रिफलाले त्रिदोष नाश गर्दछ । यो दीपनी, रसायनी, वीर्यवर्धक, प्रमेह नाशक, पाचनशक्ति बढाउने, र आँखाका रोग नाश गर्ने गुणको हुन्छ ।

स्वादुत्रिफला

द्राक्षाखर्जूरकाश्मर्यफलानीति फलत्रयम् ।
सैव स्वादुर्द्वितीया तु त्रिफला त्रैफला स्मृता ॥३॥
द्राक्षादाडिमखर्जूरं द्वितीयं च फलत्रयम् ।
चक्षुष्या दीपनी रुच्या विषमज्वरनाशिनी ॥४॥

दाख, खजुर र खमारीका फलको मिश्रणलाई स्वादुत्रिफला भनिन्छ । दाख, दाडिम र खजूरका फलको मिश्रणलाई दोश्रो प्रकारको स्वादु त्रिफला वा स्वादु त्रैफला पनि भनिन्छ । यो आँखाका लागि हितकर, दीपनी, रुचिप्रद र विषमज्वर नाश गर्ने गुणको हुन्छ ।

सुगन्धि त्रिफला

जातीफलं तथैला च लवङ्गफलमेव च ।
सुगन्धित्रिफला प्रोक्ता तृतीयं तु फलत्रिकम् ॥५॥
सङ्गाहि मधुरा पाके कफवातविबन्धनुत् ।

जाइफल, अलैंची र ल्वाङको मिश्रणलाई सुगन्धित्रिफला वा फलत्रिक भनिन्छ । यो ग्राही, पचेपछि गुलियो तथा कफविकार, वातविकार र किब्जियत नाश गर्ने गुणको हुन्छ ।

त्रिकटुकम्

पिप्पली मरिचं शुण्ठी त्रयमेतद्विमिश्रितम् ॥६॥
त्रिकटु त्र्यूषणं व्योषं कटुत्रयमिहोच्यते ।
दीपनं रुचिदं वातश्लेष्ममन्दाग्निशूलनुत् ॥७॥

पिप्पला, मरिच र सुठोको मिश्रणलाई त्रिकटु, त्र्यूषण, व्योष वा कटुत्रय भनिन्छ । यो दीपनी, रुचिप्रद तथा पातविकार, कफविकार, कमजोर पाचनशक्ति र शूल नाश गर्ने गुणको हुन्छ ।

त्रिकार्षिक, चातुर्भद्रक

नागराऽतिविषा मुस्ता त्रयमेतच्च कार्षिकम् ।
गुडूची संयुतं चैव चातुर्भद्रकमुच्यते ॥८॥
ज्वरघ्नं पाचनं प्रोक्तं त्रिदोषशमनं स्मृतम् ।
जीर्णज्वरारोचकघ्नं कण्ठामयविनाशनम् ॥९॥

कार्षिक वा त्रिकार्षिकमा गुर्जो मिसाएपछि त्यसलाई चातुर्भद्रक भनिन्छ । यी दुई जरो नाश गर्ने, पचाउने, त्रिदोषलाई शान्त पार्ने, पुरानो जरो र अरुची तथा घाँटीका रोग नाश गर्ने गुणका हुन्छन् ।

कटुचातुर्भद्रक

एलात्वक्पत्रकैस्तुल्यैर्मरिचेन समन्वितैः ।
कटुपूर्वमिदं चान्यच्चातुर्भद्रकमुच्यते ॥१०॥
चातुर्भद्रं रुचिकरं पित्तलं चाग्निदीपनम् ।
रूक्षोष्णं च सुगन्धि स्यात्तीक्ष्णं वर्ण्यं लघु स्मृतम् ॥११॥

अलैंची, दालचिनी, तेजपात र मरिचको समान मात्राको मिश्रणलाई कटुचातुर्भद्रक भनिन्छ । चातुर्भद्रक रुचिप्रद, पित्तविकार गर्ने र पाचनशक्ति बढाउने गुणको हुन्छ । यो रुखो, उष्णवीर्यको, सुगन्धि, तिक्खर, वर्णका लागि हितकर र पचाउन सहज हुन्छ ।

तृतीयं चातुर्भद्रकम् त्रिजातक सहितम्

त्वगेलापत्रकेस्तुल्येस्त्रिसुगन्धि त्रिजातकम् ।
नागकेशरसंयुक्तं चातुर्जातक(भद्रक)मुच्यते ॥१२॥
स्वरभेदश्वासकासमुखदोषविनाशनम् ।
वृष्यं बल्यं च योगार्हं चातुर्जातं रसायनम् ॥१३॥

दालचिनी, अलैंची र तेजपातको बराबर मात्राको मिश्रणलाई त्रिसुगन्धि वा त्रिजातक भनिन्छ । यसमा नागकेशर मिसाएपछि त्यसलाई चातुर्जातक (चातुर्भद्रक) भनिन्छ । यो स्वर बसेको, दम, खोकी र मुखका रोग नाश गर्ने; वीर्यवर्धक, बलदायक, योगवाही र रसायनी हुन्छ ।

पञ्चकोलकम्

पिप्पली पिप्पलीमूलं चव्यचित्रकनागरम् ।
एकत्र मिश्रितैरेभिः पञ्चकोलकमुच्यते ॥१४॥
पञ्चकोलं त्रिदोषघ्नं रुच्यं दीपनपाचनम् ।
स्वरभेदहरं चैव शूलगुल्मार्तिनाशनम् ॥१५॥

पिप्ला, पिप्लाको जरा, चाभो, चितु र सुठोको मिश्रणलाई पञ्चकोलक भनिन्छ । यो त्रिदोष नाश गर्ने, रुचिप्रद, दीपनी, पचाउने, स्वर बसेको ठिक गर्ने तथा शूल र गुल्म नाश गर्ने गुणको हुन्छ ।

पञ्चवल्कलशिम

न्यग्रोधोदुम्बराश्वत्थप्लक्षवेतसवल्कलैः ।
सर्वैरेकत्र संयुक्तैः पञ्चवल्कलमुच्यते ॥१६॥
रसे कषायं शीतं च वर्ण्यं दाहतृषापहम् ।
योनिदोषं कफं शोफं हन्तीदं पञ्चवल्कलम् ॥१७॥

बर, डुम्री, पीप्पल, पाखरी र वेतका बोक्राको मिश्रणलाई पञ्चवल्कल भनिन्छ । यो टर्रो, शीतवीर्यको, वर्णमा निखार लेराउने तथा डाह, तिर्खा, योनि रोग, कफविकार र सुजन नाश गर्ने गुणको हुन्छ ।

पञ्चभृङ्गम्

देवदाली शमी भृङ्गा निर्गुण्डी सनकस्तथा ।
रोगान्ते स्नपानार्थं पञ्चभृङ्गमिति स्मृतम् ॥१८॥

देवदार, शमी, दालचिनी, सिमाली र सनको मिश्रणलाई पञ्चभृङ्ग भनिन्छ । रोग निको भएरपछि नुहाउन र पिउन यसको प्रयोग गरिन्छ ।

मध्यमपञ्चमूलम्

बलापुनर्नवेरण्डशूर्पपर्णीद्वयेन तु ।
मध्यमं कफवातघ्नं नातिपित्तकरं सरम् ॥१९॥

बलु, पुनर्नवा, अँडिर, गहत र बनगहतको (?) जरालाई मध्यम पञ्चमूल भनिन्छ । यसले वातविकार नाश गर्दछ, धेरै पित्तविकार पनि गर्दैन र मलमूत्रलाई तलतिर सार्दछ ।

सङ्कलन : मोहनप्रसाद सापकोटा

शालपर्णी पृश्निपर्णी बृहती कण्टकारिका ।
तथा गोक्षुरकश्चैव पञ्चमूलं लघु स्मृतम् ॥२०॥
पञ्चमूलं त्रिदोषघ्नं वातघ्नं लघुसंज्ञकम् ।
ज्वरकासश्वासशूलमन्दाग्र्यरुचिनाशकम् ॥२१॥

वनगहत वा मासलहरी, सतिबयर, बिहीँ र कण्टकारी, ओदनेकाँडोको जराको मिश्रणलाई लघु पञ्चमूल भनिन्छ । यो त्रिदोष, वातविकार, जरो, खोकी, दम, शूल, कमजोर पाचनशक्ति र अरुचि नाश गर्ने गुणको हुन्छ ।

बृहत्पञ्चमूलम् दशमूलम्

बिल्वोऽग्निमन्थः श्योनाकः काशमर्यः पाटला तथा ।
ज्ञेयं महापञ्चमूलं दशमूलमुभे स्मृतम् ॥२४॥
उभयं पञ्चमूलं तु सन्निपातज्वरापहम् ।

कासे श्वासे च तन्द्रायां पार्श्वशूले च शस्यते ॥२५॥

बेल, गिनेरी, टटलो वा लोध, खमारी र पाडरीको जराको मिश्रणलाई महापञ्चमूल भनिन्छ । लघुपञ्चमूल र महापञ्चमूलको मिश्रणलाई दशमूल भनिन्छ । दशमूलमा सन्निपात जरो, खोकी, दम, तन्द्रा र कोखाको शूल नाश गर्ने गुण हुन्छ ।

जीवनीय पञ्चमूलम्

अभीरुवीराजीवन्तीजीवकर्षभकैः स्मृतम् ।
जीवनाख्यं च चक्षुष्यं वृष्यं पित्तानिलापहम् ॥२६॥

कुरिलो, कल्लेलहरो, जीवन्ती, जीवक र ऋषभ : यी पाँच ओखतीको मिश्रणलाई जीवनीय पञ्चमूल भनिन्छ । यो आँखाका लागि हितकर, वीर्यवर्धक तथा पित्तविकार र वातविकार नाश गर्ने गुणको हुन्छ ।

तृणपञ्चमूलम्

सङ्कलन : मोहन प्रसाद सापकोटा

तृणाख्यं पित्तजिद्भंशरकाशेक्षुशालयः ।

एतैरेकीकृतं पञ्चमूलं तु तृणसञ्ज्ञकम् ॥२७॥

तृणादिपञ्चमूलं तु पित्तज्वरतृषापहम् ।

रक्तदोषाम्लपित्तं च स्त्रीरोगं रक्तपित्तकम् ॥२८॥

सानो जातको नफुलेको कुश, ढड्डी वा उशीर, काँस, उखु र मासीधान : यी भातको पित्तविकारलाई जित्ने गुण भएको मिश्रणलाई तृणपञ्चमूल भनिन्छ । यो मिश्रणले पित्तविकारजन्य जरो, तिखा, रक्तविकार, मूत्रकृच्छ्र, अम्लपित्त, स्त्रीका रोग र रक्तपित्त नाश गर्दछ ।

पञ्च-पञ्चमूलकम्

बिल्वोऽग्निमन्थः श्योनाकः काशमर्यत्वक्च पाटला ।

बलापुनर्नवैरण्डः शूर्पपर्णीद्वयं तथा ॥२९॥

जीवकर्षभकौ मेदा जीवन्ती च शतावरी ।

शरेक्षुदर्भकासानां शालीनां मूलमेव च ॥३०॥

**गृध्रा वरी श्वदंष्ट्रा च सैरैयं करमर्दिका ।
इत्यौषधेः समुद्दिष्टं पञ्चमूलकपञ्चकम् ॥३१॥**

बेल, गिनेरी, टटेलो वा लोध, खमारी र पाडरी वा रातो लोध (बृहत्पञ्चमूल); बलु, पुनर्नवा, अँडिर, वनगहत र वनमास (मध्यमपञ्चमूल); कुरिलो, कल्लेलहरो, जीवन्ती, जीवक र ऋषभ (जीवनीय पञ्चमूल); सानो जातको नफुलेको कुश, ढड्डी वा उशीर, काँस, उखु र मासीधान (तृण पञ्चमूल) तथा गृध्रा, कुरिलो, ओदानेकाँडो, सेतो फूल हुने कटसैरैया र सानो जातको करौँदा : यी सबैको मिश्रणलाई पञ्चपञ्चमूल भनिन्छ ।

जीवनीय गण

**जीवकर्षभकौ मेदे काकोल्यौ द्वे च योजिते ।
द्वे सूर्पण्यौ जीवन्ती मधुकं चेत्ययं गणः ॥३२॥
नाम्ना मधुर इत्युक्तो जीवनीयो रसायनः ।
जीवनो जीवनीयश्चस्वादुर्मधुरकस्तथा ॥३३॥
शुक्रदोषहरो बल्यो मूत्रदोषापहारकः ।**

जीवक, ऋषभक, मेदा, महामेदा, कल्ले लहरो, दुधे कल्लेलहरो, वनमास, वनमुगी, जीवन्ती र जेठीमधु : यी जीवनीय गणका पदार्थहरू हुन् । जीवनीय गणलाई मधुरगण, रसायन गण, जीवन र जीवनीय पनि भनिन्छ । यो स्वादिलो, गुलियो, वीर्यका विकार नाश गर्ने, बलदायक र मूत्ररोग नाशगर्ने गुणको हुन्छ ।

वेशवार

**शुण्ठीमरिचपिप्पल्या धान्यकाजाजिदाडिमम् ॥३४॥
पिप्पलीमूलसंयुक्तं वेशवारमिति स्मृतम् ।
वेसवारो भवेत्तीक्ष्णः सोऽग्नेवीर्यस्य वर्धकः ॥३५॥**

सुठो, मरिच, पिप्ला, धनिया, जीरा, दाडिम र पिप्लाको जराको मिश्रणलाई वेशवार भनिन्छ । यो तिक्खर तथा पाचनशक्ति र वीर्य बढाउने गुणको हुन्छ ।

कासमर्द वटक र सम्भार

कासमर्दकपत्राणां कृतं चूर्णमुलूखले ।
वेसवारसमायुक्तं सप्ताहं भाजने स्थितम् ॥३६॥
ततो हिङ्गुरसात्तेन मिश्रितास्तेन ते तथा ।
दिवाकरकरैः शोष्या वटकाः कासमर्दकाः ॥३७॥
शाकव्यञ्जनमांसानां सम्भार इति ते मताः ।
अनेन संयुताः पाका वह्निवीर्यबलप्रदाः ॥३८॥

करौंदीका पातहरू उखलमा कुटेर धूलो पारी वेशवारमा मिसाएर एउटा भाँडामा हाली एक हप्ता राख्नु । त्यसपछि यसमा हिङ्गुको रस हाली गोली बनाएर घाममा सुकाउनु । यसलाई कासमर्द वटक भनिन्छ । यसलाई तरकारी, कडी, मासु आदि पकाउँदा मसलाका लागि प्रयोग गरिन्छ र सम्भार भनिन्छ । यो मसला हालेर पकाइने कुराले पाचनशक्ति, वीर्य र बल प्रदान गर्दछ ।

शिखरिणी

सङ्कलन : मोहन प्रसाद सापकोटा
दध्नः पलानि द्वात्रिंशत्त्वगेलार्धपलं तथा ।
मध्वाज्यस्य पलार्धार्धं मरिचस्य पलार्धकम् ॥३९॥
पलान्यष्टौ च खण्डस्य पटे शुक्ले च गालयेत् ।
कर्पूरवासिते भाण्डे छायायां स्थापयेदिह ॥४०॥
एषा शिखरिणीत्युक्ता वृष्या दीप्तिविवर्धिनी ।
सदा पथ्या नियुद्धाध्वक्षीणदेहेषु पुष्टिदा ॥४१॥
आयुष्प्रवर्धिनी चैव सर्वरोग प्रमर्दिनी ।
सा स्यादुचिस्थैर्यकरी नराणां सर्वदा हिता ॥४२॥

दही बत्तीस पल; दालचिनी, अलैंची र मह आधा पल; मह आधा पलको पनि आधा पल, मरिच आधा पल र मिश्री आठ पल मिसाएर सेतो कपडामा हाली त्यो पोको कपूरले बास्नादार बनाइएको एउटा भाँडामा राख्नु । यसलाई शिखरिणी भनिन्छ । यो वीर्यवर्धक, अग्निवर्धक; कुस्तिबाज, कमजोर र हिँडेर थकित भएका मानिसलाई सधैं पथ्य र पौष्टिक, आयु वर्धक, सबै रोग नाशगर्ने, रुचिप्रद, उमेरलाई स्थिर राख्ने र मानिसका लागि सधैं हित गर्ने गुणको हुन्छ ।

सर्वोषधिकम्

कुष्ठं मांसी हरिद्रे द्वे मुराशैलेयचम्पकाः ।
वचाकर्पूरमुस्ताश्च सर्वोषधिकमुच्यते ॥४३॥
सर्वोषधी त्रिदोषघ्नी मूत्रदाहापहा मता ।
रसायन्यर्शःपित्तघ्नी मुखरोगविनाशिनी ॥४४॥

कूट, जटामसी, हलेदो, चुत्रो, कालो जटामसी, पत्थरकुङ्कुम, चाँप, बोभो, कपूर र नागरमोथेको मिश्रणलाई सर्वोषधि भनिन्छ । यो त्रिदोष र पिसाब पोल्ने रोग नाश गर्ने, रसायनी तथा हर्सा, पित्तविकार र मुखका रोग नाशगर्ने गुणको हुन्छ ।

सुगन्धामलकम्

सर्वोषधिकसंयुक्ताः शुष्काश्चाऽऽमलकत्वचः ।
सुगन्धामलकं ह्येतन्निर्दिशन्ति विचक्षाणाः ॥४५॥
सुगन्धामलकं वृष्यं पवित्रं मूत्रदोषनुत् ।
योनिदोषप्रशमनं हन्ति दोषत्रयं तथा ॥४६॥

सर्वोषधिमा अमलाको सुकेको बोक्रा मिसाएपछि यसलाई सुगन्धामलक भनिन्छ । यो वीर्यवर्धक, पवित्र तथा पिसाबसम्बन्धी रोग, स्त्री जननेन्द्रियका रोग र त्रिदोष नाशगर्ने गुणको हुन्छ ।

पञ्चसुगन्धिक

कङ्कौलकं पूगफलं लवङ्गकुसुमानि च ।
जातीफलानि कर्पूरमेतत् पञ्चसुगन्धिकम् ॥४७॥
पञ्चसुगन्धिकं शीतं रक्तपित्तविनाशनम् ।
हन्त्याशु मुखवैगन्ध्यं पीनसं च कफास्रजित् ॥४८॥

शीतलचिनी, सुपारी, ल्वाङ्का फूल, जाइफल र कपूरको मिश्रणलाई पञ्चसुगन्धिक भनिन्छ । यो शीतवीर्यको, रक्तपित्त नाश गर्ने, तथा मुखको गन्ध र पिनास नाश गर्ने एवं कफविकार र रक्तविकारलाई जित्ने गुणको हुन्छ ।

परार्ध वाटचपुष्पञ्च

चन्दनं कुसुमं तुल्यं परार्धमभिधीयते ।
त्रिभागकुसुमं यच्च तदुक्तं वाटचपुष्पकम् ॥४९॥

चन्दन र कुसुमको बराबर मात्राको मिश्रणलाई परार्ध भनिन्छ । यदि चन्दनमा तीन भाग मिसाइन्छ भने त्यसलाई वाटचपुष्पक भनिन्छ ।

यक्षकर्म (महासुगन्ध)

कुङ्कुमागरुकर्पूरकस्तूरीचन्दनानि च ।
महासुगन्ध इत्युक्तो नामतो यक्षकर्मः ॥५०॥
यक्षकर्म एष स्याच्छीतस्त्वग्दोषहृत्तथा ।
सुगन्धिः कान्तिदश्चैव शिरोर्तिर्विषनाशनः ॥५१॥

केसर, अगर, कपूर, कस्तूरी र चन्दनको मिश्रणलाई महासुगन्ध वा यक्षकर्म भनिन्छ । यो शीतवीर्यको, छालाका विकार नाश गर्ने, सुगन्धि, शरीरलाई चम्काउने तथा टाउकाका रोग र विषविकार नाश गर्ने गुणको हुन्छ ।

मन्थ

सक्तवः सर्पिषाऽभ्यक्ताः शीतोदकपरिप्लुताः ।
नातिद्रवा नातिसान्द्रा मन्थ इत्यभिधीयते ॥५२॥
मन्थः पित्तहरो ज्ञेयो दाहारुचिविनाशनः ।
शीतः श्रमापशमनो मूर्च्छादोषापहारकः ॥५३॥

जौको सातु घिउ हालेर न धेरै पातलो न धेरै बाक्लो हुने गरी चिसो पानीमा हालेर बनाइने पदार्थलाई मन्थ भनिन्छ । यो पित्तविकार, डाह र अरुचि नाश गर्ने गुणको हुन्छ । यो शीतवीर्यको, थकाइ नाश गर्ने तथा बेहोसीपन नाश गर्ने गुणको हुन्छ ।

सन्तर्पण

द्राक्षादाडिमखजूरैर्मर्दिताम्बु सशर्करम् ।
लाजाचूर्णं समध्वाज्यं सन्तर्पणमुदाहृतम् ॥५४॥
तर्पणं शीतलं पाने नेत्ररोगविनाशनम् ।
बल्यं रसायनं हृद्यं वीर्यवृद्धिकरं परम् ॥५५॥

दाख, दाडिम, खजूर, पानी, सक्खर, लाजाको धूलो, मह र घिउको मिश्रणलाई सन्तर्पण भनिन्छ । यो शीतवीर्यको, आँखाका रोग नाश गर्ने, बलदायक, रसायनी, मुटुका लागि हितकर र अति नै वीर्य बढाउने गुणको हुन्छ ।

पञ्चामृत

गव्यमाज्यं दधि क्षीरं माक्षिकं शर्करान्वितम् ।
एकत्र मिलितं ज्ञेयं दिव्यं पञ्चामृतं परम् ॥५६॥
अजीर्णभूतवातघ्नं ज्ञेयं पञ्चामृतं परम् ।

गाईको घिउ, दही, दूध, मह र सक्खरको मिश्रणलाई दिव्य पञ्चामृत भनिन्छ । अजीर्णले हुने वातविकारलाई यसले प्रभावकारी ढङ्गले नाश गर्दछ ।

पञ्चगव्य

गोमूत्रं गोमयं क्षीरं दधि सर्पिस्तथैव च ॥५७॥
समं योजितमेकत्र पञ्चगव्यमिति स्मृतम् ।
पञ्चगव्यं देहशुद्धिकरं कफविनाशनम् ॥५८॥

गहुँत, गाईको गोबर, गाईको दूध, गाईको दही र घिउको बराबर मात्राको मिश्रणलाई पञ्चगव्य भनिन्छ । यसले शरीरको शुद्धि तथा कफविकार नाश गर्दछ ।

आम्लपञ्चक

बीजपूरकजम्बीरं नारङ्गं साम्लवेतसम् ।

फलं पञ्चाम्लकं ख्यातं तिन्तिडीसहितं परम् ॥५९॥

बिमिरो, ज्यामिर, सुन्तला, अम्लवेत र अमिली : यी पाँच अमिलोको मिश्रणलाई आम्लपञ्चक भनिन्छ ।

द्वितीयपञ्चाम्लक

कोलदाडिमवृक्षाम्लं चुक्रिका चाम्लवेतसः ।
पञ्चाम्लकं समुद्दिष्टं विद्वद्भिश्च भिषग्वरैः ॥६०॥

बयर, दारिम, भकिअमिलो, चरीअमिलो वा अमिली र अम्लवेतको सम्मिश्रणलाई विद्वानहरूले पञ्चाम्लक भनी बताएका छन् ।

पञ्चनिम्बक

निम्बस्य पत्रं त्वक्पुष्पफलमूलैः समन्वितम् ।
पञ्चनिम्बमिति ख्यातं नामतः शास्त्रकोविदैः ॥६१॥
पञ्चनिम्बमिदं कुष्ठपञ्चकव्रणनाशनम् ।

नीमको पात, बोक्रा, फूल, फल र जराको मिश्रणलाई शास्त्रका विज्ञहरूले पञ्चनिम्ब भनी बताएका छन् । यसले कुष्ठ र पाँच थरी खटिरा नाश गर्दछ ।

लवणपञ्चक

सैन्धवं रोमकं चैव सामुद्रलवणं तथा ॥६२॥
विडं सौवर्चलाख्यं च युक्तं लवणपञ्चकम् ।

सिँधेनुन, रोमक, समुद्री नुन, बिरेनुन र सौँचर नुनको मिश्रणलाई लवणपञ्चक भनिन्छ ।

पञ्चशिरीषक

शिरीषपत्रं त्वक्पुष्पफलमूल समन्वितम् ॥६३॥

विषारिः सर्वतः ख्यातं पञ्चशैरीषमुच्यते ।

शिरीषका पात, बोक्रा, फूल, फल र जराको विषविकार नाशगर्ने मिश्रणलाई सबैतिर पञ्चशैरीष भनी बताइएको छ ।

पञ्चाङ्ग

त्वक्पत्रफलमूलानि पुष्पं चैकस्य शाखिनः ।
पञ्चाङ्गमिति बोद्धव्यं प्राज्ञैरेकत्र मिश्रितम् ॥६४॥

बोक्रा, पात, फल, जरा र फूलको मिश्रणलाई विद्वानले पञ्चाङ्ग भनी थाहा पाउनु ।

पञ्चसार्षक

शिरीषपञ्चपञ्चाङ्गमगदं पञ्चसार्षकम् ।
सर्पदंष्ट्राविषध्वंसि विज्ञेयं शास्त्रकोविदैः ॥६५॥

संकलन : मोहन प्रसाद सापकोटा

शिरीषको पञ्चाङ्गलाई शिरीषपञ्च, पञ्चाङ्गमगद वा पञ्चसार्षक भनिन्छ । यसले सर्पले डसेको विषविकार नाश गर्दछ भनी शास्त्रका विज्ञले बताएका छन् ।

पञ्चसूरण

अत्यम्लपर्णीकाण्डीरमालाकन्दद्विसूरणैः ।
प्रोक्तो भवति योगोऽयं पञ्चसूरणसञ्ज्ञकः ॥६६॥

जोगेलहरो, करेले लहरो, कन्चिर्ने पाते बाँको र दुई थरी ओलको मिश्रणलाई पञ्चसूरण भनिन्छ ।

पञ्चसिद्धौषधि

तैलकन्दः सुधाकन्दः क्रोडकन्दो रूदन्तिका ।
सर्पनेत्रयुताः पञ्च सिद्धौषधिकसञ्ज्ञकाः ॥६७॥

तीन थोप्ले गुर्वो वा नलुको, सुधाकन्द (?), मिठो गिठोको कन्द (?), रुदिलो र सर्पाक्षी (?) यी पाँच ओखतीको मिश्रणलाई पञ्चसिद्धौषधि भनिन्छ ।

रक्तवर्ग

दाडिमं किंशुकं लाक्षा बन्धूकं च निशाह्वयम् ।
कुसुम्भपुष्पं मञ्जिष्ठा इत्येतैः रक्तवर्गकः ॥६८॥

दारिम, पल्लौश, लाहा, बारमासे फूल, हलेदो वा पानरी (?), कुसुमको फूल र मजिठो : यी पदार्थलाई रक्तवर्ग भनिन्छ ।

शुक्लवर्ग

खटिनीश्वेतसंयुक्ताः शङ्खशुक्तिवराटिकाः ।
भृष्टाश्मशर्करा चेति शुक्लवर्ग उदाहृतः ॥६९॥

सेतो खरी, शङ्ख, सिपी, कौडी, भुटेको खरानी (?) र चिनी (?) लाई शुक्लवर्ग भनिन्छ ।

पञ्चगण

विदारिगन्धा बृहती पृश्निपर्णी निदिग्धिका ।
श्वदंष्ट्रा चेति सम्प्रोक्तो योगः पञ्चगणाभिधः ॥७०॥

बिरालेलहरो, ठूलो बिहीँ, सतिबयर, सुकुमेल (?) र ओदानेकाँडोको मिश्रणलाई पञ्चगण भनिन्छ ।

मूत्राष्टक, द्वितीय मूत्राष्टक

मूत्रं गोजाविमहिषीगजाश्वोष्ट्रखरोद्भवम् ।
सर्वमेकत्र संयुक्तं मूत्राष्टकमुदाहृतम् ॥७१॥
महिषाजाविगोश्वानां खराणामुष्ट्रहस्तिनाम् ।
मूत्राष्टकमिति ख्यातं सर्वशास्त्रेषु सम्मतम् ॥७२॥

गाई, बाख्री, भेडी, भैसी, ढोई, घोडी, उँट र गधाको अथवा भैसी, बाख्री, भेडी, गाई, घोडी, गधा, उँट र ढोईको मुत्रको मिश्रणलाई सबै शास्त्रको मतमा मुत्राष्टक भनिन्छ ।

क्षारत्रय

सर्जिक्षारं यवक्षारं टङ्कणक्षारमेव च ।
क्षारत्रयं समाख्यातं त्रिक्षारं च प्रकीर्तितम् ॥७३॥

सज्जिखार, जवाखार र सुहागाको क्षार : यी तीन खारलाई क्षारत्रय वा त्रिक्षार भनिन्छ ।

क्षारपञ्चक

पलाशतिलमुष्काणां क्षाराः सर्जियवाग्रजैः ।
समांशमिलिताः पञ्च क्षारपञ्चकमादिशेत् ॥७४॥

पल्लौश, तिल, बूढेत्रो, सज्जिखार र जवाखार : यी पाँच खारको बराबर मात्रा मिसाइएपछि त्यसलाई क्षारपञ्चक भनिन्छ ।

सङ्कलन : मोहन प्रसाद सापकोटा

क्षारषट्क

कृष्णतिलजपालाशौ वचापामार्गजस्तथा ।
कुटजो मुष्कजश्चैव क्षारषट्कं विनिर्दिशेत् ॥७५॥

कालोतिल, पल्लौश, बोभो, दतिवन, ठूलोकुरो र बूढेत्रोको खारको सम्मिश्रणलाई क्षारषट्क भनिन्छ ।

क्षाराष्टक

अपामार्गपलाशार्कतिलमुष्कयवाग्रजम् ।
सर्जिकाटङ्कणयुतं क्षाराष्टकमुदाहृतम् ॥७६॥

दतिवन, पल्लौश, आँक, तिल, बूढेत्रो, जवाखार, सज्जिखार र सुहागाको खारको मिश्रणलाई क्षाराष्टक भनिन्छ ।

त्रिलवण

सैन्धवं रुचकं चैव बिडं च लवणत्रयम् ।
एतत्त्रिलवणं प्रोक्तं नामतत्त्वार्थकोविदैः ॥७७॥

सिँधेनुन, रुचक र बिरेनुनको मिश्रणलाई त्रिलवण भनिन्छ ।

लवणषट्क

सामुद्रसिन्धरुचकं बिडरोमकपांशुजम् ।
षडेते च समाख्याता लवणाः शास्त्रकोविदैः ॥७८॥

समुद्री, सिँधे, रुचक, बिरे, रोमक र पांशुज नुनको मिश्रणलाई लवणषट्क भनिन्छ ।

त्रिमधुर

घृतं सिता माक्षिकं च विज्ञेयं मधुरत्रयम् ।
विद्यात्त्रिमधुरं चैव प्रोक्तं च मधुरत्रिकम् ॥७९॥

घिउ, मिस्री र मह : यी तीन कुराको मिश्रणलाई मधुरत्रय, त्रिमधुर वा मधुरत्रिक भनिन्छ ।

षड्रस

कटुतिक्तकषायाश्च लवणोऽम्लश्च पञ्चमः ।
मधुरेण समायुक्ताः षड्रसाः समुदाहृताः ॥८०॥

पिरो, तितो, टर्रो, नुनिलो, पाँचौँमा अमिलो र गुलियो : यी रसको समूहलाई षड्रस भनिन्छ ।

ओखतीका पर्याय (औषध)

भैषज्यं भेषजं चैवमगदो जायुरौषधम् ।
आयुर्योगो गदारातिरमृतं च तदुच्यते ॥८१॥

भैषज्य, भेषज, अगद, जायु, औषध, आयुर्योग, गदाराति र अमृत : यी ओखतीका पर्यायवाची नामहरू हुन् ।

ओखतीका किसिम

तच्च पञ्चविधं प्रोक्तं स्वस्वयोगविशेषतः ।
रसशूर्णं कषायश्चावलेहः कल्क ईरितः ॥८२॥
रसः पारदसम्भिन्नो दिव्यद्रव्यसमन्वितः ।
चूर्णं तु वस्तुभिः क्षुण्णैः कषायः क्वथितैस्तु तैः ॥८३॥
अनेकैरवलेहः स्यात्कल्को मध्वादिमर्दितैः ।

ओखती आआफ्नो योग अनुसार रस (आलो ओखतीको रस, वा पारो मिश्रित ओखती), धूलो (सुकेको ओखतीको धूलो), काँढापानी (उमालिएको ओखती), चटनी (आलो ओखतीको चिसो अवस्था) र लेदो (मह आदि मिसाएको) गरी पाँच किसिमको हुन्छ ।

सङ्कलन : मोहन प्रसाद सापकोटा
शरीरले सहने कुराका पर्याय (पथ्य)

आत्मनीनं तु पथ्यं स्यादायुष्यं च हितं च तत् ॥८४॥

आत्मनीन, पथ्य, आयुष्य र हित : यी पथ्यका पर्यायवाची नामहरू हुन् ।

आरोग्य

पाटवं लाघवं वार्तमारोग्यं स्यादनामयम् ।

पाटव, लाघव, वार्त, आरोग्य र अनामय : यी आरोग्यका पर्यायवाची नामहरू हुन् ।

नीरोग

अगदो नीरुजः स्यात्तु ह्यनार्तश्चैव कथ्यते ॥८५॥

अगद, नीरुज र ह्यनार्त : यी निरोगिताका पर्यायवाची नामहरू हुन् ।

रोगी (आतुर)

व्याधितो विकृतो ग्लास्तुग्लानो मन्दस्तथाऽऽतुरः ।
अभ्यान्तोऽभ्यमितो रुग्णश्चाऽऽमयावी च दुःसहः ॥८६॥

व्याधित, विकृत, ग्लास्तु, ग्लान, मन्द, आतुर, अभ्यान्त, अभ्यमित, रुग्ण, आमयावी र दुःसह : यी रोगीका पर्यायवाची नामहरू हुन् ।

वैद्य

वैद्यः श्रेष्ठोऽगदङ्कारी रोगहारी भिषग्विधः ।
रोगज्ञो जीवनो विद्वानायुर्वेदी चिकित्सकः ॥८७॥

वैद्य, श्रेष्ठ, अगदङ्कारी, रोगहारी, भिषग्विध, रोगज्ञ, जीवन, विद्वान्, आयुर्वेदी र चिकित्सक : यी वैद्यका पर्यायवाची नामहरू हुन् ।

आहार

अन्नं जीवनमाहारः कूरं कशिपुरोदनम् ।
अन्धो भिस्साऽदनं भोज्यमन्नाद्यमशनं तथा ॥८८॥

अन्न, जीवन, आहार, कूर, कशिपु, ओदन, अन्ध, भिस्सा, अदन, भोज्य, अन्नाद्य र अशन : यी आहारका पर्यायवाची नामहरू हुन् ।

आहारका किसिम (आहारभेदा)

भोज्यं पेयं तथा चोष्यं लेह्यं खाद्यं च चर्वणम् ।
निषेयं चैव भक्ष्यं स्यादन्नमष्टविधं स्मृतम् ॥८९॥

भोज्य, पेय, चोष्य, लेह्य, खाद्य, चर्वण, निषेय र भक्ष्य गरी अन्न आठ किसिमको हुन्छ ।

सात धातु (सप्तधातु)

स्वर्णं रूप्यं च ताम्रं च रङ्गं यशदमेव च ।
सीसं लोहं च सप्तैते धातवो गिरिसम्भवाः ॥९०॥

सुन, चाँदी, तामा, रङ्ग, यशद, सिसा र फलाम : यी सप्तधातु खानीबाट उत्पन्न हुन्छन् ।

सात उपधातु

सप्तोपधातवः स्वर्णमाक्षिकं तारमाक्षिकम् ।
तुत्थं कांस्यं च रीतिश्च सिन्दूरश्च शिलाजतु ॥९१॥

स्वर्णमाक्षिक (सुनामखी), तारमाक्षिक (रूपामखी), तुत्थ (नीलोतुथो), काँस, रीति (पित्तल), सिन्दूर र शिलाजतु (शिलाजित) : यी सात उपधातु हुन् ।

सङ्कलन : मोहनप्रसाद सापकोटा

महारत्न

मुक्ताफलं हीरकं च वैदूर्यं पद्मरागकम् ।
पुष्परागं च गोमेदं नीलं गारुत्मतं तथा ॥९२॥
प्रवाल्युक्तान्येतानि महारत्नानि वै नव ।

मोति, हीरा, वैदूर्य, पद्मराग, पुष्पराग, गोमेद, नील, गारुत्मत र प्रवाल सहितका नौ रत्नलाई महारत्न भनिन्छ ।

पञ्चरत्न

पद्मनागेन्द्रनीलाख्यौ तथा मरकतः शुभः ॥९३॥
पुष्परागश्च वज्राख्यः पञ्च रत्नावराः स्मृताः ।

पद्मराग, इन्द्रनील, मरकत, पुष्पराग र हीरा : यी पाँचलाई शुभ पञ्चरत्न भनिन्छ ।

उपरत्न

उपरत्नानि काचश्च कर्पूराश्मा तथैव च
मुक्ताशुक्तिस्तथा शङ्ख इत्यादीनि बहून्यपि ॥९४॥

काँच, कर्पूराश्म, मुक्ताशुक्ति, शङ्ख आदि अनेक थरी उपरत्न हुन्छन् ।

उपरस

गन्धो हिङ्गुलमभ्रतालकशिलाः स्रोतोञ्जनं टङ्कणम् ।
राजावर्तकचुम्बकौ स्फटिकया शङ्खः खटी गैरिकम् ॥९५॥
कासीसं रसकं कपर्दसिकताबोलाश्च कङ्कुष्ठकम् ।
सौराष्ट्री च मता अमी उपरसा सृतस्य किञ्चिद्गुणैः ॥९६॥

गन्धक, हिङ्गु, अभ्रख, ताल, स्रोतोञ्जन, टङ्कण, राजावर्त, चुम्बक, स्फटिक, शङ्ख, खटी, गैरिक, कासीस, रसक, कपर्द, सिकता, बोल, कङ्कुष्ठ, सौराष्ट्री : यी उपरस हुन् । यिनमा केही कम गुण हुन्छ ।

साधारणरस

कम्पिल्लश्चपलो गौरीपाषाणो नवसागरः ।
कपर्दो वह्निजारश्च गिरिसिन्दूरहिङ्गुलौ ॥
वोदारशृङ्गमित्यष्टौ साधारणरसाः स्मृताः ॥

कम्पिल्ल चपल, गौरीपाषाण, नवसागर, कपर्द, वह्निजार, गिरिसिन्दूर, हिङ्गुल र वोदारशृङ्ग : यी आठ साधारण रस हुन् ।

नौ ग्रहका धातु

तारं ताम्रं पित्तलं नागहेमं वङ्गं तीक्ष्णं कांस्यकं किट्टलोहम् ।
सूर्यादीनां नामभिः खेचराणां विज्ञातव्या धातवोऽनुक्रमेण ॥

तार, तामा, पित्तल, नाग, सुन, वज्र, तीक्ष्ण, काँस र किट्टलोह : यी क्रमशः सूर्य आदि नवग्रहका धातु हुन् ।

विषका प्रकार (विषभेद)

स्थावरं जङ्गमं चैव द्विविधं विषमुच्यते ।
दशाधिष्ठानमाद्यं तु द्वितीयं षोडशाह्वयम् ॥
मूलं पत्रं फलं पुष्पं त्वक्क्षीरं सार एव च ।
निर्यासो धातवश्चैव कन्दश्च दशमः स्मृतः ॥

स्थावर र जङ्गम गरी विष दुई प्रकारका हुन्छन् । पहिलो दश र दोश्रो सोह्र किसिमको हुन्छ । जरा, पात, फल, फूल, बोक्रो, दूध, चुरो, चोप, धातु र कन्द : यी स्थावर विषका प्रकार हुन् ।

स्थावरविष

कालकूटं वत्सनाभः शृङ्गकश्च प्रदीपनः ।
हालाहलो ब्रह्मपुत्रो हारिद्रः सक्तुकस्तथा ॥
सौराष्ट्रिक इति प्रोक्ता विषभेदा अमी नव ॥

कालकूट, वत्सनाभ, शृङ्गक, प्रदीपन, हालाहल, ब्रह्मपुत्र, हारिद्र, सक्तुक र सौराष्ट्रिक : यी नौ थरी विष हुन् ।

वर्ज्यविष

कालकूटस्तथा मेषशृङ्गी दर्दुरकस्तथा ।
हालाहलश्च कर्कोटी ग्रन्थिहारिद्रकस्तथा ॥
रक्तशृङ्गी केशरश्च यमदंष्ट्रश्च पण्डितैः ।
त्याज्यानीमानि योगेषु विषाणि दश तत्त्वतः ॥

कालकूट, मेषशृङ्गी, दर्दुरक, हालाहल, कर्कोटी, ग्रन्थि, हारिद्रक, रक्तशृङ्गी, केशर र यमदंष्ट्र : यी दश विषलाई (सोभै) ओखतीका लागि प्रयोग गर्न हुँदैन ।

कालकूट

देवासुररणे देवैर्हतस्य पृथुमालिनः ।
दैत्यस्य रुधिराज्जातस्तरुरश्वत्थसन्निभः ॥
निर्यासः कालकूटोऽस्य मुनिभिः परिकीर्तितः ।
सोऽहिक्षेत्रे शृङ्गवेरे कोङ्कणे मलये भवेत् ॥

देवता र दानवको युद्ध हुँदा पृथुमालिन नामक दानव मारिएपछि उसको रगतबाट पीपल जस्तो रूख उम्रियो । यही रूखको खोटोलाई कालकूट भनिन्छ । यो अहिक्षेत्र, शृङ्गवेर, कोङ्कण र मलय देशमा पाइन्छ ।

वत्सनाभ

सिन्दुवारसदृक्पत्रो वत्सनाभ्याकृतिस्तथा ।
यत्पार्श्वे न तरोवृद्धिर्वत्सनाभः स भाषितः ॥

सिन्दुवारका जस्ता पात र वत्सनाभिको आकार हुने छेउछाउमा कुनै बोटविरुवा नउम्रने विषलाई वत्सनाभ भनिन्छ ।

शृङ्गिक

यस्मिन्गोशृङ्गके बद्धे दुग्धं भवति लोहितम् ।
स शृङ्गिक इति प्रोक्तो द्रव्यतत्त्वविशारदैः ॥

जसलाई गाईको सिङ्गमा बाँधनाले दूध रातो हुने गर्दछ त्यो विषलाई विज्ञहरूले शृङ्गिक नाम दिएका छन् ।

प्रदीपन

वर्णतो लोहितो यः स्याद्दीप्तिमान्दहनप्रभः ।
महादाहकरः पूर्वेः कथितः स प्रदीपनः ॥

रातो रङको विरुवा जुन् बलिरहेको अग्निजस्तो हुन्छ र अति नै डाह गर्दछ त्यो विषलाई प्रदीपन भनिन्छ ।

हालाहल

गोस्तनाभफलो गुच्छतालपत्रच्छदस्तथा ।
तेजसो यस्य दह्यन्ते समीपस्था द्रुमादयः ॥
असौ हालाहलो ज्ञेयः किष्किन्धायां हिमालये ।
दक्षिणाब्धितटे देशे कोङ्कणेऽपि च जायते ॥

गोस्तनीका जस्ता फल, गुच्छतालका जस्ता पात र तेजले नजिकैका बोटविरुवा डढाउने खालको विषलाई हालाहल भनिन्छ । यो किष्किन्धा, हिमालय, दक्षिणी समुद्रको किनार र कोङ्कणमा पनि उम्रने गर्दछ ।

ब्रह्मपुत्र

वर्णतः कपिलो यः स्यात्तथा भवति सारतः ।
ब्रह्मपुत्रः स विज्ञेयो जायते मलयाचले ॥

कैलो रङको बोट र चुरो हुने तथा मलयाचलतिर उम्रने विषलाई ब्रह्मपुत्र भनिन्छ ।

हारिद्र

हरिद्रातुल्यमूलो यो हारिद्रः स उदाहृतः ॥

हलेदो जस्तै पहेँला गाना हुने विषलाई हारिद्र भनिन्छ ।

सक्तुक

यद्ग्रन्थिः सक्तुकेनेव पूर्णमध्यः स सक्तुकः ॥

डाँठभित्र सातुजस्तै धूलो हुने विषको बोटलाई सक्तूक भनिन्छ ।

सौराष्ट्रिक

सुराष्ट्रविषये यः स्यात्स सौराष्ट्रिक उच्यते ॥

सौराष्ट्रतिर उम्रने वा हुने विषलाई सौराष्ट्रिक भनिन्छ ।

जङ्गमविष

दृष्टिनिःश्वासदंष्ट्राश्च नखमूत्रमलानि च ।
शुक्रं लाला नखस्पर्शः सदंशं स्रावमर्दितम् ॥
गुदास्थिपित्तशुक्राणि दश षड्जङ्गमाश्रयाः ।

दृष्टि, सास, दाँत, नङ, पिसाब, दिसा, वीर्य, राल, नङले कोतरेर, टोकेर, बहेर, माडेर, मलद्वार, हाड, पित्त र शुक्र : यी जङ्गम सोह जङ्गम विषका स्रोत हुन् ।

सङ्कलन विषको काम (विषकर्माणि) सापकोटा

विषं प्राणहरं प्रोक्तं व्यवायि च विकासि च ।
आग्नेयं वातकफहृद्योगवाही मदावहम् ॥
स्थावरं जाङ्गमं वाऽपि विषं जग्धं भिषग्वरैः ।
शीघ्रं दद्यादव्यथां गुर्वीं प्रोक्तं च नरसत्तमैः ॥
तदेव युक्तियुक्तं तु प्राणदायि रसायनम् ।
योगवाही परं वातश्लेष्मजित्सन्निपातहृत् ॥

विष प्राण लिने, व्यवायी, विकासी, आग्नेय, वातविकार कफविकार नाश गर्ने, योगवाही र नसा लगाउने हुन्छन् । स्थावर र जङ्गम दुवै विषले मानिसलाई अत्यधिक डाह गर्दछ । यसको वैद्यले जतिसक्दो चाँडो नपच्ने उपचार गर्नुपर्दछ । यही विष जुक्ति लगाएर प्रयोग गरिए यो रसायनी, योगवाही, वातविकार र कफविकार नाशक तथा सन्निपात नाशक हुने गर्दछ ।

हरिताल (विषविशेष)

हरितालं च गोदन्तं पीतकं नरमण्डनम् ।
आलं बिडालं गौरं च पिञ्जरं चित्रगन्धकम् ॥
हरितालं कटूष्णं च स्निग्धं कुष्ठोपघातकम् ।
विषकण्डूभूतहरं सुभगं केशहृत्परम् ॥

हरिताल, गोदन्त, पीतक, नरमण्डन, आल, बिडाल, गौर, पिञ्जर र चित्रगन्धक : यी हरितालका पर्यायवाची नामहरू हुन् । यो पिरो, उष्णवीर्यको, चिल्लो तथा कुष्ठ, विषविकार, चिलाउने रोग र भूतबाधा नाश गर्ने एवं सौन्दर्यवर्धक र कपाल नाश गर्ने गुणको हुन्छ ।

अमृत (वत्सनाभ)

अमृतं स्याद्वत्सनाभो विषमुग्रं महौषधम् ।
गरलं मरणं नागं स्तोककं प्राणहारकम् ॥
गरलं स्थावराद्यं स्यात्प्रोक्तं चैकादशाह्वयम् ।
वत्सनाभोऽतिमधुरः सोष्णो वातकफापहः ॥
कण्ठरुक् सन्निपातघ्नः पित्तसंशोधनोऽपि च ।

अमृत, वत्सनाभ, विषमुग्र, महौषध, गरल, मरण, नाग, स्तोकक र प्राणहारक, गरल र स्थावराद्य : यी वत्सनाभका पर्यायवाची नामहरू हुन् । यो अति नै गुलियो, उष्णवीर्यको तथा वातविकार, कफविकार, घाँटीका रोग र सन्निपात रोग नाशगर्ने एवं पित्त प्रशोधन गर्ने गुणको हुन्छ ।

उपविषगण

भल्लातकं चातिविषं चतुर्भागं च खारवसम् ।
करवीरं द्विधा प्रोक्तमहिफेनं द्विधा मतम् ॥
धत्तूरश्च चतुर्धा स्याद्द्विधा गुञ्जा च निर्विषाः ।
विषमुष्टिर्लाङ्गली च गणश्चोपविषाह्वयः ॥

भलायो, अतीस, चार थरी अफिमका दाना, दुई थरी करवीर, दुई थरी अफिम, चार थरी धतुरो, दुई थरी गुञ्जा (रातीगेडी र सेतीगेडी), निर्विषी, विषमुष्टि (बकाइनु) र लाङ्गली : यी उपविष-गण हुन् ।

(सुह्यर्क लाङ्गली गुञ्जा हयारिर्विषमुष्टिका ।
जेपालोन्मत्ताहिफेनं नवोपविषजातयः ॥)

सिउँडी, आँक, कलिहारी, रातीगेडी (सेतीगेडी), करवीर, बकाइनु, अजयपाल, धतुरो र अफिम : यी नौ उपविष हुन् ।

अर्कक्षीरं सुहीक्षीरं लाङ्गली करवीरकः ।
गुञ्जाऽहिफेनो धत्तूरः सप्तोपविषजातयः ॥

आँकको दूध, सिउँडीको दूध, गुन्यामधुरा, करवीर, रातीगेडी, अफिम र धतुरो : यी सात उपविषका जात हुन् ।

विष शान्त पार्ने उपाय (विषप्रशमनानि)

सङ्कलन : मोहन प्रसाद सापकोटा

पीतविषं नरं दृष्ट्वा सद्यो वमनमुत्तमम् ।
यावत्पीतातिविषं च तावत्तु वामयेत् सदा ॥
सिञ्चेत् शीताम्भसा वक्त्रं मन्त्रपूतेन सत्त्वरम् ।
रजनी युग्माम्लकेन काञ्जिकेन तु पेषितम् ॥
लेपेन च विषं हन्ति प्रलिप्तं नात्र संशयः ।
मातुलुङ्गरसेनापि धावनं काञ्जिकेन वा ॥
अतिशीतेन तोयेन प्रलिप्तं नात्र संशयः ॥

मानिसले विष पिएको देखेपछि तुरुन्त बान्ता गराउनु हितकर हुन्छ । जहिले पनि जबसम्म पिएको सबै विष निख्रिँदै तबसम्म बान्ता गराउनु । मन्त्रले मन्त्रिएको चिसो जल चाँडचाँडो उसको अनुहारमा छम्कनु । हलेदो, चुत्रो र काँजी पिसेर दलनाले विषविकार अवश्य नाश हुन्छ । विमिरोको रसले पनि विषविकार नाश हुन्छ । यसपछि काँजीले पखाल्नु । यसबेला भेटिएसम्मको चिसो पानी प्रयोग गर्नुपर्दछ ।

उपसंहार

वर्गोऽयं मिश्रको नाम सप्तमः परिकीर्तितः ।
द्रव्याण्युक्तानि गणशो मिश्रीकृत्य समासतः ॥

विभिन्न पदार्थका बारेमा मिसाएर बताइएको मिश्रकादि नामक यो सातौं वर्ग समाप्त भयो ।

गुडूच्यादिः शताह्वादिस्तथाऽन्यश्चन्दनादिकः ।
करवीरादिराम्रादिः सुवर्णादिर्विमिश्रकः ॥

यसरी यो निघण्टुमा गुडूच्यादि, शताह्वादि, चन्दनादि, करवीरादि, आम्रादि, सुवर्णादि र मिश्र वर्गका बारेमा बताइयो ।

पुष्पिका

इति रसवीर्यविपाकसहिते धन्वन्तरीनिघण्टौ मिश्रकादिः सप्तमो वर्गः

रस, वीर्य, विपाक सहितको धन्वन्तरि निघण्टुको मिश्रकादि सातौं वर्ग समाप्त भयो ।

नेपाल देश अन्तर्गत बाग्मती अञ्चल, काभ्रेपलाञ्चोक जिल्ला, अनैकोट गा.वि.स., वडा नं.३ चारघर टोलमा जन्म भई बाग्मती प्रदेश, काठमाडौं जिल्ला, गोकर्णेश्वर नगरपालिका, वडा नं. ७, दक्षिणढोकामा बसोबास गर्ने मोहन प्रसा सापकोटाबाट गरिएको धन्वन्तरि निघण्टुको नेपाली भावानुवाद सम्पूर्ण भयो ।